देवकीनन्दन खत्री

चंद्रकांता

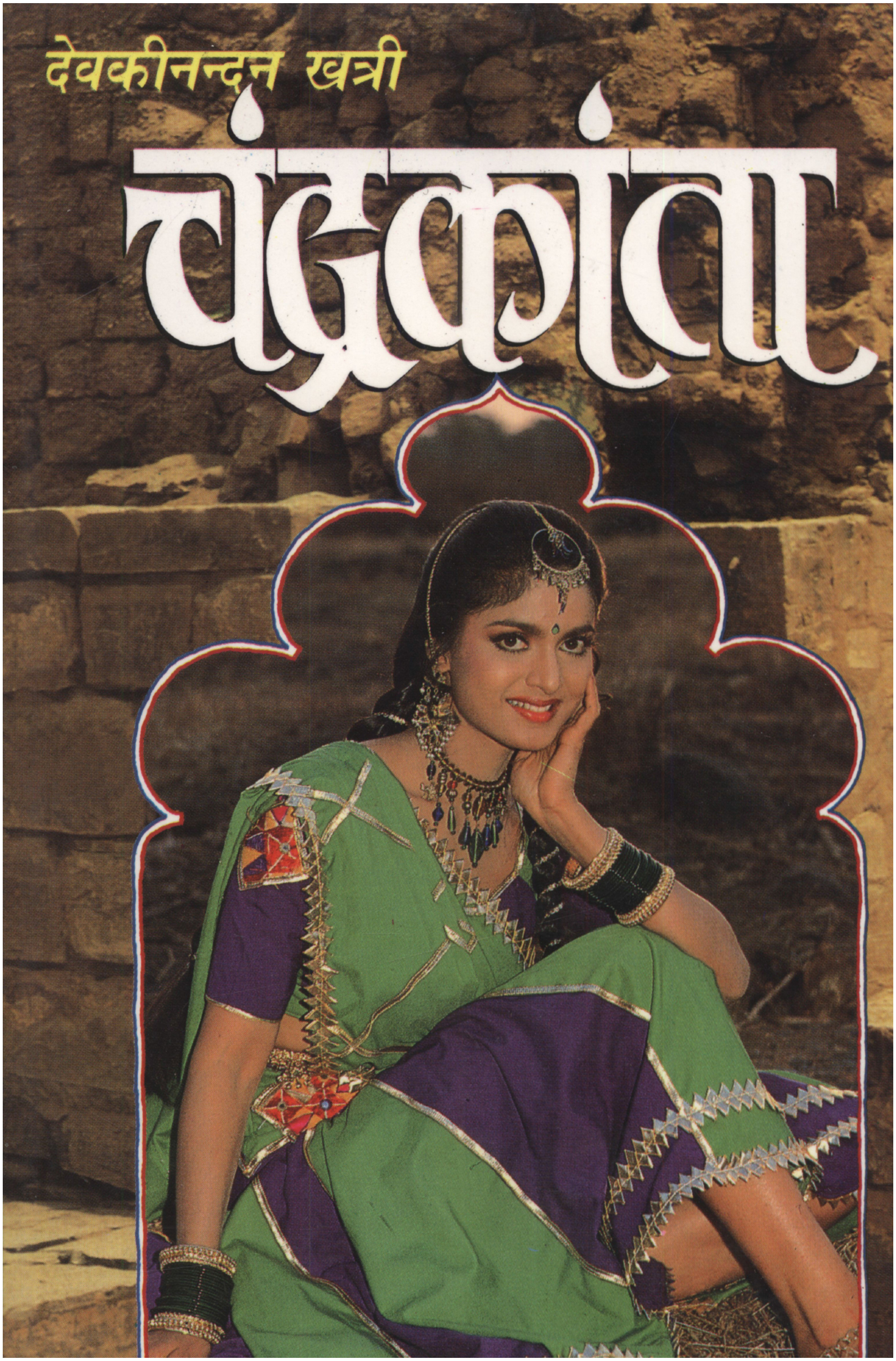
देवकीनन्दन खत्री
चंद्रकांता

चन्द्रकान्ता

चन्द्रकान्ता

देवकीनन्दन खत्री

डायमंड बुक्स

ISBN: 81–7182-369-6

© **प्रकाशकाधीन**

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020

फोन : 011-41611861, 40712100

फैक्स : 011-41611866

ई-मेल : sales@dpb.in

वेबसाइट : www.dpb.in

संस्करण : **2014**

C HANDRAKANTA
by: Devkinandan Khatri

अंतर्वस्तु

चन्द्रकान्ता
दूसरा बयान
तीसरा बयान
चौथा बयान
पाँचवाँ बयान
छठवां बयान
सातवां बयान
आठवां बयान
नौवां बयान
दसवां बयान
ग्यारहवां बयान
बारहवां बयान
तेरहवां बयान
चौदहवां बयान
पन्द्रहवां बयान
सोलहवां बयान
सत्रहवां बयान
अट्ठारहवां बयान
उन्नीसवां बयान
बीसवां बयान
इक्कीसवां बयान
बाईसवां बयान
तेईसवां बयान
चन्द्रकान्ता
दूसरा बयान
तीसरा बयान
चौथा बयान
पांचवां बयान

छठवां बयान
सातवां बयान
आठवां बयान
नौवां बयान
दसवां बयान
ग्यारहवां बयान
बारहवां बयान
तेरहवां बयान
चौदहवां बयान
पन्द्रहवां बयान
सोलहवां बयान
सत्रहवां बयान
अठारहवां बयान
उन्नीसवां बयान
बीसवां बयान
इक्कीसवां बयान
बाईसवां बयान
तेइसवां बयान
चौबीसवां बयान
पच्चीसवां बयान
फूलों के गुण
छब्बीसवां बयान
सत्ताईसवां बयान
चन्द्रकान्ता
दूसरा बयान
तीसरा बयान
चौथा बयान
पांचवां बयान
छठवां बयान
सातवां बयान
आठवां बयान
नौवां बयान
दसवां बयान

ग्यारहवां बयान
बारहवां बयान
तेरहवां बयान
चौदहवां बयान
पन्द्रहवां बयान
सोलहवां बयान
सत्रहवां बयान
अट्ठारहवां बयान
उन्नीसवां बयान
बीसवां बयान
चन्द्रकान्ता
दूसरा बयान
तीसरा बयान
चौथा बयान
पांचवां बयान
छठवां बयान
सातवां बयान
आठवां बयान
नौवां बयान
दसवां बयान
ग्यारहवां बयान
बारहवां बयान
तेरहवां बयान
चौदहवां बयान
पन्द्रहवां बयान
सोलहवां बयान
सत्रहवां बयान
अट्ठारहवां बयान
उन्नीसवां बयान
बीसवां बयान
इक्कीसवां बयान
बाईसवां बयान
तेईसवां बयान

'चन्द्रकान्ता': हिन्दी उपन्यास की आधारशिला

प्रेमचन्द्र-पूर्ववर्ती हिन्दी उपन्यास-साहित्य में दो प्रमुख धाराएँ प्रवाहित होती दिखाई देती हैं, जिनमें से प्रथम धारा भारतेन्दुयुगीन सुधारवादी नैतिकता प्रधान सामाजिक उपन्यासों की धारा है, जिसका प्रतिनिधित्व लाला श्रीनिवास दास के 'परीक्षा गुरु'में मिलता है, और दूसरी धारा जिसे तिलिस्मी-ऐयारी एवं जासूसी उपन्यास की संज्ञा प्राप्त है, उसके सर्वाधिक चर्चित लेखक बाबू देवकीनन्दन खत्री हैं, और उनकी कलम का जादू है 'चन्द्रकान्ता'। हम यह निस्संकोच रूप से मानकर चले हैं कि प्रेमचन्द-पूर्ववर्ती उपन्यासकारों में बाबू देवकीनन्दन खत्री सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकार हैं और 'चन्द्रकान्ता'उनकी प्रथम मौलिक औपन्यासिक सर्जना होते हुए भी उनकी कीर्ति का आधार-स्तम्भ बन गयी है। इसे उन्होंने 'तिलिस्मी ऐयारी'उपन्यास का अभिधान दिया है। हिन्दी की यही एकमात्र ऐसी औपन्यासिक रचना है जिसने जनसाधारण में उपन्यास पढ़ने की प्रवृत्ति जागृत की तथा असंख्य निरक्षर और उर्दूदां लोगों को हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया। यदि यह कहा जाये कि इसी रचना ने पहली बार हिन्दी पाठकों को कथा-रस से अवगत कराकर उन्हें अभिभूत कर लिया तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। अपने युग में (और बहुत बाद तक भी) 'चन्द्रकान्ता'का जादू इस प्रकार छाया रहा था कि लोग उपन्यास को उपन्यास न कहकर 'चन्द्रकान्ता'कहने लगे थे। जैसे मध्यकालीन भावुक भक्त कवि 'रसखान'अपने सवैयों की सरसता और मधुरता के कारण 'सवैये'के पर्याय बन गये थे, उसी प्रकार 'चन्द्रकान्ता'उपन्यास अपने कथा-रस के कारण 'उपन्यास'का समानक लगने लगा था। एक अविच्छिन्न, अजस्त्र और अद्भुत प्रवाह है इसके कथानक में, और अनन्त कौतूहल इसका प्राण है।

'चन्द्रकान्ता' (सन् 1888) को मूलतः और प्रमुखतः एक प्रेम-कथा कहा जा सकता है। चार हिस्सों में विभाजित इस उपन्यास की कथा अनायास ही हमें मध्यकालीन प्रेमाख्यानक काव्यों का स्मरण कराती है। इस प्रेम-कथा में अलौकिक और अतिप्राकृतिक तत्त्वों का प्रायः अभाव है और न ही इसे आध्यात्मिक रंग में रंगने का ही प्रयास किया गया है। यह शुद्ध लौकिक प्रेम-कहानी है, जिसमें तिलिस्मी और ऐयारी के अनेक चमत्कार पाठक को चमत्कृत करते हैं। नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के पुत्र वीरेन्द्रसिंह तथा विजयगढ़ के राजा जयसिंह की पुत्री चन्द्रकान्ता के प्रणय और परिणय की कथा उपन्यास की प्रमुख कथा है। इस प्रेम-कथा के साथ-साथ ऐयार तेजसिंह तथा ऐयारा चपला की प्रेम-कहानी भी अनेकत्र

झलकती है। विजयगढ़ के दीवान कुपथसिंह का पुत्र क्रूरसिंह इस उपन्यास का खलनायक है। वह राजकुमारी को हथियाने के लिए अनेक षड्यन्त्र रचता है। नाज़िम और अहमद जैसे ऐयार उसके सहायक हैं परन्तु अपने कुकृत्यों के अनुरूप ही उसका अन्त हो जाता है। चुनार का राजा शिवदत्तसिंह भी असत् अथवा खल पात्रों की श्रेणी में आता है। वह भी क्रूरसिंह से प्रेरित होकर चन्द्रकान्ता की प्राप्ति का विफल प्रयत्न करता है। वह विजयगढ़ पर आक्रमण करता है, परन्तु नौगढ़ और विजयगढ़ के शासकों और वीरेन्द्रसिंह की वीरता तथा जीतसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह आदि ऐयारों के प्रयत्नों से परास्त होता है। इन ऐयारों की सहायता से वीरेन्द्रसिंह अनेक कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करता हुआ तिलिस्म को तोड़ता है और चन्द्रकान्ता को मुक्त कराता है। इस तिलिस्म से उसे अपार सम्पदा प्राप्त होती है और वह चन्द्रकान्ता का पाणिग्रहण करता है। चपला तेजसिंह की परिणीता बनती है और चम्पा का देवीसिंह से विवाह होता है।

देवकीनन्दन खत्री ने समसामयिक नीति-प्रधान उपन्यासों से भिन्न कौतूहल प्रधान 'तिलिस्मी-ऐयारी’उपन्यास-रचना की नई दिशा को उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया। 'तिलिस्म’अरबी का शब्द है, जिसका अर्थ है-’ऐन्द्रजालिक रचना, गाड़े हुए धन आदि पर बनायी हुई सर्प आदि की भयावनी आकृति या दवाओं तथा लग्नों के मेल से बंधा हुआ यन्त्र’। 'चन्द्रकान्ता’के चैथे भाग के बीसवें बयान में ऐयार जीतसिंह 'तिलिस्म’के सम्बन्ध में कहता है-"तिलिस्म वही शख्स तैयार करता है, जिसके पास बहुत माल-खज़ाना हो और वारिस न हो।.... पुराने ज़माने के राजाओं को जब तिलिस्म बांधने की ज़रूरत पड़ती थी तो बड़े-बड़े ज्योतिषी, नजूमी, वैद्य, कारीगर और तान्त्रिक लोग इकट्ठे किये जाते थे। उन्हीं लोगों के कहे मुताबिक तिलिस्म बांधने के लिए ज़मीन खोदी जाती थी, उसी ज़मीन के अन्दर ख़जाना रखकर ऊपर तिलिस्मी इमारत बनाई जाती थी। उसमें ज्योतिषी, नजूमी, वैद्य, कारीगर और तान्त्रिक लोग अपनी ताकत के मुताबिक उसके छिपाने की बन्दिश करते थे मगर इसके साथ ही उस आदमी के नक्षत्र और ग्रहों का भी खयाल रखते थे, जिसके लिए वह खज़ाना रखा जाता था।" 'ऐयार’शब्द भी अरबी का है, जिसका शाब्दिक अर्थ है-धूर्त अथवा वेश या रूप बदलकर अनोखे काम करने वाला व्यक्ति। 'ऐयार’उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसके मुख्य काम हैं। ऐयारों के सम्बन्ध में खत्रीजी ने 'चन्द्रकान्ता’की भूमिका में लिखा है-राजदरबारों में ऐयार भी नौकर होते थे जो कि हरफनमौला, यानी सूरत बदलना, बहुत-सी दवाओं का जानना, गाना-बजाना, दौड़ना, अस्त्र चलाना, जासूसों का काम करना, वगैरह बहुत-सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून बहाये व पलटनों की जानें गंवाये लड़ाई खत्म करा देते थे।" 'चन्द्रकान्ता’में लेखक चुनार के बाहर के खण्डहर के तिलिस्म का वर्णन करता है, जहाँ काले पत्थर के खम्भे पर संगमरमर का बगुला है जो किसी के पास आते ही मुँह खोल लेता है और उसे उदरस्थ कर लेता है।

चन्द्रकान्ता को यही बगुला निगल लेता है तथा वह तिलिस्म में कैद हो जाती है। उसकी सखी चपला का भी यही हाल होता है। इस तिलिस्म के विषय में एक सुर्ख पत्थर पर लिखा है-'यह तिलिस्म है, इसमें फंसनेवाला कभी निकल नहीं सकता। हाँ, अगर कोई इसको तोड़े तो सब कैदियों को छुड़ा ले और दौलत भी उसके हाथ लगे। तिलिस्म तोड़नेवाले के बदन में खूब ताकत भी होनी चाहिए, नहीं तो मेहनत व्यर्थ है।'इस तिलिस्म को तोड़ने की विधि भी एक पुस्तक में लिखी मिलती है, जिसका अर्थ तेजसिंह और ज्योतिषीजी रमल की सहायता से ज्ञात करते हैं। इस पुस्तक की प्राप्ति से वीरेन्द्रसिंह अपने ऐयार साथियों की मदद से अनेक कठिनाइयों, बाधाओं एवं संघर्षों का सामना करता हुआ तिलिस्म को तोड़ने में सफल होता है और चन्द्रकान्ता को मुक्त कराता है। उपन्यास के तीसरे और चैथे हिस्से में मुख्य रूप से इसी तिलिस्म तोड़ने की कथा का रोचक, कौतूहलपूर्ण और अद्भुत वर्णन है। वनकन्या, सूरजमुखी आदि पात्रों का सृजन और उनके कार्य उपन्यास में रोचकता और कौतूहल की वृद्धि करते हैं।

ऐयारी प्रधान उपन्यास होने के कारण 'चन्द्रकान्ता'में ऐयारों की चालों, फनों और घात-प्रतिघातों का बड़ा ही सजीव, रोचक और चमत्कारिक वर्णन मिलता है। उपन्यास में कई ऐयार हैं। वीरेन्द्रसिंह के पक्ष के ऐयार हैं-जीतसिंह, तेजसिंह और देवीसिंह। क्रूरसिंह के ऐयार हैं-अहमद और नाजिम। शिवदत्त के छः ऐयार हैं-पण्डित बद्रीनाथ, चुन्नीलाल, रामनारायण, भगवानदत्त, पन्नालाल और घसीटासिंह। उनके पास रमल का ज्ञाता ज्योतिषी जगन्नाथ भी है। चपला और चम्पा ऐयारिनें हैं जो चन्द्रकान्ता के साथ रहती हैं। उपन्यास में इन ऐयारों के कार्य पाठकों को चमत्कृत और विस्मित करते हैं। कहीं ये सुंघनी सुंघाकर किसी को बेहोश कर देते हैं और कहीं लखलखा सुंघाकर होश में लाते हैं। ऐयारी बटुआ इनके पास हमेशा रहता है और इसमें वे सभी आवश्यक सामग्री रखते हैं। जासूसी करने, लड़ने-भिड़ने, गाने-बजाने, नाचने आदि में भी ये कुशल होते हैं। ऐयारों के कार्य उपन्यास की कथा को नाटकीय मोड़ देते हैं। कहीं देवीसिंह साधु का वेश बनाकर तेजसिंह को सावधान करता है तो कहीं चन्द्रकान्ता और चपला की नकली लाशें हैं। कहीं वनकन्या और सूरजमुखी के करतब हैं, कहीं नकली चन्द्रकान्ता शिवदत्तसिंह से प्रेम-प्रदर्शन करती है तो कहीं ज़ालिमखां और आफतखां अपने-अपने ढंग से आफत और ज़ुल्म ढाते हैं, जीतसिंह रहस्यमय रूप से साधु बाबा बन जाता है। सारे उपन्यास में इन ऐयारों के चमत्कारपूर्ण कार्य पाठक को मुग्ध और स्तम्भित करते हैं। इन ऐयारों की अपनी आचार-संहिता भी है, जिसका पालन करना वे अपना कर्तव्य मानते हैं। उपन्यास में वर्णित ऐयारों के घात-प्रतिघात विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस'में वर्णित चाणक्य और राक्षस के राजनीतिक दांव-पेंचों का स्मरण करा देते हैं।

वस्तु-संगठन में उत्सुकता और कौतूहल की प्रधानता, पात्रों के सृजन में विविध क्षेत्रों से उनका चयन, बातचीत के संवाद, चुनार, विजयगढ़, नौगढ़ आदि की नदियों, तालाबों,

बावड़ियों, खोहों, टीलों, खण्डहरों, पक्षियों, वृक्षों आदि का चित्रात्मक शैली में प्रकृति-चित्रण, युगीन परिस्थितियों का अप्रत्यक्ष रूप में अंकन, बोलचाल की सजीव भाषा, आदर्श चरित्रों की सर्जना द्वारा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा आदि 'चन्द्रकान्ता'की कतिपय ऐसी विशेषताएँ हैं, जो लेखक के जीवन-अनुभव, कल्पना की विस्मयकारी उड़ान तथा कथा-निर्माण की अद्भुत क्षमता की परिचायक हैं। वस्तुतः तिलिस्म और ऐयारी के सूत्रों से गुंथी हुई प्रेम और रोमांस की यह औपन्यासिक कथा हिन्दी के घटना-प्रधान रोमांचक उपन्यासों की ऐसी शुभ शुरुआत थी, जिसने असंख्य पाठकों को हिन्दी भाषा का प्रेमी बना दिया और हिन्दी उपन्यास को दृढ़ आधारशिला प्रदान की।

पी०जी०डी०ए०वी० कॉलेज(सांध्य)

—**डॉ रवेलचन्द आनन्द**

(दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेह रूनगर, नयी दिल्ली-110065

प्रथम संस्करण से

आज तक हिन्दी साहित्य में बहुत से उपन्यास लिखे गये हैं जिनमें कई तरह की बातें व राजनीति भी लिखी गई है, राजदरबार के तरीके व सामान भी ज़ाहिर किये गये हैं, मगर राजदरबारों में ऐयार (चालाक) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफनमौला, यानी सूरत बदलना, बहुत-सी दवाओं का जानना, गाना-बजाना, दौड़ना, अस्त्र चलाना, जासूसों का काम देना, वगैरह बहुत-सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून बहाये व पलटनों की जानें गंवाये लड़ाई खत्म करा देते थे। इन लोगों की बड़ी कदर की जाती थी। इसी ऐयारी पेशे से आज कल बहुरूपिये दिखाई देते हैं। वे सब गुण तो इन लोगों में रहे नहीं, सिर्फ शक्ल बदलना रह गया है, और वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में अभी तक मेरी नज़रों से नहीं गुज़रा। अगर हिन्दी पढ़ने वाले इस आनंद को देख लें तो कई बातों का फायदा हो। सबसे ज़्यादा फायदा तो यह कि ऐसी किताबों को पढ़ने वाला जल्दी किसी के धोखे में न पड़ेगा। इन सब बातों का खयाल करके मैंने यह 'चन्द्रकान्ता' नामक उपन्यास लिखा। इस किताब में नौगढ़ व विजयगढ़ दो पहाड़ी रजवाड़ों का हाल कहा गया है। उन दोनों रजवाड़ों में पहले आपस का खूब मेल रहना, फिर वजीर के लड़के की बदमाशी में बिगाड़ होना, नौगढ़ के कुमार वीरेन्द्रसिंह का विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता पर आशिक होकर तकलीफें उठाना, विजयगढ़ के दीवान के लड़के क्रूरसिंह का महाराज जयसिंह से बिगड़ कर चुनार जाना और चन्द्रकान्ता की तारीफ करके वहाँ के राजा शिवदत्तसिंह को उभाड़ लाना वगैरह। इसके बीच में ऐयारी भी अच्छी तरह से दिखलाई गई है, और ये राज्य पहाड़ी होने से इसमें पहाड़ी नदियों, दर्रों, भयानक जंगलों और खूबसूरत व दिलचस्प घाटियों का भी बयांन अच्छी तरह से आया है।

मैंने आज तक कोई किताब नहीं लिखी है। यह पहला श्रीगणेश है, इसलिए इसमें किसी तरह की गलती या भूल का हो जाना ताज्जुब नहीं, जिसके लिए मैं आप लोगों से क्षमा माँगता हूँ, बल्कि बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप लोग मेरी भूल को पत्र द्वारा मुझ पर जाहिर करेंगे! क्योंकि यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है, आगे और छप रहा है, भूल मालूम हो जाने से दूसरी जिल्दों में उसका खयाल किया जायेगा।

[आषाढ़, संवत् 1944 वि०,]

-देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकान्ता

पहला भाग

पहला बयान

शाम का वक़्त है, कुछ-कुछ सूरज दिखाई दे रहा है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर आपस में बातें कर रहे हैं।

वीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कीस या बाईस वर्ष की होगी। यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता लड़का है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुंवर वीरेन्द्रसिंह का दिली दोस्त, बड़ा चालाक और फुर्तीला, कमर में सिर्फ खंजर बांधे, बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिये बड़ी तेज़ी के साथ चारों तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है। इन दोनों के सामने कसाकसाया चुस्त-दुरुस्त एक घोड़ा पेड़ से बंधा हुआ है।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, "भाई तेजसिंह, देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस हद तक पहुंचा दिया। कई दफे तुम विजयगढ़ से राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चिट्ठी मेरे पास लाये और मेरी चिट्ठी उन तक पहुंचाई, जिससे साफ मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूं उतनी ही चन्द्रकान्ता मुझसे रखती है, हालांकि हमारे राज्य और उसके राज्य के बीच सिर्फ पांच कोस का फासला है, इस पर भी हम लोगों के किये कुछ नहीं बन पड़ता। देखो इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि जिस तरह बने, जल्द मिल जाओ।"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "मैं हर तरह से आपको वहाँ ले जा सकता हूं, मगर एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे उनके मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक हो रहा है, ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों *–को जिनका नाम नाज़िम अली और अहमदखां है इस बात की ताकीद करा दी है कि बराबर वे लोग महल की निगहबानी किया करें क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उसके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बंधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कानों तक आपकी लगावट का हाल पहुंचा

दिया है और इसी सबब से पहरे की यह सख्त ताकीद हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहाँ जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूं।"

"इस वक़्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज़्यादा मानती है। सिवाय इस चपला के मेरा साथ देने वाला वहाँ कोई नहीं है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देखकर लौटूं तब आपके चलने के बारे में राय दूं। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे-बूझे काम करके हम लोग वहाँ ही गिरफ्तार हो जायें।"

वीरेन्द्र०: जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।

तेजसिंह०: मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाज़िम और अहमद यहाँ आकर पुनः हमारे महाराज के दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी से आये थे। अफसोस, उस वक़्त मैं यहाँ न था।

वीरेन्द्र०: मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फंसाना चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर, अब तुम जाओ और जिस तरह बने, चन्द्रकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और वीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। वीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल उस पर सवार हुए और अपने क़िले की तरफ चले गये।

---

*—ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य काम है।

दूसरा बयान

विजयगढ़ में क्रूरसिंह *अपनी बैठक के अन्दर नाज़िम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बातें कर रहा है।

क्रूर०: देखो नाज़िम, महाराज का तो यह खयाल है कि मैं राजा होकर मंत्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊं, और चन्द्रकान्ता वीरेन्द्रसिंह को चाहती है। अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले ? अगर सोचा जाए कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊं, तो कहाँ जाऊं और कहाँ रहकर आराम करूं ? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे ? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहले वीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी ऐसी जगह ले जाकर खपा डाला जाए कि हज़ार वर्ष तक पता न लगे, और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाए, फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊंगा और तब अलबत्ता अपनी ज़िन्दगी में चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूंगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मरने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूंगा ? लोग कैसे मुझे राजा बनाएंगे ?

नाज़िम०: हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज़्यादा हैं, उन सबों को आपकी मदद के लिए मैं राज़ी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मज़हब मुसलमानी को कबूल करें ?

क्रूरसिंह०: अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।

अहमद०: तो बस ठीक है, आप इस बात का इकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें। मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूंगा।

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मज़हब अख्तियार करने का इकरारनामा लिख कर फौरन नाज़िम और अहमद के हवाले किया, जिस पर अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, "अब सब मुसलमानों का एकदिल कर लेना हम लोगों के ज़िम्मे है, इसके लिए आप कुछ न सोचिये। हाँ, हम दोनों आदमियों के लिए भी एक इकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिए कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वज़ीर मुकर्रर किये जायेंगे, और तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिए कि बात-की-बात में ज़माना कैसे उलट-पलटकर देते हैं।"

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी इकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाज़िम ने कहा, "इस वक़्त हम लोग चन्द्रकान्ता के हालचाल की

खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक़्त बहुत अच्छा है, चन्द्रकान्ता ज़रूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी विरह-कहानी कह रही होगी, इसलिए हमको पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आज कल वीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है।"

ये कह कर दोनों ऐयार क्रूरसिंह से विदा लेकर वहाँ से चले गये।

---

*—इनकी उम्र 21 वर्ष या 22 वर्ष की थी, इनके ऐयार भी कमसिन थे।

तीसरा बयान

कुछ-कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं। भीनी-भीनी फूलों की महक धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही है। तरह-तरह के फूल खिले हुए हैं। बाग के पश्चिम की तरफ वाले आम के घने पेड़ों की बहार और उसमें से अस्त होते हुए सूरज की किरणों की चमक एक अजीब ही मज़ा दे रही है। फूलों की क्यारियों की रविशों में अच्छी तरह छिड़काव किया हुआ है और फूलों के दरख्त भी अच्छी तरह पानी से धोए हैं। कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिए की क्यारियां अपना-अपना मज़ा दे रही हैं। एक तरफ ब़ाग से सटा हुआ ऊंचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर-सुन्दर बुर्जियां अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला, जो चालाकी के फन में बड़ी तेज़ और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है, अपने चंचल हाव-भाव के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिये चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़-तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है, मगर चन्द्रकान्ता को वीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं ? उसे तो दिल बहलाने के लिए उसकी सखियां ज़बरदस्ती बाग में खींच लाई हैं।

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा तो गुच्छा बनाने के लिए फूलों को तोड़ती हुई मालती लता के कुंज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे-धीरे टहलती हुई बीच के फौव्वारे के पास जा निकलीं और उसकी चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला: न मालूम चम्पा किधर चली गई ?

चन्द्रकान्ता: कहीं इधर-उधर घूमती होगी।

चपला: दो घड़ी से ज़्यादा हो गया, तब से वह हम लोगों के साथ नहीं है।

चन्द्रकान्ता: देखो वह आ रही है।

चपला: इस वक़्त तो उसकी चाल में फ़र्क़ मालूम होता है।

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और कहा, “देखिए, यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ, अगर इस वक़्त कुंवर वीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको कुछ इनाम देते।”

वीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही एकाएक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल मुख मुरझा गया, ऊंची-ऊंची सांसें लेने लगी, आखों से आंसू

टपकने लगे। धीरे-धीरे कहने लगी, "न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है ? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन-से ऐसे पाप किये हैं जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ रहा है ? देखो, पिता को क्या धुन समाई है। कहते हैं कि चन्द्रकान्ता को कुंवारी ही रखूंगा। हाय! वीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिए कैसी-कैसी खुशामदें कीं, मगर दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उसको ऐसा कुछ अपने बस में कर रक्खा है कि कोई काम होने नहीं देता, और उधर कम्बख्त क्रूर मुझसे अपनी ही लसी लगाना चाहता है।"

एकाएक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़कर ज़ोर से दबाया मानो चुप रहने के लिए इशारा किया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टहलने लगी, मगर अपना रूमाल उसी जगह जान-बूझकर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने चम्पा से कहा, "सखी देख तो, फौव्वारे के पास कहीं मेरा रूमाल गिर पड़ा है।"

चम्पा रूमाल लेने फौव्वारे की तरफ चली गई तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, "सखी, तूने बोलते समय मुझे एकाएक क्यों रोका ?"

चपला ने कहा, "मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शुबहा हो गया है। उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।" इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, "सखी, कल रात को मैंने तुझको जो कहा था सो तैंने किया ?" चम्पा बोली, "नहीं, मैं तो भूल गई।" तब चपला ने कहा, "भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई ?" चम्पा बोली, "बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा, "भला दोहरा के मुझसे कह तो सही तब मैं जानूं कि तुझे याद है।"

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कहकर कि मैं तुझसे एक बात कहूंगी, चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली," देख तो चम्पा, मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती ? क्योंकि कल से कान में दर्द है!" नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूंघने लगी। चपला ने चालाकी से बेहोशी की बुकनी कान में रखकर नकली चम्पा को सुंघा दी जिसके सूंघते ही चम्पा बेहोश होकर गिर पड़ी।

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, "आओ सखी, अपनी चम्पा का हाल देखो।" चन्द्रकान्ता ने पास आकर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देख चपला से कहा, "सखी, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा खयाल धोखा ही निकले और पीछे चम्पा से शरमाना पड़े!" "नहीं, ऐसा न होगा।" कह कर चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता से बोली, "तुम फौवारे से चुल्लू भर-भर पानी इसके मुंह पर डालो, मैं धोती हूँ!" चन्द्रकान्ता ने ऐसा ही किया और चपला खूब रगड़-रगड़ कर उसका मुँह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की

सूरत बदल गई और साफ नाज़िम की सूरत निकल आई। देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह बोली, "सखी, इसने तो बड़ी बेअदबी की!"

"देखो तो, अब मैं क्या करती हूँ।" कह कर चपला नाज़िम को फिर पीठ पर लाद बाग के एक कोने में ले गई, जहाँ बुर्ज के नीचे एक छोटा-सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाज़िम को ले जाकर लिटा दिया और अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई। एक रस्सी से नाज़िम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बांधे और डिबिया से लखलखा निकाल उसको सुंघाया, जिससे नाज़िम ने एक छींक मारी और होश में आकर अपने को क़ैद और बेबस देखा। चपला कोड़ा लेकर खड़ी हो गई और मारना शुरू किया।

"माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मैं ऐसा कभी न करूंगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूंगा!" इत्यादि कह कर नाज़िम चिल्लाने और रोने लगा, मगर चपला कब सुनने वाली थी ? वह कोड़ा ज़माए ही गई और बोली, "सब्र कर, अभी तो तेरी पीठ की खुजली भी न मिटी होगी! तू यहाँ क्यों आया था ? क्या तुझे बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी ? क्या बाग की सैर को जी चाहा था ? क्या तू नहीं जानता था कि चपला भी यहाँ होगी ? हरामज़ादे के बच्चे, बेईमान, अपने बाप के कहने से तूने यह काम किया ? देख मैं उसकी भी तबीयत खुश कर देती हूँ!" यह कहकर फिर मारना शुरू किया, और पूछा, "सच बता, तू कैसे यहाँ आया और चम्पा कहाँ गई ?"

मार के खौफ़ से नाज़िम को असल हाल कहना ही पड़ा। वह बोला, "चम्पा को मैंने ही बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूलों का गुच्छा उसके रास्ते में रख दिया जिसको सूंघकर वह बेहोश हो गई, तब मैंने उसे मालती लता के कुंज में डाल दिया और उसकी सूरत बना उसके कपड़े पहन तुम्हारी तरफ चला आया। लो, मैंने सब हाल कह दिया, अब तो छोड़ दो!"

चपला ने कहा, "ठहर, छोड़ती हूँ।" मगर फिर भी दस-पांच कोड़े और ज़मा ही दिये, यहाँ तक कि नाज़िम बिलबिला उठा, तब चपला ने चन्द्रकान्ता से कहा, "सखी, तुम इसकी निगहबानी करो, मैं चम्पा को ढूंढ़ कर लाती हूँ। कहीं वह पाजी झूठ न कहता हो!"

चम्पा को खोजती हुई चपला मालती लता के पास पहुंची और बत्ती जला कर ढूंढ़ने लगी। देखा कि सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है और बदन पर उसके एक लत्ता भी नहीं है। चपला उसे लखलखा सुंघाकर होश में लाई और पूछा, "क्यों मिज़ाज़ कैसा है, खा गई न धोखा।"

चम्पा ने कहा, "मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहाँ ऐयारी होगी ? इस जगह फूलों का एक गुच्छा पड़ा था जिसको उठाकर सूंघते ही मैं बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ! हाय, हाय! न जाने किसने मुझे बेहोश किया, मेरे कपड़े भी उतार लिए, बड़ी लागत के कपड़े थे!"

वहाँ पर नाज़िम के कपड़े पड़े हुए थे जिनमें से दो एक लेकर चपला ने चम्पा का बदन ढंका और तब यह कह कर कि 'मेरे साथ आ, मैं उसे दिखलाऊं जिसने तेरी ऐसी हालत की' चम्पा को साथ ले उस जगह आई जहाँ चन्द्रकान्ता और नाज़िम थे। नाज़िम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, "देख, इसी ने तेरे साथ यह भलाई की थी!" चम्पा को नाज़िम की सूरत देखते ही बड़ा गुस्सा आया और वह चपला से बोली, "बहन, अगर इज़ाज़त दो तो मैं भी दो-चार कोड़े लगा कर अपना गुस्सा निकाल लूं ?"

चपला ने कहा, "हाँ, हाँ, जितनी जी चाहे इस मुए को जूतियां लगाओ!" बस फिर क्या था, चम्पा ने मनमाने कोड़े नाज़िम को लगाये, यहाँ तक कि नाज़िम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, "खुदा, क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई!"

आखिरकार नाज़िम को उसी तहखाने में क़ैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुईं। यह छोटा-सा बाग जिसमें ऊपर लिखी बातें हुईं, महल के संग सटा हुआ उसके पिछवाड़े की तरफ पड़ता था और खास कर चन्द्रकान्ता के टहलने और हवा खाने के लिए ही बनवाया गया था। इसके चारों तरफ मुसलमानों का पहरा होने के सबब से ही अहमद और नाज़िम को अपना काम करने का मौका मिल गया था।

चौथा बयान

तेजसिंह वीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुंचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी, क्योंकि पहरे वाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे। आखिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए ? रात चांदनी है, अगर अंधेरी रात होती तो कमंद लगाकर ही महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की-सी बना महल की ड्योढ़ी पर पहुंचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, "य़ार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराज ने हमको अपनी अर्दली में नौकर रक्खा है, इस वक़्त छुट्टी थी, चांदनी रात का मज़ा देखते-टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूंक हम भी लगा लें, अफ़ीम खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है आप लोग भी जानते ही होंगे!"

"हाँ, हाँ, आइए, बैठिए, तम्बाकू पीजिए!" कहकर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता, हाँ, हाथ से ज़रूर पी लूंगा।" यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

उन्होंने दो फूंक भी तम्बाकू के नहीं पिए थे कि खांसना शुरू किया, इतना खांसा कि थोड़ा-सा पानी भी मुंह से निकाल दिया और तब कहा, "मियां तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो ? मैं तो हमेशा सरकारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गई है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा नहीं लगता!"

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "तुम लोग भी पीकर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा। पीना क्या सपने में भी न देखा होगा। झट हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई, तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू पी लें। तुम बड़े किस्मतवार हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे!" यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल ज़माकर तेजसिंह के सामने लाये। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग सुलगाओ, फिर मैं भी ले लूंगा।"

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते-झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गये और नज़र बचाकर बाग में पहुंचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूं तक न कर सकी और ज़मीन पर गिर पड़ी। तुरन्त उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब वह बेहोश हो गई तो उसे वहाँ से उठाकर किनारे ले गये। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आईना रख अपनी सूरत उसी के जैसी बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी के कपड़े पहन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुंचे जहाँ चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा दस पांच लौंडियों के साथ बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बनाये हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, “क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ गई है ?”

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि जिस लौंडी को मैंने बेहोश किया है और जिसकी सूरत बनाकर आया हूँ उसका नाम केतकी है।

नकली केतकी: हाँ, काम करने तो गई थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिए लौट आई हूँ।

चपला: ऐसा! अच्छा तूने क्या देखा, कह ?

नकली केतकी: सभी को हटा दो तो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊं।

सब लौंडियां हटा दी गंइ और केवल चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा रह गईं। अब केतकी ने हँसकर कहा, “कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊं।”

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद वह कुछ वीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर फिर यह भी सोचा कि मैंने तो आजतक कभी वीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया तब यह क्या मामला है ? कौन-सी खुशखबरी है जिसके सुनाने के लिए यह पहले ही से इनाम मांगती है ? आखिर चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, “हाँ हाँ, इनाम दूंगी, तू कह तो सही, क्या खुशखबरी लाई है ?”

केतकी ने कहा, “पहले दे दो तो कहूं, नहीं तो जाती हूँ।” यह कह उठकर खड़ी हो गई।

केतकी के ये नखरे देख चपला से न रहा गया और वह बोल उठी, “क्यों री केतकी, आज तुझको क्या हो गया है कि ऐसी बढ़-बढ़ के बातें कर रही है। लगाऊं दो लात उठ के!”

केतकी ने जवाब दिया, “क्या मैं तुझसे कमज़ोर हूँ जो तू लात लगावेगी और मैं छोड़ दूंगी!”

अब तो चपला से न रहा गया और केवकी का झोंटा पकड़ने के लिए दौड़ी, यहाँ तक कि दोनों आपस में गुंथ गईं। इत्तिफाक से चपला का हाथ नकली केतकी की छाती पर पड़ा जहाँ की सफाई देख वह घबरा उठी और झट अलग हो गई।

नकली केतकी: (हँसकर) क्यों, भाग क्यों गई ? आओ लड़ो!

चपला अपनी कमर से कटार निकाल सामने हुई और बोली, "ओ ऐयार, सच बता तू कौन है, नहीं तो अभी जान ले डालती हूँ!"

इसका जवाब नकली केतकी ने चपला को कुछ न दिया और वीरेन्द्रसिंह की चिट्ठी निकाल कर चन्द्रकान्ता के सामने रख दी। चपला की नज़र भी इस चिट्ठी पर पड़ी और गौर से देखने लगी। वीरेन्द्रसिंह के हाथ की लिखावट देख समझ गई कि यह तेजसिंह है, क्योंकि सिवाय तेजसिंह के और किसी के हाथ वीरेन्द्रसिंह कभी चिट्ठी नहीं भेजेंगे। यह सोच-समझ चपला शरमा गई और गर्दन नीची कर चुप हो रही, मगर जी में तेज सिंह की सफाई और चालाकी की तारीफ करने लगी, बल्कि सच तो यह है कि तेजसिंह की मुहब्बत ने उसके दिल में जगह बना ली।

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुहब्बत से वीरेन्द्रसिंह का खत पढ़ा और तब तेजसिंह से बातचीत करने लगी-

चन्द्रकान्ता: क्यों तेजसिंह, उनका मिज़ाज़ तो अच्छा है ?

तेजसिंह: मिज़ाज़ क्या खाक अच्छा होगा ? खाना-पीना सब छूट गया, रोते-रोते आखें सूर्ज आइं, दिन-रात तुम्हारा ध्यान है, बिना तुम्हारे मिले उनको कब आराम है। हज़ार समझाता हूँ मगर कौन सुनता है! अभी उसी दिन तुम्हारी चिट्ठी लेकर मैं गया था, आज उनकी हालत देख फिर यहाँ आना पड़ा। कहते थे कि मैं खुद चलूंगा, किसी तरह समझा-बुझाकर यहाँ आने से रोका और कहा कि आज मुझको जाने दो, मैं जाकर वहाँ बन्दोबस्त कर आऊं तब तुमको ले चलूंगा जिससे किसी तरह का नुकसान न हो।

चन्द्रकान्ता: अफ़सोस! तुम उनको अपने साथ न लाये, कम-से-कम मैं उनका दर्शन तो कर लेती ? देखो यहाँ क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों ने इतना ऊधम मचा रखा है कि कुछ कहा नहीं जाता। पिताजी को मैं कितना रोकती और समझाती हूँ कि क्रूरसिंह के दोनों ऐयार मेरे दुश्मन हैं मगर महाराज कुछ नहीं सुनते, क्योंकि क्रूरसिंह ने उनको अपने वश में कर रखा है। मेरी और कुमार की मुलाकात का हाल बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर महाराज को न मालूम किस तरह समझा दिया है कि महाराज उसे सच्चों का बादशाह समझ गये हैं, वह हरदम महाराज के कान भरा करता है। अब वे मेरी कुछ भी नहीं सुनते, हाँ आज बहुत कुछ कहने का मौका मिला है क्योंकि आज मेरी प्यारी सखी चपला ने नाज़िम को इस पिछवाड़े वाले बाग में गिरफ्तार किया है, कल महाराज के सामने उसको ले जाकर तब कहूंगी कि आप अपने क्रूरसिंह की सच्चाई को देखिए, अगर मेरे पहरे पर मुकर्रर किया ही था तो बाग के अन्दर जाने की इजाज़त इसे किसने दी थी ?

यह कह कर चन्द्रकान्ता ने नाज़िम के गिरफ्तार होने और बाग के तहखाने में क़ैद करने का सारा हाल तेजसिंह से कह सुनाया।

तेजसिंह चपला की चालाकी सुनकर हैरान हो गये और मन-ही-मन उसको प्यार करने लगे, पर कुछ सोचने के बाद बोले, "चपला ने चालाकी तो खूब की मगर धोखा खा गई।"

यह सुन चपला हैरान हो गई कि हाय राम! मैंने क्या धोखा खाया! पर कुछ समझ में नहीं आया। आखिर न रहा गया, तेजसिंह से पूछा, "जल्दी बताओ, मैंने क्या धोखा खाया ?" तेजसिंह ने कहा, "क्या तुम इस बात को नहीं जानती थीं कि नाज़िम बाग में पहुंचा तो अहमद भी ज़रूर आया होगा ? फिर बाग ही में नाज़िम को क्यों छोड़ दिया ? तुमको मुनासिब था कि जब उसको गिरफ्तार ही किया था तो महल में लाकर क़ैद करतीं या उसी वक़्त महाराज के पास भिजवा देतीं, अब ज़रूर अहमद नाज़िम को छुड़ा ले गया होगा।"

इतनी बात सुनते ही चपला के होश उड़ गये और बहुत शर्मिन्दा होकर बोली, "सच है, बड़ी भारी गलती हुई, इसका किसी ने खयाल न किया!"

तेजसिंह: और कोई क्यों खयाल करता! तुम तो चालाक बनती हो, ऐयारा कहलाती हो, इसका खयाल तुमको होना चाहिए कि दूसरों को ? खैर, जाके देखो, वह है या नहीं ?

चपला दौड़ी हुई बाग की तरफ गई। तहखाने के पास जाते ही देखा कि दरवाज़ा खुला पड़ा है। बस फिर क्या था ? यकीन हो गया कि नाज़िम को अहमद छुड़ा ले गया। तहखाने के अन्दर जाकर देखा तो खाली पड़ा हुआ था। अपनी बेवकूफी पर अफसोस करती लौट आई और बोली, "क्या कहूं, सचमुच अहमद नाज़िम को छुड़ा ले गया।" अब तेजसिंह ने छेड़ना शुरू किया, "बड़ी ऐयार बनती थीं, कहती थीं हम चालाक हैं, होशियार हैं, ये हैं, वो हैं। बस एक अदने ऐयार ने नाकों दम कर डाला!"

चपला झुंझला उठी और चिढ़कर बोली, "चपला नाम नहीं जो अबकी बार दोनों को गिरफ्तार कर इसी कमरे में लाकर बेहिसाब जूतियां न लगाऊँ।"

तेजसिंह ने कहा, "बस तुम्हारी कारीगरी देखी गई। अब देखो, मैं कैसे एक-एक को गिरफ्तार कर अपने शहर में ले जाकर क़ैद करता हूँ।"

इसके बाद तेजसिंह ने अपने आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता और चपला से कह सुनाया और यह भी बतला दिया कि फलां जगह पर मैं केतकी को बेहोश कर के डाल आया हूँ, तुम जाकर उसे उठा लाना। उसके कपड़े मैं न दूंगा क्योंकि इसी सूरत से बाहर चला जाता हूँ। देखो, सिवाय तुम तीनों के यह हाल और किसी को न मालूम हो, नहीं तो सब काम बिगड़ जायेगा।

चन्द्रकान्ता ने तेजसिंह से ताकीद की कि "दूसरे, तीसरे दिन तुम ज़रूर यहाँ आया करो, तुम्हारे आने से हिम्मत बनी रहती है।"

"बहुत अच्छा, मैं ऐसा ही करूंगा!" कह कर तेजसिंह चलने को तैयार हुए। चन्द्रकान्ता उन्हें जाते देख रोकर बोली, "क्यों तेजसिंह, क्या मेरी किस्मत में कुमार की मुलाकात नहीं

बदी है ?” इतना कहते ही गला भर आया और वह फूट-फूट कर रोने लगी। तेजसिंह ने बहुत समझाया और कहा कि देखो, यह सब बखेड़ा इसी वास्ते किया जा रहा है जिससे तुम्हारी उनसे हमेशा के लिए मुलाकात हो, अगर तुम ही घबड़ा जाओगी तो कैसे काम चलेगा ? बहुत कुछ समझा-बुझाकर चन्द्रकान्ता को चुप कराया, तब वहाँ से रवाना हो केतकी की सूरत में दरवाज़े पर आये। देखा तो दो-चार प्यादे होश में आये हैं बाकी चित्त पड़े हैं, कोई औंधा पड़ा है, कोई उठा तो है मगर फिर भी झुका ही जाता है। नकली केतकी ने डपट कर दरबानों से कहा, “तुमलोग पहरा देते हो या ज़मीन सूंघते हो ?” इतनी अफीम क्यों खाते हो कि आंखें नहीं खुलतीं, और सोते हो तो मुर्दों से बाजी लगाकर! देखो, मैं बड़ी रानी से कहकर तुम्हारी क्या दशा कराती हूँ।”

जो चोबदार होश में आ चुके थे, केतकी की बात सुनकर सन्न हो गये और लगे खुशामद करने-

“देखो केतकी, माफ करो, आज एक नालायक सरकारी चोबदार ने आकर धोखा दे ऐसा ज़हरीला तम्बाकू पिला दिया कि हम लोगों की यह हालत हो गई। उस पाजी ने तो जान से मारना चाहा था, अल्लाह ने बचा दिया नहीं तो मारने में क्या कसर छोड़ी थी! देखो, रोज़ तो ऐसा नहीं होता था, आज धोखा खा गये। हम हाथ जोड़ते हैं, अब कभी ऐसा देखो तो जो चाहे सज़ा देना!”

नकली केतकी ने कहा, “अच्छा, आज तो छोड़ देती हूँ मगर खबरदार! जो फिर कभी ऐसा हुआ!” यह कहते हुए तेजसिंह बाहर निकल गये। डर के मारे किसी ने यह भी न पूछा कि केतकी तू कहाँ जा रही है ?

पाँचवाँ बयान

अहमद ने, जो बाग के पेड़ पर बैठा हुआ था जब देखा कि चपला ने नाज़िम को गिरफ्तार कर लिया और महल में चली गई तो सोचने लगा कि चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बस यही तीनों महल में गई हैं, नाज़िम इन सभी के साथ नहीं गया तो ज़रूर वह इस बगीचे में ही कहीं क़ैद होगा, यह सोच वह पेड़ से उतर उसे इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। जब उस तहखाने के पास पहुंचा जिसमें नाज़िम क़ैद था तो भीतर से चिल्लाने की आवाज़ आई जिसे सुन उसने पहचान लिया कि नाज़िम की आवाज़ है। तहखाने के किवाड़ खोल अन्दर गया, नाज़िम को बंधा-पा झट से उसकी रस्सी खोली और तहखाने से बाहर आकर बोला, "चलो जल्दी, इस बगीचे के बाहर हो जायें तब सब हाल सुनें कि क्या हुआ।"

नाज़िम और अहमद बगीचे के बाहर आये और चलते-चलते आपस में बात-चीत करने लगे। नाज़िम ने चपला के हाथ फंस जाने और कोड़ा खाने का पूरा हाल कहा।

अहमद: भाई नाज़िम, जब तक पहले चपला को हम लोग न पकड़ लेंगे तब तक कोई काम न होगा, क्योंकि चपला बड़ी चालाक है और धीरे-धीरे चम्पा को भी तेज़ कर रही है। अगर वह गिरफ्तार न की जायेगी तो थोड़े ही दिनों में एक की दो हो जाएंगी यानी चम्पा भी इस काम में तेज़ होकर चपला का साथ देने के लायक हो जायेगी।

नाज़िम: ठीक है, खैर, आज तो कोई काम नहीं हो सकता, मुश्किल से जान बची है। हाँ, कल पहले यही काम करना है, यानी जिस तरह हो चपला को पकड़ना और ऐसी जगह छिपाना है कि जहाँ पता न लगे और अपने ऊपर किसी को शक भी न हो।

ये दोनों आपस में धीरे-धीरे बातें करते चले जा रहे थे, थोड़ी देर में जब महल के अगले दरवाज़े के पास पहुंचे तो देखा कि केतकी जो कुमारी चन्द्रकान्ता की लौंडी है, सामने से चली आ रही है।

तेजसिंह ने भी जो केतकी के वेश में चले आ रहे थे, नाज़िम और अहमद को देखते ही पहचान लिया और सोचने लगे कि भले मौके पर ये दोनों मिल गये हैं और अपनी भी सूरत अच्छी है, इस समय इन दोनों से कुछ खेल करना चाहिए और बन पड़े तो दोनों नहीं, एक को तो ज़रूर ही पकड़ना चाहिए।

तेजसिंह जान-बूझकर इन दोनों के पास से होकर निकले। नाज़िम और अहमद भी यह सोच कर उसके पीछे हो लिए कि देखें कहाँ जाती है ? नकली केतकी (तेजसिंह) ने मुड़कर देखा और कहा, "तुम लोग मेरे पीछे-पीछे क्यों चले आ रहे हो ? जिस काम पर मुकर्रर हो

उस काम को करो!” अहमद ने कहा, “किस काम पर मुकर्रर हैं और क्या करें, तुम क्या जानती हो ?” केतकी ने कहा, “मैं सब जानती हूँ! तुम वही काम करो जिसमें चपला के हाथ की जूतियां नसीब हों! जिस जगह तुम्हारी मददगार एक लौंडी तक नहीं है वहाँ तुम्हारे किये क्या होगा ?”

नाज़िम और अहमद केतकी की बात सुन कर दंग रह गये और सोचने लगे कि यह तो बड़ी चालाक मालूम होती है। अगर हम लोगों के मेल में आ जाय तो बड़ा काम निकले, इसकी बातों से मालूम भी होता है कि कुछ लालच देने पर हम लोगों का साथ देगी।

नाज़िम ने कहा, “सुनो केतकी, हम लोगों का तो काम ही चालाकी करने का है। हम लोग अगर पकड़े जाने और मरने-मारने से डरंे तो कभी काम न चले, इसी की बदौलत खाते हैं, बात-की-बात में हज़ारों रुपये इनाम मिलते हैं, खुदा की मेहरबानी से तुम्हारे जैसे मददगार भी मिल जाते हैं जैसे आज तुम मिल गई। अब तुमको भी मुनासिब है कि हमारी मदद करो, जो कुछ हमको मिलेगा उसमें से हम तुमको भी हिस्सा देंगे।”

केतकी ने कहा, “सुनो जी, मैं उम्मीद के ऊपर जान देने वाली नहीं हूँ, वे कोई दूसरे होंगे। मैं तो पहले दाम लेकर काम करती हूँ। अब इस वक़्त अगर कुछ मुझको दो तो मैं अभी तेजसिंह को तुम्हारे हाथ गिरफ्तार करा दूं। नहीं तो जाओ, जो कुछ करते हो, करो।”

तेजसिंह की गिरफ्तारी का नाम सुनते ही इन दोनों की तबीयत खुश हो गई! नाज़िम ने कहा, “अगर आज तेजसिंह को पकड़वा दो तो जो कहो हम तुमको दें।”

केतकी: एक हज़ार रुपये से कम मैं हरगिज़ न लूंगी। अगर मंज़ूर हो तो लाओ रुपये मेरे सामने रखो।

नाज़िम: अब इस वक़्त आधी रात को मैं कहाँ से रुपये लाऊं, हाँ कल ज़रूर दे दूंगा।

केतकी: ऐसी बातें मुझसे न करो। मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं उधार सौदा नहीं करती, लो मैं जाती हूँ।

नाज़िम: (आगे से रोक कर) सुनो तो, तुम खफा क्यों होती हो ? अगर तुमको हम लोगों का एतबार न हो तो तुम इसी जगह ठहरो, हम लोग जाकर रुपये ले आते हैं।

केतकी: अच्छा, एक आदमी यहाँ मेरे पास रहो और एक आदमी जाकर रुपये ले आओ।

नाज़िम: अच्छा, अहमद यहाँ तुम्हारे पास ठहरता है, मैं जाकर रुपये ले आता हू।

यह कहकर नाज़िम ने अहमद को तो उसी जगह छोड़ा और आप खुशी-खुशी क्रूरसिंह की तरफ रुपये लेने को चला।

नाज़िम के चले जाने के बाद थोड़ी देर तक केतकी और अहमद इधर-उधर की बातें करते रहे। बात करते-करते केतकी ने दो-चार इलायची बटुए से निकालकर अहमद को दीं और आप भी खाईं। अहमद को तेजसिंह के पकड़े जाने की उम्मीद में इतनी खुशी थी कि कुछ सोच न सका और इलायची खा गया, मगर थोड़ी ही देर बाद उसका सिर घूमने लगा। तब वह समझ गया कि बेशक यह कोई ऐयार (चालाक) है जिसने धोखा दिया। चट कमर

से खंजर खींच बिना कुछ कहे केतकी को मारा, मगर केतकी पहले से होशियार थी, दांव बचाकर उसने अहमद की कलाई पकड़ ली जिससे अहमद कुछ न कर सका बल्कि ज़रा ही देर बाद बेहोश होकर गिर पड़ा। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बांधकर चादर में गठरी कसी और पीठ पर लाद नौगढ़ का रास्ता लिया। खुशी के मारे जल्दी-जल्दी कदम बढ़ते चले गये, यह भी खयाल था कि कहीं ऐसा न हो कि नाज़िम आ जाए और पीछा करे।

इधर नाज़िम रुपये लेने के लिए गया तो सीधे क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचा। उस वक़्त क्रूरसिंह गहरी नींद में सो रहा था। जाते ही नाज़िम ने उसको जगाया, क्रूरसिंह ने पूछा, “क्या है जो इस वक़्त आधी रात के समय आकर मुझे उठा रहे हो ?”

नाज़िम ने क्रूरसिंह से अपनी पूरी कैफियत, यानी चन्द्रकान्ता के बाग में जाना और गिरफ्तार होकर कोड़े खाना, अहमद का छुड़ा लाना, फिर वहाँ से रवाना होना, रास्ते में केतकी से मिलना और हज़ार रुपये पर तेजसिंह को पकड़वा देने की बातचीत तय करना वगैरह सब खुलासा कह सुनाया। क्रूरसिंह ने नाज़िम के पकड़े जाने का हाल सुनकर कुछ अफसोस तो किया मगर पीछे तेजसिंह के गिरफ्तार होने की उम्मीद सुन कर उछल पड़ा और बोला, “लो, अभी हज़ार रुपये देता हूँ, बल्कि खुद तुम्हारे साथ चलता हूँ” यह कहकर उसने हज़ार रुपये सन्दूक में से निकाले और नाज़िम के साथ हो लिया।

जब नाज़िम क्रूरसिंह को साथ लेकर वहाँ पहुंचा जहाँ अहमद और केतकी को छोड़ गया था तो दोनों में से कोई न मिला। नाज़िम तो सन्न हो गया और उसके मुंह से झट यह बात निकल पड़ी कि 'धोखा हुआ!'

क्रूरसिंह: कहो नाज़िम, क्या हुआ ?

नाज़िम: क्या कहूं, वह ज़रूर केतकी नहीं कोई ऐयार था जिसने पूरा धोखा दिया और अहमद को तो ले ही गया।

क्रूरसिंह: खूब, तुम तो बाग में ही चपला के हाथ पिट चुके थे, अहमद बाकी था सो वह भी इस वक़्त कहीं जूते खाता होगा, चलो छुट्टी हुई।

नाज़िम ने शक मिटाने के लिए थोड़ी देर तक इधर-उधर खोज भी की पर कुछ पता न लगा, आखिर रोते-पीटते दोनों ने घर का रास्ता लिया।

छठवां बयान

तेजसिंह को विजयगढ़ की तरफ विदा कर वीरेन्द्रसिंह अपने महल में आये मगर किसी काम में उनका दिल न लगता था। हरदम चन्द्रकान्ता की याद में सिर झुकाए बैठे रहना और जब कभी निराश हो जाना तो चन्द्रकान्ता की तस्वीर अपने सामने रखकर बातें किया करना, या पलंग पर लेट मुंह ढांप खूब रोना, बस यही उनका काम था। अगर कोई पूछता तो बातें बना देते। वीरेन्द्रसिंह के बाप सुरेन्द्रसिंह को वीरेन्द्रसिंह का सब हाल मालूम था मगर क्या करते, कुछ बस नहीं चलता था, क्योंकि विजयगढ़ का राजा उनसे बहुत ज़बरदस्त था और हमेशा उन पर हुकूमत रखता था।

वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को विजयगढ़ जाती बार कह दिया था कि तुम आज ही लौट आना। रात बारह बजे तक वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की राह देखी, जब वह न आये तो उनकी घबराहट और भी ज़्यादा हो गई। आखिर अपने को संभाला और मसहरी पर लेट दरवाज़े की तरफ देखने लगे। सवेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह पीठ पर एक गट्ठा लादे आ पहुंचे। पहरे वाले इस हालत में इनको देख हैरान थे, मगर खौफ़ से कुछ कह नहीं सकते थे। तेजसिंह ने वीरेन्द्रसिंह के कमरे में पहुंचकर देखा कि अभी तक वे जाग रहे हैं। वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह को देखते ही उठ खड़े हुए और बोले, “कहो भाई, क्या खबर लाये ?”

तेजसिंह ने वहाँ का सब हाल सुनाया, चन्द्रकान्ता की चिट्ठी हाथ पर रख दी, अहमद को गठरी खोल के दिखा दिया और कहा, “यह चिट्ठी है, और यह सौगात!”

वीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए। चिट्ठी को कई मर्तबा पढ़ा और आंखों से लगाया, फिर तेजसिंह से कहा, “सुनो भाई, इस अहमद को ऐसी जगह रखो जहाँ किसी को मालूम न हो, अगर जयसिंह को खबर लगेगी तो फसाद बढ़ जायेगा।”

तेजसिंह: इस बात को मैं पहले से सोच चुका हूं। मैं इसको एक पहाड़ी खोह में में रख आता हूँ जिसको मैं ही जानता हूँ।

यह कह कर तेजसिंह ने फिर अहमद की गठरी बांधी और एक प्यादे को भेजकर देवीसिंह नामी ऐयार को बुलाया जो तेजसिंह का शागिर्द, दिली दोस्त और रिश्ते में साला लगता था, तथा ऐयारी के फन में भी तेजसिंह से किसी तरह कम न था। जब देवीसिंह आ गये तब तेजसिंह ने अहमद की गठरी अपनी पीठ पर लादी और देवीसिंह से कहा, “आओ, हमारे साथ चलो, तुमसे एक काम है।” देवीसिंह ने कहा, “गुरुजी, वह गठरी मुझको दो, मैं

ले चलूं, मेरे रहते यह काम आपको अच्छा नहीं लगता।” आखिर देवीसिंह ने वह गठरी पीठ पर लाद ली और तेजसिंह के पीछे चल पड़े।

वे दोनों शहर के बाहर ही जंगल और पहाड़ियों में घूमघुमौवे पेचीदे रास्तों में जाते-जाते दो कोस के करीब पहुंच कर एक अंधेरी खोह में घुसे। थोड़ी देर चलने के बाद कुछ रोशनी मिली। वहा जाकर तेजसिंह ठहर गये और देवीसिंह से बोले, “गठरी रख दो।”

देवीसिंह: (गठरी रखकर) गुरुजी, यह तो अजीब जगह है, अगर कोई आवे भी तो यहाँ से जाना मुश्किल हो जाए।

तेजसिंह: सुनो देवीसिंह, इस जगह को मेरे सिवाय कोई नहीं जानता, तुमको अपना दिली दोस्त समझ कर ले आया हूं, तुम्हें अभी बहुत कुछ काम करना होगा।

देवीसिंह: मैं तुम्हारा ताबेदार हूँ, तुम गुरु हो क्योंकि ऐयारी तुम्हीं ने मुझको सिखाई है, अगर मेरी जान की ज़रूरत पड़े तो मैं देने को तैयार हूँ।

तेजसिंह: सुनो, और मैं जो बातें तुमसे कहता हूँ उनका अच्छी तरह खयाल रखो। यह सामने जो पत्थर का दरवाज़ा देखते हो इसको खोलना सिवाय मेरे कोई भी नहीं जानता, या फिर मेरे उस्ताद जिन्होंने मुझको ऐयारी सिखाई, वे जानते थे। वे तो अब हैं नहीं, मर गये, इस समय सिवाय मेरे कोई नहीं जानता, और मैं तुमको इसका खोलना बतलाये देता हूँ। जिस-जिस को मैं पकड़ कर लाया करूंगा इसी जगह लाकर क़ैद किया करूंगा जिससे किसी को मालूम न हो और कोई छुड़ा के भी न ले जा सके। इसके अन्दर क़ैद करने से क़ैदियों के हाथ-पैर बांधने की ज़रूरत नहीं रहेगी, सिर्फ हिफाज़त के लिए एक खुलासी बेड़ी उनके पैर में डाल देनी पड़ेगी जिससे वह धीरे-धीरे चल-फिर सकें। क़ैदियों के खाने-पीने की भी फिक्र तुमको नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि इसके अन्दर एक छोटी-सी कुदरती नहर है जिसमें बराबर पानी रहता है, यहाँ मेवों के दरख्त भी बहुत हैं। इस ऐयार को इसी में क़ैद करते हैं, बाद इसके महाराज से यह बहाना करके कि आजकल मैं बीमार रहता हूँ, अगर एक महीने की छुट्टी मिले तो आबोहवा बदल आऊं, महीने भर की छुट्टी ले लो। मैं कोशिश करके तुम्हें छुट्टी दिला दूंगा। तब तुम भेष बदल कर विजयगढ़ जाओ और बराबर वहीं रहकर इधर-उधर की खबर लिया करो, जो कुछ हाल हो मुझसे कहा करो और जब मौका देखो तो बदमाशों को गिरफ्तार करके इसी जगह ला उनको क़ैद भी कर दिया करो।

और भी बहुत-सी बातें देवीसिंह को समझाने के बाद तेजसिंह दरवाज़ा खोलने चले। दरवाज़े के ऊपर एक बड़ा-सा चेहरा शेर का बना हुआ था जिसके मुँह में हाथ बखूबी जा सकता था। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, “इस चेहरे के मुँह में हाथ डालकर इसकी जुबान बाहर खींचो।” देवीसिंह ने वैसा ही किया और हाथ भर के करीब जुबान खींच ली। उसके खिंचते ही एक आवाज़ हुई और दरवाज़ा खुल गया। अहमद की गठरी लिये हुए दोनों अन्दर गये। देवीसिंह ने देखा कि वह खूब ख़ुलासा जगह, बल्कि कोस भर का साफ मैदान है। चारों तरफ ऊंची-ऊंची पहाड़ियां जिन पर किसी तरह आदमी चढ़ नहीं सकता, बीच में

एक छोटा-सा झरना पानी का बह रहा है और बहुत से जंगली मेवों के दरख्तों से अजब सुहावनी जगह मालूम होती है। चारों तरफ की पहाड़ियां, नीचे से ऊपर तक छोटे-छोटे करजनी, घुमची, बेर, मकोइये, चिरौंजी वगैरह के घने दरख्तों और लताओं से भरी हुई हैं। बड़े-बड़े पत्थर के ढोंके मस्त हाथी की तरह दिखाई देते हैं। ऊपर से पानी गिर रहा है जिसकी आवाज़ बहुत भली मालूम होती है। हवा चलने से पेड़ों की सरसराहट और पानी की आवाज़ तथा बीच में मोरों का शोर और भी दिल को खींचे लेता है। नीचे जो चश्मा पानी का पश्चिम से पूरब की तरफ घूमता हुआ बह रहा है उसके दोनों तरफ जामुन के पेड़ लगे हुए हैं और पके जामुन उस चश्मे के पानी में गिर रहे हैं। पानी भी चश्मे का इतना साफ है कि ज़मीन दिखाई देती है, कहीं हाथ भर, कहीं कमर बराबर, कहीं उससे भी ज़्यादा होगा। पहाड़ों में कुदरती खोह बने हैं जिनके देखने से मालूम होता है मानो ईश्वर ने यहाँ सैलानियों के रहने के लिए कोठरियां बना दी हैं। चारों तरफ की पहाड़ियां ढलवां और बनिस्बत नीचे के ऊपर से ज़्यादा खुलासा थीं और उन पर बादल के टुकड़े छोटे-छोटे शामियानों का मज़ा दे रहे थे। यह जगह ऐसी सुहावनी थी कि वर्षों रहने पर भी किसी की तबीयत न घबराये बल्कि खुशी मालूम हो।

सुबह हो गई। सूरज निकल आया। तेजसिंह ने अहमद की गठरी खोली। उसका ऐयारी का बटुआ और खंजर जो कमर में बंधा था, ले लिया और एक बेड़ी उसके पैर में डालने के बाद होशियार किया। जब अहमद होश में आया और उसने अपने को इस अजब दिलचस्प मैदान में देखा तो यकीन हो गया कि वह मर गया है और फरिश्ते उसको यहां ले आये हैं। लगा कलमा पढ़ने। तेजसिंह को उसके कलमा पढ़ने पर हंसी आई, बोले, “मियां साहब, आप हमारे क़ैदी हैं, इधर देखिए!” अहमद ने तेजसिंह की तरफ देखा, पहचानते ही जान सूख गई, समझ गया कि तब न मरे तो अब मरे। बीवी केतकी की सूरत आखों के सामने फिर गई, खौफ़ ने उसका गला ऐसा दबाया कि एक हर्फ़ भी मुंह से न निकल सका।

अहमद को उसी मैदान में चश्मे के किनारे छोड़ दोनों ऐयार बाहर निकल आये। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, “इस शेर की जुबान जो तुमने बाहर खींच ली है उसी के मुँह में डाल दो।” देवीसिंह ने वैसा ही किया। जुबान उसके मुँह में डालते ही ज़ोर से दरवाज़ा बन्द हो गया और दोनों आदमी उसी पेचीली राह से घर की तरफ रवाना हुए।

पहर भर दिन चढ़ा होगा जब ये दोनों लौटकर वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे। वीरेन्द्रसिंह ने पूछा, “अहमद को कहाँ क़ैद करने ले गये थे जो इतनी देर लगी ?” तेजसिंह ने जवाब दिया, “एक पहाड़ी खोह में क़ैद कर आया हूँ, आज आपको भी वह जगह दिखाऊंगा, पर मेरी राय है कि देवीसिंह थोड़े दिन भेष बदल कर विजयगढ़ में रहे। ऐसा करने से मुझको बड़ी मदद मिलेगी।” इसके बाद वह सब बातें भी वीरेन्द्रसिंह को कह सुनाईं जो खोह में देवीसिंह को समझाई थीं और जो कुछ राय ठहरी थी वह भी कहा जिसे वीरेन्द्रसिंह ने बहुत पसंद किया।

स्नान-पूजा और मामूली कामों से फुरसत-पा दोनों आदमी देवीसिंह को साथ लिए राजदरबार में गये। देवीसिंह ने छुट्टी के लिए अर्ज़ किया। राजा देवीसिंह को बहुत चाहते थे, छुट्टी देना मंज़ूर न था, कहने लगे-"हम तुम्हारी दवा यहाँ ही कराएंगे।" आखिर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की सिफारिश से छुट्टी मिली। दरबार बर्खास्त होने पर वीरेन्द्रसिंह राजा के साथ महल में चले गये और तेजसिंह अपने पिता जीतसिंह के साथ घर आये, देवीसिंह को भी साथ लाये और सफर की तैयारी कर उसी समय उनको रवाना कर दिया। जाती दफा उन्हें और कई बातें समझा दीं।

दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ वीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गये जहाँ अहमद को क़ैद किया था। कुमार उस जगह को देखकर बहुत ही खुश हुए और बोले, "भाई, इस जगह को देखकर तो मेरे दिल में बहुत-सी बातें पैदा होती हैं।" तेजसिंह ने कहा, "पहले-पहल इस जगह को देखकर मैं तो आपसे भी ज़्यादा हैरान हुआ था, मगर गुरुजी ने बहुत कुछ हाल वहाँ का समझा कर मेरी दिलजमई कर दी थी जो किसी दूसरे वक़्त आपसे कहूंगा।"

वीरेन्द्रसिंह इस बात को सुनकर और भी हैरान हुए और उस घाटी की कैफियत जानने के लिए ज़िद करने लगे। आखिर तेजसिंह ने वहाँ का हाल जो कुछ अपने गुरु से सुना था, कहा, जिसे सुनकर वीरेन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न हुए। तेजसिंह ने वीरेन्द्रसिंह से क्या कहा, वे इतना खुश क्यों हुए, और यह घाटी कैसी थी यह सब हाल किसी दूसरे मौके पर बयान किया जायेगा।

वे दोनों यहाँ से रवाना हो अपने महल पर आये। कुमार ने कहा, "भाई, अब तो मेरा हौसला बहुत बढ़ गया है। जी में आता है कि जयसिंह से लड़ जाऊं।" तेजसिंह ने कहा, "आपका हौसला ठीक है मगर जल्दी करने से चन्द्रकान्ता की जान का खौफ़ है। आप इतना घबराते क्यों है ? देखिए, तो क्या होता है ? कल मैं फिर जाऊंगा और मालूम करूंगा कि अहमद के पकड़े जाने से दुश्मनों की क्या कैफियत हुई, फिर दूसरी बार आपको ले चलूंगा।" वीरेन्द्रसिंह ने कहा, "नहीं, अब की बार मैं ज़रूर चलूंगा, इस तरह एकदम डरपोक होकर बैठे रहना मर्दों का काम नहीं।"

तेजसिंह ने कहा, "अच्छा, आप भी चलिए, हर्ज़ क्या है, मगर एक काम होना ज़रूरी है जो यह कि महाराज से पांच-चार रोज़ के लिए शिकार की छुट्टी लीजिये और अपनी सरहद पर डेरा डाल दीजिए, वहाँ से कुल ढाई कोस चन्द्रकान्ता का महल रह जायेगा, तब हर तरह का सुभीता होगा।" इस बात को वीरेन्द्रसिंह ने भी पसन्द किया और आखिर यही राय पक्की ठहरी।

कुछ दिन बाद वीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता राजा सुरेन्द्रसिंह से शिकार के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली और थोड़े से अपने दिली आदमियों को, जो खास उन्हीं के खिदमती थे और उनको जान से ज़्यादा चाहते थे, साथ ले रवाना हुए। थोड़ा-सा दिन बाकी था तब नौगढ़

और विजयगढ़ के सिमाने पर इन लोगों का डेरा पड़ गया। रात भर वहाँ मुकाम रहा और यह राय ठहरी कि पहले तेजसिंह विजयगढ़ जाकर हाल-चाल ले आवे।

सातवां बयान

अहमद के पकड़े जाने से नाज़िम बहुत उदास हो गया और क्रूरसिंह को तो अपनी ही फिक्र पड़ गई कि कहीं तेजसिंह मुझको भी न पकड़ ले जाये! इस खौफ़ से वह हरदम चैकन्ना रहता था, मगर महाराज जयसिंह के दरबार में रोज़ जाता और वीरेन्द्रसिंह के प्रति उनको भड़काया करता।

एक दिन नाज़िम ने क्रूरसिंह को यह सलाह दी कि जिस तरह हो सके अपने बाप कुपथसिंह को मार डालो, उसके मरने के बाद जयसिंह ज़रूर तुमको मंत्री (वज़ीर) बनायेंगे, उस वक़्त तुम्हारी हुकूमत हो जाने से सब काम बहुत जल्द होगा। आखिर क्रूरसिंह ने ज़हर दिलवा कर अपने बाप को मरवा डाला। महाराज ने कुपथसिंह के मरने पर अफसोस किया और कई दिन तक दरबार में न आये। शहर में भी कुपथसिंह के मरने का गम छा गया।

क्रूरसिंह ने ज़ाहिर में अपने बाप के मरने का बड़ा भारी मातम (गम) किया और बारह रोज़ के वास्ते अलग बिस्तर ज़माया। दिन भर तो अपने बाप को रोता पर रात को नाज़िम के साथ बैठकर चन्द्रकान्ता से मिलने तथा तेजसिंह और वीरेन्द्रसिंह को गिरफ्तार करने की फिक्र करता। इन्हीं दिनों वीरेन्द्रसिंह ने भी शिकार के बहाने विजयगढ़ की सरहद पर खेमा डाल दिया था, जिसकी खबर नाज़िम ने क्रूरसिंह को पहुंचाई और कहा-"वीरेन्द्रसिंह ज़रूर चन्द्रकान्ता की फिक्र में आया है, अफसोस! इस समय अहमद न हुआ नहीं तो बड़ा काम निकलता। खैर, देखा जाएगा।" वह कह क्रूरसिंह से बिदा हो बालादवी *-के वास्ते चला गया।

तेजसिंह वीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो विजयगढ़ पहुंचे और मंत्री के मरने तथा शहर भर में गम छाने का हाल लेकर वीरेन्द्रसिंह के पास लौट आये। यह भी खबर लाये कि दो दिन बाद सूतक निकल जाने पर महाराज जयसिंह क्रूर को अपना दीवान बनायेंगे।

वीरेन्द्रसिंह: देखो, क्रूर ने चन्द्रकान्ता के लिए बाप को मार डाला। अगर राजा को भी मार डाले तो ऐसे आदमी का क्या ठिकाना!

तेजसिंह: सच है, वह नालायक जहाँ तक भी होगा राजा पर बहुत जल्द हाथ फेरेगा, अस्तु अब मैं दो दिन चन्द्रकान्ता के महल में न जाकर दरबार ही का हालचाल लूंगा, हाँ, इस बीच में अगर मौका मिल जाएगा तो देखा जाएगा।

वीरेन्द्रसिंह: सो सब कुछ नहीं, चाहे जो हो, आज मैं चन्द्रकान्ता से ज़रूर मुलाकात करूंगा।

तेजसिंह: आप जल्दी न करें, जल्दी ही सब कामों को बिगाड़ती है।

वीरेन्द्रसिंह: जो भी हो, मैं तो ज़रूर जाऊंगा।

तेजसिंह ने बहुत समझाया मगर चन्द्रकान्ता की जुदाई में उनको भला-बुरा क्या सूझता था! एक न मानी और चलने को तैयार हो ही गये। आखिर तेजसिंह ने कहा, "खैर, नहीं मानते तो चलिए, जब आपकी ऐसी मर्ज़ी है तो हम क्या करें! जो कुछ होगा देखा जाएगा।"

शाम के वक़्त ये दोनों टहलने के लिए खेमे से बाहर निकले और अपने प्यादों से कह गये कि अगर हम लोगों के आने में देर हो तो घबराना मत। टहलते हुए दोनों विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

कुछ रात गई होगी जब चन्द्रकान्ता के उसी नज़रबाग के पास पहुंचे जिसका हाल पहले लिख चुके हैं।

राज अंधेरी थी इसीलिए इन दोनों को बाग में जाने के लिए कोई तरद्दुद न करना पड़ा, पहरे वालों को बचाकर कमन्द फेंका और उसके ज़रिये बाग के अन्दर जा दोनों एक घने पेड़ के नीचे खड़े हो इधर-उधर निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

बाग के बीचोंबीच संगमरमर के एक साफ चिकने चबूतरे पर मोमी शमादान जल रहा था जहाँ चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बैठी बातें कर रही थीं। चपला बातें भी करती जाती थी और इधर-उधर तेज़ी के साथ निगाह भी दौड़ा रही थी।

चन्द्रकान्ता को देखते ही वीरेन्द्रसिंह का अजब हाल हो गया, बदन में कंपकंपी होने लगी, यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर पड़े। मगर वीरेन्द्रसिंह की यह हालत देख तेजसिंह पर कोई प्रभाव न हुआ, झट अपने ऐयारी बटुए से लखलखा निकाल सुंघा दिया और होश में लाकर कहा, "देखिए, दूसरे के मकान में आपको इस तरह बेसुध न होना चाहिए। अब आप अपने को सम्हालिए और इसी जगह ठहरिए, मैं जाकर बात कर आऊं तब आप को ले चलूं।" यह कहकर उन्हें उसी पेड़ के नीचे छोड़ उस जगह गये जहाँ चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बैठी थीं। तेजसिंह को देखते ही चन्द्रकान्ता बोली, "क्यों जी, इतने दिन कहाँ रहे ? क्या इसी का नाम मुरव्वत है ? अबकी आये तो अकेले ही आये। वाह, ऐसा ही था तो हाथ में चूड़ी पहन लेते, जवांमर्दी की डींग क्यों मारते हैं! जब उनकी मुहब्बत का यही हाल है तो मैं जीकर क्या करूंगी ?" कहकर चन्द्रकान्ता रोने लगी, यहाँ तक कि हिचकी बंध गई। तेजसिंह उसकी यह हालत देख बहुत घबराये और बोले, "बस, इसी को नादानी कहते हैं! अच्छी तरह हाल भी न पूछा और लगीं रोने, ऐसा ही है तो उनको लिये आता हूँ!"

यह कहकर तेजसिंह वहाँ गये जहाँ वीरेन्द्रसिंह को छोड़ा था और उनको अपने साथ ले चन्द्रकान्ता के पास लौटे। चन्द्रकान्ता वीरेन्द्रसिंह के मिलने से बड़ी खुश हुई, दोनों मिलकर खूब रोए, यहाँ तक कि बेहोश हो गये मगर थोड़ी देर बाद होश में आ गये और आपस में शिकायत मिली मुहब्बत की बात करने लगे।

अब ज़माने का उलट-फेर देखिए। घूमता-फिरता टोह लगाता नाज़िम भी उसी जगह आ पहुंचा और दूर से इन सबों की खुशी भरी मज़लिस देखकर जल मरा। तुरन्त ही लौटकर क्रूरसिंह के पास पहुंचा। क्रूरसिंह ने नाज़िम को घबराया हुआ देखा और पूछा, "क्यों, क्या बात है जो तुम इतना घबराये हुए हो ?"

नाज़िम: है क्या, जो मैं सोचता था वही हुआ! यही वक़्त चालाकी का है, अगर अब भी कुछ बन न पड़ा तो बस तुम्हारी किस्मत फूट गई, ऐसा ही समझना पड़ेगा।

क्रूरसिंह: तुम्हारी बातें तो कुछ समझ में नहीं आतीं, खुलासा कहो, क्या बात है ?

नाज़िम: खुलासा बस यही है कि वीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता के पास पहुंच गया और इस समय बाग में हंसी के कहकहे उड़ रहे हैं।

यह सुनते ही क्रूरसिंह की आंखों के आगे अंधेरा छा गया, दुनिया उदास मालूम होने लगी, कहाँ तो बाप के ज़ाहिरी गम में वह सर मुड़ाए बरसाती मेंढक बना बैठा था, तेरह रोज़ कहीं बाहर जाना हो ही नहीं सकता था, मगर इस खबर ने उसको अपने आपे में न रहने दिया, फौरन उठ खड़ा हुआ और उसी तरह नंग-धड़ंग औंधी हाँडी-सा सिर लिए महाराज जयसिंह के पास पहुंचा। जयसिंह क्रूरसिंह को इस तरह आया देख हैरान हो बोले, "क्रूरसिंह, सूतक और बाप का गम छोड़ कर तुम्हारा इस तरह आना मुझको हैरानी में डाल रहा है!"

क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज, हमारे बाप तो आप हैं, उन्होंने तो पैदा किया, परवरिश आप ही की बदौलत होती है। जब आप की इज़्ज़त में बट्टा लगा तो मेरी ज़न्दिगी किस काम की है और मैं किस लायक गिना जाऊंगा ?"

जयसिंह: (गुस्से में आकर) क्रूरसिंह! ऐसा कौन है जो हमारी इज़्ज़त बिगाड़े ?

क्रूरसिंह: एक अदना आदमी।

जयसिंह: (दांत पीस कर) जल्दी बताओ, वह कौन है, जिसके सिर पर मौत सवार हुई है ?

क्रूरसिंह: वीरेन्द्रसिंह!

जयसिंह: उसकी क्या मज़ाल जो मेरा मुकाबला करे, इज़्ज़त बिगाड़ना तो दूर की बात है! तुम्हारी बात कुछ समझ में नहीं आती, साफ-साफ जल्द बताओ, क्या बात है ? वीरेन्द्रसिंह कहाँ है ?

क्रूरसिंह: आपके चोर महल के बाग में!

---

* बालादवी-दोह लेने के लिए गश्त करना

आठवां बयान

वीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता से मीठी-मीठी बातें कर रहे हैं, चपला से तेजसिंह उलझ रहे हैं, चम्पा बेचारी इन लोगों का मुंह ताक रही है। अचानक एक काला-कलूटा आदमी सिर से पैर तक आबनूस का कुन्दा, लाल-लाल आंखें, लंगोटा कसे, उछलता-कूदता इन सब के बीच में आ खड़ा हुआ। पहले तो ऊपर-नीचे के दांत खोल तेजसिंह की तरफ दिखाया, तब बोला-"खबरी भई राजा को तुमरी सुनो गुरुजी मेरे।" इसके बाद उछलता-कूदता चला गया। जाती बार चम्पा की टांग पकड़ थोड़ी दूर घसीटता ले गया, आखिर छोड़ दिया। यह देख सब हैरान हो गये और डरे कि यह पिशाच कहाँ से आ गया, चम्पा बेचारी तो चिल्ला उठी मगर तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और वीरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़ के बोले, "चलो, जल्दी उठो, अब बैठने का मौका नहीं!" चन्द्रकान्ता की तरफ देखकर बोले, "हम लोगों के जल्दी चले जाने का रंज तुम मत करना और जब तक महाराज यहाँ न आयें इसी तरह सब-की-सब बैठी रहना।"

चन्द्रकान्ता: इतनी जल्दी करने का सबब क्या है और यह कौन था जिसकी बात सुनकर भागना पड़ा ?

तेज०: (जल्दी से) अब बात करने का मौका नहीं रहा।

यह कहकर वीरेन्द्रसिंह को ज़बरदस्ती उठाया और साथ ले कमन्द के ज़रिये बाग से बाहर हो गये।

चन्द्रकान्ता को वीरेन्द्रसिंह का इस तरह चला जाना बहुत बुरा मालूम हुआ! आखों में आंसू भर चपला से बोली, "यह क्या तमाशा हो गया, कुछ समझ में नहीं आता। उस पिशाच को देखकर मैं कैसी डरी, मेरे कलेजे पर हाथ रखकर देखो, अभी तक धड़धड़ा रहा है! तुमने क्या खयाल किया ?"

चपला ने कहा, "कुछ ठीक समझ में नहीं आता, हाँ इतना ज़रूर है कि इस समय वीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने की खबर महाराज को हो गई है, वे ज़रूर आते होंगे।" चम्पा बोली, "न मालूम मुए को मुझसे क्या दुश्मनी थी ?"

चम्पा की बात पर चपला को हँसी आ गई मगर हैरान थी यह क्या खेल हो गया ? थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब भरी बातें होती रहीं, इतने में ही बाग के चारों तरफ आदमियों के शोरगुल की आवाजें आने लगीं। चपला ने कहा, "रंग बुरे नज़र आने लगे,

मालूम होता है बाग को सिपाहियों ने घेर लिया।" बात पूरी भी न होने पाई थी कि सामने से महाराज आते दिखाई पड़े।

देखते ही सब-की-सब उठ खड़ी हुई। चन्द्रकान्ता ने बढ़कर पिता के आगे सिर झुकाया और कहा, "इस समय आपके एकाएक आने....!" इतना कहकर चुप हो रही। जयसिंह ने कहा, "कुछ नहीं, तुम्हें देखने को जी चाहा इसी से चले आये। अब तुम भी महल में जाओ, यहाँ क्यों बैठी हो ? ओस पड़ती है, तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी।" यह कहकर महल की तरफ रवाना हुए।

चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा भी महाराज के पीछे-पीछे महल में गई। जयसिंह अपने कमरे में आये और मन में बहुत शर्मिन्दा होकर कहने लगे, "देखो, हमारी भोली-भाली लड़की को क्रूर झूठ-मूठ बदनाम करता है। न मालूम इस नालायक के जी में क्या समाई है, बेधड़क उस बेचारी को ऐब लगा दिया, अगर लड़की सुनेगी तो क्या कहेगी ? ऐसे शैतान का तो मुंह न देखना चाहिए, बल्कि सज़ा देनी चाहिए, जिससे फिर ऐसा कमीनापन न करे।" यह सोच हरीसिंह नामी एक चोबदार को हुक्म दिया कि बहुत जल्द क्रूर को हाज़िर करे।

हरीसिंह क्रूरसिंह को खोजता और पता लगाता हुआ बाग के पास पहुंचा जहाँ वह बहुत से आदमियों के साथ खुशी-खुशी बाग को घेरे हुए था। हरीसिंह ने कहा, "चलिए, महाराज ने बुलाया है।" क्रूरसिंह घबरा उठा कि महाराज ने क्यों बुलाया ? क्या चोर नहीं मिला ? महाराज तो मेरे सामने महल में चले गये थे। हरीसिंह से पूछा, "महाराज क्या कर रहे हैं ?" उसने कहा, "अभी महल से आये हैं, गुस्से में भरे बैठे हैं, आपको जल्दी बुलाया है।" यह सुनते ही क्रूरसिंह की नानी मर गई। डरता-कांपता हरीसिंह के साथ महाराज के पास पहुंचा।

महाराज ने क्रूरसिंह को देखते ही कहा, "क्यों बे क्रूर! बेचारी चन्द्रकान्ता को इस तरह झूठ-मूठ बदनाम करना और हमारी इज़्ज़त में बट्टा लगाना, यही तेरा काम है ? यह इतने आदमी जो बाग को घेरे हुए हैं अपने जी में क्या कहते होंगे ? नालायक, गधा, पाजी, तूने कैसे कहा कि महल में वीरेन्द्र है!"

मारे गुस्से के महाराज जयसिंह के होंठ कांप रहे थे, आखें लाल हो रही थीं। यह कैफियत देखकर क्रूरसिंह की तो जान सूख गई, घबरा के बोला, "मुझको तो यह खबर नाज़िम ने पहुंचाई थी जो आजकल महल के पहरे पर मुकर्रर है।" यह सुनते ही महाराज ने हुक्म दिया, "बुलाओ नाज़िम को।" थोड़ी देर में नाज़िम भी हाज़िर किया गया। गुस्से में भरे हुए महाराज के मुंह से साफ आवाज़ नहीं निकलती थी। टूटे-फूटे शब्दों में नाज़िम से पूछा, "क्यों बे, तूने कैसी खबर पहुंचाई ?" उस वक़्त डर के मारे उसकी क्या हालत थी, वही जानता होगा, जीने से नाउम्मीद हो चुका था, डरता हुआ बोला, "मैंने तो अपनी आंखों से देखा था हुज़ूर, शायद किसी तरह भाग गया होगा।"

अब जयसिंह से गुस्सा बर्दाश्त न हो सका, हुक्म दिया, “पचास कोड़े क्रूर को और दो सौ कोड़े नाज़िम को लगाए जायें! बस इतने ही पर छोड़ देता हूँ, आगे फिर कभी ऐसा होगा तो सिर उतार लिया जायेगा। क्रूर तू वजीर होने लायक नहीं है।”

अब क्या था, लगे दो-तर्फी कोड़े पड़ने। उन लोगों के चिल्लाने से महल गूंज उठा मगर महाराज का गुस्सा न गया। जब दोनों पर कोड़े पड़ चुके तो उनको महल के बाहर निकलवा दिया और महाराज आराम करने चले गये, मगर मारे गुस्से के रात भर नींद न आई।

क्रूरसिंह और नाज़िम दोनों घर आये और एक जगह बैठकर लगे झगड़ने। क्रूर नाज़िम से कहने लगा-”तेरी बदौलत आज मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई! कल दीवान होंगे यह उम्मीद भी न रही, मार खाई उसकी तकलीफ मैं ही जानता हूं, यह सब तेरी ही बदौलत हुआ!” नाज़िम कहता था-”मैं तुम्हारी बदौलत मारा गया, नहीं तो मुझको क्या काम था ? जहन्नुम में जाती चन्द्रकान्ता और वीरेन्द्र, मुझे क्या पड़ी थी जो जूते खाता!” ये दोनों आपस में यूं ही पहरों झगड़ते रहे।

अन्त में क्रूरसिंह ने कहा, “हम तुम दोनों पर लानत है अगर इतनी सजा पाने पर भी वीरेन्द्र को गिरफ्तार न किया।”

नाज़िम ने कहा, “इसमें तो कोई शक नहीं कि वीरेन्द्र अब रोज़ महल में आया करेगा क्योंकि इसी वास्ते वह अपना डेरा सरहद पर ले आया है, मगर अब कोई काम करने का हौसला नहीं पड़ता, कहीं फिर मैं देखूं और खबर करने पर वह दुबारा निकल जाये तो अबकी ज़रूर ही जान से मारा जाऊंगा।”

क्रूरसिंह ने कहा, “तब तो कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिससे जान भी बचे और वीरेन्द्रसिंह को अपनी आंखों से महाराज जयसिंह महल में देख भी लें।”

बहुत देर सोचने के बाद नाज़िम ने कहा, “चुनारगढ़ महाराज शिवदत्तसिंह के दरबार में एक पण्डित जगन्नाथ नामी ज्योतिषी हैं जो रमल भी बहुत अच्छा जानते हैं। उनके रमल फेंकने में इतनी तेज़ी है कि जब चाहो पूछ लो कि फलां आदमी इस समय कहाँ है, क्या कर रहा है या कैसे पकड़ा जायेगा ? वह फौरन बतला देते हैं। उनको अगर मिलाया जाये और वे यहाँ आकर और कुछ दिन रहकर तुम्हारी मदद करें तो सब काम ठीक हो जाय। चुनारगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है, कुल तेईस कोस है, चलो हम तुम चलें और जिस तरह बन पड़े उन्हें ले आवें।”

आखिर क्रूरसिंह बहुत कुछ जवाहरात अपने कमर में बांध दो तेज़ घोड़े मंगवा नाज़िम के साथ सवार हो उसी समय चुनार की तरफ रवाना हो गया और घर में सबसे कह गया कि अगर महाराज के यहाँ से कोई आये तो कह देना कि क्रूरसिंह बहुत बीमार है।

नौवां बयान

वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह बाग के बाहर से अपने खेमे की तरफ रवाना हुए। जब खेमे में पहुंचे तो आधी रात बीत चुकी थी, मगर तेजसिंह को कब चैन पड़ता था, वीरेन्द्रसिंह को पहुंचाकर फिर लौटे और अहमद की सूरत बना क्रूरसिंह के मकान पर पहुंचे। क्रूरसिंह चुनार की तरफ रवाना हो चुका था, जिन आदमियों को घर में हिफाज़त के लिए छोड़ गया था और कह गया था कि अगर महाराज पूछें तो कह देना बीमार है, उन लोगों ने एकाएक अहमद को देखा तो ताज्जुब से पूछा, “कहो अहमद, तुम कहाँ थे अबतक ?” नकली अहमद ने कहा, “मैं ज़हन्नुम की सैर करने गया था, अब लौट कर आया हूँ। यह बताओ कि क्रूरसिंह कहाँ है ?” सभी ने उसको पूरा-पूरा हाल सुनाया और कहा, “अब चुनार गये हैं, तुम भी वहीं जाते तो अच्छा होता!”

अहमद ने कहा, “हाँ मैं भी जाता हूँ अब घर न जाऊंगा। सीधे चुनार ही पहुंचता हूँ।” यह कह वहाँ से रवाना हो अपने खेमे में आये और वीरेन्द्रसिंह से सब हाल कहा। बाकी रात आराम किया, सवेरा होते ही नहा-धो कुछ भोजन कर, सूरत बदल, विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। नंगे सिर, हाथ-पैर, मुंह पर धूल डाले, रोते-पीटते महाराज जयसिंह के दरबार में पहुंचे। इनकी हालत देखकर सब हैरान हो गये। महाराज ने मुंशी से कहा, “पूछो, कौन है और क्या कहता है ?”

तेजसिंह ने कहा-”हुजूर मैं क्रूरसिंह का नौकर हूँ मेरा नाम रामलाल है। महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है। मैंने मना किया कि महाराज का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिए, जिस पर मुझको खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था सब छीन लिया। हाय रे, मैं बिलकुल लुट गया, एक कौड़ी भी नहीं रही, अब मैं क्या खाऊंगा, घर कैसे पहुंचूंगा, लड़के-बच्चे तीन बरस की कमाई खोजेंगे, कहेंगे कि रजवाड़े की क्या कमाई लाये हो ? उनको क्या दूंगा! दुहाई महाराज की, दुहाई! दुहाई!!”

बड़ी मुश्किल से सभी ने उसे चुप कराया। महाराज को बड़ा गुस्सा आया, हुक्म दिया, “क्रूरसिंह कहाँ है ?” चोबदार खबर लाया-”बहुत बीमार हैं, उठ नहीं सकतें।” रामलाल (तेजसिंह) बोला “दुहाई महाराज की! यह भी उन्हीं की तरफ मिल गया, झूठ बोलता है! मुसलमान सब उसके दोस्त हैं, दुहाई महाराज की! खूब तहकीकात की जाये!” महाराज ने मुंशी से कहा, “तुम जाकर पता लगाओ कि क्या मामला है ?” थोड़ी देर बाद मुंशी वापस आये और बोले, “महाराज, क्रूरसिंह घर पर नहीं हैं, और घरवाले कुछ बताते नहीं कि कहाँ

गये हैं।” महाराज ने कहा, “जरूर चुनारगढ़ गया होगा! अच्छा, उसके यहाँ के किसी प्यादे को बुलाओ।” हुक्म पाते ही चोबदार गया और एक बदकिस्मत प्यादे को पकड़ लाया। महाराज ने पूछा, “क्रूरसिंह कहाँ गया है ?” प्यादे ने ठीक पता नहीं दिया। रामलाल ने फिर कहा, “दुहाई महाराज की, बिना मार खाये न बताएगा!” महाराज ने मारने का हुक्म दिया। पिटने के पहले ही उस बदनसीब ने बतला दिया कि चुनार गये हैं।

महाराज जयसिंह को क्रूर का हाल सुन कर जितना गुस्सा आया बयान के बाहर है। हुक्म दिया-

(1) क्रूरसिंह के घर के सब औरत-मर्द घण्टे भर के अन्दर जान बचा के हमारी सरहद के बाहर चले जायें।

(2) उसका मकान लूट लिया जाये।

(3) उसकी दौलत में से जितना रुपया अकेला रामलाल उठा ले जा सके, ले जाये, बाकी सरकारी खज़ाने में दाखिल किया जाये।

(4) रामलाल अगर नौकरी कबूल करे तो दी जाये।

हुक्म पाते ही सबसे पहले रामलाल क्रूरसिंह के घर पहुंचा। महाराज के मुंशी को जो हुक्म तामील करने गया था, रामलाल ने कहा, “पहले मुझको रुपये दे दो कि उठा ले जाऊं और महाराज को आशीर्वाद करूं। बस, जल्दी दो, मुझ गरीब को मत सताओ!!” मुंशी ने कहा, “अजब आदमी है, इसको अपनी ही पड़ी है! ठहर जा, जल्दी क्यों करता है!” नकली रामलाल ने चिल्लाकर कहना शुरू किया, “दुहाई महाराज की, मेरे रुपए मुंशी नहीं देता।” कहता हुआ महाराज की तरफ चला। मुंशी ने कहा, “ले लो, जाते कहाँ हो, भाई पहले इसको दे दो!”

रामलाल ने कहा, “हत्त तेरे की, मैं चिल्लाता नहीं तो सभी रुपये डकार जाता!” इस पर सब हंस पड़े। मुंशी ने दो हज़ार रुपया आगे रखवा दिया और कहा, “ले, ले जा!” रामलाल ने कहा, “वाह, कुछ याद है! महाराज ने क्या हुक्म दिया है ? इतना तो मेरी जेब में आ जायेगा, मैं उठा के क्या ले जाऊंगा ?” मुंशी झुंझला उठा, नकली रामलाल को खज़ाने के सन्दूक के पास ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा, “उठा, देखें कितना उठाता है ?” देखते-देखते उसने दस हज़ार रुपये उठा लिये। सिर पर, बटुए में, कमर में, जेब में, यहाँ तक कि मुंह में भी कुछ रुपये भर लिए और रास्ता लिया। सब हंसने और कहने लगे, “आदमी नहीं, इसे राक्षस समझना चाहिए!”

महाराज के हुक्म की तामील हो गई, घर लूट लिया गया, औरत-मर्द सभी ने रोते-पीटते चुनार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह रुपया लिये हुए वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे और बोले, “आज तो मुनाफा कमा लाये, मगर ग़ार माल शैतान का है इसमें, कुछ आप भी मिला दीजिए जिससे पाक हो जाये!” वीरेन्द्रसिंह ने कहा, “यह तो बताओ कि लाये कहाँ से ?” उन्होंने सब हाल कहा।

वीरेन्द्रसिंह ने कहा, “जो कुछ मेरे पास यहाँ है मैंने सब दिया!” तेजसिंह ने कहा, “मगर शर्त यह कि उससे कम न हो, क्योंकि आपका रुतबा उससे कहीं ज़्यादा है।” वीरेन्द्रसिंह ने कहा, “तो इस वक़्त कहाँ से लायें ?” तेजसिंह ने जवाब दिया, “तमस्सुक लिख दो!” कुमार हंस पड़े और उंगली से हीरे की अंगज़ी उतार कर दे दी। तेजसिंह ने खुश होकर ले ली और कहा, “परमेश्वर आपकी मुराद पूरी करे। अब हम लोगों को भी यहाँ से अपने घर चले चलना चाहिए क्योंकि अब मैं चुनार जाऊंगा, देखूं शैतान का बच्चा वहाँ क्या बन्दोबस्त कर रहा है।”

दसवां बयान

क्रूरसिंह की तबाही का हाल शहर भर में फैल गया। महारानी रत्नगर्भा (चन्द्रकान्ता की मां) और चन्द्रकान्ता इन सभी ने भी सुना। कुमारी और चपला को बड़ी खुशी हुई। जब महाराज महल में गये तो हंसी-हंसी में महारानी ने क्रूरसिंह का हाल पूछा। महाराज ने कहा, "वह बड़ा बदमाश तथा झूठा था, मुफ्त में लड़की को बदनाम करता था।"

महारानी ने बात छेड़ कर कहा, "आपने क्या सोच कर वीरेन्द्र का आना-जाना बन्द कर दिया! देखिए यह वही वीरेन्द्र है जो लड़कपन से, जब चन्द्रकान्ता पैदा भी नहीं हुई थी, यहीं आता और कई-कई दिनों तक रहा करता था। जब यह पैदा हुई तो दोनों बराबर खेला करते और इसी से इन दोनों की आपस की मुहब्बत भी बढ़ गई। उस वक़्त यह भी नहीं मालूम होता था कि आप और राजा सुरेन्द्रसिंह कोई दो हैं या नौगढ़ और विजयगढ़ दो रजवाड़े हैं। सुरेन्द्रसिंह भी बराबर आप ही के कहे मुताबिक चला करते थे। कई बार आप कह भी चुके थे कि चन्द्रकान्ता की शादी वीरेन्द्र के साथ कर देनी चाहिए। ऐसे मेल-मुहब्बत और आपस के बनाव को उस दुष्ट क्रूर ने बिगाड़ दिया और दोनों के चित्त में मैल पैदा कर दिया!"

महाराज ने कहा, "मैं आप हैरान हूँ कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया था। मेरी समझ पर पत्थर पड़ गये! कौन-सी बात ऐसी हुई जिसके सबब से मेरे दिल से वीरेन्द्रसिंह की मुहब्बत जाती रही। हाय, इस क्रूरसिंह ने तो गज़ब ही किया! इसके निकल जाने पर अब मुझे मालूम होता है।" महारानी ने कहा, "देखें, अब वह चुनार में जाकर क्या करता है ?" ज़रूर महाराज शिवदत्त को भड़कायेगा और कोई नया बखेड़ा पैदा करेगा। महाराज ने कहा, "खैर, देखा जायेगा, परमेश्वर मालिक है, उस नालायक ने तो अपनी भरसक बुराई में कुछ भी कमी नहीं की।"

यह कह कर महाराज महल के बाहर चले गये। अब उनको यह फिक्र हुई कि किसी को दीवान बनाना चाहिए नहीं तो काम न चलेगा। कई दिन तक सोच-विचार कर हरदयालसिंह नामी नायब दीवान को मंत्री की पदवी और खिलअत दी। यह शख्स बड़ा ईमानदार, नेकबख्त, रहमदिल और साफ तबीयत का था, कभी किसी का दिल उसने नहीं दुखाया।

ग्यारहवां बयान

क्रूरसिंह को बस एक यही फिक्र लगी हुई थी कि जिस तरह बने वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को मार डालना ही नहीं चाहिए, बल्कि नौगढ़ का राज्य ही गारत कर देना चाहिए। नाज़िम को साथ लिये हुए चुनार पहुंचा और महाराज शिवदत्त के दरबार में हाज़िर होकर नज़र दिया। महाराज इसे बखूबी जानते थे इसलिए नज़र लेकर हाल पूछा। क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज, जो कुछ हाल है मैं एकान्त में कहूंगा।"

दरबार बर्खास्त हुआ, शाम को तखलिए (एकान्त) में महाराज ने क्रूर को बुलाया और हाल पूछा। उसने जितनी शिकायत महाराज जयसिंह की करते बनी, की, और यह भी कहा कि-"लश्कर का इन्तज़ाम आजकल बहुत खराब है, मुसलमान सब हमारे मेल में हैं, अगर आप चाहें तो इस समय विजयगढ़ को फतह कर लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। चन्द्रकान्ता महाराज जयसिंह की लड़की भी जो खूबसूरती में अपना कोई सानी नहीं रखती आप ही के हाथ लगेगी।"

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें कह उसने महाराज शिवदत्त को पूरे तौर से भड़काया। आखिर महाराज ने कहा, "हमको लड़ने की अभी कोई ज़रूरत नहीं, पहले हम अपने ऐयारों से काम लेंगे फिर जैसा होगा देखा जाएगा। मेरे यहाँ छः ऐयार हैं जिनमें से चार ऐयारों के साथ पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को तुम्हारे साथ कर देते हैं। इन सभी को लेकर तुम जाओ, देखो तो ये लोग क्या करते हैं। पीछे जब मौका होगा हम भी लश्कर लेकर पहुंच जायेंगे।"

उन ऐयारों के नाम ये थे-पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण, भगवानदत्त और घसीटासिंह। महाराज ने पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण, और भगवानदत्त इन चारों को जो मुनासिब था कहा और इन लोगों को क्रूरसिंह के हवाले किया।

अभी ये लोग बैठे ही थे कि एक चोबदार ने आकर अर्ज़ किया, "महाराज ड्योढ़ी पर कई आदमी फरियादी खड़े हैं, कहते हैं कि हम लोग क्रूरसिंह के रिश्तेदार हैं, इनके चुनार जाने का हाल सुनकर महाराज जयसिंह ने घर-बार लूट लिया और हम लोगों को निकाल दिया। उन लोगों के लिए क्या हुक्म होता है ?"

यह सुनकर क्रूरसिंह के होश उड़ गये। महाराज शिवदत्त ने सभी को अन्दर बुलाया और हाल पूछा। जो कुछ हुआ था उन्होंने बयान किया! इसके बाद क्रूरसिंह और नाज़िम की तरफ देखकर कहा, "अहमद भी तो आपके पास आया है!" नाज़िम ने पूछा, "अहमद! वह

कहाँ है ? यहाँ तो नहीं आया!" सभी ने कहा, "वाह, वहाँ तो घर पर गया था और यह कहकर चला गया कि में भी चुनार जाता हूँ!"

नाज़िम ने कहा, "बस, मैं समझ गया, वह ज़रूर तेजसिंह होगा इसमें कोई शक नहीं! उसी ने महाराज को भी खबर पहुंचाई होगी, यह सब फसाद उसी का है!" यह सुन क्रूरसिंह रोने लगा। महाराज शिवदत्त ने कहा, "जो होना था सो हो गया, सोच मत करो। देखो इसका बदला जयसिंह से मैं लेता हूँ। तुम इसी शहर में रहो, हमाम के सामने वाला मकान तुम्हें दिया जाता है, उसी में अपने कुटुम्ब को रखो, रुपए की मदद सरकार से हो जायेगी। क्रूरसिंह ने महाराज के हुक्म के मुताबिक उसी मकान में डेरा ज़माया।"

कई दिन बाद दरबार में हाज़िर होकर क्रूरसिंह ने महाराज से विजयगढ़ जाने के लिए अर्ज़ किया। सब इन्तज़ाम हो ही चुका था, महाराज ने मय चारों ऐयार और पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के साथ क्रूरसिंह और नाज़िम को विदा किया। ऐयार लोग भी अपने-अपने सामान से लैस हो गये। कई तरह के कपड़े लिये। बटुआ ऐयारी का अपने-अपने कन्धे से लटका लिया, खंजर बगल में लिया। ज्योतिषीजी ने भी पोथी-पत्रा आदि और कुछ ऐयारी का सामान ले लिया क्योंकि वह थोड़ी-बहुत ऐयारी भी जानते थे। अब यह शैतान का झुण्ड विजयगढ़ की तरफ रवाना हुआ। इन लोगों का इरादा नौगढ़ जाने का भी था। देखिए कहाँ जाते हैं और क्या करते हैं ?

बारहवां बयान

वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह नौगढ़ के क़िले से बाहर निकल बहुत से आदमियों को साथ लिये चन्द्रप्रभा नदी के किनारे बैठ शोभा देख रहे हैं। एक तरफ से चन्द्रप्रभा दूसरी तरफ से करमनाशा नदी बहती हुई आई है और क़िले के नीचे दोनों का संगम हो गया है। जहाँ कुमार और तेजसिंह बैठे हैं, नदी बहुत चैड़ी है और उस पर साखू का बड़ा भारी जंगल है जिसमें हजारों मोर तथा लंगूर अपनी-अपनी बोलियों और किलकारियों से जंगल की शोभा बढ़ा रहे हैं। कुंवर वीरेन्द्रसिंह उदास बैठे हैं, चन्द्रकान्ता के बिरह में मोरों की आवाज़ तीर-सी लगती है, लंगूरों की किलकारी वज्र-सी मालूम होती है, शाम की धीमी-धीमी ठंडी हवा लू का काम करती है। चुपचाप बैठे नदी की तरफ देख ऊंची सांस ले रहे हैं।

इतने में एक साधु रामरज से रंगी हुई कफनी पहने, रामनन्दी तिलक लगाए हाथ में खंजरी लिए कुछ दूर नदी के किनारे बैठा यह गाता हुआ दिखाई पड़ा-

"गये चुनार क्रूर बहुरंगी लाये चारचितारी * ।
संग में उनके पण्डित देवता, जो हैं सगुन विचारी।।
इनसे रहना बहुत संभल के रमल चले अति कारी।
क्या बैठे हो तुम बेफिकरे, काम करो कोई भारी।।

यह आवाज कान में पड़ते ही तेजसिंह ने गौर के साथ उस तरफ देखा। वह साधु भी इन्हीं की तरफ मुंह करके गा रहा था। तेजसिंह को अपनी तरफ देखते देख दांत निकाल कर दिखला दिये और उठ के चलता बना।

वीरेन्द्रसिंह अपनी चन्द्रकान्ता के ध्यान में डूबे हैं, उनको इन सब बातों की कोई खबर नहीं। वे नहीं जानते कि कौन गा रहा है या किधर से आवाज़ आ रही है। एकटक नदी की तरफ देख रहे हैं। तेजसिंह ने बाजू पकड़ कर हिलाया। कुमार चैंक पड़े। तेजसिंह ने धीरे से पूछा, "कुछ सुना ?" कुमार ने कहा, "क्या ? नहीं तो कहो!" "उठिए अपनी जगह पर चलिए, जो कुछ कहना है वहीं एकान्त में कहेंगे!" वीरेन्द्रसिंह सम्हल गये और उठ खड़े हुए। दोनों आदमी धीरे-धीरे क़िले में आये और अपने कमरे में जाकर बैठे।

अब एकान्त है, सिवाय इन दोनों के इस समय इस कमरे में कोई नहीं है। वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से पूछा, "कहो क्या कहने को थे ?" तेजसिंह ने कहा "सुनिये, यह तो आपको मालूम हो ही चुका है कि क्रूरसिंह महाराज शिवदत्त से मदद लेने चुनार गया है, अब उसके वहाँ जाने का क्या नतीज़ा निकला वह भी सुनिए! वहाँ से महाराज शिवदत्त ने चार ऐयार और एक ज्योतिषी को उसके साथ कर दिया है, वह ज्योतिषी बहुत अच्छा रमल फेंकता है

नाज़िम पहले से उसके साथ है। अब इन लोगों की मण्डली भारी हो गई, ये लोग कम फसाद नहीं करेंगे, इसीलिए मैं अर्ज़ करता हूँ कि आप सम्हले रहिये। मैं अब काम की फिक्र में जाता हूँ मुझे यकीन है कि उन ऐयारों में से कोई-न-कोई ज़रूर इस तरफ भी आवेगा और आपको फंसाने की कोशिश करेगा। आप होशियार रहिएगा, सिवाय मेरे और किसी के साथ कहीं न जाइएगा, न किसी का दिया कुछ खाइएगा, बल्कि इत्र, फूल वगैरह भी कुछ कोई दे तो न सूँघिएगा और इस बात का भी खयाल रखिएगा कि मेरी सूरत बना के भी वे लोग आवे तो ताज्जुब नहीं। इस तरह आप मुझको पहचान लीजिएगा, देखिए मेरी आंख के अन्दर, नीचे की तरफ यह एक तिल है जिसको कोई नहीं जानता। आज से लेकर दिल में चाहे जितनी बार जब भी मैं आपके पास आया करूंगा इस तिल को छिपे तौर रो दिखला कर अपना परिचय आपको दिया करूंगा। अगर यह काम मैं न करूं तो समझ लीजिएगा कि धोखा है।”

और भी बहुत-सी बातें तेजसिंह ने समझाईं जिनको खूब गौर के साथ कुमार ने सुना और तब पूछा, “तुमको कैसे मालूम हुआ कि चुनार से इतनी मदद उसको मिली ?” तेजसिंह ने कहा, “किसी तरह मुझको मालूम हो गया, उसका हाल भी कभी आप पर ज़ाहिर हो जायेगा, अब मैं रुखसत होता हूँ, राजा साहब या मेरे पिता मुझे पूछें तो जो मुनासिब हो सो कह दीजिएगा।”

पहर रात रहे तेजसिंह ऐयारी के सामान से लैस हो वहाँ से रवाना हो गये।

चपला बालादवी के लिए मर्दाने भेष में शहर से बाहर निकली। आधी रात बीत गई थी। साफ छिटकी हुई चांदनी देख एकाएक जी में आया कि नौगढ़ चलूं और तेजसिंह से मुलाकात करूं। इसी खयाल से कदम बढ़ाये नौगढ़ की तरफ चली। उधर तेजसिंह अपनी असली सूरत में ऐयारी के सामान से सजे हुए विजयगढ़ की तरफ चले आ रहे थे। इत्तिफाक से दोनों की रास्ते ही में मुलाकात हो गयी। चपला ने पहचान लिया और नज़दीक जाकर, असली बोली में पूछा, “कहिए आप कहाँ जा रहे हैं ?”

तेजसिंह ने बोली से चपला को पहचाना और कहा, “वाह! वाह!! क्या मौके पर मिल गईं! नहीं तो मुझे बड़ा तरद्दुद तुमसे मिलने के लिए करना पड़ता क्योंकि बहुत-सी ज़रूरी बातें कहनी थीं, आओ इस जगह बैठो।”

एक साफ पत्थर की चट्टान पर दोनों बैठ गये। चपला ने कहा, “कहो, वह कौन-सी बातें हैं ?” तेजसिंह ने कहा, “सुनो, यह तो तुम जानती ही हो कि क्रूर चुनार गया है। अब वहाँ का हाल सुनो, चार ऐयार और एक पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी को महाराज शिवदत्त ने मदद के लिए उसके संग कर दिया है और वे लोग यहाँ पहुंच गये हैं। उनकी मण्डली अब भारी हो गई और इधर हम तुम दो ही हैं, इसलिए अब हम दोनों को बड़ी होशियारी करनी पड़ेगी। वे ऐयार लोग महाराज जयसिंह को भी पकड़ ले जायें तो ताज्जुब नहीं, और चन्द्रकान्ता के वास्ते तो आये ही हैं, इन्हीं सब बातों से तुम्हें होशियार करने मैं चला था।” चपला ने पूछा,

"फिर अब क्या करना चाहिए ?" तेजसिंह ने कहा, "एक काम करो, मैं हरदयालसिंह नए दीवान को पकड़ता हूँ और उसकी सूरत बनाकर दीवान का काम करूंगा। ऐसा करने से फौज़ और सब नौकर हमारे हुक्म में रहेंगे और में बहुत कुछ कर सकूंगा। तुम भी महल में होशियारी के साथ रहा करना और जहाँ तक हो सके एक बार मुझसे मिला करना। मैं दीवान तो बना रहूंगा ही, मिलना कुछ मुश्किल न होगा, बराबर असली सूरत में मेरे घर अर्थात् हरदयालसिंह के यहाँ मिला करना, मैं उसके घर में भी उसी की तरह रहा करूंगा।"

इसके अलावा और भी बहुत-सी बातें तेजसिंह ने चपला को समझाई! थोड़ी देर तक चहल रही इसके बाद चपला अपने महल की तरफ रुखसत हुई। तेजसिंह ने बाकी रात उसी जंगल में काटी और सुबह होते ही अपनी सूरत एक गन्धी की बना कई शीशी इत्र को कमर और दो-एक हाथ में ले विजयगढ़ की गलियों में घूमने लगे। दिन भर इधर-उधर फिरते रहे, शाम के वक़्त मौका देख हरदयालसिंह के मकान पर पहुंचे। देखा कि दीवान साहब लेटे हुए हैं और दो-चार दोस्त सामने बैठे गप्पें उड़ा रहे हैं। बाहर-भीतर खूब सन्नाटा है।

तेजसिंह इत्र की शीशियां लिए सामने पहुंचे और सलाम कर बैठ गये, तब कहा, "लखनऊ का रहने वाला गन्धी हूँ, आपका नाम सुन कर आप ही के लायक अच्छे-अच्छे इत्र लाया हूँ!" यह कह शीशी खोल फाहा बना देने लगे। हरदयालसिंह बहुत रहमदिल आदमी थे, इत्र सूंघने लगे और फाहा सूंघ-सूंघ अपने दोस्तों को भी देने लगे। थोड़ी देर में हरदयालसिंह और उनके सब दोस्त बेहोश होकर ज़मीन पर लेट गये। तेजसिंह ने सभी को उसी तरह छोड़ हरदयालसिंह की गठरी बांध पीठ पर लादी और मुंह पर कपड़ा ओढ़ नौगढ़ का रास्ता लिया, राह में अगर कोई मिला भी तो धोबी समझ कर न बोला।

शहर के बाहर निकल गये और बहुत तेज़ी के साथ चल कर उस खोह में पहुंचे जहाँ अहमद को क़ैद किया था। किवाड़ खोलकर अन्दर गये और दीवान साहब को उसी तरह बेहोश वहाँ रख अंगज़ी मोहर की उनकी उंगली से निकाल ली, कपड़े भी उतार लिए और बाहर चले आये। बेड़ी डालने और होश में लाने की कोई ज़रूरत नहीं समझी। तुरन्त लौटे और विजयगढ़ आ हरदयालसिंह की सूरत बना कर उनके घर पहुंचे।

इधर दीवान साहब के भोजन करने का वक़्त आ पहुंचा। लौंडी बुलाने आई, देखा कि दीवान साहब तो है नहीं, उनके पांच-चार दोस्त गाफिल पड़े हैं। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और एकाएक चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट सुन नौकर और प्यादे आ पहुंचे तथा यह तमाशा देख हैरान हो गये, दीवान साहब को इधर-उधर ढूंढ़ा मगर कहीं पता न लगा।

*—चितारी-ऐयार

तेरहवां बयान

तीन पहर रात गुज़र गई, उनके सब दोस्त जो बेहोश पड़े थे वह भी होश में आये मगर अपनी हालत देख-देख हैरान थे। लोगों ने पूछा, “आप लोग कैसे बेहोश हो गये और दीवान साहब कहाँ हैं ?” उन्होंने कहा, “एक गंधी इत्र बेचने आया था जिसका इत्र सूंधते-सूंघते हम लोग बेहोश हो गये, अपनी खबर न रही। क्या जाने दीवान साहब कहाँ हैं ? इसी से कहते हैं कि अमीरों की दोस्ती में हमेशा जान की जोखिम रहती है। अब कान उमेठते हैं कि कभी अमीरों का संग न करेंगे!”

ऐसी-ऐसी ताज्जुब भरी बातें हो रही थीं और सवेरा हुआ ही चाहता था कि सामने से दीवान हरदयालसिंह आते दिखाई पड़े जो दरअसल श्री तेजसिंह बहादुर थे। दीवान साहब को आते देख सभी ने घेर लिया और पूछने लगे कि 'आप कहाँ गये थे' ? दोस्तों ने पूछा, “वह नालायक गंधी कहाँ गया और हम लोग बेहोश कैसे हो गये ?” दीवान साहब ने कहा, “वह चोर था, मैंने पहचान लिया। अच्छी तरह से उसका इत्र नहीं सूंघा, अगर सूंघता तो तुम्हारी तरह मैं भी बेहोश हो जाता। मैंने उसको पहचान कर पकड़ने का इरादा किया तो वह भागा, मैं भी गुस्से में उसके पीछे चला गया लेकिन वह निकल ही गया, अफसोस...!”

इतने में लौंडी ने अर्ज़ किया, “कुछ भोजन कर लीजिए, सब-के-सब घर में भूखे बैठे हैं, इस वक़्त तक सभी को रोते ही गुज़रा!” दीवान साहब ने कहा, “अब तो सवेरा हो गया, भोजन क्या करूं ? मैं थक भी गया हूँ, सोने को जी चाहता है।” यह कह कर पलंग पर जा लेटे, उनके दोस्त भी अपने घर चले गये।

सवेरे मामूल के मुताबिक वक़्त पर दरबारी पोशाक पहन गुप्त रीति से ऐयार का बटुआ कमर में बांध दरबार की तरफ चले। दीवान साहब को देख रास्ते में बराबर दोपट्टी लोगों के हाथ उठने लगे, वह भी ज़रा-ज़रा सिर हिला सभी के सलामों का जवाब देते हुए कचहरी में पहुंचे। महाराज अभी नहीं आये थे, तेजसिंह हरदयालसिंह की खसलत से वाकिफ थे। उन्हीं के मामूल के मुताबिक वह भी दरबार में दीवान की जगह बैठ काम करने लगे, थोड़ी देर में महाराज भी आ गये।

दरबार में मौका पाकर हरदयालसिंह धीरे-धीरे अर्ज़ करने लगे, “महाराजाधिराज, ताबेदार को पक्की खबर मिली है कि चुनार के राजा शिवदत्तसिंह ने क्रूरसिंह की मदद की है और पांच ऐयार साथ करके सरकार से बेअदबी करने के लिए इधर रवाना किया है, बल्कि यह भी कहा है कि पीछे हम भी लश्कर लेकर आयेंगे। इस वक़्त बड़े तरद्दुद का

सामना है क्योंकि सरकार में आजकल कोई ऐयार नहीं, नाज़िम और अहमद थे सो वे भी क्रूर के साथ हैं, बल्कि सरकार के यहाँ वाले मुसलमान भी उसी तरफ मिले हुए हैं। आजकल वे ऐयार लोग ज़रूर सूरत बदल कर शहर में घूमते और बदमाशी की फिक्र करते होंगे।"

महाराज जयसिंह ने कहा, "ठीक है, मुसलमानों का रंग हम भी बेढब देखते हैं। फिर तुमने क्या बन्दोबस्त किया ?" धीरे-धीरे महाराज और दीवान से बातें हो रही थीं कि इतने में दीवान साहब की निगाह एक चोबदार पर पड़ी जो दरबार में खड़ा छिपी निगाहों से चारों तरफ देख रहा था। वे गौर से उसकी तरफ देखने लगे। दीवान साहब को गौर से देखते हुए-पा वह चोबदार चैकन्ना हो गया और कुछ सम्हल गया। बात छोड़ कड़क के दीवान साहब ने कहा, "पकड़ो उस चोबदार को!" हुक्म पाते ही लोग उसकी तरफ बढ़े, लेकिन वह सिर पर पैर रख के ऐसा भागा कि किसी के हाथ न लगा। तेजसिंह चाहते तो उस ऐयार को जो चोबदार बनके आया था पकड़ लेते, मगर इनको तो सब काम बल्कि उठना-बैठना भी उसी तरह से करना था जैसा हरदयालसिंह करते थे, इसलिए वह अपनी जगह से न उठे। वह ऐयार भाग गया जो चोबदार बना हुआ था, जो लोग पकड़ने गये थे वापस आ गये।

दीवान साहब ने कहा, "महाराज, देखिए जो मैंने अर्ज़ किया था और जिस बात का मुझको डर था वह ठीक निकली।" महाराज को यह तमाशा देखकर खौफ़ हुआ, जल्दी दरबार बर्खास्त कर दीवान को साथ ले तखलिए में चले गये। जब बैठे तो हरदयालसिंह से पूछा, "क्यों जी, अब क्या करना चाहिए ? उस दुष्ट क्रूर ने तो एक बड़े भाई को हमारा दुश्मन बना कर उभारा है। महाराज शिवदत्त की बराबरी हम किसी तरह भी नहीं कर सकते।"

दीवान साहब ने कहा, "महाराज, मैं फिर अर्ज़ करता हूँ कि हमारे सरकार में इस समय कोई ऐयार नहीं, नाज़िम और अहमद थे सो क्रूर ही की तरफ जा मिले हैं, ऐयारों का जवाब बिना ऐयार के कोई नहीं दे सकता। वे लोग बड़े चालाक और फसादी होते हैं, हज़ार-पांच सौ की जान ले लेना उन लोगों के आगे कोई बात नहीं है, इसलिए ज़रूर कोई ईमानदार ऐयार मुकर्रर करना चाहिए, पर यह भी एकाएक नहीं हो सकता। सुना है कि राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान का लड़का तेजसिंह बड़ा भारी ऐयार निकला है, मैं उम्मीद करता हू कि अगर महाराज चाहेंगे और तेजसिंह को मदद के लिए मांगेंगे तो राजा सुरेन्द्रसिंह को देने में उज्र न होगा क्योंकि वे महाराज को दिल से चाहते हैं। क्या हुआ अगर महाराज ने वीरेन्द्रसिंह का आना-जाना बन्द कर दिया, अब भी राजा सुरेन्द्रसिंह का दिल महाराज की तरफ से वैसा ही है जैसा पहले था।"

हरदयालसिंह की बात सुन के थोड़ी देर तक महाराज गौर करते रहे फिर बोले, "तुम्हारा कहना ठीक है, सुरेन्द्रसिंह और उनका लड़का वीरेन्द्रसिंह दोनों बड़े लायक हैं। इसमें कुछ शक नहीं कि वीरेन्द्रसिंह वीर है और राजनीति भी अच्छी तरह जानता है, हज़ार सेना लेकर

दस हज़ार से लड़ने वाला है और तेजसिंह की चालाकी में भी कोई फ़र्क़ नहीं, जैसा तुम कहते हो वैसा ही है। मगर मुझसे उन लोगों के साथ बड़ी ही बेमुरव्वती हो गई है जिसके लिए मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, मुझे उनसे मदद माँगते शर्म मालूम होती है, इसके अलावा क्या जाने उनको मेरी तरफ से रंज हो गया हो, हाँ तुम जाओ और उनसे मिलो। अगर मेरी तरफ से कुछ मलाल उनके दिल में हो तो उसको मिटा दो और तेजसिंह को लाओ तो काम चले।" हरदयालसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा महाराज, मैं खुद ही जाऊंगा और इस काम को करूंगा। महाराज ने अपनी मोहर लगाकर एक मुख्तसर चिट्ठी अपने हाथ से लिखी और अंगज़ी की मोहर लगाकर उनके हवाले किया।"

हरदयालसिंह महाराज से विदा हो अपने घर आये और अन्दर जनाने में न जाकर बाहर ही रहे, खाने को वहाँ ही मंगवाया। खा-पीकर बैठे और सोचने लगे कि चपला से मिल के सब हाल कह लें तो जायें। थोड़ा दिन बाकी था जब चपला आई। एकान्त में ले जाकर हरदयालसिंह ने सब हाल कहा और वह चिट्ठी भी दिखाई जो महाराज ने लिख दी थी। चपला बहुत ही खुश हुई और बोली, "हरदयालसिंह तुम्हारे मेल में आ जायेगा, वह बहुत ही लायक है। अब तुम जाओ, इस काम को जल्दी करो।" चपला तेजसिंह की चालाकी की तारीफ करने लगी, अब वीरेन्द्रसिंह से मुलाकात होगी यह उम्मीद दिल में हुई।

नकली हरदयालसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए, रास्ते में अपनी सूरत असली बना ली।

चौदहवां बयान

नौगढ़ और विजयगढ़ का राज पहाड़ी है, जंगल भी बहुत भारी और घना है, नदियां चन्द्रप्रभा और कर्मनाशा घूमती हुई इन पहाड़ों पर बहती हैं। जा-बजा खोह और दर्रे पहाड़ों में बड़े खूबसूरत कुदरती बने हुए हैं। पेड़ों में साखू, तेंद, विजयसार, सनई, कोरया, गो, खाजा, पेयार, जिगना, आसन आदि के पेड़ हैं। इसके अलावा पारिजात के पेड़ भी हैं। मील भर इधर-उधर जाइये तो घने जंगल में फंस जाइएगा! कहीं रास्ता न मालूम होगा कि कहाँ से आये और किधर जाएंगे। बरसात के मौसम में तो अजब ही कैफियत रहती है, कोस भर जाइए, रास्ते में दस नाले मिलेंगे। जंगली जानवरों में सांभर, बारहसिंघा, चीता, भालू, तेंदुआ चिकारा, लंगूर, बन्दर वगैरह के अलावा कभी-कभी शेर भी दिखाई देते हैं मगर बरसात में नहीं, क्योंकि नदी-नालों में पानी ज़्यादा हो जाने से उनके रहने की जगह खराब हो जाती है, और तब वे ऊंची पहाड़ियों पर चले जाते हैं। इन पहाड़ों पर हिरन नहीं होते मगर पहाड़ के नीचे बहुत से दीख पड़ते हैं। परिन्दों में तीतर, बटेर, आदि की अपेक्षा मोर ज़्यादा होते हैं। गरज़ कि ये सुहावने पहाड़ अभी तक लिखे मुताबिक मौज़ूद हैं और हर तरह से देखने के काबिल है।

उन ऐयारों ने जो चुनार से क्रूर और नाज़िम के संग आये थे, शहर में न जाकर इसी दिलचस्प जंगल में मय क्रूर के अपना डेरा ज़माया, और आपस में यह राय हो गई कि सब अलग-अलग जाकर ऐयारी करें, तथा जब ज़रूरत हो जंगल में जफील बजाकर इकट्ठे हो जाया करें। बद्रीनाथ ने जो इन ऐयारों में सब से ज़्यादा चालाक और होशियार था यह राय निकाली कि एक दफा सब कोई अलग-अलग भेष बदल कर शहर में घुस दरबार और महल के सब आदमियों तथा लौंडियों बल्कि रानी तक को देख के पहचान आवें तथा चाल-चलन तजबीज़ कर नाम भी याद कर लें जिससे वक़्त पर ऐयारी करने के लिए सूरत बदलने और बातचीत करने में फ़र्क़ न पड़े। इस राय को सभी ने पसन्द किया, नाज़िम ने सभी का नाम बताया और जहाँ तक हो सका पहचनवा भी दिया! वे ऐयार लोग तरह-तरह के भेष बदलकर महल में भी घुस गये और सब कुछ देख-भाल आये, मगर ऐयारी का मौका चपला की होशियारी की वजह से किसी को न मिला और उनको ऐयारी करना मंज़ूर भी न था जब तक कि हर तरह से देख-भाल न लेते।

जब वे लोग हर तरह से होशियार और वाकिफ हो गये तब ऐयारी करना शुरू किया। भगवानदत्त चपला की सूरत बना नौगढ़ में वीरेन्द्रसिंह को फांसने के लिए चला। वहाँ पहुंच

कर जिस कमरे में वीरेन्द्रसिंह थे उसके दरवाज़े पर पहुंच पहरे वाले से कहा, "जाकर कुमार से कहो कि विजयगढ़ से चपला आई है।" उस प्यादे ने जाकर खबर दी। कुछ रात गुज़र गई थी, कुंवर वीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता की याद में बैठे तबीयत से हजारों युक्तियां निकाल रहे थे, बीच-बीच में ऊंची सांस भी लेते जाते थे, उसी वक़्त चोबदार ने आकर अर्ज़ किया-"पृथ्वीनाथ, विजयगढ़ से चपला आई हैं और ड्योढ़ी पर खड़ी हैं। क्या हुक्म होता है ?" कुमार चपला का नाम सुनते ही चैंक उठे और खुश होकर बोले, "उसे जल्दी अन्दर लाओ।" हुक्म के बमूज़िब चपला हाज़िर हुई, कंुमार चपला को देख कर उठ खड़े हुए और हाथ पकड़ अपने पास बैठा बातचीत करने लगे, चन्द्रकान्ता का हाल पूछा। चपला ने कहा, "अच्छी हैं, सिवाय आपकी याद के और किसी तरह की तकलीफ नहीं है, हमेशा कहा करती हैं कि बड़े बेमुरौवत हैं, कभी खबर भी नहीं लेते कि जीती है या मर गई। आज घबड़ा कर मुझको भेजा है और यह दो नासपातियां अपने हाथ से छील-काट कर आपके वास्ते भेजी हैं तथा अपने सिर की कसम दी है कि इन्हें ज़रूर खाइएगा।" वीरेन्द्रसिंह चपला की बातें सुन बहुत खुश हुए। चन्द्रकान्ता का इश्क पूरे दर्ज़े पर था, धोखे में आ गये, भले-बुरे की कुछ तमीज़ न रही, चन्द्रकान्ता की कसम कैसे टालते, झट नासपाती का टुकड़ा उठा लिया और मुंह से लगाया ही था कि सामने से आते हुए तेजसिंह दिखाई पड़े। तेजसिंह ने देखा, वीरेन्द्रसिंह बैठे हैं, देखते ही आग हो गये। ललकार कर बोले, "खबरदार, मुंह में मत डालना!" इतना सुनते ही वीरेन्द्रसिंह रुक गये और बोले, "क्यों, क्या है ?" तेजसिंह ने कहा, "मैं जाती बार हज़ार बार समझा गया, अपना सिर मार गया, मगर आपको खयाल न हुआ! कभी आगे भी चपला यहाँ आई थी! आपने क्या खाक पहचाना कि यह चपला है या कोई ऐयार! बस सामने रण्डी को देख मीठी-मीठी बातें सुन मज़े में आ गये!"

तेजसिंह की घुड़की सुन वीरेन्द्रसिंह तो शर्मा गये और चपला के मुंह की तरफ देखने लगे! मगर नकली चपला से न रहा गया, फंस तो चुकी ही थी, झट खंजर निकाल कर तेजसिंह पर दौड़ी। वीरेन्द्रसिंह भी जान गये कि यह ऐयार है, उसको खंजर ले तेजसिंह पर दौड़ते देख लपक कर हाथ से उसकी कलाई पकड़ी जिसमें खंजर था, दूसरा हाथ कमर में डाल उठा लिया और सिर से ऊंचा करना चाहते थे कि फेंकें जिससे हड्डी पसली सब चूर हो जाये कि तेजसिंह ने आवाज़ दी, "हाँ, हाँ, पटकना मत, मर जायेगा, ऐयार लोगों का काम ही यही है, छोड़ दो, मेरे हवाले करो।" यह सुन कुमार ने उसे धीरे से ज़मीन पर पटक कर मुश्कें बांध तेजसिंह के हवाले किया। तेजसिंह ने जबरदस्ती उसके नाक में दवा ठूंस बेहोश किया और गठरी में बांध किनारे रख बातें करने लगे।

तेजसिंह ने कुमार को समझाया और कहा, "देखिए जो हो गया सो हो गया, मगर अब धोखा मत खाइयेगा।" कुमार बहुत शर्मिन्दा थे, इसका कुछ जवाब न दे विजयगढ़ का हाल पूछने लगे। तेजसिंह ने सब खुलासा ब्यौरा कहा और चिट्ठी भी दिखाई जो महाराज जयसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह के नाम लिखी थी। कुमार यह सब सुन और चिट्ठी देख उछल

पड़े, मारे खुशी के तेजसिंह को गले से लगा लिया और बोले, “अब जो कुछ करना हो जल्दी कर डालो।” तेजसिंह ने कहा, “हाँ, देखो सब कुछ हो जाता है, घबराओ मत।” इसी तरह दोनों को बातें करते तमाम रात गुज़र गई।

सवेरा हुआ चाहता था जब तेजसिंह उस ऐयार की गठरी पीठ पर लादे उसी तहखाने की तरफ रवाना हुए जिसमें अहमद को क़ैद कर आये थे। तहखाने का दरवाज़ा खोल अन्दर गये, टहलते-टहलते चश्मे के पास जा निकले। देखा कि अहमद नहर के किनारे सोया है और हरदयालसिंह एक पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर सिर झुकाये बैठे हैं। तेजसिंह को देखकर हरदयालसिंह उठ खड़े हुए और बोले, “क्यों तेजसिंह मैंने क्या कसूर किया जो मुझको क़ैद कर रखा है ?” तेजसिंह ने हँस कर जवाब दिया, “अगर कोई कसूर किया होता तो पैर में बेड़ी पड़ी होती, जैसा कि अहमद को आपने देखा होगा। आपने कोई कसूर नहीं किया, सिर्फ एक दिन आपको रोक रखने से मेरा बहुत काम निकलता था इसलिए मैंने ऐसी बेअदबी की, माफ कीजिए। अब आपको अख्तियार है चाहे जहाँ जायें, मैं ताबेदार हूँ। विजयगढ़ में नेक, ईमानदार इन्साफ पसन्द सिवाय आपके कोई नहीं है, इसी सबब से मैं भी मदद का उम्मीदवार हँू।

हरदयालसिंह ने कहा,” सुनो तेजसिंह, तुम खुद जानते हो कि मैं हमेशा से तुम्हारा और कुंवर वीरेन्द्रसिंह का दोस्त हूँ, मुझको तुम लोगों की खिदमत करने में कोई उज्र नहीं। मैं तो आप हैरान था कि दोस्त आदमी को तेजसिंह ने क्यों क़ैद किया ? पहले तो मुझको यह भी नहीं मालूम हुआ कि मैं यहाँ कैसे आया, मर के आया हूँ या जीते जी, पर जब अहमद को देखा तो समझ गया कि यह तुम्हारी ही करामात है, भला यह तो कहो मुझको यहाँ रखकर तुमने क्या कार्रवाई की और अब मैं तुम्हारा क्या काम कर सकता हूँ ?”

तेजसिंह: मैं आपकी सूरत बनाकर आपके जनाने में नहीं गया इससे आप खातिर ज़मा रखिये।

हरदयालसिंह: तुमको तो मैं अपने लड़के से ज़्यादा समझता हूँ, अगर जनाने में जाते भी तो क्या था! खैर, हाल कहो।

तेजसिंह ने महाराज जयसिंह की चिट्ठी दिखाई, हरदयाल के कपड़े जो पहने हुए थे उनको दे दिये और सब खुलासा हाल कह कर बोले, “अब आप अपने कपड़े सहेज लीजिये और यह चिट्ठी लेकर दरबार में जाइये, राजा से मुझको मांग लीजिये जिससे मैं आपके साथ चलूं, नहीं तो वे ऐयार जो चुनार से आये हैं विजयगढ़ को गारत कर डालेंगे और महाराज शिवदत्त अपना कब्ज़ा विजयगढ़ पर कर लेंगे। मैं आपके संग चल कर उन ऐयारों को गिरफ्तार करूंगा। आप दो बातों का ज़्यादा खयाल रखियेगा, एक यह कि जहाँ तक बने मुसलमानों को बाहर कीजिये और हिन्दुओं को रखिये, दूसरे यह कि कुंवर वीरेन्द्रसिंह का हमेशा ध्यान रखिये और महाराज से बराबर उनकी तारीफ किया कीजिये जिससे महाराज मदद के वास्ते उनको भी बुलावें!”

हरदयालसिंह ने कसम खाकर कहा, “मैं हमेशा तुम लोगों का खैरख्वाह हूँ, जो कुछ तुमने कहा है उससे ज़्यादा कर दिखाऊंगा।”

तेजसिंह ने ऐयार की गठरी खोली और एक खुलासा बेड़ी उसके पैर में डाल तथा ऐयारी का बटुआ और खंजर उसके कमर से निकालने के बाद उसे होश में लाये। उसके चेहरे को साफ किया तो मालूम हुआ कि वह भगवानदत्त है।

ऐयार होने के कारण चुनार के सब ऐयारों को तेजसिंह पहचानते थे और वे सब लोग भी उनको बखूबी जानते थे। तेजसिंह ने भगवानदत्त को नहर के किनारे छोड़ा और हरदयालसिंह को साथ ले खोह के बाहर चले। दरवाज़े के पास आये, हरदयालसिंह से कहा कि “आप मेहरबानी करके मुझे इजाज़त दें कि मैं थोड़ी देर के लिए आपको फिर बेहोश करूं, तहखाने के बाहर होश में ले आऊंगा।” हरदयालसिंह ने कहा, “इसमें मुझको कुछ उज्र नहीं है, मैं यह नहीं चाहता कि इस तहखाने में आने का रास्ता देख लूं, यह तुम्हीं लोगों के काम हैं, मैं देखकर क्या करूंगा ?”

तेजसिंह हरदयालसिंह को बेहोश करके बाहर लाये और होश में लाकर बोले, “अब आप कपड़े पहन लीजिए और मेरे साथ चलिए।” उन्होंने वैसा ही किया।

शहर में आकर तेजसिंह के कहे मुताबिक हरदयालसिंह अलग होकर अकेले राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में गये। राजा ने उनकी बड़ी खातिर की और हाल पूछा। उन्होंने बहुत कुछ कहने के बाद महाराज जयसिंह की चिट्ठी दी जिसको राजा ने इज़्ज़त के साथ लेकर अपने वज़ीर जीतसिंह को पढ़ने के लिए दिया, जीतसिंह ने ज़ोर से खत पड़ा। राजा सुरेन्द्रसिंह चिट्ठी सुनकर बहुत खुश हुए और हरदयालसिंह की तरफ देख कर बोले, “मेरा राज्य महाराज जयसिंह का है, जिसे चाहें बुला लें मुझे कुछ उज्र नहीं, तेजसिंह आपके साथ जायेगा।” यह कह अपने वज़ीर जीतसिंह को हरदयालसिंह की मेहमानी का हुक्म दिया और दरबार बर्खास्त किया।

दीवान हरदयालसिंह की मेहमानी तीन दिन तक बहुत अच्छी तरह से की गई जिससे वे बहुत खुश हुए। चैथे दिन दीवान साहब ने राजा से रुखसत मांगी, राजा ने बहुत कुछ दौलत जवाहरात से उनकी विदाई की और तेजसिंह को बुला समझा-बुझाकर दीवान साहब के संग किया।

बड़े साज-सामान के साथ ये दोनों विजयगढ़ पहुंचे और शाम को दरबार में महाराज के पास हाज़िर हुए। हरदयालसिंह ने महाराज की चिट्ठी का जवाब दिया और सब हाल कह सुरेन्द्रसिंह की बड़ी तारीफ की जिससे महाराज बहुत खुश हुए और तेजसिंह को उसी वक़्त खिलअत देकर हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि “इनके रहने के लिए मकान का बन्दोबस्त कर दो और इनकी खातिरदारी और मेहमानी का बोझ अपने ऊपर समझो।”

दरबार उठने पर दीवान साहब तेजसिंह को साथ ले विदा हुए और एक बहुत अच्छे कमरे में डेरा दिलवाया। नौकर और पहले वाले तथा प्यादों का भी बहुत अच्छा इन्तज़ाम कर

दिया जो सब हिन्दू ही थे। दूसरे दिन तेजसिंह महाराज के दरबार में हाज़िर हुए, दीवान हरदयालसिंह के बगल में एक कुर्सी उनके वास्ते मुकर्रर की गई।

पन्द्रहवां बयान

हम पहले यह लिख चुके हैं कि महाराज शिवदत्त के यहाँ जितने ऐयार हैं सभी को तेजसिंह पहचानते हैं। अब तेजसिंह को यह जानने की फिक्र हुई कि उनमें से कौन-कौन चार आये हैं, इसलिए दूसरे दिन शाम के वक़्त उन्होंने अपनी सूरत भगवानदत्त की बनाई जिसको तहखाने में बन्द कर आये थे और शहर से निकल जंगल में इधर-उधर घूमने लगे, पर कहीं कुछ पता न लगा। बरसात का दिन आ चुका था, रात अंधेरी और बदली छाई थी, आखिर तेजसिंह ने एक टीले पर खड़े होकर जफील बजाई।

थोड़ी देर में तीनों ऐयार मय पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के उसी जगह पहुंचे और भगवानदत्त को खड़े देख बोले, “क्यों जी, तुम नौगढ़ गये थे ना ? क्या किया, खाली क्यों चले आये ?”

तेजसिंह ने सबों को पहचानने के बाद जवाब दिया, “वहाँ तेजसिंह की बदौलत कोई कार्रवाई न चली, तुम लोगों में से कोई एक आदमी हमारे साथ चले तो काम बने!”

पन्ना: अच्छा कल हम तुम्हारे साथ चलेंगे, आज चलो महल में कोई कार्रवाई करें।

तेजसिंह: अच्छा चलो, मगर मुझको इस वक़्त भूख बड़े ज़ोर की लगी है कुछ खा लूं तो काम में जी लगे। तुम लोगों के पास कुछ हो तो लाओ।

जगन्नाथ: पास में तो जो कुछ है बेहोशी मिला है, बाज़ार से जाकर कुछ लाओ तो सब कोई खा-पीकर छुट्टी करें।

भगवान: अच्छा एक आदमी मेरे साथ चलो।

पन्नालाल साथ हुए, दोनों शहर की तरफ चले। रास्ते में पन्नालाल ने कहा, “हम लोगों को अपनी सूरत बदल लेनी चाहिए क्योंकि तेजसिंह कल से इसी शहर में आया है और हम सबों को पहचानता भी है, शायद घूमता-फिरता कहीं मिल जाये।”

भगवानदत्त ने यह सोचकर कि सूरत बदलेंगे तो रोगन लगाते वक़्त शायद यह पहचान ले, जवाब दिया, “कोई ज़रूरत नहीं, कौन रात को मिलता है ?” भगवानदत्त के इनकार करने से पन्नालाल को शक हो गया और गौर से इनकी सूरत देखने लगा, मगर रात अंधेरी थी पहचान न सका, आखिर को ज़ोर से जफील बजाई। शहर के पास आ चुके थे, ऐयार लोग दूर थे जफील न सुन सके; तेजसिंह भी समझ गये कि इसको शक हो गया, अब देर करने की कुछ ज़रूरत नहीं, झट उसके गले में हाथ डाल दिया, पन्नालाल ने भी खंजर निकाल लिया, दोनों में खबू ज़ोर की भिड़न्त हो गई। आखिर को तेजसिंह ने पन्ना को उठा

के दे मारा और मुश्कें कस बेहोश कर गठरी बांध ली तथा पीठ पर लाद शहर की तरफ रवाना हुए।

असली सूरत बनाये हुए डेरे पर पहुँचे। एक कोठरी में पन्नालाल को बन्द कर दिया और पहरे वालों को सख्त ताकीद कर आप उसी कोठरी के दरवाज़े पर पलंग बिछवा सो रहे, सवेरे पन्नालाल को साथ ले दरबार की तरफ चले।

इधर रामनारायण, बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी राह देख रहे थे कि अब दोनों आदमी खाने का सामान लाते होंगे, मगर कुछ नहीं, यहाँ तो मामला ही दूसरा था। उन लोगों को शक हो गया कि कहीं दोनों गिरफ्तार न हो गये हों, मगर यह खयाल में न आया कि भगवानदत्त असल में दूसरे ही कृपानिधान थे।

उस रात को कुछ न कर सके पर सवेरे सूरत बदल कर खोज में निकले। पहले महाराज जयसिंह के दरबार की तरफ चले, देखा कि तेजसिंह दरबार में जा रहे हैं और उसके पीछे-पीछे दस पन्द्रह सिपाही क़ैदी की तरह पन्नालाल को लिए चल रहे हैं। उन ऐयारों ने भी साथ-ही-साथ दरबार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह पन्नालाल को साथ लिये दरबार में पहुंचे, देखा कि कचहरी खूब लगी हुई है, महाराज बैठे हैं, वह भी सलाम कर अपनी कुर्सी पर जा बैठे, क़ैदी को सामने खड़ा कर दिया। महाराज ने पूछा, “क्यों तेजसिंह, किसको लाये हो ?” तेजसिंह ने जवाब दिया, “महाराज, उन पांचों ऐयारों में से जो चुनार से आये हैं एक गिरफ्तार हुआ है, इसको सरकार में लाया हूँ। जो इसके लिए मुनासिब हो, हुक्म किया जाये।”

महाराज गौर के साथ खुशी भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगे और पूछा, “तेरा नाम क्या है ?” उसने कहा, “मक्कार खां उर्फ ऐयार खाँ।” महाराज उसकी ढिठाई और बात पर हँस पड़े, हुक्म दिया, “बस इससे ज्यादे पूछने की कोई ज़रूरत नहीं, सीधे क़ैदखाने में ले जाकर इसको बन्द करो और सख्त पहरा बैठा दो।” हुक्म पाते ही प्यादों ने उस ऐयार के हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी डाल दी और क़ैदखाने की तरफ ले गये। महाराज ने खुश होकर तेजसिंह को सौ अशर्फी इनाम में दीं। तेजसिंह ने खड़े होकर महाराज को सलाम किया और अशर्फियाँ बटुए में रख लीं।

रामनारायण, बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी भेष बदले हुए दरबार में खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे जब पन्नालाल को क़ैदखाने का हुक्म हुआ, वे लोग भी बाहर चले आये और आपस में सलाह कर भारी चालाकी की। किनारे जाकर बद्रीनाथ ने तो तेजसिंह की सूरत बनाई और रामनारायण और ज्योतिषीजी प्यादे बनकर तेजी के साथ उन सिपाहियों की तरफ चले जो पन्नालाल को क़ैदखाने की तरफ लिये जा रहे थे। पास पहुंचकर बोले, “ठहरो, ठहरो, इस नालायक ऐयार के लिए महाराज ने दूसरा हुक्म दिया है, क्योंकि मैंने अर्ज़ किया था कि क़ैदखाने में इसके संगी-साथी इसको किसी-न-किसी तरह छुड़ा ले

जाएंगे, अगर मैं इसको अपनी हिफाज़त में रखूंगा तो बेहतर होगा क्योंकि मैंने ही इसको पकड़ा है, मेरी ही हिफाज़त में यह रह भी सकेगा, सो तुम लोग इसको मेरे हवाले करो।"

प्यादे तो जानते ही थे कि इसको तेजसिंह ने पकड़ा है, कुछ इनकार न किया और उसे उनके हवाले कर दिया। नकली तेजसिंह ने पन्नालाल को ले जंगल का रास्ता लिया। उसके चले जाने पर उसका हाल अर्ज़ करने के लिए प्यादे फिर दरबार में लौट आये। दरबार उसी तरह से लगा हुआ था, तेजसिंह भी अपनी जगह बैठे थे। उनको देख प्यादों के होश उड़ गये और अर्ज़ करते-करते रुक गये। तेजसिंह ने उनकी तरफ देखकर पूछा, "क्यों ? क्या बात है, उस ऐयार को क़ैद कर आये ?" प्यादों ने डरते-डरते कहा, "जी, उसको तो आप ही ने हम लोगों से ले लिया।" तेजसिंह उनकी बात सुनकर चैंक पड़े और बोले, "मेंने क्या किया है ? मैं तो तबसे इसी जगह बैठा हूँ।

प्यादों की जान डर और ताज्जुब से सूख गई, कुछ जवाब न दे सके, पत्थर की तसवीर की तरह जैसे-के-तैसे खड़े रहे। महाराज ने तेजसिंह की तरफ देखकर पूछा, "क्यों ? क्या हुआ ?" तेजसिंह ने कहा, "महाराज, ऐयार चालाकी खेल गये, मेरी सूरत बना उसी क़ैदी को इन लोगों से छुड़ा ले गये!" तेजसिंह ने अर्ज़ किया, "महाराज इन लोगों का कसूर नहीं, ऐयार लोग ऐसे ही होते हैं, बड़े-बड़ों को धोखा दे जाते हैं, इन लोगों की क्या हकीकत है।"

तेजसिंह के कहने से महाराज ने उन प्यादों का कसूर माफ किया, मगर उस ऐयार के निकल जाने का रंज देर तक रहा।

बद्रीनाथ वगैरह पन्नालाल को लिये हुए जंगल में पहुँचे, एक पेड़ के नीचे बैठकर उसका हाल पूछा, उसने सब हाल कहा। अब इन लोगों को मालूम हुआ कि भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने पकड़ के कहीं छिपाया है, यह सोच सभी ने पंडित जगन्नाथ से कहा, "आप रमल के ज़रिये दरियाफ्त कीजिए कि भगवानदत्त कहाँ है ?" ज्योतिषी ने रमल फेंका और कुछ गिन-गिनाकर कहा, "बेशक भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने ही पकड़ा है और यहा से दो कोस उत्तर की तरफ एक खोह में क़ैद कर रखा है।" यह सुन सभी ने उस खोह की तरफ का रास्ता लिया। ज्योतिषी बार-बार रमल फेंकते और विचार करते हुए उस खोह तक पहुँचे और अन्दर गये, जब उजाला नज़र आया तो देखा, सामने एक फाटक है मगर यह नहीं मालूम होता था कि किस तरह खुलेगा। ज्योतिषीजी ने फिर रमल फेंका और सोचकर कहा, "यह दरवाज़ा एक तिलिस्म के साथ मिला हुआ है और रमल तिलिस्म में कुछ काम नहीं कर सकता, इसके खोलने की कोई तरकीब निकाली जाये तो काम चले।" लाचार वे सब उस खोह के बाहर निकल आये और ऐयारी की फिक्र करने लगे।

सोलहवां बयान

एक दिन तेजसिंह बालादवी के लिए विजयगढ़ के बाहर निकले। पहर दिन बाकी था जब घूमते-फिरते बहुत दूर निकल गये। देखा कि एक पेड़ के नीचे कुंवर वीरेन्द्रसिंह बैठे हैं। उनकी सवारी का घोड़ा पेड़ से बंधा हुआ है, सामने एक बारहसिंघा मरा पड़ा है, उसके एक तरफ आग सुलग रही है, और पास जाने पर देखा कि कुमार के सामने पत्तों पर कुछ टुकड़े गोश्त के भी पड़े हैं।

तेजसिंह को देखकर कुमार ने ज़ोर से कहा, "आओ भाई तेजसिंह, तुम तो विजयगढ़ ऐसा गये कि फिर खबर भी न ली, क्या हमको एकदम ही भूल गये ?"

तेजसिंह: (हंसकर) विजयगढ़ में मैं आप ही का काम कर रहा हूँ कि अपने बाप का ?

वीरेन्द्रसिंह: अपने बाप का।

यह कहकर हंस पड़े। तेजसिंह ने इस बात का कुछ जवाब न दिया और हंसते हुए पास जा बैठे। कुमार ने पूछा, "कहो, चन्द्रकान्ता से मुलाकात हुई थी ?"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "इधर जब से मैं गया हूँ इसी बीच में एक ऐयार को पकड़ा था। महाराज ने उसको क़ैद करने का हुक्म दिया मगर क़ैदखाने तक पहुंचने न पाया था कि रास्ते ही में मेरी सूरत बना उसके साथी ऐयारों ने उसे छुड़ा लिया, फिर अभी तक कोई गिरफ्तार नहीं हुआ।"

कुमार: वे लोग भी बड़े शैतान हैं!

तेजसिंह: और तो जो हैं, बद्रीनाथ भी चुनार से इन लोगों के साथ आया है, वह बड़ा भारी चालाक है। मुझको अगर खौफ़ रहता है तो उसी का! खैर देखा जायेगा, क्या हर्ज़ है। यह तो बताइये, आप यहाँ क्या कर रहे हैं ? कोई आदमी भी साथ नहीं है।

कुमार: आज मैं कई आदमियों को साथ ले सवेरे ही शिकार के लिए निकला, दोपहर तक तो हैरान रहा, कुछ हाथ न लगा, आखिर को यह बारहसिंघा सामने से निकला और मैंने इसके पीछे घोड़ा फेंका। इसने मुझको बहुत हैरान किया, संग के सब साथी छूट गये, अब इस समय तीर खाकर गिरा है। मुझको भूख बड़ी ज़ोर की लगी थी इससे जी में आया कि कुछ गोश्त भून के खाऊं! इसी फिक्र में बैठा था कि सामने से तुम दिखाई पड़े, अब लो तुम ही इसको भूनो। मेरे पास कुछ मसाला था उसको मैंने धो-धाकर इन टुकड़ों में लगा दिया है, अब तैयार करो, तुम भी खाओ मैं भी खाऊं, मगर जल्दी करो आज दिन भर से कुछ नहीं खाया।

तेजसिंह ने बहुत जल्द गोश्त तैयार किया और एक सोते के किनारे जहाँ साफ पानी निकल रहा था बैठकर दोनों खाने लगे। वीरेन्द्रसिंह मसाला पोंछ-पोंछकर खाते थे, तेजसिंह ने पूछा, "आप मसाला क्यों पोंछ रहे हैं ?" कुमार ने जवाब दिया, "फीका अच्छा मालूम होता है।" दो-तीन टुकड़े खाकर वीरेन्द्रसिंह ने सोते में से चुल्लू भर-भर के खूब पानी पिया और कहा, "बस भाई, मेरी तबीयत भर गई, दिन भर भूखे रहने पर कुछ खाया नहीं जाता।" तेजसिंह ने कहा, आप खाइये चाहे न खाइये, मैं तो छोड़ता नहीं, बड़े मज़े का बन पड़ा है। आखिर जहाँ तक बन पड़ा खूब खाया और तब हाथ-मुंह धोकर बोले, "चलिये, अब आपको नौगढ़ पहुंचा कर फिर फिरेंगे।" वीरेन्द्रसिंह "चलो" कहकर घोड़े पर सवार हुए और तेजसिंह पैदल साथ चले।

थोड़ी दूर जाकर तेजसिंह बोले, "न मालूम क्यों मेरा सिर घूमता है!" कुमार ने कहा, "तुम मांस ज़्यादा खा गये हो, उसने गर्मी की है।" थोड़ी दूर गये थे कि तेजसिंह चक्कर खाकर ज़मीन पर गिर पड़े। वीरेन्द्रसिंह ने झट घोड़े पर से कूदकर उनके हाथ-पैर खूब कसके गठरी में बांध पीठ पर लाद लिया और घोड़े की बाग थाम विजयगढ़ का रास्ता लिया। थोड़ी दूर जाकर ज़ोर से जफील (सीटी) बजाई जिसकी आवाज़ जंगल में दूर-दूर तक गूँज गई। थोड़ी देर में क्रूरसिंह पन्नालाल, रामनारायण और ज्योतिषीजी आ पहुंचे। पन्नालाल ने खुश होकर कहा, "वाह जी बद्रीनाथ, तुमने तो बड़ा भारी काम किया। बड़े ज़बरदस्त को फांसा! अब क्या है, ले लिया!!" क्रूरसिंह मारे खुशी के उछल पड़ा। बद्रीनाथ ने, जो अभी तक कुंवर वीरेन्द्रसिंह बना हुआ था गठरी पीठ से उतार ज़मीन पर रख दी और रामनारायण से कहा, "तुम इस घोड़े को नौगढ़ पहुंचा दो, जिस अस्तबल से चुरा लाये थे उसी के पास छोड़ आओ, आप ही लोग बांध लेंगे।" यह सुनकर रामनारायण घोड़े पर सवार हो नौगढ़ चला गया। बद्रीनाथ ने तेजसिंह की गठरी अपनी पीठ पर लादी और ऐयारों को कुछ समझा-बुझाकर चुनार का रास्ता लिया।

तेजसिंह का मामूल था कि रोज़ महाराज जयसिंह के दरबार में जाते और सलाम करके अपनी कुर्सी पर बैठ जाते। दो-एक दिन महाराज ने तेजसिंह की कुर्सी खाली देखी, हरदयालसिंह से पूछा कि 'आजकल तेजसिंह नज़र नहीं आते, क्या तुमसे मुलाकात हुई थी' ? दीवान साहब ने अर्ज़ किया, "नहीं, मुझसे भी मुलाकात नहीं हुई, आज दरियाफ्त करके अर्ज़ करूंगा।" दरबार बर्खास्त होने के बाद दीवान साहब तेजसिंह के डेरे पर गये, मुलाकात न होने पर नौकरों से दरियाफ्त किया। सभी ने कहा, "कई दिन से वे यहाँ नहीं हैं, हम लोगों ने बहुत खोज की मगर पता न लगा।"

दीवान हरदयालसिंह यह सुनकर हैरान हो गये। अपने मकान पर जाकर सोचने लगे कि अब क्या किया जाये ? अगर तेजसिंह का पता न लगेगा तो बड़ी बदनामी होगी, जहाँ से हो, खोज लगाना चाहिए। आखिर बहुत से आदमियों को इधर-उधर पता लगाने के लिए रवाना किया और अपनी तरफ से एक चिट्ठी नौगढ़ के दीवान जीतसिंह के पास भेजकर ले जाने

वाले को ताकीद कर दी कि कल दरबार से पहले इसका जवाब लेकर आ जाना। वह आदमी खत लिए शाम को नौगढ़ पहुंचा और दीवान जीतसिंह के मकान पर जाकर अपने आने की इत्तिला करवाई। दीवान साहब ने अपने सामने बुलाकर हाल पूछा, उसने सलाम करके खत दिया। दीवान साहब ने गौर से खत को पढ़ा, दिल में यकीन हो गया कि तेजसिंह ज़रूर ऐयारों के हाथ पकड़ा गया। यह जवाब लिखकर कि 'वह यहाँ नहीं है' आदमी को विदा कर दिया और अपने कई जासूसों को बुलाकर पता लगाने के लिए इधर-उधर रवाना किया। दूसरे दिन दरबार में दीवान जीतसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह से अर्ज़ किया, "महाराज, कल विजयगढ़ से दीवान हरदयालसिंह का पत्र लेकर एक आदमी आया था, यह दरियाफ्त किया था कि तेजसिंह नौगढ़ में है कि नहीं, क्योंकि कई दिनों से वह विजयगढ़ में नहीं है! मैंने जवाब में लिख दिया है कि 'यहाँ नहीं है'।"

राजा को यह सुन ताज्जुब हुआ और दीवान से पूछा, "तेजसिंह वहाँ भी नहीं है और यहाँ भी नहीं आया तो कहाँ चला गया ? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि ऐयारों के हाथ पड़ गया हो, क्योंकि महाराज शिवदत्त के कई ऐयार विजयगढ़ में पहुंचे हुए हैं और उनसे मुकाबला करने के लिए अकेला तेजसिंह गया था!" दीवान साहब ने कहा, "जहाँ तक मैं समझता हूँ वह ऐयारों के ही हाथ में गिरफ्तार हो गया होगा, खैर, जो कुछ होगा दो-चार दिन में मालूम हो जायेगा।"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह भी दरबार में राजा के दाहिने तरफ कुर्सी पर बैठे यह बात सुन रहे थे। उन्होंने अर्ज़ किया, "अगर हुक्म हो तो मैं तेजसिंह का पता लगाने जाऊं ?" दीवान जीतसिंह ने यह सुन कुमार की तरफ देखा और हंसकर जवाब दिया "आपकी हिम्मत और जवांमर्दी में कोई शक नहीं, मगर इस बात को सोचना चाहिए कि तेजसिंह के वास्ते, जिसका काम ही ऐयारी है और ऐयारों के हाथ फंस गया है, आप हैरान होने जाएं इसकी क्या जरूरत ? यह तो आप जानते ही हैं कि अगर किसी ऐयार को कोई ऐयार पकड़ता है तो सिवाय क़ैद रखने के जान से नहीं मारता, अगर तेजसिंह उन लोगों के हाथ में पड़ गया है तो क़ैद होगा, किसी तरह छूट ही जायेगा क्योंकि वह अपने फन में बड़ा होशियार है, सिवाय इसके जो ऐयारी का काम करेगा चाहे वह कितना ही चालाक क्यों न हो, कभी-न-कभी फंस ही जायेगा, फिर इसके लिए सोचना क्या ? दस-पांच दिन सब्र कीजिए, देखिए क्या होता है ? इस बीच में, अगर वह न आया तो आपको जो कुछ करना हो कीजिएगा।"

वीरेन्द्रसिंह ने जवाब दिया, "हाँ, आपका कहना ठीक है मगर पता लगाना ज़रूरी है, यह सोचकर कि वह चालाक है, खुद छूट आय{ ??} खोज न करना मुनासिब नहीं।" जीतसिंह ने कहा, "सच है, आपको मुहब्बत के सबब से उसका ज़्यादा खयाल है, खैर, देखा जायेगा।" यह सुन राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, "और कुछ नहीं तो किसी को पता लगाने के लिए तो भेज ही दो।" इसके जवाब में दीवान साहब ने कहा, "कई जासूसों को पता लगाने

के लिए मैं भेज चुका हूँ।" राजा और कुंवर वीरेन्द्रसिंह चुप ही रहे मगर खयाल इस बात का किसी के दिल से न गया।

विजयगढ़ में दूसरे दिन दरबार में महाराज जयसिंह ने फिर हरदयालसिंह से पूछा, "कहीं तेजसिंह का पता लगा ?" दीवान साहब ने कहा, "यहाँ तो तेजसिंह का पता नहीं लगता, शायद नौगढ़ में हों। मैंने वहाँ भी आदमी भेजा है, अब आता ही होगा, जो कुछ है मालूम हो जायेगा।" ये बातें हो ही रही थीं कि खत का जवाब लिए वह आदमी आ पहुंचा जो नौगढ़ गया था। हरदयालसिंह ने जवाब पढ़ा और बड़े अफसोस के साथ महाराज से अर्ज़ किया कि 'नौगढ़ में भी तेजसिंह नहीं है, यह उनके बाप जीतसिंह के हाथ का खत मेरे खत के जवाब में आया है'। महाराज ने कहा, "उसका पता लगाने की कुछ फिक्र की गई है या नहीं ?" हरदयालसिंह ने कहा, "हाँ, कई जासूस मैंने इधर-उधर भेजे हैं।"

महाराज को तेजसिंह का बहुत अफसोस रहा, दरबार बरखास्त करके महल में चले गये। बात-ही-बात में महाराज ने तेजसिंह का ज़िक्र महारानी से किया और कहा, "किस्मत का फेर इसे ही कहते हैं। क्रूरसिंह ने तो हलचल मचा ही रखी थी, मदद के वास्ते एक तेजसिंह आया था सो कई दिन से उसका भी पता नहीं लगता, अब मुझे उसके लिए सुरेन्द्रसिंह से शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। तेजसिंह का चाल-चलन, बात-चीत, इल्म और चालाकी पर जब खयाल करता हूँ, तबीयत उमड़ आती है। बड़ा लायक लड़का है। उसके चेहरे पर उदासी तो कभी देखी ही नहीं।" महारानी ने भी तेजसिंह के हाल पर बहुत अफसोस किया। इत्तिफाक से चपला उस वक़्त वहीं खड़ी थी, यह हाल सुन वहाँ से चली और चन्द्रकान्ता के पास पहुंची। तेजसिंह का हाल जब कहना चाहती थी, जी उमड़ जाता था, कुछ कह न सकती थी। चन्द्रकान्ता ने उसकी दशा देख पूछा, "क्यों ? क्या है ? इस वक़्त तेरी अजब हालत हो रही है, कुछ मुंह से तो कह!" इस बात का जवाब देने के लिए चपला ने मुंह खोला ही था कि गला भर आया, आखों से आंसू टपक पड़े, कुछ जवाब न दे सकी। चन्द्रकान्ता को और भी ताज्जुब हुआ, पूछा, "तू रोती क्यों है, कुछ बोल भी तो।"

आखिर चपला ने अपने को सम्हाला और बहुत मुश्किल से कहा, "महाराज की जुबानी सुना है कि तेजसिंह को महाराज शिवदत्त के ऐयारों ने गिरफ्तार कर लिया। अब वीरेन्द्रसिंह का आना भी मुश्किल होगा क्योंकि उनका वही एक बड़ा सहारा था।" इतना कहा ही था कि पूरे तौर से आंसू भर आये और खूब खुलकर रोने लगी। इसकी हालत से चन्द्रकान्ता समझ गई कि चपला भी तेजसिंह को चाहती है, मगर सोचने लगी कि चलो अच्छा ही है इसमें भी हमारा ही भला है, मगर तेजसिंह के हाल और चपला की हालत पर बहुत अफसोस हुआ, फिर चपला से कहा, "उनको छुड़ाने की यही फिक्र हो रही है ? क्या तेरे रोने से वे छूट जायेंगे ? तुझसे कुछ नहीं हो सकता तो मैं ही कुछ करूं ?" चम्पा भी वहाँ बैठी यह अफसोस भरी बातें सुन रही थी, बोली, "अगर हुक्म हो तो मैं तेजसिंह की खोज में जाऊं ?" चपला ने कहा, "अभी तू इस लायक नहीं हुई है ?" चम्पा बोली, "क्यों, अब मेरे

में क्या कसर है ? क्या मैं ऐयारी नहीं कर सकती ?” चपला ने कहा, “हाँ ऐयारी तो कर सकती है मगर उन लोगों का मुकाबला नहीं कर सकती जिन लोगों ने तेजसिंह जैसे चालाक ऐयार को पकड़ लिया। हाँ, मुझको राजकुमारी हुक्म दें तो मैं खोज में जाऊं ?” चन्द्रकान्ता ने कहा, “इसमें भी हुक्म की जरूरत ? तेरी मेहनत से अगर वे छूटेंगे तो जन्म भर उनको कहने लायक रहेगी। अब तू जाने में देर मत कर, जा।” चपला ने चम्पा से कहा, “देख, मैं जाती हूँ पर ऐयार लोग बहुत से आये हुए हैं, ऐसा न हो कि मेरे जाने के बाद कुछ नया बखेड़ा मचे। खैर, और तो जो होगा देखा जायेगा, तू राजकुमारी से होशियार रहियो। अगर तुझसे कुछ भूल हुई या राजकुमारी पर किसी तरह की आफत आई तो मैं जन्म भर तेरा मुंह न देखूंगी!” चम्पा ने कहा, “इस बात से आप खातिर जमा रखें, मैं बराबर होशियार रहा करूंगी।”

चपला अपने ऐयारी के सामान से लैस हो और कुछ दक्षिणी ढंग के जेवर तथा कपडे साथ ले तेजसिंह की खोज में निकली।

सत्रहवां बयान

चपला कोई साधारण औरत न थी। खूबसूरती और नजाकत के अलावा उसमें ताकत भी थी। दो-चार आदमियों से लड़ जाना या उनको गिरफ्तार कर लेना उसके लिए एक अदना-सा काम था, शस्त्र-विद्या को पूरे तौर से जानती थी। ऐयारी के फन के अलावा और भी कई गुण उसमें थे। गाने और बजाने में उस्ताद, नाचने में कारीगर, आतिशबाज़ी बनाने का बड़ा शौक, कहाँ तक लिखें-कोई फन ऐसा न था जिसको चपला न जानती हो। रंग उसका गोरा, बदन हर जगह सुडौल, नाज़ुक हाथ-पांव की तरफ खयाल करने से यही ज़ाहिर होता था कि इसे एक फूल से मारना खून करना है। उसको जब कहीं बाहर जाने की ज़रूरत पड़ती थी तो अपनी खूबसूरती जान-बूझकर बिगाड़ डालती या भेष बदल लेती थी।

अब इस वक़्त शाम हो गई बल्कि कुछ रात भी जा चुकी है। चन्द्रमा अपनी पूरी किरणों से निकला हुआ है। चपला अपनी असली सूरत में चली जा रही है, ऐयारी का बटुआ बगल में लटकाये कमन्द कमर में कसे और खंजर भी लगाये हुए जंगल-ही-जंगल कदम बढ़ाये जा रही है। तेजसिंह की याद ने उसको ऐसा बेकल कर दिया है कि अपने बदन की भी खबर नहीं है। उसको यह मालूम नहीं कि वह किस काम के लिए बाहर निकली है या कहाँ जा रही है, उसके आगे क्या है, पत्थर या गड्ढा, नदी है या नाला, खाली पैर बढ़ाये चले जाना यही उसका काम है। आंखों से आंसू की बूंदें गिर रही हैं, सारा कपड़ा भीग गया है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर ठोकर खाती है, उंगलियों से खून निकल रहा है मगर उसको इसका कुछ खयाल नहीं। आगे एक नाला आया जिस पर चपला ने कुछ ध्यान न दिया और धम्म से उस नाले में गिर पड़ी, सिर फट गया, खून निकलने लगा, कपड़े बदन के सब भीग गये। अब उसको इस बात का खयाल हुआ कि तेजसिंह को छुड़ाने या खोजने चली है। उसके मुंह से झट यह बात निकली-”हाय प्यारे, मैं तुमको बिलकुल भूल गई, तुम्हारे छुड़ाने की फिक्र मुझको ज़रा भी न रही, उसी की यह सज़ा मिली!” अब चपला संभल गई और सोचने लगी कि वह किस जगह है। खूब गौर करने पर उसे मालूम हुआ कि रास्ता बिलकुल भूल गई है और एक भयानक जंगल में आ फंसी है। कुछ क्षण के लिए तो वह बहुत डर गई मगर फिर दिल को संभाला, उस खतरनाक नाले से पीछे फिरी और सोचने लगी, इसमें तो कोई शक नहीं कि तेजसिंह को महाराज शिवदत्त के ऐयारों ने पकड़ लिया है, तो ज़रूर चुनार ही ले भी गये होंगे। पहले वहीं खोज करनी चाहिए जब न मिलेंगे तो दूसरी जगह पता लगाऊंगी। यह विचारकर चुनार का रास्ता ढूंढ़ने लगी। हज़ार खराबी से आधी रात गुज़र जाने के बाद

रास्ता मिला तब सीधे चुनार की तरफ पहाड़-ही-पहाड़ चल निकली, जब सुबह करीब हुई उसने अपनी सूरत एक मर्द सिपाही की-सी बना ली। नहाने-धोने, खाने-पीने की कुछ फिक्र नहीं सिर्फ रास्ता तय करने की उसको धुन थी। आखिर भूखी-प्यासी शाम होते चुनार पहुंची। दिल में ठान लिया था कि जबतक तेजसिंह का पता न लगेगा अन्न-जल ग्रहण न करूंगी। कहीं आराम न लिया, इधर-उधर ढूंढ़ने और तलाश करने लगी। एकाएक उसे कुछ चालाकी सूझी, उसने अपनी सूरत पन्नालाल की बना ली और घसीटासिंह ऐयार के डेरे पर पहुंची।

हम पहले लिख चुके हैं कि छः ऐयारों में से चार ऐयार विजयगढ़ गये हैं और घसीटासिंह और चुन्नीलाल चुनार में ही रह गये हैं। घसीटासिंह पन्नालाल को देखकर उठ खड़े हुए और साहब सलामत के बाद पूछा, "कहो पन्नालाल, अबकी बार किसको लाये ?"

पन्ना०: इस बार लाये तो किसी को नहीं, सिर्फ इतना पूछने आये हैं कि नाज़िम यहाँ है या नहीं, उसका पता नहीं लगता।

घसीटा०: यहाँ तो नहीं आया।

पन्ना०: फिर उसको पकड़ा किसने ? वहाँ तो अब कोई ऐयार नहीं है!

घसीटा०: यह मैं नहीं कह सकता कि वहाँ और भी कोई ऐयार है या नहीं, सिर्फ तेजसिंह का नाम तो मशहूर था सो क़ैद ही हो गये, इस वक़्त क़िले में बन्द पड़े रोते होंगे।

पन्ना०: खैर, कोई हर्ज़ नहीं, पता लग ही जायेगा, अब जाता हूँ रुक नहीं सकता। यह कह नकली पन्नालाल वहाँ से रवाना हुए।

अब चपला का जी ठिकाने हुआ। यह सोचकर कि तेजसिंह का पता लग गया और वे यहीं मौजूद हैं, कोई हर्ज़ नहीं। जिस तरह होगा छुड़ा लेगी, वह मैदान में निकल गई और गंगाजी के किनारे बैठ अपने बटुए में से कुछ मेवा निकाल के खाया, गंगाजल पी के निश्चिन्त हुई और, तब अपनी सूरत एक गाने वाली औरत की बनाई। चपला को खूबसूरत बनने की कोई ज़रूरत न थी, वह खुद ऐसी थी कि हज़ार खूबसूरतों का मुकाबला करे, मगर इस सबब से कि कोई पहचान न ले उसको अपनी सूरत बदलनी पड़ी। जब हर तरह से लैस हो गई, एक वंशी हाथ में ले राजमहल के पिछवाड़े की तरफ जा एक साफ जगह देख बैठ गयी और चढ़ी आवाज़ में एक बिरहा गाने लगी, एक बार स्वयं गाकर फिर उसी गत को वंशी पर बजाती।

रात आधी से ज़्यादा बीत चुकी थी, राजमहल में शिवदत्तसिंह महल की छत पर महारानी के साथ मीठी-मीठी बातें कर रहे थे, एकाएक गाने की आवाज़ उनके कानों में गई और महारानी ने भी सुनी। दोनों ने बातें करना छोड़ दिया और कान लगाकर गौर से सुनने लगे। थोड़ी देर बाद वंशी की आवाज़ आने लगी जिसका बोल साफ मालूम पड़ता था। महाराज की तबीयत बेचैन हो गई, झट लौंडी को बुलाकर हुक्म दिया, "किसी को कहो, अभी जाकर उसको इस महल के नीचे ले आये जिसके गाने की आवाज़ आ रही है।"

हुक्म पाते ही पहरेदार दौड़ गये, देखा कि एक नाज़ुक बदन बैठी गा रही है। उसकी सूरत देखकर लोगों के हवास ठिकाने न रहे, बहुत देर के बाद बोले, “महाराज ने महल के करीब आपको बुलाया है और आपका गाना सुनने के बहुत मुश्तहक हैं।” चपला ने कुछ इनकार न किया, उन लोगों के साथ-साथ महल के नीचे चली आई और गाने लगी। उसके गाने ने महाराज को बेताब कर दिया। दिल को रोक न सके, हुक्म दिया कि उसको दीवानखाने में ले जाकर बैठाया जाये और रोशनी का बन्दोबस्त हो, हम भी आते हैं। महारानी ने कहा, “आवाज से यह औरत मालूम होती है, क्या हर्ज़ है अगर महल में बुला ली जाये।” महाराज ने कहा, “पहले उसको देख-समझ लें तो फिर जैसा होगा किया जायेगा, अगर यहाँ आने लायक होगी तो तुम्हारी भी खातिर कर दी जायेगी।”

हुक्म की देर थी, सब सामान लैस हो गया। महाराज दीवानखाने में जा विराजे। बीबी चपला ने झुककर सलाम किया। महाराज ने देखा कि एक औरत निहायत हसीन, रंग गोरा, सुरमई रंग की साड़ी और धानी बूटीदार चोली दक्षिणी ढंग पर पहने पीछे से लांग बांधे, खुलासा गड़ारीदार जूड़ा कांटे से बांधे, जिस पर एक छोटा-सा सोने का फूल, माथे पर एक बड़ा-सा रोली का टीका लगाए, कानों में सोने की निहायत खूबसूरत जड़ाऊं बालियां पहने, नाक में सरजा की नथ, एक टीका सोने का और घुंघरूदार पटड़ी गूथन को गले में पहने, हाथ में बिना घुंडी का कड़ा व छन्देली जिसके ऊपर काली चूड़ियां, कमर में लच्छेदार कर्धनी और पैर में सांकड़ा पहने अजब आनबान से सामने खड़ी है। गहना तो मुख्तसर ही है मगर बदन की गठाई और सुडौली पर इतना ही आफत हो रहा है। गौर से निगाह करने पर एक छोटा-सा तिल ठुड्डी के बगल में देखा जो चेहरे को और भी रौनक दे रहा था। महाराज के होश जाते रहे, अपनी महारानी साहब को भूल गये जिस पर रीझे हुए थे, झट मुंह से निकल पड़ा, “वाह! क्या कहना है!” टकटकी बंध गई। महाराज ने कहा, “आओ, यहाँ बैठो।” बीबी चपला कमर को बल देती हुई अठखेलियों के साथ कुछ नज़दीक जा सलाम करके बैठ गई। महाराज उसके हुस्न के रोब में आ गये। ज़्यादा कुछ कह न सके एकटक सूरत देखने लगे। फिर पूछा, “तुम्हारा मकान कहाँ है ? कौन हो ? काम क्या है ? तुम्हारी जैसी औरत का अकेली रात के समय घूमना ताज्जुब में डालता है।” उसने जवाब दिया, “मैं ग्वालियर की रहनेवाली पटलापा कत्थक की लड़की हूं। रम्भा मेरा नाम है। मेरा बाप बड़ा भारी गवैया था। एक आदमी पर मेरा जी आ गया, बात-ही-बात में वह मुझसे गुस्सा हो के चला गया, उसी की तलाश में मारी-मारी फिरती हूँ। क्या करूं, अकसर दरबारों में जाती हूं कि शायद कहीं मिल जाये क्योंकि वह भी बड़ा भारी गवैया है, सो ताज्जुब नहीं, किसी दरबार में हो, इस वक़्त तबीयत की उदासी में यों ही कुछ गा रही थी कि सरकार ने याद किया, हाज़िर हुई।” महाराज ने कहा, “तुम्हारी आवाज़ बहुत भली है, कुछ गाओ तो अच्छी तरह सुनूं!” चपला ने कहा, “महाराज ने इस नाचीज़ पर बड़ी मेहरबानी की जो नज़दीक बुलाकर बैठाया और लौंडी को इज़्ज़त दी। अगर आप मेरा गाना सुनना चाहते हैं

तो अपने मुलाजिम सपर्दारों को तलब करें, वे लोग साथ दें तो कुछ गाने का लुत्फ आये, वैसे तो मैं हर तरह से ही गानें को तैयार हूँ।"

यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और हुक्म दिया कि 'सपर्दा हाज़िर किये जायें।' प्यादे दौड़ गये और सपर्दाओं को सरकारी हुक्म सुनाया। वे सब हैरान हो गये कि तीन पहर रात गुज़रे महाराज को यह क्या सूझी है। मगर लाचार होकर आना ही पड़ा। आकर जब एक चांद के टुकड़े को सामने देखा तो तबीयत खुश हो गई। कुढ़े हुए आये थे मगर अब खिल गये। झट साज मिला करीने से बैठे, चपला ने गाना शुरू किया। अब क्या था, साज व सामान के साथ गाना, पिछली रात का समा, महाराज को बुत बना दिया, सपर्दा भी दंग हो गये, तमाम इल्म आज खर्च करना पड़ा। बेवक़्त की महफिल थी जिस पर भी बहुत-से आदमी ज़मा हो गये। दो चीज़ दरबारी की गाई थी कि सुबह हो गई। फिर भैरवी गाने के बाद चपला ने गाना बन्द करके अर्ज़ किया, "महाराज, अब सुबह हो गई, मैं भी कल की थकी हुई हूँ क्योंकि दूर से आई थी, अब हुक्म हो तो रुखसत होऊं ?" चपला की बात सुन महाराज चैंक पड़े। देखा तो सचमुच सवेरा हो गया है। अपने गले से मोती की माला उतारकर इनाम में दी और बोले, "अभी हमारा जी तुम्हारे गाने से बिलकुल नहीं भरा है, कुछ रोज़ यहाँ ठहरो, फिर जाना!" रम्भा ने कहा, "अगर महाराज की इतनी मेहरबानी लौंडी के हाल पर है तो मुझको कोई उज्र रहने में नहीं!"

महाराज ने हुक्म दिया कि रम्भा के रहने का पूरा बन्दोबस्त हो और आज रात को आम महफिल का सामान किया जाये। हुक्म पाते ही सब सरंजाम हो गया, एक सुन्दर मकान में रम्भा का डेरा पड़ गया, नौकर मज़दूर सब तैनात कर दिये गये।

आज रात को आम महफिल थी। अच्छे आदमी सब इकट्ठे हुए, रम्भा भी हाज़िर हुई, सलाम करके बैठ गई। महफिल में कोई ऐसा न था जिसकी निगाह रम्भा की तरफ न हो। जिसको देखिए, लम्बी सांसें भर रहा है, आपस में सब यही कहते हैं कि "वाह, क्या भोली सूरत है, क्यों ? कभी आज तक ऐसी हसीना तुमने देखी थी ?"

रम्भा ने गाना शुरू किया। अब जिसको देखिये मिट्टी की मूरत हो रहा है। एक गीत गाकर चपला ने अर्ज़ किया, "महाराज एक बार नौगढ़ में राजा सुरेन्द्रसिंह की महफिल में लौंडी ने गया था। वैसा गाना आज तक मेरा फिर न ज़मा, वजह यह थी कि उनके दीवान के लड़के तेजसिंह ने मेरी आवाज़ के साथ मिलाकर बीन बजाई थी। हाय, मुझको वह महफिल कभी न भूलेगी! दो-चार रोज़ हुआ मैं फिर नौगढ़ गई थी, मालूम हुआ कि वह गायब हो गया। तब मैं भी वहाँ न ठहरी, तुरन्त वापस चली आई।" इतना कह रम्भा अटक गई। महाराज तो उस पर दिलोजान दिये बैठे थे। बोले, "आजकल तो वह मेरे यहाँ क़ैद है पर मुश्किल तो यह है कि मैं उसको छोडूंगा नहीं और क़ैद की हालत में वह कभी बीन न बजायेगा!" रम्भा ने कहा, "जब वह मेरा नाम सुनेगा तो ज़रूर इस बात को कबूल करेगा मगर उसको एक तरीके से बुलाया जाये, वह अलबत्ता मेरा संग देगा नहीं तो मेरी भी न सुनेगा क्योंकि वह

बड़ा जिद्दी है।" महाराज ने पूछा, "वह कौन-सा तरीका है ?" रम्भा ने कहा, "एक तो उसको बुलाने के लिए ब्राह्मण जाये और वह उम्र में बीस वर्ष से ज़्यादा न हो, दूसरे जब वह उसको लावे, दूसरा कोई संग न हो, अगर भागने का खौफ़ हो तो बेड़ी उसके पैर में पड़ी रहे इसका कोई मुज़ायका नहीं, तीसरे यह कि बीन कोई उम्दा होनी चाहिए।" महाराज ने कहा, "यह कौन-सी बड़ी बात है।" इधर-उधर देखा तो एक ब्राह्मण का लड़का चेतराम नामी उस उम्र का नज़र आया, उसे हुक्म दिया कि तू जाकर तेजसिंह को ले आ, मीर मुंशी ने कहा कि "तुम जाकर पहरेवालों को समझा दो कि तेजसिंह के आने में कोई रोक-टोक न करें। हाँ, एक बेड़ी उसके पैर में ज़रूर पड़ी रहे।"

हुक्म-पा चेतराम तेजसिंह को लेने गया और मीर मुंशी ने भी पहरेवालों को महाराज का हुक्म सुनाया। उन लोगों को क्या उज्र था, तेजसिंह को अकेले रवाना कर दिया। तेजसिंह तुरन्त समझ गये कि मेरा कोई दोस्त ज़रूर यहाँ आ पहुंचा है तभी तो उसने ऐसी चालाकी की शर्त से मुझको बुलाया है। खुशी-खुशी चेतराम के साथ रवाना हुए। जब महफिल में आये, अजब तमाशा नज़र आया। देखा कि एक बहुत ही खूबसूरत औरत बैठी है और सब उसी की तरफ देख रहे हैं। जब तेजसिंह महफिल के बीच में पहुंचे, रम्भा ने आवाज़ दी-"आओ, आओ तेजसिंह, रम्भा कब से आपकी राह देख रही है! भला वह बीन कब भूलेगी जो आपने नौगढ़ में बजाई थी!" यह कहते हुए रम्भा ने तेजसिंह की तरफ देखकर बाई आँख बन्द की। तेजसिंह समझ गये कि यह चपला है, बोले, "रम्भा, तू आ गई। अगर मौत भी सामने नज़र आती हो तब भी तेरे साथ बीन बजा के मरूंगा, क्योंकि तेरे जैसी गानेवाली भला काहे को मिलेगी!" तेजसिंह और रम्भा की बात सुनकर महाराज को बड़ा ताज्जुब हुआ मगर धुन तो यह थी कि कब बीन बजे और रम्भा गाये। बहुत उम्दा बीन तेजसिंह के सामने रखी गई और उन्होंने बजाना शुरू किया, रम्भा भी गाने लगी। अब जो समां बंधा उसकी क्या तारीफ की जाये। महाराज तो सकते की-सी हालत में हो गये। औरों की कैफियत दूसरी हो गयी।

एक ही गीत का साथ देकर तेजसिंह ने कहा, "बस, मैं एक रोज़ में एक ही गीत या बोल बजाता हूँ इससे ज़्यादा नहीं। अगर आपको सुनने का ज़्यादा शौक हो तो कल फिर सुन लीजिएगा!" रम्भा ने भी कहा, "हाँ महाराज, यही तो इनमें ऐब है! राजा सुरेन्द्रसिंह, जिनके यह नौकर थे, कहते-कहते थक गये मगर इन्होंने एक न मानी, एक ही बोल बजाकर रह गये। क्या हर्ज़ है कल फिर सुन लीजिएगा।" महाराज सोचने लगे कि यह भी अजब आदमी है, भला इसमें इसने क्या फायदा सोचा है, अफसोस! मेरे दरबार में यह न हुआ। रम्भा ने भी बहुत कुछ उज्र करके गाना मौकूफ किया। सभी के दिल में हसरत बनी रह गई। महाराज ने अफसोस के साथ मज़लिस बर्खास्त की और तेजसिंह फिर उसी चेतराम ब्राह्मण के साथ जेल में भेज दिये गये।

महाराज को तो अब इश्क हो गया कि तेजसिंह के बीन के साथ रम्भा का गाना सुनें। फिर दूसरे रोज़ महफिल हुई और उसी चेतराम ब्राह्मण को भेजकर तेजसिंह बुलाये गये। उस रोज़ भी एक बोल बजाकर उन्होंने बीन रख दी। महाराज का दिल न भरा, हुक्म दिया कि कल पूरी महफिल हो। दूसरे दिन फिर महफिल का सामान हुआ, सब कोई आकर पहले ही से ज़मा हो गये, मगर रम्भा महफिल में जाने के वक़्त से घंटे भर पहले ही दांव बचा चेतराम की सूरत बना क़ैदखाने में पहुंची। पहरेवाले जानते ही थे कि चेतराम अकेला ही तेजसिंह को ले जायेगा, महाराज का हुक्म ही ऐसा है। उन्होंने ताला खोलकर तेजसिंह को निकाला और पैर में बेड़ी डाल चेतराम के हवाले कर दिया। चेतराम (चपला) उनको लेकर चलते बने। थोड़ी दूर जाकर चेतराम ने तेजसिंह की बेड़ी खोल दी। अब क्या था, दोनों ने जंगल का रास्ता लिया।

कुछ दूर जाकर चपला ने अपनी सूरत बदल ली और असली सूरत में हो गई, अब तेजसिंह उसकी तारीफ करने लगे। चपला ने कहा, "आप मुझको शर्मिन्दा न करें क्योंकि मैं अपने को इतना चालाक नहीं समझती जितना आप तारीफ कर रहे हैं, फिर मुझको आपके छुड़ाने की कोई गरज़ भी न थी, सिर्फ चन्द्रकान्ता की मुरौवत से मैंने यह काम किया।" तेजसिंह ने कहा, "ठीक है, तुमको मेरी गरज़ काहे को होगी! गरजूं तो मैं ठहरा कि तुम्हारे साथ सपर्दा बना, जो काम बाप-दादों ने न किया था सो करना पड़ा!" यह सुन चपला हंस पड़ी और बोली, "बस माफ कीजिए, ऐसी बातें न करिए।" तेजसिंह ने कहा, "वाह, माफ क्या करना है, मैं बगैर मज़दूरी लिए न छोडूंगा।" चपला ने कहा, "मेरे पास क्या है जो मैं दूं ?" उन्होंने कहा, "जो कुछ तुम्हारे पास है मेरे लिए वही बहुत है।" चपला ने कहा, "खैर, इन बातों को जाने दीजिए और यह कहिए कि यहाँ से खाली ही चलिएगा या महाराज शिवदत्त को कुछ हाथ भी दिखाइयेगा ?" तेजसिंह ने कहा, "इरादा तो मेरा यही था, आगे तुम जैसा कहो।" चपला ने कहा, "जरूर कुछ करना चाहिए!"

बहुत देर तक आपस में सोच-विचारकर दोनों ने एक चालाकी ठहराई जिसे करने के लिए ये उस जगह से दूसरे घने जंगल में चले गये।

अट्ठारहवां बयान

अब महाराज शिवदत्त की महफिल का हाल सुनिए। महाराज शिवदत्तसिंह महफिल में आ विराजे। जब रम्भा के आने में देर हुई तो एक चोबदार को कहा कि जाकर उसको बुला लाये और चेतराम ब्राह्मण को तेजसिंह के लाने के लिए भेजा। थोड़ी देर बाद चोबदार ने आकर अर्ज़ किया कि महाराज, रम्भा तो अपने डेरे में नहीं है, कहीं चली गई। महाराज को बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसको जी से चाहने लगे थे। दिल में रम्भा के लिए अफसोस करने लगे और हुक्म दिया कि फौरन उसे तलाश करने के लिए आदमी भेजे जायें। इतने में चेतराम ने आकर दूसरी खबर सुनाई कि क़ैदखाने में तेजसिंह नहीं है। अब तो महाराज के होश उड़ गये। सारी महफिल दंग हो गई कि अच्छी गाने वाली आई जो सभी को बेवकूफ बनाकर चली गई। घसीटासिंह और चुन्नीलाल ऐयार ने अर्ज़ किया, “महाराज बेशक वह कोई ऐयार था जो इस तरह आकर तेजसिंह को छुड़ा ले गया।” महाराज ने कहा, “ठीक है, मगर काम उसने काबिल इनाम के किया। ऐयारों ने भी तो उसका गाना सुना था, महफिल में मौजूद ही थे, उन लोगों की अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गये थे कि उसको न पहचाना! लानत है तुम लोगों के ऐयार कहलाने पर!” यह कह महाराज गम और गुस्से से भरे हुए उठकर महल में चले गये। महफिल में जो लोग बैठे थे उन लोगों ने अपने घर का रास्ता लिया। तमाम शहर में यह बात फैल गई; जिधर देखिए यही चर्चा थी।

दूसरे दिन जब गुस्से में भरे हुए महाराज दरबार में आये तो एक चोबदार ने अर्ज़ किया, “महाराज, वह जो गानेवाली आई थी असल में वह औरत ही थी। वह चेतराम मिश्र की सूरत बनाकर तेजसिंह को छुड़ा ले गई। मैंने अभी उन दोनों को उस सलई वाले जंगल में देखा है।” यह सुन महाराज को और भी ताज्जुब हुआ, हुक्म दिया कि बहुत से आदमी जायें और उनको पकड़ लावें, पर चोबदार ने अर्ज़ किया-”महाराज इस तरह वे गिरफ्तार न होंगे, भाग जायेंगे, हाँ घसीटासिंह और चुन्नीलाल मेरे सांथ चलें तो मैं दूर से इन लोगों को दिखला दूं ये लोग कोई चालाकी करके उन्हें पकड़ लें।” महाराज ने इस तरकीब को पसन्द करके दोनों ऐयारों को चोबदार के साथ जाने के लिए हुक्म दिया। चोबदार उन दोनों को लिए हुए उस जगह पहुंचा जिस जगह उसने तेजसिंह का निशान दिया था, पर देखा कि वहा कोई नहीं है। तब घसीटासिंह ने पूछा, “अब किधर देखें ?” उसने कहा, “क्या यह ज़रूरी है कि वे तब से अब तक इसी पेड़ के नीचे बैठे रहें ? इधर-उधर देखिए कहीं होंगे!” यह सुन घसीटासिंह ने कहा, “अच्छा चलो, तुम ही आगे चलो।”

वे लोग इधर-उधर ढूंढ़ने लगे, इसी समय एक अहीरिन सिर पर खंचिए में दूध लिए आती नज़र पड़ी। चोबदार ने उसको अपने पास बुलाकर पूछा कि “तूने इस जगह कहीं एक औरत और एक मर्द को देखा है ?” उसने कहा, “हाँ, हाँ, उस जंगल में मेरा अडार है, बहुत गाय-भैंस मेरी वहाँ रहती हैं, अभी मैंने उन दोनों के हाथ दो पैसे का दूध बेचा है और बाकी दूध लेकर शहर में बेचने जा रही हूँ।” यह सुनकर चोबदार बतौर इनाम के चार पैसे कमर से निकाल उसको देने लगा, मगर उसने इनकार किया और कहा कि मैं तो सेंत के पैसे नहीं लेती, हाँ, चार पैसे का दूध आप लोग लेकर पी लें तो मैं शहर जाने से बचूं और आपका एहसान मानूं। चोबदार ने कहा, “क्या हर्ज़ है, तू दूध ही दे दे।” बस अहीरिन ने खांचा रख दिया और दूध देने लगी। चोबदार ने उन दोनों ऐयारों से कहा, “आइये, आप भी पीजिए।” उन दोनों ऐयारों ने कहा, “हमारा जी नहीं चाहता!” वह बोली, “अच्छा, आपकी खुशी।” चोबदार ने दूध पिया और तब फिर दोनों ऐयारों से कहा, “वाह! क्या दूध है! शहर में तो रोज़ आप पीते ही हैं, भला आज इसको भी तो पीकर मज़ा देखिए!” उसके जिद्द करने पर दोनों ऐयारों ने भी दूध पिया और चार पैसे दूधवाली को दिये।

अब वे तीनों तेजसिंह को ढूंढ़ने चले, थोड़ी दूर जाकर चोबदार ने कहा,” न जाने क्यों मेरा सिर घूमता है। “घसीटासिंह बोले,” मेरी भी वही दशा है। “चुन्नीलाल तो कुछ कहा ही चाहते थे कि गिर पड़े। इसके बाद चोबदार और घसीटासिंह भी ज़मीन पर लेट गये। दूध बेचनेवाली बहुत दूर नहीं गई थी, उन तीनों को गिरते देख दौड़ती हुई पास आई और लखलखा सुंघाकर चोबदार को होशियार किया। वह चोबदार तेजसिंह थे, जब होश में आये अपनी असली सूरत बना ली, इसके बाद दोनों की मुश्कें बांध गठरी कस एक को चपला और दूसरे को तेजसिंह ने पीठ कर लादा और नौगढ़ का रास्ता लिया।

उन्नीसवां बयान

तेजसिंह को छुड़ाने के लिए जब चपला चुनार गई तब चम्पा ने जी में सोचा कि ऐयार तो बहुत से आये हैं और मैं अकेली हूँ, ऐसा न हो, कभी कोई आफत आ जाये। ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिसमें ऐयारों का डर न रहे और रात को भी आराम से सोने में आये। यह सोचकर उसने एक मसाला बनाया। जब रात को सब लोग सो गये और चन्द्रकान्ता भी पलंग पर जा लेटी तब चम्पा ने उस मसाले को पानी में घोलकर जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोती थी उसके दरवाज़े के दो गज इधर उधर लेप कर दिया और निश्चिन्त हो राजकुमारी के पलंग के नीचे जा लेटी। इस मसाले में यह गुण था कि जिस ज़मीन पर उसका लेप किया जाये सूख जाने पर अगर किसी का पैर उस ज़मीन पर पड़े तो ज़ोर से पटाखे की आवाज़ आवे, मगर देखने से यह न मालूम हो कि इस ज़मीन पर कुछ लेप किया है। रात भर चम्पा आराम से सोई रही। कोई आदमी उस कमरे के अन्दर न आया, सुबह को चम्पा ने पानी से वह मसाला धो डाला। दूसरे दिन उसने दूसरी चालाकी की। मिट्टी की एक खोपड़ी बनाई और उसको रंग कर ठीक चन्द्रकान्ता की मूरत बनाकर जिस पलंग पर कुमारी सोया करती थी तकिये के सहारे वह खोपड़ी रख दी, और धड़ की जगह कपड़ा रखकर एक हलकी चादर उस पर चढ़ा दी, मगर मुंह खुला रखा और खूब रोशनी करके उस चारपाई के चारों तरफ वही लेप कर दिया। कुमारी से कहा,” आज आप दूसरे कमरे में आराम करें। “चन्द्रकान्ता समझ गई और दूसरे कमरे में जा लेटी। जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोई उसके दरवाज़े पर भी लेप कर दिया और जिस कमरे में पलंग पर खोपड़ी रखी थी उसके बगल में एक कोठरी थी, चिराग बुझाकर आप उसमें सो रही।

आधी रात गुज़र जाने के बाद उस कमरे के अन्दर से जिसमें खोपड़ी रखी थी पटाखे की आवाज़ आई। सुनते ही चम्पा झट उठ बैठी और दौड़कर बाहर से किवाड़ बन्द कर खूब गुल करने लगी, यहाँ तक कि बहुत-सी लौंडियां वहाँ आकर इकट्ठी हो गईं और एक ने जाकर महाराज को खबर दी कि चन्द्रकान्ता के कमरे में चोर घुसा है। यह सुन महाराज खुद दौड़े आये और हुक्म दिया कि महल के पहरे से दस-पांच सिपाही अभी आवे। जब सब इकट्ठे हुए कमरे का दरवाज़ा खोला गया। देखा कि रामनारायण और पन्नालाल दोनों ऐयार भीतर हैं। बहुत से आदमी उन्हें पकड़ने के लिए अन्दर घुस गये, उन ऐयारों ने भी खंजर निकाल चलाना शुरू किया। चार पांच सिपाहियों को जख्मी किया, आखिर पकड़े गये। महाराज ने उनको क़ैद में रखने का हुक्म दिया और चम्पा से हाल पूछा। उसने अपनी

कार्रवाई कह सुनाई। महाराज बहुत खुश हुए और उसको इनाम देकर पूछा कि 'चपला कहाँ है' ? उसने कहा, 'वह बीमार है।' फिर महाराज ने और कुछ न पूछा, अपने आरामगाह में चले गये। सुबह को दरबार में महाराज ने उन ऐयारों को तलब किया! जब वे आये, पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?" पन्नालाल बोला, "सरतोड़सिंह।" महाराज को उसकी ढिठाई पर बड़ा गुस्सा आया। कहने लगे कि "ये लोग बदमाश हैं, ज़रा भी नहीं डरते। खैर, ले जाकर इन दोनों को खूब होशियारी से क़ैद रखो।" हुक्म के मुताबिक वे क़ैदखाने में भेज दिये गये।

महाराज ने हरदयालसिंह से पूछा, "कुछ तेजसिंह का पता लगा ?" हरदयालसिंह ने कहा, "महाराज अभी तक तो पता नहीं लगा। ये ऐयार जो पकड़े गये हैं उन्हें खूब पीटा जाये तो शायद ये लोग कुछ बतावें।" महाराज ने कहा, "ठीक है, मगर तेजसिंह आवेगा तो नाराज़ होगा कि ऐयारों को क्यों मारा ? ऐसा क़ायदा नहीं है। खैर, कुछ दिन तेजसिंह की राह देख लो फिर जैसा मुनासिब होगा, किया जायेगा, मगर एक बात का खयाल रखना, वह यह कि तुम फौज़ के इन्तज़ाम में होशियार रहना क्योंकि शिवदत्तसिंह का चढ़ आना अब ताज्जुब नहीं है।" हरदयालसिंह ने कहा, "मैं इन्तज़ाम से होशियार हूँ सिर्फ एक बात महाराज से इस बारे में पूछनी थी जो एकान्त में अर्ज़ करूंगा।"

जब दरबार बर्खास्त हो गया तो महाराज ने हरदयालसिंह को एकान्त में बुलाया और पूछा-"वह कौन-सी बात है ?" उन्होंने कहा, "महाराज, तेजसिंह ने कई बार मुझसे कहा था बल्कि कुंवर वीरेन्द्रसिंह और उनके पिता ने भी फर्माया था कि यहाँ के सब मुसलमान क्रूर के तरफदार हो रहे हैं, जहाँ तक हो इनको कम करना चाहिए। मैं देखता हूँ तो यह बात ठीक मालूम होती है, इसके बारे में जैसा हुक्म हो, किया जाये।" महाराज ने कहा, "ठीक है, हम खुद इस बात के लिए तुमसे कहने वाले थे। खैर, अब कहे देते हैं कि तुम धीरे-धीरे सब मुसलमानों को नाज़ुक कामों से बाहर कर दो।" हरदयालसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा।" यह कह महाराज से रुखसत हो अपने घर चले आये।

बीसवां बयान

महाराज शिवदत्तसिंह ने घसीटासिंह और चुन्नीलाल को तेजसिंह को पकड़ने के लिए भेजकर दरबार बर्खास्त किया और महल में चले गये, मगर दिल उनका रम्भा की जुल्फों में ऐसा फंस गया था कि किसी तरह निकल ही नहीं सकता था। उस दिन महारानी से भी हंसकर बोलने की नौबत न आई। महारानी ने पूछा, आपका चेहरा सुस्त क्यों है ? महाराज ने कहा, "कुछ नहीं, जागने से ऐसी कैफियत है।" महारानी ने फिर से पूछा, "आपने वादा किया था कि उस गानेवाली को महल में लाकर तुमको भी उसका गाना सुनवाएंगे, सो क्या हुआ ?" जवाब दिया, "वह हमीं लोगों को उल्लू बनाकर चली गई, तुमको किसका गाना सुनावें ?" यह सुनकर महारानी कलावती को बड़ा ताज्जुब हुआ। पूछा "कुछ खुलासा कहिए, क्या मामला है ?" "इस समय मेरा जी ठिकाने नहीं है, मैं ज़्यादा नहीं बोल सकता।" यह कहकर महाराज वहाँ से उठकर अपने खास कमरे में चले गये और पलंग पर लेटकर रम्भा को याद करने और मन में सोचने लगे, "यह रम्भा कौन थी ? इसमें तो कोई शक नहीं कि वह थी औरत ही, फिर तेजसिंह को क्यों छुड़ा ले गई ? उस पर वह आशिक तो नहीं थी जैसा कि उसने कहा था! हाय रम्भा, तूने मुझे घायल कर डाला। क्या इसी वास्ते तू आई थी ? क्या करूं कुछ पता भी नहीं मालूम जो तुमको ढूँढूँ!"

दिल की बेताबी और रम्भा के खयाल में रात भर नींद न आई। सुबह को महाराज ने दरबार में आकर दरियाफ्त किया, "घसीटासिंह और चुन्नीलाल तेंजसिंह का पता लगाकर आये या नहीं ?" मालूम हुआ कि अभी तक वे लोग नहीं आये। खयाल रम्भा ही की तरफ लगा था। इतने में बद्रीनाथ, नाज़िम, ज्योतिषीजी और क्रूरसिंह पर नज़र पड़ी। उन लोगों ने सलाम किया और एक किनारे बैठ गये। उन लोगों के चेहरे पर सुस्ती और उदासी देखकर और भी रंज बढ़ गया, मगर कचहरी में कोई हाल उनसे न पूछा। दरबार बर्खास्त करके तखलिए में गये और पंडित बद्रीनाथ, क्रूरसिंह नाज़िम और जगन्नाथ ज्योतिषी को तलब किया। जब वे लोग आये और सलाम करके अदब के साथ बैठ गये तब महाराज ने पूछा, "कहो, तुम लोगों ने विजयगढ़ जाकर क्या किया ?" पंडित बद्रीनाथ ने कहा, "हुजूर काम तो यही हुआ कि भगवानदत्त को तेजसिंह ने गिरफ्तार कर लिया और पन्नालाल और रामनारायण को एक चम्पा नामी औरत ने बड़ी चालाकी और होशियारी से पकड़ लिया, बाकी मैं बच गया। उनके आदमियों में सिर्फ तेजसिंह पकड़ा गया जिसको ताबेदार ने हुज़ूर में भेज दिया था सिवाय इसके और कोई काम नहीं हुआ।" महाराज ने कहा, "तेजसिंह को

भी एक औरत छुड़ा ले गई। काम तो उसने सज़ा पाने लायक किया मगर अफसोस! यह तो मैं ज़रूर कहूंगा कि वह औरत ही थी जो तेजसिंह को छुड़ा ले गई, मगर कौन थी, यह न मालूम हुआ। तेजसिंह को तो लेती ही गई, जाती दफा चुन्नीलाल और घसीटासिंह पर भी मालूम होता है हाथ फेरती गई, वे दोनों उसकी खोज में गये थे मगर अभी तक नहीं आये। क्रूर की मदद करने से मेरा नुकसान ही हुआ। खैर, अब तुम लोग यह पता लगाओ कि वह औरत कौन थी जिसने गाना सुनाकर मुझे बेताब कर दिया और सभी की आंखों में धूल डालकर तेजसिंह को छुड़ा ले गई ? अभी तक उसकी मोहिनी सूरत मेरी आखों के आगे फिर रही है।"

नाज़िम ने तुरंत कहा, "हुजूर, मैं पहचान गया। वह ज़रूर चन्द्रकान्ता की सखी चपला थी, यह काम सिवाय उसके दूसरे का नहीं!" महाराज ने पूछा, "क्या चपला चन्द्रकान्ता से भी ज़्यादा खूबसूरत है ?" नाज़िम ने कहा, "महाराज, चन्द्रकान्ता को तो चपला क्या पावेगी मगर उसके बाद दुनिया में कोई खूबसूरत है तो चपला ही है, और वह तेजसिंह पर आशिक भी है।" इतना सुन महाराज कुछ देर तक हैरानी में रहे फिर बोले, "चाहे जो हो, जब तक चन्द्रकान्ता और चपला मेरे हाथ न लगेंगी मुझको आराम न मिलेगा। बेहतर है कि मैं इन दोनों के लिए जयसिंह को चिट्ठी लिखूं।" क्रूरसिंह बोला, "महाराज, जयसिंह चिट्ठी को कुछ न मानेंगे।" महाराज ने जवाब दिया, "क्या हर्ज़ है, अगर चिट्ठी पर कुछ खयाल न करेंगे तो विजयगढ़ को फतह ही करूंगा।" यह कह मीर मुंशी को तलब किया, जब वह आ गया तो हुक्म दिया, "राजा जयसिंह के नाम मेरी तरफ से खत लिखो कि चन्द्रकान्ता की शादी मेरे साथ कर दें और दहेज में चपला को दे दें।" मीर मुंशी ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा जिस पर महाराज ने मोहर करके पंडित बद्रीनाथ को दिया और कहा, "तुम्हीं इस चिट्ठी को लेकर जाओ, यह काम तुम्हीं से बनेगा।" पंडित बद्रीनाथ को क्या उज्र था, खत लेकर उसी वक़्त विजयगढ़ की तरफ रवाना हो गये।

इक्कीसवां बयान

दूसरे दिन महाराज जयसिंह दरबार में बैठे हरदयालसिंह से तेजसिंह का हाल सुन रहे थे कि अभी तक पता लगा या नहीं, कि इतने में सामने से तेजसिंह एक बड़ा भारी गट्ठर पीठ पर लादे हुए आ पहुंचे। गठरी तो दरबार के बीच में रख दी और झुककर महाराज को सलाम किया। महाराज जयसिंह तेजसिंह को देखकर खुश हुए और बैठने के लिए इशारा किया। जब तेजसिंह बैठ गये तो महाराज ने पूछा, “क्यों जी, इतने दिन कहाँ रहे और क्या लाये हो ? तुम्हारे लिए हम लोगों को बड़ी भारी परेशानी रही, दीवान जीतसिंह भी बहुत घबराये होंगे क्योंकि हमने वहाँ भी तलाश करवाया था।” तेजसिंह ने अर्ज़ किया, “महाराज, ताबेदार दुश्मनों के हाथ में फंस गया था, अब हुज़ूर के इकबाल से छूट आया है बल्कि आती दफा चुनार के दो ऐयारों को भी जो वहाँ से, लेता आया है।” महाराज यह सुन बहुत खुश हुए और अपने हाथ का कीमती कड़ा तेजसिंह को ईनाम देकर कहा, “यहाँ भी दो ऐयारों को महल में चम्पा ने गिरफ्तार किया जो क़ैद किये गये हैं। इनको भी वहीं भेज देना चाहिए!” यह कहकर हरदयालसिंह की तरफ देखा। उन्होंने प्यादों को गठरी खोलने का हुक्म दिया, प्यादों ने गठरी खोली। तेजसिंह ने उन दोनों को होशियार किया और प्यादों ने उनको ले जाकर उसी जेल में बन्द कर दिया जिसमें रामनारायण और पन्नालाल थे।

तेजसिंह ने महाराज से अर्ज़ किया, “मेरे गिरफ्तार होने से नौगढ़ में सब कोई परेशान होंगे, अगर इज़ाज़त हो तो मैं जाकर सबों से मिल आऊं!” महाराज ने कहा, “हाँ ज़रूर तुमको वहाँ जाना चाहिए जाओ, मगर जल्दी वापस चले आना।” इसके बाद महाराज ने हरदयालसिंह को हुक्म दिया, “तुम मेरी तरफ से तोहफा लेकर तेजसिंह के साथ नौगढ़ जाओ!” “बहुत अच्छा” कह के हरदयालसिंह ने तोहफे का सामान तैयार किया और कुछ आदमी संग ले तेजसिंह के साथ नौगढ़ रवाना हुए।

चपला जब महल मैं पहुंची, उसको देखते ही चन्द्रकान्ता ने खुश होकर उसे गले लगा लिया और थोड़ी देर बाद हाल पूछने लगी। चपला ने अपना पूरा हाल खुलासा तौर पर बयान किया। थोड़ी देर तक चपला और चन्द्रकान्ता में चुहल होती रही। कुमारी ने चम्पा की चालाकी का हाल बयान करके कहा कि 'तुम्हारी शागिर्दिन ने भी दो ऐयारों को गिरफ्तार किया है' यह सुनकर चपला बहुत खुश हुई और चम्पा को जो उसी जगह मौजूद थी गले लगाकर बहुत शाबाशी दी।

इधर तेजसिंह जो नौगढ़ गये थे रास्ते में हरदयालसिंह से बोले, “अगर हम लोग सवेरे दरबार के समय पहुंचते तो अच्छा होता क्योंकि उस वक़्त सब कोई वहाँ रहेंगे।” इस बात को हरदयालसिंह ने भी पसन्द किया और रास्ते में ठहर गये, दूसरे दिन दरबार के समय ये दोनों पहुंचे और सीधे कचहरी में चले गये। राजा साहब के बगल में वीरेन्द्रसिंह भी बैठे थे, तेजसिंह को देखकर इतने खुश हुए मानो दोनों जहान की दौलत मिल गई हो। हरदयालसिंह ने झुककर महाराज और कुमार को सलाम किया और जीतसिंह से बराबर की मुलाकात की। तेजसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह के कदमों पर सिर रखा, राजा साहब ने प्यार से उसका सिर उठाया। तब अपने पिता को पालागन करके तेजसिंह कुमार की बगल में जा बैठे। हरदयालसिंह ने तोहफा पेश किया और एक पोशाक जो कुंवर वीरेन्द्रसिंह के वास्ते लाये थे, वह उनको पहनाई जिसे देख राजा सुरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और कुमार की खुशी का तो कुछ ठिकाना ही न रहा। राजा ने तेजसिंह से गिरफ्तार होने का हाल पूछा, तेजसिंह ने पूरा हाल अपने गिरफ्तार होने का तथा कुछ बनावटी हाल अपने छूटने का बयान किया और यह भी कहा, “आती दफा वहाँ के दो ऐयारों को भी गिरफ्तार कर लाया हूँ जो विजयगढ़ में क़ैद हैं।” यह सुनकर राजा ने खुश होकर तेजसिंह को बहुत कुछ इनाम दिया और कहा, “तुम अभी जाओ, महल में सबसे मिलकर अपनी मां से भी मिलो। उस बेचारी का तुम्हारी जुदाई में क्या हाल होगा, वही जानती होगी।” बमूजिब मर्ज़ी के तेजसिंह सभी से मिलने के वास्ते रवाना हुए। हरदयालसिंह की मेहमानी के लिए राजा ने जीतसिंह को हुक्म देकर दरबार बर्खास्त किया। सभी के मिलने के बाद तेजसिंह कुंवर वीरेन्द्रसिंह के कमरे में गये। कुमार ने बड़ी खुशी से उठकर तेजसिंह को गले लगा लिया और जब बैठे तो कहा, “अपने गिरफ्तार होने का हाल तो तुमने ठीक बयान कर दिया मगर छूटने का हाल बयान करने में झूठ कहा था, अब सच-सच बताओ, तुमको किसने छुड़ाया ?” तेजसिंह ने चपला की बड़ी तारीफ की और उसकी मदद से अपने छूटने का सच्चा-सच्चा हाल कह दिया। कुमार ने कहा, “मुबारक हो!” तेजसिंह बोले, “पहले आपको मैं मुबारकबाद दे दूंगा तब कहीं यह नौबत पहुंचेगी कि आप मुझे मुबारकबाद दें।” कुमार हंसकर चुप हो रहे। कई दिनों तक तेजसिंह हंसी-खुशी से नौगढ़ में रहे मगर वीरेन्द्रसिंह का तकाज़ा रोज़ होता ही रहा कि फिर जिस तरह से हो चन्द्रकान्ता से मुलाकात कराओ। यह भी धीरज देते रहे।

कई दिन बाद हरदयालसिंह ने दरबार में महाराज से अर्ज़ किया, “कई रोज़ हो गये ताबेदार को आये, वहाँ बहुत हर्ज़ होता होगा, अब रुखसत मिलती तो अच्छा था, और महाराज ने यह भी फरमाया था कि आती दफा तेजसिंह को साथ लेते आना, अब जैसी मर्ज़ी हो।” राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, “बहुत अच्छी बात है तुम उसको अपने साथ लेते जाओ।” यह कह एक खिलअत दीवान हरदयालसिंह को दिया और तेजसिंह को उनके साथ विदा किया। जाते समय तेजसिंह कुमार से मिलने आये, कुमार ने रोकर उनको विदा किया और कहा, “मुझको ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं है, मेरी हालत देखते जाओ।”

तेजसिंह ने बहुत कुछ ढाढ़स दिया और यहाँ से विदा होकर उसी रोज़ विजयगढ़ पहुंचे। दूसरे दिन दरबार में दोनों आदमी हाज़िर हुए और महाराज को सलाम कर अपनी-अपनी जगह पर बैठे। तेजसिंह से महाराज ने राजा सुरेन्द्रसिंह की कुशल-क्षेम पूछी जिसको उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ बयान किया। इसी समय बद्रीनाथ भी राजा शिवदत्त की चिट्ठी लिये हुए आ पहुंचे और आशीर्वाद देकर चिट्ठी महाराज के हाथ में दे दी जिसको पढ़ने के लिए महाराज ने दीवान हरदयालसिंह को दिया। खत पढ़ते-पढ़ते हरदयालसिंह का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया। महाराज और तेजसिंह हरदयालसिंह के मुंह की तरफ देख रहे थे, उसकी रंगत देखकर समझ गये कि खत में कुछ बेअदबी की बातें लिखी हैं। खत पढ़कर हरदयालसिंह ने अर्ज़ किया कि यह खत तखलिए में सुनने लायक है। महाराज ने कहा, “अच्छा, पहले बद्रीनाथ के टिकने का बन्दोबस्त करो फिर हमारे पास दीवानखाने में आओ, तेजसिंह को भी साथ ले आना।”

महाराज ने दरबार बरखास्त कर दिया और महल में चले गये। दीवान हरदयालसिंह पंडित बद्रीनाथ के रहने और ज़रूरी सामानों का इन्तज़ाम कर तेजसिंह को अपने साथ ले कोट में महाराज के पास गये और सलाम करके बैठ गये। महाराज ने शिवदत्त का खत सुनाने के लिए हुक्म दिया। हरदयालसिंह ने खत को महाराज के सामने ले जाकर अर्ज़ किया कि अगर सरकार खत पढ़ लेते तो अच्छा था। महाराज ने खत पढ़ा, पढ़ते ही आंखें मारे गुस्से के सुर्ख हो गई। खत फाड़कर फेंक दिया और कहा, “बद्रीनाथ से कह दो कि इस खत का जवाब यही है कि यहाँ से चला जाये।” इसके बाद थोड़ी देर तक महाराज कुछ देखते रहे, तब रंज भरी धीमी आवाज़ में बोले, “क्रूर के चुनार जाते ही हमने सोच लिया था कि जहाँ तक बनेगा वह आग लगाने से न चूकेगा, और आखिर यही हुआ। खैर, मेरे जीते-जी तो उसकी मुराद पूरी न होगी, साथ ही आप लोगों को भी अब पूरा बन्दोबस्त रखना चाहिए।” तेजसिंह ने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया, “इसमें कोई शक नहीं कि शिवदत्त अब ज़रूर फौज़ लेकर चढ़ आवेगा इसलिए हम लोगों को भी मुनासिब है कि अपनी फौज़ का इन्तज़ाम और लड़ाई का सामान पहले से कर रखें। यों तो शिवदत्त की नीयत तभी मालूम हो गई थी जब उसने ऐयारों को भेजा था, पर अब तो कोई शक नहीं रहा।” महाराज ने कहा, “मैं इस बात को खूब जानता हूँ कि शिवदत्त के पास तीस हज़ार फौज़ है और हमारे पास सिर्फ दस हजार, मगर क्या मैं डर जाऊँगा!” तेजसिंह ने कहा, “दस हज़ार फौज़ महाराज की और पांच हज़ार हमारे सरकार की, पन्द्रह हज़ार हो गई, ऐसे गीदड़ के मारने को इतनी फौज़ काफी है। अब महाराज दीवान साहब को एक खत देकर मेरे साथ नौगढ़ भेजें, मैं जाकर तमाम फौज़ ले आता हूँ बल्कि महाराज की राय हो तो कुंवर वीरेन्द्रसिंह को भी बुला लें और फौज़ का इन्तज़ाम उनके हवाले करें, फिर देखिए क्या कैफियत होती है।”

दीवान हरदयालसिंह बोले, “कृपानाथ, इस राय को तो मैं भी पसंद करता हूँ।” महाराज ने कहा, “सो तो ठीक है मगर वीरेन्द्रसिंह को अभी लड़ाई का काम सुपुर्द करने को जी नहीं

चाहता ? चाहे वह इस फन में होशियार हों मगर क्या हुआ, जैसा सुरेन्द्रसिंह का लड़का, वैसा मेरा, मैं कैसे उसको लड़ने के लिए कहूंगा और सुरेन्द्रसिंह भी इस बात को कब मंज़ूर करेंगे ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "महाराज इस बात की तरफ ज़रा भी खयाल न करें! ऐसा नहीं हो सकता कि महाराज तो लड़ाई पर जायें और वीरेन्द्रसिंह घर बैठे आराम करें! उनका दिल कभी न मानेगा। राजा सुरेन्द्रसिंह भी वीर हैं कुछ कायर नहीं, वीरेन्द्रसिंह को घर में बैठने न देंगे बल्कि खुद भी मैदान में बढ़कर लड़े तो ताज्जुब नहीं!"

महाराज जयसिंह तेजसिंह की बात सुनकर बहुत खुश हुए और दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'तुम राजा सुरेन्द्रसिंह को शिवदत्त की गुस्ताखी का हाल और जो कुछ हमने उसका जवाब दिया है वह भी लिखो और पूछो कि आपकी क्या राय है ? इस बात का जवाब आ ले तो जैसा होगा किया जायेगा, और खत भी तुम्हीं लेकर जाओ और कल ही लौट आओ क्योंकि अब देरी करने का मौका नहीं है। हरदयालसिंह ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा और महाराज ने उस पर मोहर करके उसी वक़्त दीवान हरदयालसिंह को विदा कर दिया। दीवान साहब महाराज से विदा होकर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। थोड़ा-सा दिन बाकी था जब वहाँ पहुंचे। सीधे दीवान जीतसिंह के मकान पर चले गये। दीवान जीतसिंह खबर पाते ही बाहर आये, हरदयालसिंह को लाकर अपने यहाँ उतारा और हालचाल पूछा। हरदयालसिंह ने सब हाल खुलासा कहा। जीतसिंह गुस्से में आकर बोले, आजकल शिवदत्त के दिमाग में खलल आ गया है, हम लोगों को उसने साधारण समझ लिया है ? खैर, देखा जाएगा, कुछ हर्ज़ नहीं, आप शाम को राजा साहब से मिलें।'

शाम के वक़्त हरदयालसिंह जीतसिंह के साथ राजा सुरेन्द्रसिंह की मुलाकात को गये। वहाँ कुंवर वीरेन्द्रसिंह भी बैठे थे। राजा साहब ने बैठने के लिए इशारा किया और हाल-चाल पूछा। उन्होंने महाराज जयसिंह का खत दे दिया, महाराज ने खुद उस चिट्ठी को पढ़ा, गुस्से के मारे कुछ बोल न सके और खत कुंवर वीरेन्द्रसिंह के हाथ में दे दिया। कुमार ने भी उसको बखूबी पढ़ा, इनकी भी वही हालत हुई, क्रोध से आंखों के आगे अंधेरा छा गया। कुछ देर तक सोचते रहे इसके बाद हाथ जोड़कर पिता से अर्ज़ किया, "मुझको लड़ाई का बड़ा हौसला है, यही हम लोगों का धर्म भी है, फिर ऐसा मौका मिले या न मिले, इसलिए अर्ज़ करता हूँ कि मुझको हुक्म हो तो अपनी फौज़ लेकर जाऊं और विजयगढ़ पर चढ़ाई करने से पहले ही शिवदत्त को क़ैद कर लाऊं।" राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, "उस तरफ जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं है, तुम अभी विजयगढ़ जाओ, क्षत्रियों को लड़ाई से ज़्यादा प्यारा बाप, बेटा, भाई-भतीजा कोई नहीं होता। इसलिए तुम्हारी मुहब्बत छोड़कर हुक्म देता हूँ कि अपनी कुल फौज़ लेकर महाराज जयसिंह को मदद पहुंचाओ और नाम पैदा करो। फिर जीतसिंह की तरफ देखकर, "फौज़ में मुनादी करा दो कि रात भर में सब लैस हो जायें, सुबह को कुमार के साथ जाना होगा।" इसके बाद हरदयालसिंह से कहा, "आज आप रह जायें और कल अपने साथ ही फौज़ तथा कुमार को लेकर तब जायें।" यह हुक्म दे

राजमहल में चले गये। जीतसिंह दीवान हरदयालसिंह को साथ लेकर घर गये और कुमार अपने कमरे में जाकर लड़ाई का सामान ठीक करने लगे। चन्द्रकान्ता को देखने और लड़ाई पर चलने की खुशी में रात किधर गई कुछ मालूम ही न हुआ।

बाईसवां बयान

सुबह होते ही कुमार नहा-धो जंगी कपड़े पहन हथियारों को बदन पर सजा बाप-मां से विदा होने के लिए महल में गये। रानी से महाराज ने रात ही सब हाल कह दिया था। वे इनका फौज़ी ठाठ देखकर दिल में बहुत खुश हुईं। कुमार ने दंडवत कर विदा मांगी, रानी ने आंसू भर कर कुमार को छाती से लगाया और पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "बेटा जाओ, वीर पुरुषों में नाम करो, क्षत्रिय कुल का नाम रख फतह का डंका बजाओ। शूरवीरों का धर्म है कि लड़ाई के वक़्त मां, बाप, ऐश, आराम किसी की मुहब्बत नहीं करते, सो तुम भी जाओ, ईश्वर करे लड़ाई में बैरी तुम्हारी पीठ न देखें!"

मां-बाप से विदा होकर कुमार बाहर आये, दीवान हरदयालसिंह को मुस्तैद देखा, आप भी एक घोड़े पर सवार हो रवाना हुए। पीछे-पीछे फौज़ भी समुद्र की तरह लहर मारती चली। जब विजयगढ़ के करीब पहुंचे तो कुमार घोड़े पर से उतर पड़े और हरदयालसिंह से बोले, "मेरी राय है कि इसी जंगल में अपनी फौज़ को उतारूं और सब इन्तज़ाम कर लूं तो शहर में चलूं।" हरदयालसिंह ने कहा, "आपकी राय बहुत अच्छी है। मैं भी पहिले से चलकर आपके आने की खबर महाराज को देता हूँ फिर लौट कर आपको साथ लेकर चलूंगा।" कुमार ने कहा, "अच्छा जाइए।" हरदयालसिंह विजयगढ़ पहुंचे, कुमार के आने की खबर देने के लिए महाराज के पास गये और खुलासा हाल बयान करके बोले, "कुमार सेना सहित यहाँ से कोस भर पर उतरे हैं।" यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और बोले, "फौज़ के वास्ते वह मुकाम बहुत अच्छा है, मगर वीरेन्द्रसिंह को यहाँ ले आना चाहिए। तुम यहाँ के सब दरबारियों को ले जाकर इस्तकबाल करो और कुमार को यहाँ ले आओ!"

बमूजिब हुक्म के हरदयालसिंह बहुत से सरदारों को लेकर रवाना हुए। यह खबर तेजसिंह को भी हुई, सुनते ही वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे और दूर ही से बोले, "मुबारक हो।" तेजसिंह को देखकर कुमार बहुत खुश हुए और हाल-चाल पूछा, तेजसिंह ने कहा, "जो कुछ है सब अच्छा है, जो बाकी है अब बन जायेगा!" यह कह तेजसिंह लश्कर के इंतज़ाम में लगे। इतने में दीवान हरदयालसिंह मय दरबारियों के आ पहुंचे और महाराज ने जो हुक्म दिया था, कहा। कुमार ने मंज़ूर किया और सज-सजाकर घोड़े पर सवार हो एक सौ फौज़ी सिपाही साथ ले महाराज से मुलाकात को विजयगढ़ चले। शहर भर में मशहूर हो गया कि महाराज की मदद को कुंवर वीरेन्द्रसिंह आये हैं, इस वक़्त क़िले में जायेंगे। सवारी देखने के लिए अपने-अपने मकानों पर औरत-मर्द पहले ही से बैठ गये और सड़कों पर भी बड़ी भीड़

इकट्ठी हो गई। सभी की आंखें उत्तर की तरफ सवारों के इन्तज़ार में थीं। यह खबर महाराज को भी पहुंची कि कुमार चले आ रहे हैं। उन्होंने महल में जाकर महारानी से सब हाल कहा जिसको सुनकर वे प्रसन्न हुईं और बहुत-सी औरतों के साथ जिनमें चन्द्रकान्ता और चपला भी थीं, सवारी का तमाशा देखने के लिए ऊंची अटारी में जा बैठीं। महाराज भी सवारी का तमाशा देखने के लिए दीवानखाने की छत पर जा बैठे। थोड़ी ही देर बाद उत्तर की तरफ कुछ धूल उड़ती दिखाई दी और नज़दीक आने पर देखा कि थोड़ी-सी फौज़ (सवारों की) चली आ रही है। कुछ अरसा गुज़रा तो साफ दिखाई देने लगा।

कुछ सवार, जो धीरे-धीरे महल की तरफ आ रहे थे, फौलादी जेर्रा पहने हुए थे जिस पर डूबते हुए सूर्य की किरणें पड़ने से अजब चमक-दमक मालूम होती थी। हाथ में झंडेदार नेज़ा लिए, ढाल-तलवार लगाये जवानी की उमंग में अकड़े हुए बहुत ही भले मालूम पड़ते थे। उनके आगे-आगे एक खूबसूरत, ताकतवर और जेवरों से सजे हुए घोड़ा, जिस पर जड़ाऊ जीन कसी हुई थी और अठखेलियां कर रहा था, पर कुंवर वीरेन्द्रसिंह सवार थे। सिर पर फौलादी टोप जिसमें एक हुमा के पर की लम्बी कलंगी लगी थी, बदन में बेशकीमत लिबास के ऊपर फौलादी जेर्रा पहने हुए थे। गोरा रंग, बड़ी-बड़ी आंखें, गालों पर सुर्खी छा रही थी। बड़े-बड़े पन्ने के दानों का कण्ठा और भुजबन्द भी पन्ने का था जिसकी चमक चेहरे पर पड़कर खूबसूरती को दूना कर रही थी। कमर में जड़ाऊ पेटी जिसमें बेशकीमत हीरा जड़ा हुआ था, और पिंडली तक का जूता जिस पर कौदैये मोती का काम था, चमड़ा नज़र नहीं आता था, पहने हुए थे। ढाल, तलवार, खंजर, तीर-कमान लगाये एक गुर्ज़ करबूस में लटकता हुआ, हाथ में नेज़ा लिये घोड़ा कुदाते चले आ रहे थे। ताकत, जवांमर्दी, दिलेरी और रोआब उनके चेहरे ही से झलकता था, दोस्तों के दिलों में मुहब्बत और दुश्मनों के दिल में खौफ़ पैदा होता था। सबसे ज़्यादा लुत्फ तो यह था कि जो सौ सवार संग में चले आ रहे थे वे सब भी उन्हीं के हमसिन थे। शहर में भीड़ लग गई, जिसकी निगाह कुमार पर पड़ती थी आखों में चकाचैंध-सी आ जाती थी। महारानी ने, जो वीरेन्द्रसिंह को बहुत दिनों पर इस ठाठ और रोआब से आते देखा, सौगुनी मुहब्बत आगे से ज़्यादा बढ़ गई। मुंह से निकल पड़ा, “अगर चन्द्रकान्ता के लायक वर है तो सिर्फ वीरेन्द्र! चाहे जो हो, मैं तो इसी को दामाद बनाऊंगी।” चन्द्रकान्ता और चपला भी दूसरी खिड़की से देख रही थीं। चपला ने टेढ़ी निगाहों से कुमारी की तरफ देखा। वह शर्मा गई, दिल हाथ से जाता रहा, कुमार की तस्वीर आंखों में समा गई, उम्मीद हुई कि अब पास से देखूंगी। उधर महाराज की टकटकी बंध गई।

इतने में कुमार क़िले के नीचे आ पहुंचे। महाराज से न रहा गया, खुद उतर आये और जब तक वे क़िले के अन्दर आवें महाराज भी वहाँ पहुंच गये। वीरेन्द्रसिंह ने महाराज को देखकर पैर छुए, उन्होंने उठाकर छाती से लगा लिया और हाथ पकड़े सीधे महल में ले गये। महारानी उन दोनों को आते देख आगे तक बढ़ आइं। कुमार ने चरण छुए, महारानी की

आखों में प्रेम का जल भर आया, बड़ी खुशी से कुमार को बैठने के लिए कहा, महाराज भी बैठ गये। बाएं तरफ महारानी और दाहिनी तरफ कुमार थे, चारों तरफ लौंडियों की भीड़ थी जो अच्छे-अच्छे गहने और कपड़े पहने खड़ी थीं। कुमार की नीची निगाहें चारों तरफ घूमने लगी मानो किसी को ढूंढ़ रही हो। चन्द्रकान्ता भी किवाड़ की आड़ में खड़ी उनको देख रही थी, मिलने के लिए तबीयत घबड़ा रही थी मगर क्या करे, लाचार थी। थोड़ी देर तक महाराज और कुमार महल में रहे, इसके बाद उठे और कुमार को साथ लिये हुए दीवानखाने में पहुंचे। अपने खास आरामगाह के पास वाला एक सुन्दर कमरा उनके लिए मुकर्रर कर दिया। महाराज से विदा होकर कुमार अपने कमरे में गये। तेजसिंह भी पहुंचे, कुछ देर चुहल में गुज़री, चन्द्रकान्ता को महल में न देखने से इनकी तबीयत उदास थी, सोचते थे कि कैसे मुलाकात हो। इसी सोच में आंख लग गई।

सुबह जब महाराज दरबार में गये, वीरेन्द्रसिंह स्नान-पूजा से छुट्टी पा दरबारी पोशाक पहने, कलंगी सरपेंच समेत सिर पर रख, तेजसिंह को साथ ले दरबार में गये। महाराज ने अपने सिंहासन के बगल में एक जड़ाऊ कुर्सी पर कुमार को बैठाया। हरदयालसिंह ने महाराज की चिट्ठी का जवाब पेश किया जो राजा सुरेन्द्रसिंह ने लिखा था। उसको पढ़कर महाराज बहुत खुश हुए। थोड़ी देर बाद दीवान साहब को हुक्म दिया कि कुमार की फौज़ में हमारी तरफ से बाज़ार लगाया जाये और गल्ले वगैरह का पूरा इन्तज़ाम किया जाये, किसी को किसी तरह की तकलीफ न हो। कुमार ने अर्ज़ किया, “महाराज, सामान सब साथ आया है।” महाराज ने कहा, “क्या तुमने इस राज्य को दूसरे का समझा है! सामान आया है तो क्या हुआ, वह भी जब ज़रूरत होगी काम आवेगा। अब हम कुल फौज़ का इन्तज़ाम तुम्हारे सुपुर्द करते हैं, जैसा मुनासिब समझो बन्दोबस्त और इन्तज़ाम करो।” कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखकर कहा, “तुम जाओ। मेरी फौज़ के तीन हिस्से करके दो-दो हज़ार विजयगढ़ के दोनों तरफ भेजो और हज़ार फौज़ के दस टुकड़े करके इधर-उधर पांच-पांच कोस तक फैला दो और खेमे वगैरह का पूरा बंदोबस्त कर दो। जासूसों को चारों तरफ रवाना करो। बाकी महाराज की फौज़ की कल कवायद देखकर जैसा होगा इन्तज़ाम करेंगे।” हुक्म पाते ही तेजसिंह रवाना हुए। इस इन्तज़ाम और हमदर्दी को देखकर महाराज को और भी तसल्ली हुई। हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि फौज़ में मुनादी करा दो कि कल कवायद होगी। इतने में महाराज के जासूसों ने आकर अदब से सलाम कर खबर दी कि शिवदत्तसिंह अपनी तीस हज़ार फौज़ लेकर सरकार से मुकाबला करने के लिए रवाना हो चुका है, दो-तीन दिन तक नज़दीक आ जायेगा। कुमार ने कहा, “कोई हर्ज़ नहीं, समझ लेंगे, तुम फिर अपने काम पर जाओ।”

दूसरे दिन महाराज जयसिंह और कुमार एक हाथी पर बैठकर फौज़ की कवायद देखने गये। हरदयालसिंह ने मुसलमानों को बहुत कम कर दिया था तो भी एक हज़ार मुसलमान रह गये थे। कवायद देख कुमार बहुत खुश हुए मगर मुसलमानों की सूरत देख त्योरी चढ़

गई। कुमार की सूरत से महाराज समझ गये और धीरे से पूछा, "इन लोगों को जवाब दे देना चाहिए ?" कुमार ने कहा, "नहीं, निकाल देने से ये लोग दुश्मन के साथ हो जायेंगे! मेरी समझ में बेहतर होगा कि दुश्मन को रोकने के लिए पहले इन्हीं लोगों को भेजा जाये। इनके पीछे तोपखाना और थोड़ी फ़ौज़ हमारी रहेगी, वे लोग इन लोगों की नीयत खराब देखने या भागने का इरादा मालूम होने पर पीछे से तोप मार कर इन सभी की सफाई कर डालेंगे। ऐसा खौफ़ रहने से ये लोग एक दफा तो खूब लड़ जायेंगे, मुफ्त मारे जाने से लड़कर मरना बेहतर समझेंगे।" इस राय को महाराज ने बहुत पसंद किया और दिल में कुमार की अक्ल की तारीफ करने लगे।

जब महाराज फिरे तो कुमार ने अर्ज़ किया, "मेरा जी शिकार खेलने को चाहता है, अगर इजाज़त हो तो जाऊं ?" महाराज ने कहा, "अच्छा, दूर मत जाना और दिन रहते जल्दी लौट आना।" यह कहकर हाथी बैठवाया। कुमार उतर पड़े और घोड़े पर सवार हुए। महाराज का इशारा पा दीवान हरदयालसिंह ने सौ सवार साथ कर दिये। कुमार शिकार के लिए रवाना हुए। थोड़ी देर बाद एक घने जंगल में पहुंचकर दो सांभर तीर से मार फिर और शिकार ढूंढ़ने लगे। इतने में तेजसिंह भी पहुंचे, कुमार से पूछा, "क्या सब इन्तज़ाम हो चुका जो तुम यहाँ चले आये ?" तेजसिंह ने कहा, "क्या आज ही हो जायेगा ? कुछ आज हुआ कुछ कल दुरुस्त हो जायेगा। इस वक़्त मेरे जी में आया कि चलें ज़रा उस तहखाने की सैर कर आवें जिसमें अहमद को क़ैद किया है, इसलिए आपसे पूछने आया हूँ कि अगर इरादा हो तो आप भी चलिए।"

"हाँ मैं भी चलूंगा।" कहकर कुमार ने उस तरफ घोड़ा फेरा। तेजसिंह भी घोड़े के साथ रवाना हुए। बाकी सभी को हुक्म दिया कि वापस जाएं और दोनों सांभरों का जो शिकार किये हैं, उठवा ले जाएं। थोड़ी देर में कुमार और तेजसिंह तहखाने के पास पहुंचे और अन्दर घुसे। जब अंधेरा निकल गया और रोशनी आई तो सामने एक दरवाज़ा दिखाई देने लगा। कुमार घोड़े से उतर पड़े। अब तेजसिंह ने कुमार से पूछा, "भला यह कहिए कि आप यह दरवाज़ा खोल भी सकते हैं कि नहीं ?" कुमार ने कहा, "क्यों नहीं, इसमें क्या कारीगरी है ?" यह कह झट आगे बढ़ शेर के मुंह से जुबान बाहर निकाल ली, दरवाज़ा खुल गया। तेजसिंह ने कहा, "याद तो है!" कुमार ने कहा, "क्या मैं भूलने वाला हूँ।" दोनों अन्दर गये और सैर करते-करते चश्मे के किनारे पहुंचे। देखा कि अहमद और भगवानदास एक चट्टान पर बैठे बातें कर रहे हैं, पैर में बेड़ी पड़ी है। कुमार को देख दोनों उठ खड़े हुए झुककर सलाम किया और बोले, "अब तो हम लोगों का कसूर माफ होना चाहिए।" कुमार ने कहा, "हाँ थोड़े रोज़ और सब्र करो।"

कुछ देर तक वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह टहलते और मेवों को तोड़कर खाते रहे। इसके बाद तेजसिंह ने कहा, "अब चलना चाहिए। देर हो गई।" कुमार ने कहा, "चलो।" दोनों बाहर आये। तेजसिंह ने कहा, "इस दरवाज़े को आपने खोला है, आप ही बन्द कीजिये।"

कुमार ने यह कह कि "अच्छा लो, हम ही बन्द कर देते हैं", दरवाज़ा बन्द कर दिया और घोड़े पर सवार हुए। जब विजयगढ़ के करीब पहुंचे तो तेजसिंह ने कहा, "अब आप जाइये, मैं ज़रा फौज़ की खबर लेता हुआ आता हूँ।" कुमार ने कहा, "अच्छा जाओ।" यह सुन तेजसिंह दूसरी तरफ चले गये और कुमार क़िले में चले आये, घोड़े से उतर कमरे में गये, आराम किया। थोड़ी रात बीते तेजसिंह कुमार के पास आये। कुमार ने पूछा, "कहो, क्या हाल है ?" तेजसिंह ने कहा, "सब इन्तज़ाम आपके हुक्म मुताबिक हो गया, आज दिन भर में एक घण्टे की छुट्टी न मिली जो आपसे मुलाकात करता।" यह सुन वीरेन्द्रसिंह हंस पड़े और बोले, "दोपहर तक तो हमारे साथ रहे तिस पर कहते हो कि मुलाकात न हुई।" यह सुनते ही तेजसिंह चैंक पड़े और बोले, "आप क्या कहते हैं।" कुमार ने कहा, "कहते क्या हैं, तुम मेरे साथ उस तहखाने में नहीं गये थे जहाँ अहमद और भगवानदत्त बन्द हैं ?"

अब तो तेजसिंह के चेहरे का रंग उड़ गया और कुमार का मुंह देखने लगे। तेजसिंह की यह हालत देखकर कुमार को भी ताज्जुब हुआ। तेजसिंह ने कहा, "भला यह तो बताइए कि मैं आपसे कहाँ मिला था, कहाँ तक साथ गया और कब वापस आया ?" कुमार ने सब कुछ कह दिया। तेजसिंह बोले, "बस, आपने चैका फेरा। अहमद और भगवानदत्त के निकल जाने का तो इतना गम नहीं है मगर दरवाज़े का हाल दूसरे को मालूम हो गया इसका बड़ा अफसोस है।" कुमार ने कहा, "तुम क्या कहते हो कुछ समझ में नहीं आता।" तेजसिंह ने कहा, "ऐसा ही समझते तो धोखा क्यों खाते। तब न समझे तो अब समझिए, कि शिवदत्त के ऐयारों ने धोखा दिया और तहखाने का रास्ता देख लिया। ज़रूर यह काम बद्रीनाथ का है, दूसरे का नहीं, ज्योतिषी उसको रमल के ज़रियें से पता देता है।"

कुमार यह सुन दंग हो गये और अपनी गलती पर अफसोस करने लगे। तेजसिंह ने कहा, "अब तो जो होना था हो गया, उसका अफसोस काहे का। मैं इस वक़्त जाता हूँ, क़ैदी तो निकल गये होंगे मगर मैं जाकर ताले का बन्दोबस्त करूंगा।" कुमार ने पूछा, "ताले का बन्दोबस्त क्या करोगे ?" तेजसिंह ने कहा, "उस फाटक में और भी ताले हैं जो इससे ज़्यादा मज़बूत है। उन्हें लगाने और बन्द करने में बड़ी देर लगती है इसलिए उन्हें नहीं लगाता था मगर अब लगाऊंगा।" कुमार ने कहा, "मुझे भी वह ताला दिखाओ।" तेजसिंह ने कहा, "अभी नहीं, जब तक चुनार पर फतह न पावेंगे न बतावेंगे नहीं तो फिर धोखा होगा।" कुमार ने कहा, "अच्छा मर्ज़ी तुम्हारी।"

तेजसिंह उसी वक़्त तहखाने की तरफ रवाना हुए और सवेरा होने के पहले ही लौट आये। सुबह को जब कुमार सोकर उठे तो तेजसिंह से पूछा, "कहो तहखाने का क्या हाल है ?" इन्होंने जवाब दिया, " क़ैदी तो निकल गये मगर ताले का बन्दोबस्त कर आया हूँ।"

नहा-धोकर, कुछ खाकर कुमार को तेजसिंह दरबार में ले गये। महाराज को सलाम करके दोनों आदमी अपनी-अपनी जगह बैठ गये। आज जासूसों ने खबर दी कि शिवदत्त की फौज़ और पास आ गई है, अब दस कोस पर है। कुमार ने महाराज से अर्ज़ किया,

“अब मौका आ गया है कि मुसलमानों की फौज़ दुश्मनों को रोकने के लिए आगे भेजी जाये।” महाराज ने कहा, “अच्छा भेज दो।” कुमार ने तेजसिंह से कहा, “अपना एक तोपखाना भी इस मुसलमानी फौज़ के पीछे रवाना करो।” फिर कान में कहा, “अपने तोपखाने वालों को समझा देना कि जब फौज़ की नीयत खराब देखें तो ज़िन्दा किसी को न जाने दें।”

तेजसिंह इन्तज़ाम करने के लिए चले गये, हरदयालसिंह को भी साथ लेते गये। महाराज ने दरबार बर्खास्त किया और कुमार को साथ ले महल में पधारे। दोनों ने साथ ही भोजन किया, इसके बाद कुमार अपने कमरे में चले गये। छटपटाते रह गये मगर आज भी चन्द्रकान्ता की सूरत न दिखी, लेकिन चन्द्रकान्ता ने आड़ से इनको देख लिया।

तेईसवां बयान

शाम को महाराज से मिलने के लिए वीरेन्द्रसिंह गये। महाराज उन्हें अपनी बगल में बैठाकर बातचीत करने लगे। इतने में हरदयालसिंह और तेजसिंह भी आ पहुंचे। महाराज ने हाल पूछा। उन्होंने अर्ज़ किया कि फौज़ मुकाबले में भेज दी गई है। लड़ाई के बारे में राय और तरकीबें होने लगीं। सब सोचते-विचारते आधी रात गुज़र गई, एकाएक कई चोबदारों ने आकर अर्ज़ किया, "महाराज, चोर-महल में से कुछ आदमी निकल कर भागे जिनको दुश्मन समझ पहरे वालों ने तीर छोड़े, मगर वे ज़ख्मी होकर भी निकल गये।"

यह खबर सुन महाराज सोच में पड़ गये। कुमार और तेजसिंह भी हैरान थे। इतने में ही महल में से रोने की आवाज़ आने लगी। सभी का खयाल उस रोने पर चला गया। पल में रोने और चिल्लाने की आवाज़ बढ़ने लगी, यहाँ तक कि तमाम महल में हाहाकार मच गया। महाराज और कुमार वगैरह सभी के मुंह पर उदासी छा गइ। उसी समय लौंडिया दौड़ती हुई आई और रोते-रोते बड़ी मुश्किल से बोलीं, "चन्द्रकान्ता और चपला का सिर काटकर कोई ले गया।" यह खबर तीर के समान सभी को छेद गई। महाराज तो एकाएक हाय कह के गिर ही पड़े, कुमार की भी अजब हालत हो गई, चेहरे पर मुर्दनी छा गई। हरदयालसिंह की आखों से आंसू ज़ारी हो गये, तेजसिंह काठ की मूरत बन गये। महाराज ने अपने को संभाला और कुमार की अजब हालत देख गले लगा लिया, इसके बाद रोते हुए कुमार का हाथ पकड़े महल में दौड़े चले गये। देखा कि हाहाकार मचा हुआ है, महारानी चन्द्राकान्ता की लाश पर पछाड़ें खा रही हैं, सिर फट गया है, खून ज़ारी है। महाराज भी जाकर उसी लाश पर गिर पड़े। कुमार में तो इतनी भी ताकत न रही कि अन्दर जाते। दरवाज़े पर ही गिर पड़े, दांत बैठ गया चेहरा जर्द और मुर्दे की-सी सूरत हो गई।

चन्द्रकान्ता और चपला की लाशें पड़ी थीं, सिर नहीं थे, कमरे में चारों तरफ खून-ही-खून दिखाई देता था। सभी की अजब हालत थी, महारानी रो-रोकर कहती थीं, "हाय बेटी! तू कहाँ गई। उसका कैसा कलेजा था जिसने तेरे गले पर छुरी चलाई! हाय हाय, अब मैं जी कर क्या करूंगी। तेरे ही वास्ते इतना बखेड़ा हुआ और तू ही न रही तो अब यह राज्य क्या हो ?" महाराज कहते थे-"अब क्रूर की छाती ठण्डी हुई, शिवदत्त को मुराद मिल गई। कह दो, अब आवे विजयगढ़ का राज्य करे, हम तो लड़की का साथ देंगे।"

एकाएक महाराज की निगाह दरवाज़े पर गई। देखा वीरेन्द्रसिंह पड़े हुए हैं, सिर से खून ज़ारी है। दौड़े और कुमार के पास आये, देखा तो बदन में दम नहीं, नब्ज़ का पता नहीं,

नाक पर हाथ रखा तो सांस ठंडी चल रही है। अब तो और भी ज़ोर से महाराज चिल्ला उठे, बोले, "गज़ब हो गया! हमारे चलते नौगढ़ का राज्य भी गारत हुआ। हम तो समझे थे कि वीरेन्द्रसिंह को राज्य दे जंगल में चले जायेंगे, मगर हाय! विधाता को यह भी अच्छा न लगा! अरे कोई जाओ, जल्दी तेजसिंह को लिवा लाओ, कुमार को देखें! हाय हाय! अब तो इसी मकान में मुझको भी मरना पड़ा। मैं समझता हँू राजा सुरेन्द्रसिंह की जान भी इसी मकान में जायेगी! हाय, अभी क्या सोच रहे थे, क्या हो गया! विधाता तूने क्या किया ?"

इतने में तेजसिंह आये। देखा कि वीरेन्द्रसिंह पड़े हैं और महाराज उनके ऊपर हाथ रखे रो रहे हैं। तेजसिंह की जो कुछ जान बची थी वह भी निकल गई। वीरेन्द्रसिंह की लाश के पास बैठ गये और ज़ोर से बोले, "कुमार, मेरा जी तो रोने को भी नहीं चाहता क्योंकि मुझको अब इस दुनिया में रहना नहीं है, मैं तो खुशी-खुशी तुम्हारा साथ दूंगा।" यह कह कर कमर से खंजर निकाला और पेट में मारना ही चाहते थे कि दीवार फांद एक आदमी ने आकर हाथ पकड़ लिया।

तेजसिंह ने उस आदमी को देखा जो सिर से पैर तक सिन्दूर से रंगा हुआ था उसने कहा-

"काहे को देते हो जान, मेरी बात सुनो दे कान।
यह सब खेल ठगी को मान, लाश देखकर लो पहचान।
उठो देखो भालो, खोजो खोज निकालो।।"

यह कह वह दांत दिखलाता उछलता-कूदता भाग गया।

चन्द्रकान्ता

भाग-दो

पहला बयान

इस आदमी को सभी ने देखा मगर हैरान थे कि यह कौन है, कैसे आया और क्या कह गया ? तेजसिंह ने ज़ोर से पुकार के कहा, "आप लोग चुप रहें, मुझको मालूम हो गया कि यह सब ऐयारी हुई है, असल में कुमारी और चपला दोनों ज़िन्द्रा हैं, यह लाशें उन लोगों की नहीं हें!!"

तेज सिंह की बात से सब चैंक पड़े और एकदम सन्नाटा छा गया। सभी ने रोना-धोना छोड़ दिया और तेज सिंह के मुंह की तरफ देखने लगे। महारानी दौड़ी हुई उनके पास आईं और बोलीं, "बेटा, जल्दी बताओ यह क्या मामला है ? तुम कैसे कहते हो कि चन्द्रकान्ता ज़िन्दा है ? यह कौन था जो एकाएक महल में घुस आया ?" तेजसिंह ने कहा, "यह तो मुझे मालूम नहीं कि यह कौन था मगर इतना पता लग गया कि चन्द्रकान्ता और चपला को शिवदत्तसिंह के ऐयार चुरा ले गये हैं और यह बनावटी लाश यहां रख गये हैं जिससे सब कोई जानें कि वे मर गईं और खोज़ न करें।" महाराज बोले, "यह कैसे मालूम कि यह लाश बनावटी है ?" तेजसिंह ने कहा, "यह कोई बड़ी बात नहीं है, लाश के पास चलिये, मैं अभी बतला देता हूं!" यह सुन महाराज तेजसिंह के साथ लाश के पास गये, महारानी भी गई। तेजसिंह ने अपने कमर से खंजर निकालकर चपला की लाश की टांग काट ली और महाराज को दिखलाकर बोले, "देखिये इसमें कहीं हड्डी है ?" महाराज ने गौर से देखकर कहा, "ठीक है, बनावटी लाश है।" इसके पीछे चन्द्रकान्ता की लाश को भी इसी तरह देखा, उसमें भी हड्डी नहीं पाई। अब सबको मालूम हो गया कि ऐयारी की गई है। महाराज बोले, "अच्छा, यह तो मालूम हुआ कि चन्द्रकान्ता जीती है, मगर दुश्मनों के हाथ पड़ गई इसका गम क्या कम है ?" तेजसिंह बोले, "कोई हर्ज़ नहीं, अब तो जो होना था हो चुका। मैं चन्द्रकान्ता और चपला को खोज़ निकालूंगा।"

तेजसिंह के समझाने से सभी को कुछ ढाढ़स हुआ, मगर कुमार वीरेन्द्रसिंह अभी तक बदहवास पड़े हैं, उनको इन सब बातों की कुछ खबर नहीं। अब महाराजा को यह फिक्र हुई

कि कुमार को होश में लाना चाहिए। वैद्य बुलाये गये, सभी ने बहुत-सी तरकीबें कीं मगर कुमार को होश न आया। तेजसिंह भी अपनी तरकीब करके हैरान हो गये मगर कोई फायदा न हुआ, यह देख महाराज बहुत घबराये और तेज सिंह से बोले, "अब क्या करना चाहिए ?" बहुत देर तक गौर करने के बाद तेजसिंह ने कहा कि "कुमार को उठवा के उनके रहने के कमरे में भिजवाना चाहिए, वहां अकेले में मैं इनका इलाज करूंगा।" यह सुन महाराज ने इन्हें खुद उठाना चाहा मगर तेजसिंह ने कुमार को गोद में ले लिया और उनके रहने वाले कमरे में ले चले। महाराभी भी संग हुए। तेजसिंह ने कहा, "आप साथ न चलिये, ये अकेले में ही अच्छे होंगे।" महाराज उसी जगह ठहर गये। तेजसिंह कुमार को लिये हुए उनके कमरे में पहुंचे और चारपाई पर लिटा लिया, चारों तरफ से दरवाज़े बन्द कर दिये और उनके कान के पास मुंह लगाकर बोलने लगे-"चन्द्रकान्ता मरी नहीं, जीती हैं, वह देखो महाराज शिवदत्त के ऐयार उसे लिये जोते हैं। जल्दी दौड़ो, छीनो, नहीं तो बस ले ही जायेंगे!! क्या इसी को वीरता कहते हैं ? छिः, चन्द्रकान्ता को दुश्मन लिये जायें और आप देखकर भी कुछ न बोलें ? राम, राम, राम!"

इतनी आवाज़ कान में पड़ते ही कुमार ने आंखें खोल दीं और घबराकर बोले, "हैं! कौन लिये जाता है ? कहां है चन्द्रकान्ता ?" यह कहकर इधर-उधर देखने लगे। देखा तो तेजसिंह बैठे हैं। पूछा, "अभी कौन कह रहा था कि चन्द्रकान्ता जीती है और उसको दुश्मन लिए जाते हैं ?" तेजसिंह ने कहा, "मैं कहता था और सच कह रहा था। कुमारी ज़िन्दा हैं मगर दुश्मन उनको चुरा ले गये हैं और उनकी जगह नकली लाश रख इधर-उधर रंग फैला दिया है जिससे लोग कुमारी को मरी हुई जानकर पीछा और खोज़ न करें।"

कुमार ने कहा, "तुम धोखा देते हो! हम कैसे जानंे कि वह लाश नकली है ?" तेजसिंह ने कहा, "मैं अभी आपको यकीन करा देता हूं। "यह कह कमरे का दरवाज़ा खोला, देखा कि महाराज खड़े हैं, आंखों से आंसू जारी है। तेजसिंह को देखते ही पूछा, "क्या हाल है ?" जवाब दिया, "अच्छे है, होश में आ गये, चलिए देखिए।" यह सुन महाराज अन्दर गये। उन्हें देखते ही कुमार उठ खड़े हुए। महाराज ने गले से लगा लिया। पूछा, "मिजाज़ कैसा है!" कुमार ने कहा, "अच्छा है।" कई लौंडियां भी उस जगह आईं जिनको कुमार का हाल लेने के लिए महारानी ने भेजा था। एक लौंडी से तेजसिंह ने कहा, "दोनों लाशों में से जो टुकड़े हाथ-पैर के मैंने काटे थे उन्हें ले आ।" यह सुन लौंडी दौड़ी गई और वे टुकड़े ले आई। तेजसिंह ने कुमार को दिखलाकर कहा, "देखिये, यह बनावटी लाश है या नहीं, इसमें हड्डी कहां है ?" कुमार ने देखकर कहा, "ठीक है, मगर उन लोगों ने बड़ी बदमाशी की!" तेजसिंह ने कहा, "खेर, जो होना था, हो गया, देखिये अब हम क्या करते हैं।"

सवेरा हो गया। महाराज, कुमार और तेजसिंह बैठे बातें कर रहे थे कि हरदयाल सिंह ने पहुंचकर महाराज को सलाम किया। उन्होंने बैठने का इशारा किया। दीवान साहब बैठ गये और सभी को वहां से हट जाने के लिए हुक्म दिया। जब एकान्त हो गया तो हरदयालसिंह

ने तेजसिंह से पूछा, “मैंने सुना है कि वह बनावटी लाश थी' जिसको सभी ने कुमारी की लाश समझा था ?” तेजसिंह ने कहा, “जी हां, ठीक बात है!” और तब सारा हाल समझाया। इसके बाद दीवान साहब ने कहा, “और गज़ब देखिये। कुमारी के मरने की खबर सुनकर सब परेशान थे, सरकारी नौकरों में से जिन लोगों ने यह खबर सुनी, दौड़े हुए महल के दरवाज़े पर रोते-चिल्लाते चले आये, उधर यहां ऐयार लोग क़ैद थे पहरा कम रह गया, मौका पाकर उनके साथी ऐयारों ने वहां धावा किया और पहरे वालों को ज़ख्मी कर अपनी तरफ से सब ऐयारों को, जो क़ैद थे, छुड़ा ले गये।”

यह खबर सुनकर तेजसिंह, कुमार और महाराज सन्न हो गये। कुमार ने कहा, “बड़ी मुश्किल में पड़ गये। अब कोई भी ऐयार उनका हमारे यहां न रहा, सब छूट गये। कुमारी और चपला को ले गये। यह तो गज़ब ही किया! अब नहीं बर्दाश्त होता, हम आज ही कूच करेंगे और दुश्मनों से इसका बदला लेंगे।” यह बात कर ही रहे थे, तभी एक चोबदार ने आकर अर्ज़ किया कि “लड़ाई की खबर लेकर एक जासूस आया है, दरवाज़े पर हाज़िर है उसके बारे में क्या हुक्म होता है ?” हरदयाल सिंह ने कहा, “इसी जगह हाज़िर करो।” जासूस लाया गया। उसने कहा, “दुश्मनों को रोकने के लिए यहां से मुसलमानी फौज़ भेजी गई थी। उसके पहुंचने तक दुश्मन चार कोस और आगे बढ़ आये थे। मुकाबले के वक़्त वे लोग भागने लगे, यह हाल देखकर तोपखाने वालों ने पीछे से बाढ़ मारी जिससे करीब चौथाई आदमी मारे गये। फिर भागने का हौसला न पड़ा ओर खूब लड़े, यहां तक कि लगभग हज़ार दुश्मनों को काट गिराया लेकिन वह फौज़ भी तमाम हो चली, अगर फौरन मदद न भेजी जायेगी तो तोपखाने वाले भी मारे जायेंगे।”

यह सुनते ही कुमार ने दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि पांच हज़ार फौज़ जल्दी मदद पर भेजी जाये और वहां पर हमारे लिये भी खेमा रवाना करो, दोपहर को हम भी उस तरफ कूच करेंगे। हरदयाल सिंह फौज़ भेजने के लिए चले गये। महाराज ने कुमार से कहा, “हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।” कुमार ने कहा, “ऐसी जल्दी क्या है। आप यहां रहें, राज्य का काम देखें। मैं जाता हूं ज़रा देखूं तो, राजा शिवदत्त कितनी बहादुरी रखता है, अभी आपको तकलीफ करने की कुछ ज़रूरत नहीं।”

थोड़ी देर तक बातचीत होने के बाद महाराज उठकर महल में चले गये। कुमार और तेजसिंह भी स्नान और सन्ध्या-पूजा की फिक्र में उठे। सबसे जल्दी तेजसिंह ने छुट्टी पाई और मुनादी वाले को बुलाकर हुक्म दिया कि, “तू तमाम शहर में इस बात की मुनादी कर आ कि - 'दन्तारवीर का जिसको इष्ट हो वह तेजसिंह के पास हाज़िर हो'। बमूजिब हुक्म के मुनादी वाला मुनादी करने चला गया। सभी को ताज्जुब था कि तेजसिंह ने यह क्या मुनादी करवाई है।”

दूसरा बयान

मामूल के मुताबिक वक़्त पर महाराज ने दरबार किया। कुमार और तेजसिंह भी हाज़िर हुए। आज का दरबार बिलकुल सुस्त और उदास था, मगर कुमार ने लड़ाई पर जाने के लिए महाराज से इजाज़त ले ली और वहां से चले गये। महाराज भी उदासी की हालत में उठ के महल में चले गये। यह तो निश्चय हो गया कि चन्द्रकान्ता और चपला जीती हैं मगर कहां हैं, किस हालत में हैं, सुखी हैं या दःुखी, इन सब बातों का खयाल करके महल में महारानी से लेकर लौंडी तक सब उदास थीं, सभी की आखों से आंसू ज़ारी थे, खाने-पीने की किसी को फिक्र न थी, एक चन्द्रकान्ता का ध्यान ही सभी का काम था। महाराज जब महल में गये, महारानी ने पूछा कि “चन्द्रकान्ता का पता लगाने की कुछ फिक्र की गई ?” महाराज ने कहा, “हां, तेजसिंह खोज में जाते हैं, उनसे ज़्यादा पता लगाने वाला कौन है, जिससे कहूँ मैं ? वीरेन्द्रसिंह भी इस वक़्त मुझसे लड़ाई पर जाने के लिए विदा हो गये, अब देखो क्या होता है ?”

तीसरा बयान

कुछ दिन बाकी है, एक मैदान में हरी-हरी दूब पर पन्द्रह-बीस कुर्सियां रखी हुई हैं और सिर्फ तीन आदमी कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और फतहसिंह *–सेनापति बैठे हैं, बाकी कुर्सियां खाली पड़ी हैं। उनके पूरब की तरफ सैकड़ों खेमे अर्द्ध-चन्द्राकार खड़े हैं। बीच में वीरेन्द्रसिंह के पलटन वाले अपने-अपने हरवों को साफ और दुरुस्त कर रहे हैं। बड़े-बड़े शामियानों के नीचे तोपें रखी हैं जो हर एक तरह से लैस और दुरुस्त मालूम हो रही हैं। दक्षिण की तरफ घोड़ों का अस्तबल है जिसमें अच्छे-अच्छे घोड़े बंधे हिनहिना रहे हैं। उसके कुछ आगे फीलखाना है जहां बड़े-बड़े मस्त हाथी सिक्कड़ों से बंधे दिखाई देते हैं। पश्चिम की तरफ बाजे वालों, सुरंग खोदने वालों, पहाड़ उड़ाने वालों और जासूसों का डेरा तथा रसद का भण्डार है।

कुमार ने फतहसिंह सिपहसालार से कहा, “मैं समझता हूं कि मेरा डेरा-खेमा सुबह तक 'लोहरा' के मैदान में दुश्मनों के मुकाबले में खड़ा हो जायेगा ?” फतहसिंह ने कहा, “जी हां, ज़रूर सुबह तक वहां सब सामान लैस जो जायेगा। हमारी फौज़ भी कुछ रात रहे यहां से कूच करके पहर दिन चढ़ने के पहले ही वहां पहुंच जायेगी। परसों हम लोगों के हौसले दिखाई देंगे, बहुत दिन तक खाली बैठे-बैठे तबीयत घबरा गई थी।” इसी तरह की बातें हो रही थीं कि सामने से देवीसिंह ऐयारी के ठाठ में आते दिखाई दिये। नज़दीक आकर देवीसिंह ने कुमार और तेजसिंह को सलाम किया। देवीसिंह को देखकर कुमार बहुत खुश हुआ और उठकर गले लगा लिया, तेजसिंह ने भी देवीसिंह को गले लगाया और बैठने के लिए कहा। फतहसिंह सिपहसालार ने भी उनको सलाम किया। जब देवीसिंह बैठ गये, तेजसिंह उनकी तारीफ करने लगे। कुमार ने पूछा,” कहो देवीसिंह, तुमने यहां आकर क्या मालूम किया ?” तेजसिंह ने कहा, “इनका हाल मुझसे सुनिये, मैं मुख्तसर में आपको समझा देता हूं।” कुमार ने कहा, “कहो।” तेजसिंह बोले, “जब आप चन्द्रकान्ता के बाग में बैठे थे और भूत ने आकर कहा था कि 'खबर भई राजा को तुमरी सुनो गुरुजी मेरे!' जिसको सुनकर मैंने ज़बरदस्ती आपको वहां से उठाया था, वह भूत यही थे। नौगढ़ में भी इन्होंने जाकर क्रूरसिंह के चुनार जाने और ऐयारों को संग लाने की खबर खंजरी बजाकर दी थी। जब चन्द्रकान्ता के मरने का गम महल में छाया हुआ था और आप बेहोश पड़े हुए थे तब भी इन्होंने ही चन्द्रकान्ता और चपला के जीते रहने की खबर मुझको दी थी, तब मैंने उठकर लाश पहचानी, नहीं तो पूरे घर का नाश हो चुका था। इतना काम इन्होंने किया।

इन्हीं को बुलाने के वास्ते मैंने सुबह मुनादी करवाई थी, क्योंकि इनका कोई ठिकाना तो था ही नहीं। “यह सुनकर कुमार ने देवीसिंह की पीठ ठोंकी और बोले,” शाबाश! किस मुंह से तारीफ करें, दो घर तुमने बचाये। “देवीसिंह ने कहा, “मैं किस लायक हूं जो आप इतनी तारीफ करते हैं, तारीफ सब कामों से निश्चिन्त होकर कीजियेगा, इस वक़्त चन्द्रकान्ता के छुड़ाने की फिक्र करनी चाहिए, अगर देर होगी तो न जाने उनकी जान पर क्या आ बने। सिवाय इसके इस बात का भी खयाल रखना चाहिए कि अगर हम लोग बिलकुल चन्द्रकान्ता ही की खोज में लीन हो जायेंगे तो महाराज की लड़ाई का नतीज़ा बुरा हो जायेगा!” यह सुनकर कुमार ने पूछा, “देवीसिंह यह तो बताओ चन्द्रकान्ता कहां है, उसको कौन ले गया ?” देवीसिंह ने जवाब दिया कि यह तो नहीं मालूम कि चन्द्रकान्ता कहां है, हां इतना जानता हूं कि नाज़िम और बद्रीनाथ मिलकर कुमारी और चपला को ले गये, पता लगाने से लग ही जायेगा। तेजसिंह ने कहा,” अब तो दुश्मन के सब ऐयार छूट गये, वे सब मिल के नौ हैं और हम दो आदमी ठहरे। चन्द्रकान्ता और चपला को खोजें, चाहे फौज़ में रहकर कुमार की हिफाज़त करें, बड़ी मुश्किल है।” देवीसिंह ने कहा, “कोई मुश्किल नहीं है, सब काम हो जायेगा। देखिये तो सही, अब पहले हमको शिवदत्त के मुकाबले में चलना चाहिए। उसी जगह से कुमारी के छुड़ाने की फिक्र की जायेगी!” तेजसिंह ने कहा, “हम लोग महाराज से विदा हो आये हैं, कुछ रात रहते यहां से पड़ाव उठेगा, पेशखेमा जा चुका है।”

आधी रात तक ये लोग आपस में बातचीत करते रहे, इसके बाद कुमार उठकर अपने खेमे में चले गये। कुमार के बगल में तेजसिंह का खेमा था जिसमें देवीसिंह और तेजसिंह दोनों ने आराम किया। चारों तरफ फौज़ का पहरा फिरने लगा, गश्त की आवाज़ आने लगी। थोड़ी रात बाकी थी कि एक छोटी तोप की आवाज़ हुई। कुछ देर बाद बाजा बजने लगा, कूच की तैयारी हुई और धीरे-धीरे फौज़ चल पड़ी। जब सब फौज़ जा चुकी, पीछे से एक हाथी पर कुमार सवार हुए जिन्हें चारों तरफ से बहुत से सवार घेरे हुए थे। तेजसिंह और देवीसिंह अपने ऐयारी के सामान से सजे हुए कभी आगे, कभी पीछे, कभी साथ, पैदल चले जाते थे। पहर दिन चढ़े कुंवर वीरेन्द्रसिंह का लश्कर शिवदत्तसिंह की फौज़ के मुकाबले में जा पहुंचा जहां पहले से महाराज जयसिंह की फौज़ डेरा जमाये हुए थी। लड़ाई बन्द थी और मुसलमान सब मारे जा चुके थे, खेमा-डेरा पहले ही से खड़ा था, कायदे के साथ पलटनों का पड़ाव पड़ा।

जब सब इन्तज़ाम हो चुका, कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने अपने खेमे में कचहरी की और मुन्शी को हुक्म दिया, “एक चिट्ठी शिवदत्त को लिखो कि मालूम होता है आजकल तुम्हारे मिजाज़ में गर्मी आ गई है जो बैठे-बैठाये एक नालायक क्रूर के भड़काने पर महाराज जयसिंह से लड़ाई ठान ली है। यह भी मालूम हो गया कि तुम्हारे ऐयार चन्द्रकान्ता और चपला को चुरा लाये हैं, सो बेहतर है कि चन्द्रकान्ता और चपला को इज़्ज़त के साथ महाराज जयसिंह के

पास भेज दो और तुम वापस लौट जाओ नहीं तो पछताओगे, जिस वक़्त हमारे बहादुरों की तलवारें मैदान में चमकेंगी, भागते राह न मिलेगी।”

बमूजिब हुक्म के मीर मुंशी ने चिट्ठी लिखकर तैयार की। कुमार ने कहा, “यह, खत कौन ले जायेगा ?” यह सुन देवीसिंह सामने आ हाथ जोड़कर बोले, “मुझको इज़ाज़त मिले कि इस खत को ले जाऊं, क्योंकि शिवदत्तसिंह से बातचीत करने की मेरे मन में बड़ी लालसा है।” कुमार ने कहा, “इतनी बड़ी फौज़ में तुम्हारा अकेला जाना अच्छा नहीं है।” तेजसिंह ने कहा, “कोई हर्ज़ नहीं, जाने दीजिये।” आखिर कुमार ने अपनी कमर से खंजर निकाल कर दिया जिसे देवीसिंह ने लेकर सलाम किया, चिट्ठी बटुए में रख ली और तेजसिंह का चरण छूकर रवाना हुए।

महाराज शिवदत्तसिंह के पलटन वालों में कोई भी देवीसिंह को नहीं पहचानता था। दूर से इन्होंने देखा कि बड़ा-सा कारचोबी का खेमा खड़ा है। समझ गये कि यही महाराज का खेमा है, सीधे धड़धड़ाते हुए खेमे के दरवाज़े पर पहुंचे और पहरे वालों से कहा, “अपने राजा को खबर करो कि कुंवर वीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार खत लेकर आया है, जाओ, जल्दी जाओ!” सुनते ही प्यादा दौड़ा गया और महाराज शिवदत्त से इस बात की खबर की। उन्होंने हुक्म दिया, “आने दो।” देवीसिंह खेमे के अन्दर गये। देखा कि बीच में महाराज शिवदत्त सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर बैठे हैं, र्बाइं तरफ दीवान साहब और बाद इसके दोनों तरफ बड़े-बड़े बहादुर बेशकीमती पोशाकें पहने उम्दे हरबे लगाये चांदी की कुर्सी पर बैठे हैं, जिनके देखने से कमज़ोरों का कलेजा दहलता है। बाद इसके दोनों तरफ नीम कुर्सियों पर ऐयार लोग विराजमान हैं। इसके बाद दरज़े-ब-दरज़े अमीर और ओहदेदार लोग बैठे हैं, बहुत से चोबदार हाथ बांधे सामने खड़े हैं। गरज कि बड़े रोआब का दरबार देखने में आया।

देवीसिंह किसी को सलाम किये बिना ही बीच में जाकर खड़े हो गये और एक दफ़े चारों तरफ निगाहें दौड़ाकर गौर से देखा, फिर बढ़कर कुमार की चिट्ठी महाराज के सामने सिंहासन पर रख दी। देवीसिंह की बेअदबी देखकर महाराज शिवदत्त मारे गुस्से के लाल हो गये और बोले-”एक मच्छर को इतना हौसला हो गया कि हाथी का मुकाबला करे! अभी तो वीरेन्द्रसिंह के मुंह से दूध की महक भी गई न होगी।” यह कह चिट्ठी हाथ में ले फाड़कर फेंक दी। चिट्ठी का फटना था कि देवीसिंह की आंखें लाल हो गईं। बोले, “जिसके सिर मौत सवार होती है उसकी बुद्धि पहले ही हवा खाने चली जाती है।” देवीसिंह की बात तीर की तरह शिवदत्त के कलेजे के पार हो गई। बोले, “पकड़ो इस बेअदब को!” इतना कहना था कि कई चोबदार देवीसिंह की तरफ झुके। इन्होंने खंजर निकाल दो-तीन चोबदारों की सफाई कर डाली और फुर्ती से अपने ऐयारी के बटुए में से एक गेंद निकालकर ज़ोर से ज़मीन पर मारा जिससे बड़ी भारी आवाज़ हुई! दरबार दहल उठा, महाराज एकदम चैंक पड़े जिससे समला सिर का, जिस पर हीरे का सरपंेच था ज़मीन पर गिर पड़ा। लपक के

देवीसिंह ने उसे उठा लिया और कूदकर खेमे के बाहर हो गये। सब-के-सब देखते रह गये, किसी के किये कुछ न बन पड़ा।

सारा गुस्सा शिवदत्त ने ऐयारों पर निकाला जो कि उस दरबार में बैठे थे। कहा-"लानत है तुम लोगों की ऐयारी पर जो तुम लोगों के देखते-ही-देखते दुश्मन का एक अदना ऐयार हमारी बेइज़्ज़ती कर जाये!" बद्रीनाथ ने ज़वाब दिया, "महाराज हम लोग ऐयार हैं, हज़ार आदमियों में अकेले घुसकर काम करते हैं मगर एक आदमी पर दस ऐयार नहीं टूट पड़ते। यह हम लोगों के कायदे के बाहर है। बड़े-बड़े पहलवान तो बैठे थे, इन लोगों ने क्या कर लिया ?" बद्रीनाथ की बात का ज़वाब शिवदत्त ने कुछ न देकर कहा, "अच्छा, कल हम देख लेंगे"

---

*—फतहसिंह की उम्र पच्चीस वर्ष से ज़्यादा न होगी।

चौथा बयान

महाराज शिवदत्त का शमला (मुकुट) लिये हुए देवीसिंह कुंवर वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे और जो कुछ हुआ था बयान किया। कुमार यह सुन हंसने लगे और बोले, "चलो, सगुन तो यह अच्छा हुआ!" तेजसिंह ने कहा-"सबसे ज़्यादा अच्छा सगुन तो मेरे लिये मेरा शागिर्द पैदा कर लाया।" यह कह शमले में से सरपेंच खोल बटुए में दाखिल किया। कुमार ने कहा, "भला तुम इसका क्या करोगे, तुम्हारे किस मतलब का है ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "इसका नाम फतह का सरपंेच है, जिस रोज आपकी बारात निकलेगी महाराज शिवदत्त की सूरत बना इसी को माथे पर बांध मैं आगे-आगे झण्डा लेकर चलूंगा।" यह सुनकर कुमार ने हंस दिया, पर साथ ही इसके दो बूंद आंसू आखों से निकल पड़े जिसको जल्दी से कुमार ने रूमाल से पोंछ लिया। तेजसिंह समझ गये कि यह चन्द्रकान्ता की जुदाई का गम है, उनको भी चपला का बहुत कुछ खयाल था, देवीसिंह से बोले, "सुनो देवीसिंह, कल लड़ाई ज़रूर होगी इसलिए एक ऐयार का यहां रहना ज़रूरी है और इससे ज़रूरी काम चन्द्रकान्ता का पता लगाना है।" देवीसिंह ने तेजसिंह से कहा, "आप यहां रहकर फौज़ की हिफाज़त कीजिये, मैं चन्द्रकान्ता की खोज में जाता हूं।" तेजसिंह ने कहा, "नहीं, चुनार की पहाड़ियां तुम्हारी अच्छी तरह देखी नहीं हैं और चन्द्रकान्ता ज़रूर उसी तरफ होगी। इससे यही ठीक होगा कि तुम यहां रहो और मैं कुमारी की खोज में जाऊं।" देवीसिंह ने कहा, "जैसी आपकी खुशी।" तेजसिंह ने कुमार से कहा, "आपके पास देवीसिंह हैं। मैं जाता हूं ज़रा होशियारी से रहियेगा और लड़ाई में जल्दी न कीजियेगा।" कुमार ने कहा, "अच्छा जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।"

पांचवां बयान

"चन्द्रकान्ता को ले जाकर कहां रखा होगा ? अच्छे कमरे में या अंधेरी कोठरी में ? उसको खाने को क्या दिया होगा और वह बेचारी सिवाय रोने के क्या करती होगी ? खाने-पीने की उसे कब सुध होगी। उसका मुंह दुःख और गम से सूख गया होगा। उसको राज़ी करने के लिए तंग करते होंगे। कहीं ऐसा न हो कि उसने तंग आकर जान दे दी हो!" इन्हीं सब बातों को सोचते ओर खयाल करते कुमार को रात भर नींद न आई। सवेरा हुआ ही चाहता था कि महाराज शिवदत्त के लश्कर से डंके की आवाज़ आई। मालूम हुआ कि दुश्मनों की तरफ लड़ाई का सामान हो रहा है, कुमार उठ बैठे, हाथ-मुह धोये। इतने में हरकारे ने आकर खबर दी कि "दुश्मनों की तरफ लड़ाई का सामान हो रहा है" कुमार ने कहा, "हमारे यहां भी जल्द तैयारी की जाये।" हुक्म पाकर हरकारा रवाना हुआ। जब तक कुमार ने स्नान-संध्या से छुट्टी पाई तब तक दोनों तरफ की फौजें् भी मैदान में जा डटीं। बेलदारों ने ज़मीन साफ कर दी। कुमार भी अपने अरबी घोडं़े पर सवार हो मैदान में आ गये और देवीसिंह से कहा, "शिवदत्त को कहना चाहिए कि बहुत से आदमियों का खून करना अच्छा नहीं, जिस-जिस को बहादुरी का घमण्ड हो एक पर एक लड़ के जल्दी मामला तय कर ले। शिवदत्तसिंह अपने को अर्जुन समझते हैं, उनके मुकाबले के लिए मैं मौजूद हूं क्यों बेचारे गरीब सिपाहियों की जान जाये ?" देवीसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा, अभी इस मामले को तय कर डालता हूं।" यह कह मैदान में गये और अपनी चादर हवा में दो-तीन दफे उछाली। चादर उछालनी थी कि झट बद्रीनाथ ऐयार महाराज शिवदत्त के लश्कर से निकलकर मैदान में देवीसिंह के पास आये और बोले, "जय माया की!" देवीसिंह ने भी ज़वाब दिया, "जय माया की!" बद्रीनाथ ने पूछा, "क्यों, क्या है जो मैदान में आकर ऐयारों को बुलाते हो ?"

देवी०: तुमसे एक बात कहनी है।

बद्री०: कहो।

देवी०: तुम्हारी फौज़ में मर्द बहुत हैं कि औरत ?

बद्री०: औरत की सूरत भी दिखाई नहीं देती!

देवी०: तुम्हारे यहां कोई बहादुर भी है कि सब गरीब सिपाहियों की जान लेने और आप तमाशा देखने वाले हैं ?

बद्री०: हमारे यहां खंचियों बहादुर भरे हैं।

देवी०: तुम्हारे कहने से तो मालूम होता है कि सब खेत की मूली ही हो।

बद्री०: यह तो मुकाबला होने से ही मालूम होगा!

देवी०: तो क्यों नहीं एक-से-एक लड़ के हौसला निकाल लेते। ऐसा करने से मामला भी जल्द तय हो जायेगा और बेचारे सिपाहियों की भी जानें मुफ्त में न जायेंगी! हमारे कुमार तो कहते हैं कि महाराज शिवदत्त को अपनी बहादुरी का बड़ा भरोसा है, आवें पहले हमसे ही भिड़ जायें, वही जीत जायें या हम ही चुनार की गद्दी के मालिक हों, बात-की-बात में मामला तय होता है।

बद्री:: तो इसमें हमारे महाराज कभी न हटेंगे, वह बड़े बहादुर हैं। तुम्हारे कुमार को तो चुटकी से मसल डालेंगे।

देवी०: यह तो हम भी जानते हैं कि उनकी चुटकी बहुत साफ है, फिर आवे मैदान में!

इस बातचीत के बाद बद्रीनाथ लौटकर अपनी फौज़ में गये और जो कुछ देवीसिंह से बात हुई थी जाकर महाराज शिवदत्त से कहा। सुनते ही महाराज शिवदत्त तो लाल हो गये और बोले, "यह कल का लड़का मेरे साथ मुकाबला करना चाहता है!" बद्रीनाथ ने कहा, "फिर हियाव ही तो है, हौसला ही तो है, इसमें रंज होने की क्या बात है ? मैं जहां तक समझता हूं उनका कहना ठीक है!" यह सुनते ही महाराज शिवदत्त झट घोड़ा कुदा के मैदान में आ गये और भाला उठाकर हिलाया, जिसको देख वीरेन्द्रसिंह ने भी अपने घोड़े को एड़ मारी और मैदान में शिवदत्त के मुकाबले में पहुंचकर ललकारा, "अपने मुंह अपनी तारीफ करता है और कहता है कि मैं वीर हूं ? क्या बहादुर लोग चोट्टे भी होते हैं ? जवांमर्दी से लड़कर चन्द्रकान्ता न ली गई ? लानत है ऐसी बहादुरी पर!!" वीरेन्द्रसिंह की बात तीर की तरह महाराज शिवदत्त के कलेजे में जा लगी। कुछ ज़वाब तो न दे सके, गुस्से में भरे हुए बड़े ज़ोर से कुमार पर नेज़ा चलाया, कुमार ने अपने नेज़े से ऐसा झटका दिया कि उनके हाथ से नेज़ा छिटक के दूर जा गिरा।

यह तमाशा देख दोस्त-दुश्मन, दोनों तरफ से 'वाह वाह' की आवाज़ आने लगी। शिवदत्त बहुत बिगड़ा और तलवार निकाल कर कुमार पर दौड़ा, कुमार ने तलवार का ज़वाब तलवार से दिया। दोपहर तक दोनों में लड़ाई होती रही, बाद दोपहर कुमार की तलवार से शिवदत्त का घोड़ा जख्मी होकर गिर पड़ा, बल्कि खुद महाराज शिवदत्त को कई जगह ज़ख्म लगे। घोड़े से कूदकर शिवदत्त ने कुमार के घोड़े को मारना चाहा, मगर मतलब समझ कर कुमार भी झट घोड़े पर से कूद पड़े और आगे होकर एक कोड़ा इस ज़ोर से शिवदत्त की कलाई पर मारा कि हाथ से तलवार छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ी जिसको दौड़ के देवीसिंह ने उठा लिया। महाराज शिवदत्त को मालूम हो गया कि कुमार हर तरह से जबर्दस्त हैं, अगर थोड़ी देर और लड़ाई होगी तो हम बेशक मारे जायेंगे या पकड़े जायेंगे। यह सोच अपनी फौज़ को कुमार पर धावा करने का इशारा किया। बस एकदम से कुमार को दुश्मनों ने घेर लिया। यह देख कुमार की फौज़ ने भी मारना शुरू किया। फतहसिंह सेनापति और देवीसिंह कोशिश

करके कुमार के पास पहुंचे और तलवार तथा खंजर चलाने लगे। दोनों फौजें आपस में खूब गुंथ गईं और गहरी लड़ाई होने लगी।

शिवदत्त के बड़े-बड़े पहलवानों ने चाहा कि इसी लड़ाई में कुमार का काम तमाम कर दें मगर कुछ न बन पड़ा। कुमार के हाथ से बहुत दुश्मन मारे गये। शाम को उतारे (युद्धबंदी) का डंका बजा और लड़ाई बन्द हुई। फौज़ ने कमर खोली। कुमार अपने खेमे में आये मगर बहुत सुस्त हो रहे थे, फतहसिंह सेनापति भी जख्मी हो गये थे। रात को सभी ने आराम किया।

महाराज शिवदत्त ने अपने दीवान और पहलवानों से राय ली कि अब क्या करना चाहिए। फौज़ तो वीरेन्द्रसिंह की हमसे बहुत कम है मगर उसकी दिलावरी से हमारा हौसला टूट जाता है क्योंकि हमने भी उससे लड़ के बहुत जक उठायी। हमारी तो यह राय है कि रात को कुमार के लश्कर पर धावा मारें। इस राय को सभी ने पसन्द किया। थोड़ी रात रहें शिवदत्त ने कुमार की फौज़ पर पांच सौ सिपाहियों के साथ धावा किया, बड़ा ही गड़बड़ मचा, अंधेरी रात में दोस्त-दुश्मनों का पता लगाना मुश्किल था। कुमार की फौज़ दुश्मन समझ अपने ही लोगों को मारने लगी। यह खबर वीरेन्द्रसिंह को भी लगी। झट अपने खेमे से बाहर निकल आये, देवीसिंह ने बहुत से आदमियों को महताब *–जलाने के लिए बांटी। यह महताब तेजसिंह ने अपनी तरकीब से बनाई थी। इसके जलाते ही उजाला हो गया और दिन की तरह मालूम होने लगा। अब क्या था! कुल पांच सौ आदमियों का मारना क्या, सुबह होते-होते शिवदत्त के पांच सौ आदमी मारे गये मगर रोशनी होने से पहले करीब हज़ार आदमी कुमार की तरफ के नुकसान हो चुके थे जिसका रंज वीरेन्द्रसिंह को बहुत हुआ और सुबह को लड़ाई बन्द न होने दी।

दोनों फौजें फिर गुंथ गईं। कुमार ने जल्दी से स्नान किया और सन्ध्या-पूजा करके हरवों को बदन पर सज़ा दुश्मन की फौज़ में घुस गये। लड़ाई खूब हो रही थी, किसी को तन-बदन की खबर न थी। एकाएक पूरब और उत्तर के कोने से कुछ फौजी सवार तेजी से आते हुए दिखाई दिये जिनके आगे-आगे एक सवार बहुत उम्दा पोशाक पहने अरबी घोड़े पर सवार घोड़ा दौड़ाए चला आता था, उसके पीछे और भी सवार जो करीब-करीब पांच सौ के होंगे घोड़ा फेंके चले आ रहे थे। अगले सवार की पोशाक और हरवों से मालूम होता था कि यह इन सभी का सरदार है। यह सरदार मुंह पर नकाब *–डाले हुए था और उसके साथ जितने सवार पीछे चले आ रहे थे उन लोगों के मुंह पर भी नकाबें पड़ी हुई थीं।

इस फौज़ ने पीछे से महाराज शिवदत्त की फौज़ पर धावा किया और खूब मारा। इधर से वीरेन्द्रसिंह की फौज़ ने जब देखा कि दुश्मनों को मारने वाला एक और दस्ता आ पहुंचा है तो उनका हौसला बढ़ गया और वे पूरी ताकत से लड़ने लगे। दो तरफी चोट महाराज शिवदत्त की फौज़ संभाल न सकी और भाग चली। फिर तो कुमार की बन पड़ी, दो कोस

तक पीछा किया, आखिर फतह का डंका बजाते अपने पड़ाव पर आये, मगर हैरान थे कि ये नकाबपोश सवार कौन थे जिन्होंने बड़े वक़्त पर हमारी मदद की और फिर जिधर से आये थे उधर ही चले गये। कोई किसी की ज़रा मदद करता है तो एहसान जताने लगता है मगर इन्होंने हमारा सामना भी नहीं किया, यह बड़ी बहादुरी का काम है। बहुत सोचा, मगर कुछ समझ न पड़ा।

महाराज शिवदत्त का ढेर सारा माल खज़ाना और खेमा कुमार के हाथ लगा। जब कुमार निश्चिन्त हुए तो उन्होंने देवी सिंह से पूछा, "क्या तुम कुछ बता सकते हो कि वे नकाबपोश कौन थे जिन्होंने हमारी मदद की ?" देवी सिंह ने कहा, "मेरे कुछ भी खयाल में नहीं आता, मगर वाह! बहादुरी इसको कहते हैं।।" इतने में एक जासूस ने आकर खबर दी कि दुश्मन के लोग थोड़ी दूर जाकर ठहर गये हैं और फिर लडाई की तैयारी कर रहे हैं।

---

*—फौज़ में महताब बहुत से बनाये जाते थे, इसलिए कि शायद रात को लड़ाई हो तो रोशनी की जाये।

*—नकाब एक कपड़े का नाम है जो मुंह पर परदे की तरह पड़ा रहता है, इसे पीछे की ओर डोरी से बांधते हैं, आखों की जगह खाली रहती है।

छठवां बयान

तेजसिंह चन्द्रकान्ता और चपला का पता लगाने के लिए कुंवर वीरेन्द्रसिंह से विदा हो फौज़ की छावनी से बाहर आये और सोचने लगे कि अब किधर जायें, कहां ढूंढें ? दुश्मन की फौज़ में देखने की तो कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि वहां चन्द्रकान्ता को कभी नहीं रखा होगा, इससे चुनार ही चलना ठीक है। यह सोचकर चुनार, की ही तरफ रवाना हुए और दूसरे दिन सवेरे वहां पहुंचे। सूरत बदलकर इधर-उधर घूमने लगे। जगह-जगह पर अटकते और अपना मतलब निकालने की फिक्र करते थे मगर कुछ फायदा न हुआ, कुमारी की खबर कुछ भी मालूम न हुई। रात को तेजसिंह सूरत बदल क़िले के अन्दर घुस गए और इधर-उधर ढूंढ़ने लगे। घूमते-घूमते मौका पाकर वे एक काले कपड़े से अपने बदन को ढांक कमन्द फेंक महल पर चढ़ गये। इस समय आधी रात जा चुकी होगी। छत पर से तेजसिंह ने झांककर देखा तो सन्नाटा मालूम पड़ा, मगर रोशनी खूब हो रही थी। तेजसिंह नीचे उतरे और एक दालान में खड़े होकर देखने लगे। सामने एक बड़ा कमरा था जो कि बहुत खूबसूरती के साथ बेशकीमती असबाबों और तस्वीरों से सजा हुआ था। रोशनी ज़्यादा न थी। सिर्फ दो शमादान जल रहे थे, बीच में ऊंची मसनद पर एक औरत सो रही थी। चारों तरफ उसके कई औरतें भी फर्श पर पड़ी हुई थीं। तेजसिंह आगे बढ़े और एक-एक करके रोशनी बुझाने लगे, यहां तक कि उस कमरे में सिर्फ एक रोशनी रह गई और सब बुझ गई। अब तेजसिंह उस कमरे की तरफ बढ़े, दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो पास से वह सूरत बखूबी दिखाई देने लगी जिसको दूर से देखा था। तमाम बदन शबनमी से ढंका हुआ मगर खूबसूरत चेहरा खुला था, करवट के सबब कुछ हिस्सा मुंह का नीचे के मखमली तकिए पर होने से छिपा हुआ था। गोरा रंग, गालों पर सुर्खी जिस पर एक लट खुलकर आ पड़ी थी जो बहुत ही भली मालूम होती थी। आंख के पास शायद किसी ज़ख्म का घाव था मगर यह भी भला मालूम होता था। तेजसिंह को यकीन हो गया कि बेशक महाराज शिवदत्त की रानी यही हैं। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने अपने बटुए में से कलम-दवात और एक टुकड़ा काग़ज़ का निकाला और जल्दी से उस पर यह लिखा-"न मालूम क्यों इस वक़्त मेरा जी चन्द्रकान्ता से मिलने को चाहता है। जो हो, मैं तो उससे मिलने जाती हूं। रास्ता और ठिकाने का पता मुझे लग चुका है।"

बाद इसके पलंग के पास जा बेहोशी का बूरा रानी की नाक के पास ले गये जो सांस लेती दफे उसके दिमाग पर चढ़ गया और वह एकदम से बेहोश हो गई। तेजसिंह ने नाक

पर हाथ रखकर देखा, बेहोशी की सांस चल रही थी, झट रानी को तो कपड़े में बांधा और पुर्जा जो लिखा था वह तकिये के नीचे रखकर वहां से उसी कमन्द के ज़रिये से बाहर हुए और गंगा किनारे वाली खिड़की, जो भीतर से बन्द थी, खोल तेज़ी के साथ पहाड़ी की तरफ निकल गये। बहुत दूर जा एक दर्रे में रानी को और ज़्यादा बेहोश करके रख दिया और फिर लौट कर क़िले के दरवाज़े पर आ एक तरफ छिपकर बैठ गये।

सातवां बयान

अब सवेरा हुआ ही चाहता है, महल में लौंडियों की आंखें खुलीं तो महारानी को न देख कर घबरा गईं, इधर-उधर देखा, कहीं नहीं। आखिर खूब शोरगुल मचा, चारों तरफ खोज होने लगी, पर कहीं पता न लगा। यह खबर बाहर तक फैल गई, सभी को फिक्र पैदा हुई। महाराज शिवदत्त लड़ाई से भागे हुए दस-पन्द्रह सवारों के साथ चुनार पहुंचे, क़िले के अन्दर घुसते ही मालूम हुआ कि महल से महारानी गायब हो गईं। सुनते ही जान सूख गई, दोहरी चपेट बैठी, धड़धड़ाते हुए महल में चले आये, देखा कुहराम मचा हुआ है, चारों तरफ से रोने की आवाज़ आ रही है।

इस वक़्त महाराज शिवदत्त की अजब हालत थी, हवास ठिकाने नहीं थे, लड़ाई से भागकर थोड़ी ही दूर पर फौज़ को तो छोड़ दिया था और सब ऐयारों को कुछ समझा-बुझा आप चुनार चले आये थे, यहां यह कैफियत देखी। आखिर उदास होकर महारानी के बिस्तर के पास आये और बैठकर रोने लगे। तकिये के नीचे से एक काग़ज़ का कोना निकला हुआ दिखाई पड़ा जिसे महाराज ने खोला, देखा कुछ लिखा है। यह वही कागज़ था जिसे तेजसिंह ने लिखकर रख दिया था। अब उस पुर्ज़े को देख महाराज कई तरह की बातें सोचने लगे। एक तो महारानी का लिखा नहीं मालूम होता है, उनके अक्षर इतने साफ नहीं हैं। फिर किसने लिखकर रख दिया ? अगर रानी का ही लिखा है तो उन्हें यह कैसे मालूम कि चन्द्रकान्ता फलां जगह छिपाई गई है ? अब क्या किया जाये ? कोई ऐयार भी नहीं जिसको पता लगाने के लिए भेजा जाये। अगर किसी दूसरे को वहां भेजूं जहां चन्द्रकान्ता क़ैद है तो बिलकुल भण्डा फूट जाये।

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें देर तक महाराज सोचते रहे, आखिर जी में यही आया कि चाहे जो हो मगर एक दफे ज़रूर जाकर उस जगह देखना चाहिए जहां चन्द्रकान्ता क़ैद है। कोई हर्ज़ नहीं अगर हम अकेले जाकर देखें, मगर दिन में नहीं, शाम हो जाये तो चलें। यह सोचकर बाहर आये और अपने दीवानखाने में भूखे-प्यासे चुपचाप बैठे रहे, किसी से कुछ न कहा मगर बिना हुक्म महाराज के बहुत से आदमी महारानी का पता लगाने जा चुके थे।

शाम होने लगी, महाराज ने अपनी सवारी का घोड़ा मंगवाया और सवार हो अकेले ही क़िले के बाहर निकले और पूरब की तरफ रवाना हुए। अब बिलकुल शाम बल्कि रात हो गई मगर चांदनी रात होने के सबब साफ दिखाई देता था। तेजसिंह जो क़िले के दरवाज़े के पास ही छिपे हुए थे महाराज शिवदत्त को अकेले घोड़े पर जाते देख साथ हो लिये, तीन

कोस तक पीछे-पीछे तेज़ी के साथ चले गये मगर महाराज को यह न मालूम हुआ कि साथ-साथ कोई छिपा हुआ आ रहा है। अब महाराज ने अपने घोड़े को एक नाले में चलाया जो बिलकुल सूखा पड़ा था। जैसे-जैसे आगे जाते थे नाला गहरा मिलता जाता था और दोनों तरफ के पत्थर के कगार ऊंचे होते जाते थे। दोनों तरफ बड़ा भारी डरावना जंगल तथा बड़े-बड़े साखू और आसन के पेड़ थे। खूनी जानवरों की आवाजें कानों में पड़ रही थीं। जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाते थे कगार ऊंचे और नाले के किनारे वाले पेड़ आपस में ऊपर से मिलते जाते थे।

इसी तरह से लगभग एक कोस चले गये। अब नाले में चन्द्रमा की चांदनी बिलकुल नहीं मालूम होती थी क्योंकि दोनों तरफ से दरख्त आपस में बिलकुल मिल गये थे, अब वह नाला नहीं मालूम होता बल्कि कोई सुरंग मालूम होती थी। महाराज का घोड़ा पथरीली ज़मीन और अंधेरा होने के सबब धीरे-धीरे जाने लगा, तेजसिंह बढ़कर महाराज के और पास हो गये। एकाएक कुछ दूर पर एक छोटी-सी रोशनी नज़र पड़ी जिससे तेजसिंह ने समझा कि शायद यह रास्ता यहीं तक आने का है और यही ठीक भी निकला। जब रोशनी के पास पहुंचे तो देखा कि एक छोटी-सी गुफा है, जिसके बाहर दोनों तरफ लम्बे-लम्बे ताकतवर सिपाही नंगी तलवार हाथों में लिये पहरा दे रहे हैं जो बीस के लगभग होंगे। भीतर भी साफ दिखाई देता था कि दो औरतें पत्थरों पर ढासना लगाये बैठी हैं। तेजसिंह ने पहचान तो लिया कि दोनों चन्द्रकान्ता और चपला हैं, मगर उनकी सूरतें साफ-साफ नहीं नज़र पड़ीं।

महाराज को देखकर सिपाहियों ने पहचाना और एक ने बढ़कर घोड़ा थाम लिया, महाराज घोड़े पर से उतर पड़े। सिपाहियों ने दो मशाल जलाये जिनकी रोशनी में तेजसिंह को अब साफ चन्द्रकान्ता और चपला की सूरत दिखाई देने लगी, चन्द्रकान्ता का मुंह पीला हो रहा था, सिर के बाल खुले हुए थे और सिर फटा हुआ था। मिट्टी में सनी हुई बदहवास एक पत्थर से लगी पड़ी थी, और चपला बगल में एक पत्थर के सहारे उठती हुई चन्द्रकान्ता के सिर पर हाथ रखे बैठी थी। सामने खाने की चीजें रक्खी हुई थीं जिनके देखने से ही मालूम होता था कि किसी ने उन्हें छुआ तक नहीं। इन दोनों की सूरत से नाउम्मीदी बरस रही थी जिसे देखते ही तेजसिंह की आंखों से आंसू निकल पड़े।

महाराज ने आते ही इधर-उधर देखा, जहां चन्द्रकान्ता बैठी थी वहां भी चारों तरफ देखा, मगर कुछ मतलब न निकला क्योंकि वह तो रानी को खोजने आये थे, उस पुर्ज़े पर जो रानी के बिस्तर पर पाया था महाराज को बड़ी उम्मीद थी, मगर कुछ न हुआ, किसी से कुछ पूछा भी नहीं, चन्द्रकान्ता की तरफ भी अच्छी तरह नहीं देखा और लौटकर घोड़े पर सवार हो पीछे फिरे, सिपाहियों को महाराज के इस तरह आकर फिर जाने से ताज्जुब हुआ मगर पूछता कौन ? मजाल किसकी थी ? तेजसिंह ने जब महाराज को मुड़ते देखा तो चाहा कि वहीं बगल में छिपा रहे मगर छिप न सके क्योंकि नाला तंग था और ऊपर चढ़ जाने को भी

कहीं जगह न थी, लाचार नाले के बाहर होना ही पड़ा। तेजी के साथ महाराज के पहले नाले के बाहर हो गये और एक किनारे छिपे रहे। महाराज वहां से निकल शहर की तरफ रवाना हुए।

अब तेजसिंह सोचने लगे कि यहां से मैं अकेला चन्द्रकान्ता को कैसे छुड़ा सकूंगा ? लड़ने का मौका नहीं, करूं तो क्या करूं ? अगर महाराज की सूरत बनाकर जाऊं और कोई काम करूं तो भी ठीक नहीं होगा क्योंकि महाराज अभी यहां से लौटे हैं, दूसरी कोई तरकीब करूं और काम न चले, बैरी को मालूम हो जाये, तो यहां से फिर चन्द्रकान्ता दूसरी जगह छिपा दी जायेगी, तब और मुश्किल होगी। इससे यह ठीक है कि कुमार के पास लौट चलूं और वहां से कुछ आदमियों को लाऊं, क्योंकि इस नाले में अकेले जाकर इन लोगों का मुकाबला करना ठीक नहीं।

यही सब कुछ सोच तेजसिंह विजयगढ़ की तरफ चले, रातभर चलते गये, दूसरे दिन दोपहर को वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे। कुमार ने तेजसिंह को गले लगाया और बेताबी के साथ पूछा, "क्यों, कुछ पता लगा ?" जवाब में 'हां' सुनकर कुमार बहुत खुश हुए और सभी को विदा किया, केवल कुमार, देवीसिंह, फतहसिंह सेनापति और तेजसिंह रह गये। कुमार ने खुलासा हाल पूछा, तेजसिंह ने सब हाल कह सुनाया और बोले, "अगर किसी दूसरे को छुड़ाना होता या किसी गैर को पकड़ना होता तो मैं अपनी चालाकी कर गुज़रता, अगर काम बिगड़ जाता तो भाग निकलता, मगर मामला चन्द्रकान्ता का है जो बहुत सुकुमार है। न तो मैं अपने हाथ से उनकी गठरी बांध सकता हूं और न किसी तरह तकलीफ देना चाहता हूं। होना ऐसा चाहिए कि वार खाली न जाये। मैं सिर्फ देवीसिंह को लेने आया हूं और अभी लौट जाऊंगा, मुझे मालूम हो गया कि आपने महाराज शिवदत्त पर फतह पाई है। अभी कोई हर्ज़ भी देवीसिंह के बिना आपका न होगा।"

कुमार ने कहा, "देवीसिंह भी चलें और मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं क्योंकि यहां तो अभी लड़ाई की कोई उम्मीद नहीं और फिर फतहसिंह हई हैं कोई हर्ज़ भी नहीं।" तेजसिंह ने कहा "अच्छी बात है आप भी चलिये।" यह सुनकर कुमार उसी वक़्त तैयार हो गये और फतहसिंह को बहुत-सी बातें समझा-बुझाकर शाम होते-होते वहां से रवाना हुए। कुमार घोड़े पर, तेजसिंह और देवीसिंह पैदल कदम बढ़ाते चले। रास्ते में कुमार ने शिवदत्त पर फतह पाने का सारा हाल कहा और उन सवारों का हाल भी कहा जो मुंह पर नकाब डाले हुए थे और जिन्होंने आड़े वक़्त पर मदद की थी। उनका हाल सुन तेजसिंह भी हैरान हुए मगर कुछ खयाल में न आया कि वे नकाबपोश कौन थे ?

यही सब सोचते जा रहे थे, रात चांदनी थी, रास्ता साफ दिखाई दे रहा था, कुल चार कोस के लगभग गये होंगे कि रास्ते में पंडित बद्रीनाथ अकेले दिखाई पड़े और उन्होंने भी कुमार को देख पास आ सलाम किया। कुमार ने सलाम का जवाब हंस कर दिया। देवीसिंह ने कहा, "अजी बद्रीनाथ जी, आप क्या उस डरपोक गीदड़ दगाबाज और चोर का संग किए

हैं। हमारे दरबार में आइये, देखिये हमारा सरदार क्या शेरदिल और इन्साफपसन्द है।" बद्रीनाथ ने कहा, "तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और एक दिन ऐसा ही होगा, मगर जब तक महाराज शिवदत्त से मामला तय नहीं होता मैं कब आपके साथ हो सकता हूं और अगर हो भी जाऊं तो आप लोग कब मुझ पर विश्वास करेंगे, आखिर मैं भी ऐयार हूं!" इतना कह और कुमार को सलाम कर जल्दी दूसरा रास्ता पकड़ एक घने जंगल में जा नज़र से गायब हो गये। तेजसिंह ने कुमार से कहा, "रास्ते में बद्रीनाथ का मिलना ठीक न हुआ, अब वह ज़रूर इस बात की खोज में होगा कि हम लोग कहां जाते हैं ?" देवीसिंह ने कहा, "हां, इसमें कोई शक नहीं कि यह शगुन खराब हुआ।" यह सुनकर कुमार का कलेजा धड़कने लगा। बोले, "फिर अब क्या किया जाये ?" तेजसिंह ने कहा, "इस वक़्त और कोई तरकीब तो हो ही नहीं सकती, हां एक बात है कि हम लोग जंगल का रास्ता छोड़ मैदान-मैदान चलें। ऐसा करने से पीछे का आदमी आता हुआ मालूम होगा।" कुमार ने कहा, "अच्छा, तुम आगे चलो।"

अब वे तीनों जंगल छोड़ मैदान में हो लिये। पीछे फिर-फिर के देखते जाते थे मगर कोई आता हुआ मालूम न पड़ा। रात भर बेखटके चले गये। जब दिन निकला एक नाले के किनारे तीनों आदमियों ने बैठ ज़रूरी कामों से छुट्टी पा स्नान-सन्ध्या किया और फिर रवाना हुए। पहर दिन चढ़ते एक बड़े जंगल में ये लोग पहुंचे *–जहां से वह नाला जिसमें चन्द्रकान्ता और चपला थीं, दो कोस बाकी था। तेजसिंह ने कहा, "दिन इसी जंगल में बिताना चाहिए शाम हो जाये तो वहां चलें, क्योंकि काम रात ही में ठीक होगा।" यह कह एक बहुत बड़े सलई के पेड़ तले डेरा ज़माया। कुमार के वास्ते जीनपोश बिछा दिया और घोड़े को खोल गले में लम्बी रस्सी डाल एक पेड़ से बांध चरने के लिए छोड़ दिया। दिन भर बातचीत और तरकीब सोचने में गुज़र गया, सूरज अस्त होनेपर ये लोग वहां रवाना हुए। थोड़ी देर में उस नाले के पास जा पहुंचे, पहले दूर ही खड़े होकर चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा, जब किसी की आहट न मिली तब नाले में घुसे।

कुमार इस नाले को देख बहुत हैरान हुए और बोले, "अजब भयानक नाला है!" धीरे-धीरे आगे बड़े, जब नाले के अन्तिम सिरे पर पहुंचे जहां पहले दिन तेजसिंह ने चिराग जलते देखा था तो वहां अंधेरा पाया। तेजसिंह का माथा ठनका कि यह क्या मामला है। आखिर उस कोठरी के दरवाज़े पर पहुंचे जिसमें कुमारी और चपला थीं। देखा कि कई आदमी ज़मीन पर पड़े हैं। अब तो तेजसिंह ने अपने बटुए में से सामान निकाल रोशनी की जिससे साफ मालूम हुआ कि जितने पहरे वाले पहले दिन देखे थे, सब जख्मी होकर मरे पड़े हैं। अन्दर घुसे, कुमारी और चपला का पता नहीं, हां दोनों के गहने टूटे-फूटे पड़े थे और चारों तरफ खून जमा हुआ था। कुमार से न रहा गया, एकदम 'हाय' करके गिर पड़े और आंसू बहाने लगे। तेजसिंह समझाने लगे कि, "आप इतने बेताब क्यों हो गये ? जिस ईश्वर ने हमें यहां तक पहुंचाया वही फिर उस जगह पहुंचायेगा, जहां कुमारी हैं!" कुमार ने कहा, "भाई,

अब मैं चन्द्रकान्ता के मिलने से नाउम्मीद हो गया, ज़रूर वह परलोक सिधार गई!" तेजसिंह ने कहा, "कभी नहीं, अगर ऐसा होता तो इन्हीं लोगों में वह भी पड़ी होती।" देवीसिंह बोले, "कहीं बद्रीनाथ की चालाकी तो नहीं, भई ?" इन्होंने जवाब दिया, "यह बात भी जी में नहीं बैठती, भला अगर हम यह भी समझ लें कि बद्रीनाथ की चालाकी हुई तो इन प्यादों को मारने वाला कौन था ? अजब मामला है, कुछ समझ में नहीं आता। खैर कोई हर्ज़ नहीं, वह भी, मालूम हो जायेगा, अब यहां से जल्दी चलना चाहिए।"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह की इस वक़्त कैसी हालत थी, उसका न कहना ही ठीक है। बहुत समझा-बुझाकर वहां से कुमार को उठाया और नाले के बाहर लाये। देवीसिंह ने कहा, "भला वहां तो चलो, जहां शिवदत्त की रानी को रखा है।" तेजसिंह ने कहा, "चलो।" तीनों वहां गये, देखा महारानी कलावती भी वहां नहीं हैं, तो और भी तबीयत परेशान हुई।

आधी रात से ज़्यादा जा चुकी थी, तीनों आदमी बैठे सोच रहे थे कि यह क्या मामला हो गया। एकाएक देवीसिंह बोले, "गुरुजी, मुझे एक तरकीब सूझी है जिसके करने से सब पता लग जायेगा कि यह क्या मामला है। आप ठहरिए इसी जगह आराम कीजिए मैं पता लगाता हूं। अगर बन पड़ेगा तो ठीक पता लगने का सबूत भी लेता आऊगा।" तेजसिंह ने कहा, "जाओ, तुम ही कोई तारीफ का काम करो, हम दोनों इसी जंगल में रहेंगे।" देवीसिंह एक देहाती पंडित की सूरत बनाकर रवाना हुए। वहां से चुनार करीब ही था, थोड़ी देर में जा पहुंचे। दूर से देखा, एक सिपाही टहलता हुआ पहरा दे रहा है। एक शीशी हाथ में ले उसके पास गये और एक अशर्फी दिखाकर देहाती बोली में बोले, "इस अशर्फी को आप ले लीजिए और इस इत्र को पहचान दीजिए कि किस चीज का है। हम देहात के रहने वाले हैं, वहां एक गन्धी आया और उसने यह इत्र दिखाकर हमसे कहा कि अगर इसको पहचान दो तो हम पांच अशर्फी तुमको देंगे, सो हम देहाती आदमी क्या जानें, कौन चीज का इत्र है, इसलिए रातोंरात यहां चले आये। परमेश्वर ने आपको मिला दिया है, आप राजदरबार के रहने वाले ठहरे, बहुत इत्र देखा होगा, इसको पहचान के बता दीजिए तो हम इसी समय लौट के गांव पहुंच जायें, सवेरे ही जवाब देने का उस गन्धी से वादा है।" देवीसिंह की बात सुन और पास ही एक दूकान के दरवाज़े पर जलते हुए चिराग की रोशनी में अशर्फी को देख खुश हो वह दिल ही दिल में सोचने लगा कि अजब बेवकूफ आदमी से काम पड़ा है। मुफ्त की अशर्फी मिलती है, ले लो, जो कुछ जी में आवे बता दो, क्या कल मुझसे अशर्फी आपस लेने आएगा ? यह सोच अशर्फी तो अपने खलीते में रख ली और कहा, "यह कौन बडी बात है, हम बता देते हैं!" उसने शीशी का मुंह खालकर सूंघा, बस फिर क्या था सूंघते ही ज़मीन पर लेट गया, दीन-दुनिया की खबर ही न रही, बेहोश होने पर देवीसिंह उस सिपाही की गठरी बांध तेजसिंह के पास ले आए और कहा कि "यह क़िले पर पहरा देने वाला है, पहले इससे पूछ लेना चाहिए, अगर काम न चलेगा तो फिर दूसरी तरकीब की जायेगी।" यह कह उस सिपाही को होश में लाये।

सिपाही हैरान हो गया कि एकाएक यहां कैसे आ फंसा। देवीसिंह को उस देहाती पंडित की सूरत में सामने खड़े देखा, दूसरी तरफ दो बहादुर और दिखाई दिये। कुछ कहा ही चाहता था कि देवीसिंह ने पूछा, "यह बताओ कि तुम्हारी महारानी कहां हैं ? बताओ जल्दी।" उस सिपाही ने हाथ-पैर बंधे रहने पर भी कहा कि "तुम महारानी को पूछने वाले कौन हो, तुम्हें मतलब ?" तेजसिंह ने उठकर एक लात मारी और कहा, "बताता है कि मतलब पूछता है ?" अब तो उसने बेउज्र कहना शुरू कर दिया कि महारानी कई दिनों से गायब हैं, कहीं पता नहीं लगता। महल में गुल-गपाड़ा मचा हुआ है, इससे ज़्यादा मैं कुछ नहीं जानता।

तेजसिंह ने कुमार से कहा, "अब पता लगाना कई रोज़ का काम हो गया, आप अपने लश्कर में जाइए, मैं ढूंढ़ने की फिक्र करता हूं!" कुमार ने कहा, "अब मैं लश्कर में न जाऊंगा।" तेजसिंह ने कहा, "अगर आप ऐसा करेंगे तो भारी आफत होगी, शिवदत्त को यह खबर लगी तो फौरन लड़ाई शुरू कर देगा, महाराज जयसिंह यह हाल पाकर और भी घबरा जायेंगे, आपके पिता सुनते ही सूख जायेंगे।" कुमार ने कहा, "चाहे जो हो, जब चन्द्रकान्ता ही नहीं है तो दुनिया में कुछ हो, मुझे क्या परवाह ?" तेजसिंह ने बहुत समझाया कि ऐसा नहीं करना चाहिए, आप धीरज को न छोड़िए नहीं तो लोगों का जी टूट जायेगा। फिर कुछ न कर सकेंगे। आखिर कुमार ने कहा, "अच्छा, कल तक हमको अपने साथ रहने दो, तब तक अगर पता न लगा तो हम लश्कर में चले जायेंगे और फौज़ लेकर चुनार पर चढ़ जायेंगे। हम लड़ाई शुरू कर देंगे, तुम चन्द्रकान्ता की खोज करना।" तेजसिंह ने कहा, "अच्छा, यही सही!" ये सब बातें इस तौर पर हुई थीं कि उस सिपाही को कुछ भी नहीं मालूम हुआ जिसको देवीसिंह पकड़ लाये थे।

तेजसिंह ने उस सिपाही को एक पेड़ के साथ कसके बांध दिया और देवीसिंह से कहा, "अब तुम यहां कुमार के पास ठहरो मैं जाता हूं और जो कुछ हाल है पता लगा लाता हूं।" देवीसिंह ने कहा, "अच्छा जाइए।" तेजसिंह ने देवीसिंह से कई बातें पूछीं और उस सिपाही का भेष बना क़िले की तरफ रवाना हुए।

---

*—चुनार जाने का ठीक रास्ता भी था मगर तेजसिंह कुमार को लिये हुए जंगल और पहाड़ी रास्ते से गये थे।

आठवां बयान

जिस जंगल में कुमार और देवीसिंह बैठे थे और उस सिपाही को पेड़ से बांधा था वह बहुत ही घना था। वहां जल्दी किसी की पहुंच नहीं हो सकती थी। तेजसिंह के चले जाने पर कुमार और देवीसिंह एक साफ पत्थर की चट्टान पर बैठे बातें कर रहे थे। सवेरा हुआ ही चाहता था कि पूरब की तरफ से किसी का फेंका हुआ एक छोटा-सा पत्थर कुमार के पास आ गिरा। ये दोनों ताज्जुब से उस तरफ देखने लगे कि एक पत्थर और आया मगर किसी को लगा नहीं। देवीसिंह ने ज़ोर से आवाज़ दी, "कौन है जो छिप के पत्थर मारता है, सामने क्यों नहीं आता ?" जवाब में आवाज़ आई, "शेर की बोली बोलने वाले गीदड़ों को दूर ही से मारा जाता है।" यह आवाज़ सुनते ही कुमार को गुस्सा चढ़ आया, झट तलवार के कब्जे पर हाथ रखकर उठ खड़े हुए। देवीसिंह ने हाथ पकड़कर कहा, "आप क्यों गुस्सा करते हैं, मैं अभी उस नालायक को पकड़ लाता हूं, वह है क्या चीज ?" यह कह देवीसिंह उस तरफ गये जिधर से आवाज़ आई थी। इनके आगे बढ़ते ही एक और पत्थर पहुंचा जिसे देख देवीसिंह तेजी के साथ आगे बड़े। एक आदमी दिखाई पड़ा मगर घने पेड़ों में अंधेरा ज़्यादा होने के सबब उसकी सूरत नज़र नहीं आई। वह देवीसिंह को अपनी तरफ आते देख एक और पत्थर मार कर भागा। देवीसिंह भी उसके पीछे दौड़े मगर वह कई दफे इधर-उधर लोमड़ी की तरह चक्कर लगाकर उन्हीं घने पेड़ों में गायब हो गया। देवीसिंह भी इधर-उधर खोजने लगे, यहां तक कि सवेरा हो गया, बल्कि दिन निकल आया, लेकिन साफ दिखाई देने पर भी कहीं उस आदमी का पता न लगा। आखिर लाचार होकर देवीसिंह उस जगह फिर आए जिस जगह कुमार को छोड़ गये थे। देखा तो कुमार नहीं। इधर-उधर देखा, कहीं पता नहीं। उस सिपाही के पास आये जिसको पेड़ के साथ बांध दिया था, देखें तो वह भी नहीं। जी उड़ गया, आखों में आंसू भर आये, उसी चट्टान पर बैठ गये और सिर पर हाथ रखकर सोचने लगे-"अब क्या करें, किधर ढूंढ़ें, कहां जायें ? अगर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कहीं दूर निकल गये और इधर तेजसिंह आए और हमको न देखा तो उनकी क्या दशा होगी ?" इन सब बातों को सोच देवीसिंह और थोड़ी देर इधर-उधर देख-भालकर फिर उसी जगह चले आए और तेजसिंह की राह देखने लगे। बीच-बीच में इसी तरह कई दफे देवीसिंह ने उठकर खोज की, मगर कुछ काम न निकला।

नौवां बयान

तेजसिंह पहरे वाले सिपाही की सूरत में क़िले के दरवाज़े पर पहुंचे। कई सिपाहियों ने, जो सवेरा हो जाने के सबब जाग उठे थे, तेजसिंह की तरफ देखकर कहा, "जैरामसिंह तुम कहां चले गये थे ? यहां पहरे में गड़बड़ पड़ गया। बद्रीनाथ जी ऐयार पहरे की जांच करने आए थे, तुम्हारे कहीं चले जाने का हाल सुनकर बहुत खफा हुए और तुम्हारा पता लगाने के लिए आप ही कहीं गये हैं, अभी तक नहीं आए। तुम्हारे सबब से हम लोगों पर भी खफगी हुई।" जैरामसिंह (तेजसिंह) ने कहा, "मेरी तबीयत खराब हो गई थी, हाजत मालूम हुई इस सबब से मैदान चला गया, कई दस्त आए जिससे देर हो गई और फिर भी कुछ पेट में गड़बड़ मालूम पड़ता है। भाई, जान है तो जहान है, चाहे कोई रंज हो या खुशी हो यह ज़रूरत तो रोकी नहीं जाती, मैं फिर जाता हूं और अभी आता हूं!" यह कह नकली जैरामसिंह तुरन्त वहां से चलता बना।

पहरे वालों से बातचीत करके तेजसिंह ने सुन लिया कि बद्रीनाथ आए थे और उनकी खोज में गये हैं, इससे वे होशियार हो गये। सोचा कि अगर हमारे यहां होते बद्रीनाथ लौट आवेंगे जो ज़रूर पहचान जायेंगे, इससे यहां ठहरना मुनासिब नहीं। आखिर थोड़ी दूर जा एक भिखमंगे की सूरत बना सड़क के किनारे बैठ गये और बद्रीनाथ के लौट आने की राह देखने लगे। थोड़ी देर गुजरी थी कि दूर से बद्रीनाथ आते दिखाई पड़े, पीछे-पीछे पीठ पर गट्ठर लादे नाज़िम था जिसके पीछे वह सिपाही भी था जिसकी सूरत बन तेजसिंह आए थे।

तेजसिंह इस ठाठ से बद्रीनाथ को आते देख चकरा गए। जी में सोचने लगे कि ढंग बुरे नज़र आते हैं। इस सिपाही को जो पीछे-पीछे चला आता है, मैं पेड़ के साथ बांध आया था। उसी जगह कुमार और देवीसिंह भी थे। बिना कुछ उपद्रव मचाए इस सिपाही को ये लोग नहीं पा सकते थे। ज़रूर कुछ-न-कुछ बखेड़ा हुआ है। ज़रूर उस गट्ठर में जो नाज़िम की पीठ पर है कुमार होंगे या देवीसिंह, मगर इस वक़्त बोलने का मौका नहीं, क्योंकि यहां सिवाय इन लोगों के हमारी मदद करने वाला कोई न होगा, यह सोचकर तेजसिंह चुप-चाप उसी तरह बैठे रहे। जब ये लोग गट्ठर लिये हुए क़िले के अन्दर चले गये तब उठ कर उस तरफ का रास्ता लिया जहां कुमार और देवीसिंह को छोड़ आए थे। देवीसिंह उसी जगह पत्थर पर उदास बैठे कुछ सोच रहे थे कि तेजसिंह आ पहुंचे। देखते ही देवीसिंह दौड़कर पैरों पर गिर पड़े और गुस्से भरी आवाज़ में बोले, "गुरुजी, कुमार तो दुश्मनों के हाथ पड़ गये।"

तेजसिंह पत्थर पर बैठ गये और बोले, "खैर, खुलासा हाल कहो, क्या हुआ ?" देवीसिंह ने जो कुछ बीता था सब हाल कह सुनाया। तेजसिंह ने कहा, "देखो, आजकल हम लोगों का नसीब कैसा उलटा हो रहा है, फिक्र चारों तरफ की ठहरी मगर करें तो क्या करें ? बेचारी चन्द्रकान्ता और चपला न मालूम किस आफत में फंस गईं और उनकी क्या दशा होगी, उसकी फिक्र तो थी ही मगर कुमार का फंसना तो गज़ब हो गया। थोड़ी देर तक देवीसिंह और तेजसिंह बातचीत करते रहे, इसके बाद उठकर दोनों एक तरफ का रास्ता लिया।"

दसवां बयान

चुनार के क़िले के अन्दर महाराज शिवदत्त के खास महल में एक कोठरी के अन्दर जिसमें लोहे के छड़दार किवाड़ लगे हुए थे, हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी पड़ी हुई, दरवाज़े के सहारे उदास मुख वीरेन्द्रसिंह बैठे थे। पहरे पर कई औरतें कमर से छुरा बांधे टहल रही थीं। कुमार धीरे-धीरे भुनभुना रहे थे, "हाय! चन्द्रकान्ता का पता लगा भी तो किसी काम का नहीं। भला पहले तो यह मालूम हो गया था कि शिवदत्त चुरा ले गया, मगर अब क्या कहा जाये ? हाय चन्द्रकान्ता! तू कहां है ? मुझको बेड़ी और यह क़ैद कुछ तकलीफ नहीं देती जैसा तेरा लापता हो जाना खटक रहा है। हाय! अगर मुझको इस बात का यकीन हो जाये कि तू सही-सलामत है और अपने मां-बाप के पास पहुंच गई तो इसी क़ैद में भूखे-प्यासे मर जाना मेरे लिए खुशी की बात होगी! मगर जब तक तेरा पता नहीं लगता, जिन्दगी बुरी मालूम होती है। हाय! तेरी क्या दशा होगी, मैं कहां ढूंढूं ? यह हथकड़ी-बेड़ी इस वक़्त मेरे साथ कटे पर नमक का काम कर रही है। हाय, क्या अच्छी बात होती अगर इस वक़्त कुमारी की खोज में जंगल-जंगल मारा-मारा फिरता, पैरों में कांटे गड़े होते, खून निकलता होता, भूख-प्यास लगने पर भी खाना-पीना छोड़कर उसी का पता लगाने की फिक्र होती। हे ईश्वर! तूने कुछ न किया, भला मेरी हिम्मत को तो देखा होता कि इश्क की राह में कैसा मज़बूत हूं, तूने तो मेरे हाथ-पैर ही जकड़ डाले। हाय! जिसको पैदा करके तूने हर तरह का सुख दिया उसका दिल दुखाने और उसको खराब करने में तुझे क्या मज़ा मिलता है ?"

ऐसी-ऐसी बातें करते हुए कुंवर वीरेन्द्रसिंह की आखों से आंसू ज़ारी थे और लम्बी-लम्बी सांसें ले रहे थे। लगभग आधी रात जा चुकी थी। जिस कोठरी में कुमार क़ैद थे उसके सामने सजे हुए दालान में चार-पांच शीशे जल रहे थे, कुमार का जी जब बहुत घबराया, सिर उठाकर उस तरफ देखने लगे। एकबारगी पांच-सात लौंडियां एक तरफ से निकल आईं और हांडी डोल, दीवारगीर, झाड़ बैठकी, कंबल, मदृंगी वगैरह शीशों को जलाया जिनकी रोशनी से एकदम दिन-सा हो गया। इसके बाद दालान के बीचोंबीच एक बेशकीमती गद्दी बिछाई और तब सब लौंडियां खड़ी होकर एकदम दरवाज़े की तरफ देखने लगीं मानो किसी के आने का इंतजार कर रही हों। कुमार बड़े गौर से देख रहे थे, क्योंकि इनको इस बात का बड़ा ताज्जुब था कि वे महल के अन्दर जहां मर्दों की बू तक नहीं जा सकती, क्यों क़ैद किये गये और इसमें राजा शिवदत्त ने क्या फायदा सोचा ?

थोड़ी देर बाद महाराज शिवदत्त अजब ठाट से आते दिखाई पड़े, जिनको देखते ही वीरेन्द्रसिंह चैंक पड़े। अजब हालत हो गई, एकटक देखने लगे। देखा कि महाराज शिवदत्त के दाहिनी तरफ चन्द्रकान्ता और बाईं तरफ चपला हैं, दोनों के हाथों में हाथ दिये धीरे-धीरे आकर उस गद्दी पर बैठ गये जो बीच में बिछी हुई थी। चन्द्रकान्ता और चपला भी दोनों तरफ साथ सट कर महाराज के पास बैठ गईं।

चन्द्रकान्ता और कुमार का साथ तो लड़कपन से ही था मगर आज चन्द्रकान्ता की खूबसूरती और नज़ाकत जितनी बड़ी-चढ़ी थी इसके पहले कुमार ने कभी नहीं देखी थी। सामने पानदान, इत्रदान वगैरह सब ऐश का सामान रखा हुआ था।

यह देख कुमार की आखों में खून उतर आया, जी में सोचने लगे, "यह क्या हो गया ? चन्द्रकान्ता इस तरह खुशी-खुशी शिवदत्त के बगल में बैठी हुई हाव-भाव कर रही है, यह क्या मामला है ? क्या मेरी मुहब्बत एकदम उसके दिल से जाती रही, साथ ही मां-बाप की मुहब्बत भी बिलकुल उड़ गई ? तिसमें मेरे सामने उसकी यह कैफियत है ? क्या वह यह नहीं जानती कि उसके सामने ही मैं इस कोठरी में क़ैदियों की तरह पड़ा हुआ हूं ? ज़रूर जानती है, वह देखो, मेरी तरफ तिरछी आखों से देख मुंह बिचका रही है। साथ ही इसके चपला को क्या हो गया जो तेजसिंह पर जी दिए बैठी थी और हथेली पर जान रख इसी महाराज शिवदत्त को छकाकर तेजसिंह को छुड़ा ले गई थी। उस वक़्त महाराज शिवदत्त की मुहब्बत इसको न हुई और आज इस तरह अपनी मालकिन चन्द्रकान्ता के साथ बराबरी के दर्ज़े पर शिवदत्त के बगल में बैठी है। हाय! हाय! स्त्रियों का कुछ ठिकाना नहीं, इन पर भरोसा करना बड़ी भारी भूल है। हाय! क्या मेरी किस्मत में ऐसी ही औरत से मुहब्बत होनी लिखी है! ऐसे ऊंचे कुल की लड़की ऐसा काम करे ? हाय! अब मेरा जीना व्यर्थ है, मैं ज़रूर अपनी जान दे दूंगा, मगर क्या चन्द्रकान्ता और चपला को शिवदत्त के लिए जीता छोड़ दूंगा ? कभी नहीं। यह ठीक है कि वीर पुरुष स्त्रियों पर हाथ नहीं छोड़ते, पर मुझको अब अपनी वीरता दिखानी नहीं, दुनियां में किसी के सामने मुंह करना नहीं है, मुझको यह सब सोचने से क्या फायदा ? अब यही मुनासिब है कि इन दोनों को मार डालना और पीछे अपनी भी जान दे देना। तेजसिंह भी ज़रूर मेरा साथ देंगे, चलो अब बखेड़ा ही तय कर डालो!!"

इतने में इठलाकर चन्द्रकान्ता ने महाराज शिवदत्त के गले में बाहें डाल दीं, अब तो वीरेन्द्रसिंह सह न सके। ज़ोर से झटका दे हथकड़ी तोड़ डाली, उसी जोश में एक लात सींखचे वाले किवाड़ में भी मारी और पल्ला गिरा शिवदत्त के पास जा पहुंचे। उसके सामने जो तलवार रखी थी उसे उठा लिया और खींच के एक हाथ चन्द्रकान्ता पर ऐसा चलाया कि खट से सिर अलग जा गिरा, और धड़ तड़पने लगा, जब तक महाराज शिवदत्त सम्हलें तब तक चपला के भी दो टुकड़े कर दिये, मगर महाराज शिवदत्त पर वार न किया।

महाराज शिवदत्त सम्हल कर उठ खड़े हुए, एकाएक इस तरह की ताकत और तेज़ी कुमार की देख सकते में आ गये, मुंह से आवाज़ तक न निकली, जवां-मर्दी हवा खाने चली

गई, सामने खड़े होकर कुमार का मुंह देखने लगे।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह खून भरी नंगी तलवार लिए खड़े ही थे कि तेजसिंह और देवीसिंह धम्म से सामने आ मौजूद हुए। तेजसिंह ने आवाज़ दी, "वाह! शाबाश! खूब दिल को संभाला।" यह कह झट से महाराज शिवदत्त के गले में कमन्द डाल झटका दिया। शिवदत्त की हालत पहले से ही खराब हो रही थी, कमन्द से गला घुटते ही ज़मीन पर गिर पड़े। देवीसिंह ने झट गट्ठर बांध पीठ पर लाद लिया। तेजसिंह ने कुमार की तरफ देखकर कहा, "मेरे साथ चले आइए अभी कोई दूसरी बात मत कीजिए, इस वक़्त जो हालत आपकी है मैं खूब जानता हूं।"

इस वक़्त सिवाय लौंडियों के कोई वहां पर नहीं था। इस तरह का खून खराबा देखकर कई तो बदहवास हो गई, बाकी जो थीं उन्होंने चंू तक न किया, एकटक देखती ही रह गईं और ये लोग चलते बने।

ग्यारहवां बयान

कुमार का मिजाज़ बदल गया। वे बातें जो उनमें पहले थीं, अब बिलकुल न रहीं। मां-बाप की फिक्र, विजयगढ़ का खयाल, लड़ाई की धुन, तेजसिंह की दोस्ती, चन्द्रकान्ता और चपला के मरते ही सब जाती रहीं। क़िले से ये तीनों बाहर आए, आगे शिवदत्त की गठरी लिए देवीसिंह और उसके पीछे कुमार को बीच में लिए तेजसिंह चले जाते थे। कुंवर वीरेन्द्रसिंह को इसका कुछ भी खयाल न था कि वे कहां जा रहे हैं। दिन चढ़ते-चढते वे लोग बहुत दूर एक घने जंगल में जा पहुंचे जहां तेजसिंह के कहने से देवीसिंह ने महाराज शिवदत्त की गठरी ज़मीन में रख दी और अपनी चादर से एक पत्थर खूब झाड़कर कुमार को बैठने के लिए कहा, मगर वे खड़े ही रहे, सिवाय ज़मीन देखने के कुछ भी न बोले।

कुमार की ऐसी दशाा देखकर तेजसिंह बहुत घबराए। जी में सोचने लगे कि अब इनकी जिन्दगी कैसे रहेगी ? अजब हालत हो रही है, चेहरे पर मुर्दनी छा रही है, तन-बदन की सुध नहीं, बल्कि पलकें नीचे को बिलकुल नहीं गिरतीं, आंखों की पुतलियां ज़मीन देख रही हैं, ज़रा भी इधर-उधर नहीं हटतीं। यह क्या हो गया ? क्या चन्द्रकान्ता के साथ ही इनका भी दम निकल गया। यह खड़े क्यों हैं ? तेजसिंह ने कुमार का हाथ पकड़ बैठाने के लिए ज़ोर दिया, मगर घुटना बिलकुल न मुड़ा, धम्म से ज़मीन पर गिर पड़े, सिर फूट गया, खून निकलने लगा मगर पलकें उसी तरह खुली-की-खुली, पुतलियां ठहरी हुई, सांस रुक-रुककर निकलने लगी।

अब तो तेजसिंह कुमार की जिंदगी से बिलकुल ही नाउम्मीद हो गये, रोकने से तबीयत न रुकी, ज़ोर से पुकार-पुकार कर रोने लगे। इस हालत को देख देवीसिंह की भी छाती फटी, रोने में तेजसिंह के शरीक हुए। तेजसिंह पुकार-पुकार कर कहने लगे कि-'हाय कुमार, क्या सचमुच अब तुमने दुनिया छोड़ ही दी ? हाय, न मालूम वह कौन-सी बुरी सायत थी कि कुमारी चन्द्रकान्ता की मुहब्बत तुम्हारे दिल मे पैदा हुई जिसका नतीज़ा ऐसा बुरा हुआ, अब मालूम हुआ कि तुम्हारी जिन्दगी इतनी ही थी।' तेजसिंह इस तरह की बातें कह कर रो रहे थे कि इतने में एक तरफ से आवाज़ आई-

"नहीं, कुमार की उम्र कम नहीं है, बहुत बड़ी है। इनको मारने वाला कोई पैदा नहीं हुआ। कुमारी चन्द्रकान्ता की मुहब्बत बुरी सायत में नहीं हुई बल्कि बहुत अच्छी सायत में हुई, इसका नतीज़ा बहुत अच्छा होगा। कुमारी से शादी तो होगी ही, साथ ही इसके चुनार की गद्दी भी कुंवर वीरेन्द्रसिंह को मिलेगी, बल्कि और भी कई राज्य इनके हाथ से फतह होंगे।

बड़े तेजस्वी और इनसे भी ज़्यादा नाम पैदा करने वाले दो वीर पुत्र चन्द्रकान्ता के गर्भ से पैदा होंगे। हुआ क्या है जो रो रहे हो!"

तेजसिंह और देवीसिंह का रोना एकदम बन्द हो गया, इधर-उधर देखने लगे। तेजसिंह सोचने लगे कि हैं, यह कौन है, ऐसी मुर्दे को जिलाने वाली आवाज़ किसके मुंह से निकली ? क्या कहा! कुमार को मारने वाला कौन है ? कुमार के दो पुत्र होंगे! यह कैसी बात है ? कुमार का तो यहां दम निकला जाता है। ढूंढ़ना चाहिए, यह कौन है! तेजसिंह और देवीसिंह इधर-उधर देखने लगे पर कहीं कुछ पता न चला। फिर आवाज़ आई, "इधर देखो।" आवाज़ की सीध पर एक तरफ सिर उठाकर तेजसिंह ने देखा कि पेड़ पर से जगन्नाथ ज्योतिषी नीचे उतर रहे हैं।

जगन्नाथ ज्योतिषी उतर के तेजसिंह के सामने आये और बोले, "आप हैरान मत होइए, ये सब बातें सच होने वाली हैं! मैंने ही कही हैं! इसके सोचने की भी ज़रूरत नहीं कि मैं महाराज शिवदत्त का तरफदार होकर आपके हित की बातें क्यों कहने लगा! इसका सबब भी थोड़ी देर में मालूम हो जायेगा और आप मुझको अपना सच्चा दोस्त समझने लगेंगे, पहले कुमार की फिक्र कर लें तब आपसे बातचीत हो!"

इसके बाद जगन्नाथ ज्योतिषी ने तेजसिंह और देवीसिंह के देखते-देखते एक बूटी जिस पर तिकोनी पत्तियां और आसमानी रंग का फूल लगा हुआ था, डण्ठल का रंग बिलकुल सफेद और खुरदुरा था, उसी जगह पास ही से ढूंढ़कर तोड़ी और हाथ में खूब मल के दो-दो बूंद उसके रस की कुमार की दोनों आखों और कानों में टपका दीं, बाकी जो सीठी बची उसको तालू पर रख अपनी चादर से एक टुकड़ा फाड़ कर बांध दिया और बैठकर कुमार के ठीक होने की राह देखने लगे।

आधी घड़ी भी नहीं बीतने पाई थी कि कुमार की आखों का रंग बदल गया, पलकों ने गिरकर कौड़ियों को ढांक लिया, धीरे-धीरे हाथ-पैर भी हिलने लगे, दो तीन छींकें भी आईं जिसके साथ ही कुमार होश में आकर उठ बैठे। सामने ज्योतिषी जी के साथ तेजसिंह और देवीसिंह को बैठे देखकर पूछा, क्यों, मुझको क्या हो गया था! तेजसिंह ने सब हाल कहा। कुमार ने जगन्नाथ ज्योतिषी को दण्डवत् किया और कहा, "महाराज, आपने मेरे ऊपर क्यों कृपा की ? इसका हाल जल्द कहिये, मुझको कई तरह के शक हो रहे हैं!"

ज्योतिषी जी ने कहा, "कुमार, यह ईश्वर की माया है कि आपके साथ रहने को मेरा जी चाहता है। महाराज शिवदत्त इस लायक नहीं हैं कि मैं उनके साथ रहकर अपनी जान दूं। उसको आदमी की पहचान नहीं है वह गुणियों का आदर नहीं करता, उसके साथ रहना अपने गुण की मिट्टी खराब करना है। गुणी के गुण को देखकर कभी तारीफ नहीं करता। यह बड़ा भारी मतलबी है। अगर उसका काम किसी से कुछ बिगड़ जाये तो उसकी आंखें उसकी तरफ से तुरन्त बदल जाती है, चाहे वह कैसा ही गुणी क्यों न हो। सिवाय इसके वह अधर्मी भी बड़ा भारी है, कोई भला आदमी ऐसे के साथ रहना पसन्द नहीं करेगा, इसी से

मेरा जी फट गया। मैं अगर रहूंगा तो आपके साथ रहूंगा। आप-सा कदरदान मुझको कोई दिखाई नहीं देता। मैं कई दिनों से इस फिक्र में था मगर कोई ऐसा मौका नहीं मिलता था कि अपनी सच्चाई दिखाकर आपका साथी हो जाता, क्योंकि मैं चाहे कितनी ही बातें बनाऊं मगर ऐयारों की तरफ से ऐयारों का जी साफ होना मुश्किल है। आज मुझको ऐसा मौका मिला, क्योंकि आज का दिन आप पर बड़े संकट का था, जो कि महाराज शिवदत्त के धोखे और चालाकी ने आपको दिखाया!" इतना कह ज्योतिषी जी चुप हो गये।

ज्योतिषी जी की आखिरी बात ने सभी को चैंका दिया। तीनों आदमी धसक कर उनके पास आ बैठे। तेजसिंह ने कहा, "हां ज्योतिषीजी, जल्दी खुलासा कहिये, शिवदत्त ने क्यों कर धोखा दिया ?" ज्योतिषीजी ने कहा, "महाराज शिवदत्त का यह कायदा है कि जब कोई भारी काम किया जाता है तो पहले मुझसे जरूर पूछता है, लेकिन चाहे राय दूं या मना करूं मगर करता है अपने ही मन की और धोखा भी खाता है। कई दफे पण्डित बद्रीनाथ भी इन्हीं बातों से रंज हो गये कि जब अपने मन ही की करनी है तो ज्योतिषीजी से पूछने की ज़रूरत ही क्या है। आज रात को जो चालाकी उसने आपके साथ की उसके लिए भी मैंने मना किया था मगर कुछ न माना, आखिर नतीज़ा यह निकला कि घसीटासिंह और भगवानदत्त ऐयार की जान गई, इसका खुलासा हाल मैं तब कहूंगा जब आप इस बात का वादा कर लें कि मुझको अपना ऐयार साथी बनावेंगे।"

ज्योतिषी की बात सुन कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखा। तेजसिंह ने कहा, "ज्योतिषीजी, मैं बड़ी खुशी से आपको साथ रखूंगा, परन्तु आपको इसके पहले अपने साफ दिल होने की कसम खानी पड़ेगी!"

ज्योतिषीजी ने तेजसिंह के मन से शक मिटाने के लिए जनेऊ हाथ में लेकर कसम खाई, तेजसिंह ने उठ के उन्हें गले लगा लिया और बड़ी खुशी से अपने ऐयारों की पंगत में मिला लिया। कुमार ने अपने गले से कीमती माला निकाल ज्योतिषीजी को पहना दी। ज्योतिषीजी ने कहा, "अब मुझसे सुनिए कि कुमार महल में क्यों क़ैद किये गये थे और जो रात का खून-खराबा हुआ उसका असल भेद क्या है।"

"जब आप लोग लश्कर से कुमारी की खोज में निकले थे तो रास्ते में बद्रीनाथ ऐयार ने आपको देख लिया था। आपलोगों के पहले वे वहां पहुंचे और चन्द्रकान्ता को दूसरी जगह छिपाने की नीयत से उस खोह में उसको लेने गये, मगर उनके पहुंचने के पहले ही कुमारी वहां से गायब हो गई थीं और वे खाली हाथ वापस आये, तब नाज़िम को साथ ले वे आप लोगों की खोज में निकले और आपको उस जंगल में पाकर ऐयारी की। नाज़िम ने ढेला फेंका था, देवीसिंह उसको पकड़ने गये, तब तक बद्रीनाथ जो पहले ही से तेजसिंह बनकर आये थे, न मालूम किस चालाकी से आपको बेहोश कर क़िले में ले गये और जिसमें आपकी तबीयत से चन्द्रकान्ता की मुहब्बत जाती रहे और आप उसकी खोज न करें तथा उसके लिए महाराज शिवदत्त से लड़ाई न ठानें इसलिए भगवानदत्त और घसीटासिंह जो

हम सभी में कम उम्र के थे, चन्द्रकान्ता और चपला बनाए गये जिनको आपने खत्म किया, बाकी हाल तो आप जानते ही हैं।"

ज्योतिषीजी की बात सुन कुमार मारे खुशी से उछल पड़े। कहने लगे, "हाय, क्या गज़ब किया था। कितना भारी धोखा दिया! अब मालूम हुआ कि बेचारी चन्द्रकान्ता जीती-जागती हैं, मगर कहां हैं इसका पता नहीं, खैर यह भी मालूम हो जायेगा!"

अब क्या करना चाहिए इस बात को सभी ने मिलकर सोचा और यह पक्का किया कि-१. महाराज शिवदत्त को तो उसी खोह में जिसमें ऐयार लोग पहले क़ैद किये गये थे, डाल देना चाहिए और दोहरा ताला लगा देना चाहिए क्योंकि पहले ताले का हाल जो शेर के मुंह से उसकी जुबान खींचने से खुलता है *बद्रीनाथ को मालूम हो गया है मगर दूसरे ताले का हाल सिवाय तेजसिंह को अभी कोई नहीं जानता। २. कुमार को विजयगढ़ चले जाना चाहिए क्योंकि जब तक महाराज शिवदत्त क़ैद हैं लड़ाई न होगी मगर हिफाज़त के लिए कुछ फौज़ सरहद पर ज़रूर रहनी चाहिए। ३. देवीसिंह कुमार के साथ रहें। ४. तेजसिंह और ज्योतिषीजी कुमारी की खोज में जायें।

कुछ और बातचीत करने के बाद सब कोई उठ खड़े हुए और वहां से चल पड़े।

---

* पहले भाग में आपने पढ़ा होगा कि खोह का दरवाज़ा जिसमें ऐयारों को तेजसिंह ने क़ैद किया था शेर के मुंह में हाथ डालकर जुबान खींचने से खुल जाता था। ऐसा दरवाज़ा या ताला यदि कोई चाहे तो बना सकता है, असम्भव नहीं, खूब गौर कर देखिये।

बारहवां बयान

दोपहर के वक़्त एक नाले के किनारे सुन्दर चट्टान पर दो कमसिन औरतें बैठी थीं। दोनों की मैली फटी साड़ी, दोनों के मुंह पर मिट्टी, खुले बाल, पैरों पर खूब धूल पड़ी हुई और चेहरे पर बदहवासी और परेशानी छाई हुई थी। चारों तरफ भयानक जंगल, खूनी जानवरों की भयानक आवाजें आ रही थीं। जब कभी ज़ोर से हवा चलती तो पेड़ों की घरघराहट से जंगल और भी डरावना मालूम पड़ता था।

इन दोनों औरतों के सामने नाले के उस पार एक तेंदुआ पानी पीने के लिए उतरा, इन्होंने इस तेंदुए को देखा मगर वह खूनी जानवर इन दोनों को न देख सका, क्योंकि जहां वे दोनों बैठी थीं सामने ही एक मोटा जामुन का पेड़ था।

इन दोनों में से एक जो ज़्यादा नाज़ुक थी उस तेंदुए को देख डरी और धीरे से दूसरी से बोली, "प्यारी सखी, देखो कहीं वह इस पार न उतर आवे।" उसने कहा, "नहीं सखी, वह इस पार न आवेगा, अगर आने का इरादा भी करेगा तो मैं पहले ही इन तीरों से उसको मार गिराऊंगी जो इस नाले के सिपाहियों को मार कर लेती आई हूं। इस वक़्त हमारे पास दो सौ तीर हैं और हम दोनों तीर चलाने वाली हैं, लो तुम भी एक तीर चढ़ा लो।" यह सुन उसने भी एक तीर कमान पर चढ़ाया मगर उसकी कोई ज़रूरत न पड़ी, वह तेंदुआ पानी पीकर तुरन्त ऊपर चढ़ गया और देखते-देखते गायब हो गया, तब इन दोनों में यूं बातें होने लगीं-

एक०: क्यों चपला, कुछ मालूम पड़ता है, हम लोग किस जगह आ पहुंचे और यह कौन-सा जंगल है तथा विजयगढ़ की राह किधर है ?

चपला०: कुमारी, कुछ समझ में नहीं आता, बल्कि अभी तक मुझको भागने की धुन में यह भी नहीं मालूम कि हम किस तरफ चलीं आइं, विजयगढ़ किधर है, चुनार कहां छोड़ा, और नौगढ़ का रास्ता कहां है ? सिवाय तुम्हारे साथ महल में रहने या विजयगढ़ की हद में घूमने के कभी इन जंगलों में तो आना हुआ नहीं, हां चुनार से सीधे विजयगढ़ का रास्ता जानती हूं, मगर उधर मैं इस सबब से नहीं गई कि आजकल हमारे दुश्मनों का लश्कर रास्ते में पड़ा है, कहीं ऐसा न हो कोई देख ले, इसलिए मैं जंगल-ही-जंगल दूसरी तरफ भागी। खैर, देखो ईश्वर मालिक है, कुछ-न-कुछ रास्ते का पता लग ही जायेगा। मेरे बटुए में मेवा है, लो इसको खा लो और पानी पी लो, फिर देखा जायेगा।

कुमारी०: इसको किसी और वक़्त के वास्ते रहने दो। क्या जाने हम लोगों को कितने दिन दु:ख भोगना पड़े। यह जंगल घूब घना है, चलो बेर, मकोय तोड़ कर खायें। अच्छा तो

न मालूम पड़ेगा मगर क्या करें, समय काटना है।

चपला०: अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।

चपला और चन्द्रकान्ता दोनों वहां से उठीं। नाले के ऊपर चढ़ इधर-उधर घूमने लगीं। दिन दोपहर से ज़्यादा ढल चुका था। पेड़ों की छांह में घूमती जंगली बेरों को तोड़ती खाती वे दोनों एक टूटे-फूटे उजाड़ मकान के पास पहुंचीं जिसके देखने से मालूम होता था कि यह मकान ज़रूर किसी बड़े राजा का बनाया हुआ होगा मगर अब टूट-फूट गया था। चपला ने कुमारी चन्द्रकान्ता से कहा, "बहन, तुम मकान के टूटे दरवाज़े पर बैठो, मैं फल तोड़ लाऊं तो इसी जगह बैठकर दोनों खायें और इसके बाद तब इस मकान के अन्दर घुस कर देखें कि कैसा है। जब तक विजयगढ़ का रास्ता न मिले यही खण्डहर हम लोगों के लिए अच्छा होगा, इसी में गुज़ारा करेंगे। कोई मुसाफिर या चरवाहा, इधर से आ निकलेगा तो विजयगढ़ का रास्ता पूछ लेंगे और तब यहां से जायेंगे।" कुमारी ने कहा, "अच्छी बात है, मैं इसी जगह बैठती हूं तुम कुछ फल तोड़ो लेकिन दूर मत जाना!" चपला ने कहा, "नहीं, मैं दूर न जाऊंगी, इसी जगह तुम्हारी आंखों के सामने रहूंगी।" यह कह चपला फल तोड़ने चली गई।

तेरहवां बयान

चपला खाने के लिए कुछ फल तोड़ने चली गई, इधर चन्द्रकान्ता अकेली बैठी-बैठी घबरा उठी। जी में सोचने लगी कि जब तक चपला फल तोड़ती है तब तक इस टूटे-फूटे मकान की सैर कर ले, क्योंकि यह मकान चाहे टूटकर खण्डहर हो रहा है मगर मालूम होता है किसी समय में अपना सानी न रखता होगा।

कुमारी चन्द्रकान्ता वहां से उठकर उस खण्डहर के अन्दर गई। फाटक इस टूटे-फूटे मकान का दुरुस्त और मज़बूत था। यद्यपि उसमें किवाड़ न लगे थे, मगर देखने वाला यही समझता कि पहले इसमें लकड़ी या लोहे का फाटक ज़रूर लगा रहा होगा।

कुमारी ने अन्दर जाकर देखा कि वह एक बड़ा भारी चैखुंटा मकान है। बीच की इमारत तो टूटी-फूटी है मगर अहाता चारों तरफ का दुरुस्त मालूम पड़ता है। और आगे बढ़ी, एक दालान में पहुंची जिसकी छत गिरी हुई थी मगर खम्भे खड़े थे। इधर-उधर पत्थर के ढेर थे जिन पर धीरे-धीरे पैर रखती और आगे बढ़ी। बीच में एक मैदान दीख पड़ा जिसको बड़े गौर से कुमारी देखने लगी। साफ मालूम होता था कि पहले यह बाग था क्योंकि अभी तक संगमरमर की क्यारियां बनी हुई थीं। छोटी नहरें जिनसे छिडकाव का काम निकलता होगा अभी तक तैयार थीं। बहुत से फौव्वारे बेमरम्मत दिखाई पड़ते थे, मगर उन सभी पर मिट्टी की चादर पड़ी हुई थी। बीचोंबीच उस खण्डहर के एक बड़ा भारी पत्थर का बगुला बना हुआ दिखाई दिया जिसको अच्छी तरह से देखने के लिए कुमारी उसके पास गंइ और उसकी सफाई और कारीगरी को देख उसके बनाने वाले की तारीफ करने लगीं। वह बगुला सफेद संगमरमर का बना हुआ था और काले पत्थर के कमर बराबर ऊंचे तथा मोटे खम्भे पर बैठाया हुआ था। टांगें उसकी दिखाई नहीं देती थीं, यहीं मालूम होता था कि पेट सटाकर इस पत्थर पर बैठा है। कम-से-कम पन्द्रह हाथ के घेरे में उसका पेट होगा। लम्बी चोंच, बाल और पर उसके ऐसी कारीगरी के साथ बनाये हुए थे कि बार-बार उसके बनाने वाले कारीगर की तारीफ मुंह से निकलती थी। जी में आया कि और पास जाकर बगुले को देखे। पास गई, मगर वहां पहुंचते ही उसने मुंह खोल दिया। चन्द्रकान्ता यह देख घबरा गई कि यह क्या मामला है ? कुछ डर भी मालूम हुआ, सामना छोड़ बगल में हो गई। अब उस बगुले ने पर भी फैला दिये।

कुमारी को चपला ने बहुत ढीठ कर दिया था। कभी-कभी तब जिक्र आ जाता तो चपला यही कहती थी कि दुनिया में भूत-प्रेत कोई चीज़ नहीं, जादू-मंत्र सब खेल-कहानी है, जो

कुछ है ऐयारी है। इस बात का कुमारी को भी पूरा यकीन हो चुका था। यही सबब था कि चन्द्रकान्ता इस बगुले के मुंह खोलने और पर फैलाने से नहीं डरी, अगर दूसरी ऐसी नाज़ुक औरत को कहीं ऐसा मौका पड़ता तो शायद उसकी जान निकल जाती। जब बगुले को पर फैलाये देखा तो कुमारी उसके पीछे हो गई, बगुले के पीछे की तरफ एक पत्थर ज़मीन में लगा था जिस पर कुमारी ने पैर रखा ही था कि बगुला एक दफा हिला और जल्दी से घूम अपनी चोंच से कुमारी को उठा कर निगल गया, फिर वह घूम कर अपने ठिकाने हो गया। पर समेट लिये और मुंह बन्द कर लिया।

चौदहवां बयान

थोड़ी देर में चपला फलों से झोली भरे हुए पहुंची, देखा तो चन्द्रकान्ता वहां नहीं है, इधर उधर निगाह दौड़ाई, कहीं नहीं। इस टूटे मकान (खण्डहर) में तो नहीं गई है ? यह सोच कर मकान के अन्दर चली। कुमारी तो बेधड़क उस खण्डहर में चली गई थी मगर चपला रुकती हुई, चारों तरफ निगाह दौड़ाती और एक-एक चीज तजवीज़ करती हुई चली। फाटक के अन्दर घुसते ही दोनों बगल दो दालान दिखाई पड़े। ईंट-पत्थर के ढेर लगे हुए, कहीं-कहीं से छत टूटी हुई, मगर दीवारों पर की चित्रकारी और पत्थरों की मूर्तियों अभी तक नई मालूम पड़ती थीं।

चपला ने ताज्जुब की निगाह से उन मूर्तियों को देखा, कोई भी उसमें पूरे बदन की नज़र न आई। किसी का सिर नहीं, किसी की टांग नहीं, किसी का हाथ कटा किसी का आधा धड़ ही नहीं। सूरत भी इन मूर्तियों की अजब डरावनी थी। और आगे बढ़ी, बड़े-बड़े मिट्टी के ढेर जिनमें जंगली पेड़ लगे हुए थे लांघती हुई मैदान में पहुंची, दूर से वह बगुला दिखाई पड़ा जिसके पेट में कुमारी समा चुकी थी।

सब जगहों को देखना छोड़ चपला उस बगुले के पास धड़धड़ाती हुई पहुंची। उसने मुंह खोल दिया। चपला को बड़ा ताज्जुब हुआ, पीछे हटी। बगुले ने मुंह बन्द कर लिया। सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए ? यह तो कोई बड़ी भारी ऐयारी मालूम होती है। क्या भेद है इसका पता लगाना चाहिए। पहले कुमारी को खोजना उचित है क्योंकि यह खण्डहर कोई पुराना तिलिस्म मालूम होता है, कहीं ऐसा न हो कि इसी में कुमारी फंस गई हो। यह सोच उस जगह से हटी और दूसरी तरफ खोजने लगी।

चारों तरफ अहाता घिरा हुआ था, कई दालान और कोठरियां टूटी-फूटी और कई साबूत भी थीं, एक तरफ से देखना शुरू किया। पहले एक दालान में पहुंची जिसकी छत बीच में टूटी हुई थी, लम्बाई दालान की लगभग सौ गज के होगी, बीच में मिट्टी-चूने के ढेर में से छोटे-छोटे बहुत से पीपल वगैरह के पेड़ निकल आये थे। दालान के एक तरफ छोटी-सी कोठरी नज़र आई जिसके अन्दर पहुंचनेपर देखा, एक कुआं है। झांकने पर अंधेरा मालूम पड़ा।

इस कुएं के अन्दर क्या है ? यह कोठरी बनिस्बत और जगहों के साफ क्यों मालूम पड़ती है! कुआं भी साफ दीख पड़ता है, क्योंकि जैसे अकसर पुराने कुओं में पेड़ वगैरह उग जाते हैं इसमें नहीं हैं। कुछ-कुछ आवाज़ भी इसमें से आती है जो बिलकुल समझ नहीं पड़ती।

इसका पता लगाने के लिए चपला ने अपने ऐयारी के बटुए में से काफूर *–निकाला और उसके टुकड़े बालकर कुएं में डाले। अन्दर तक पहुंचकर उन टुकड़ों ने खूब रोशनी की। अब साफ मालूम लगा कि नीचे से कुआं बहुत चैड़ा और साफ है, मगर पानी नहीं है, बल्कि पानी की जगह एक साफ सफेद बिछावन मालूम पड़ता है, जिसके ऊपर एक बूढ़ा आदमी बैठा है। उसकी लम्बी दाढ़ी लटकती हुई दिखाई पड़ती है, मगर गर्दन नीची होने के सबब चेहरा मालूम नहीं पड़ता। सामने एक चैकी रक्खी हुई है जिस पर रंग-बिरंग के फूल पड़े हैं। चपला यह तमाशा देख कर डर गई। फिर जी को सम्हाला और कुएं पर बैठ गौर करने लगी, मगर कुछ अक्ल ने गवाही न दी। वह काफूर के टुकड़े भी बुझ गये जो कुएं के अन्दर जल रहे थे और फिर अंधेरा हो गया।

उस कोठरी में से एक दूसरे दालान में जाने का रास्ता था। इस राह से चपला दूसरे दालान में पहुंची, वहां इससे भी ज़्यादा जी दहलाने और डराने वाला तमाशा देखा। कूड़ा-कर्कट, हड्डी और गंदगी में यह दालान पहले दालान से कहीं बढ़ा-चढ़ा था, बल्कि एक साबुत पंजर (ढांचा) हड्डी का भी पड़ा हुआ था जो शायद गधे या टट्टू का था। उसी के बगल से लांघती हुई चपला बीचोंबीच दालान में पहुंची।

एक चबूतरा संगमरमर का पुरसा भर ऊंचा देखा जिस पर चढ़ने के लिए खूबसूरत नौ सीढ़ियां बनी हुई थीं। ऊपर उसके एक आदमी चैकी पर लेटा हुआ हाथ में किताब लिये कुछ पढ़ता मालूम पड़ा, मगर ऊंचा होने के सबब साफ दिखाई न दिया। इस चबूतरे पर चढ़ें या न चढं़े ? चढ़ने से कोई आफत तो न आवेगी। भला सीढ़ी पर एक पैर रखकर देखूं तो सही। यह सोच कर चपला ने सीढ़ी पर पैर रखा। पैर रखते ही बड़े ज़ोर से एक आवाज़ हुई और सन्दूक के पल्ले की तरह खुल कर सीढ़ी के ऊपर वाले पत्थर ने चपला के पैर को जोर से फेंक दिया जिसकी धमक और झटके से वह ज़मीन पर गिर पड़ी। सम्हल कर उठ खड़ी हुई, देखा कि सीढ़ी का पत्थर जो सन्दूक के पल्ले की तरह खुल गया था ज्यों-का-त्यों बन्द हो गया है।

चपला अलग खड़ी होकर सोचने लगी कि यह टूटा-फूटा मकान तो अजब तमाशे का है। ज़रूर यह किसी भारी ऐयार का बनाया हुआ होगा। इस मकान में घुस कर सैर करना कठिन है, ज़रा चूके और जान गयी। पर मुझको क्या डर ? क्योंकि जान से ज़्यादा प्यारी मेरी चन्द्रकान्ता इसी मकान में कहीं फंसी हुई है जिसका पता लगाना कठिन है, चाहे जान चली जाये मगर बिना कुमारी का पता लिये इस मकान के बाहर कभी न जाऊंगी। देखूं, इस सीढ़ी और चबूतरे में क्या-क्या ऐयारियां की गयी हैं ? जिस तरह पैर को उस सीढ़ी ने फेंका था उसी तरह इस पत्थर को भी भारी आवाज़ के साथ फेंक दिया।

चपला ने हर एक सीढ़ी पर पत्थर रखकर देखा, सभी में यही करामात पाई। इस चबूतरे के ऊपर क्या है इसको ज़रूर देखना चाहिए, यह सोच अब वह दूसरी तरकीब करने लगी। बहुत से ईंट पत्थर उस चबूतरे के पास जमा किया और उसके ऊपर चढ़कर देखा कि

संगमरमर की एक चैकी पर एक आदमी दोनों हाथ में किताब लिये हुए पड़ा है, उम्र लगभग तीस वर्ष की होगी। खूब गौर करने से मालूम हुआ कि यह भी पत्थर का है। चपला ने एक छोटी-सी कंकड़ी उसके मुंह पर डाली थी उसको एक हाथ से हटा दिया और फिर उसी तरह वह हाथ अपने ठिकाने ले गया। चपला थी तो बड़ी चालाक और निडर, मगर इस पत्थर के आदमी का तमाशा देख बहुत डरी और जल्द वहां से हट गई। अब दूसरी तरफ देखने लगी। बगल के एक और दालान में पहुंची, देखा कि बीचोंबीच दालान के एक तहखाना मालूम पड़ता है, नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं और ऊपर की तरफ दो पल्ले किवाड़ के हैं जो इस समय खुले हैं।

चपला खड़ी होकर सोचने लगी कि इसके अंदर जाना चाहिए या नहीं! कहीं ऐसा न हो कि इसमें उतरने के बाद यह दरवाज़ा बन्द हो जाये तो इसी में रह जाऊं, इससे मुनासिब है कि इसको भी आजमा लूं। पहले एक ढोंका इसके अन्दर डालूं। लेकिन अगर आदमी के जाने से यह दरवाज़ा बन्द हो सकता है तो ज़रूर ढोंके के गिरते ही बन्द हो जायेगा, तब इसके अन्दर जाकर देखना मुश्किल होगा, अस्तु ऐसी कोई तरकीब की जाये जिसमें उसके जाने से किवाड़ बन्द न होने पावे, बल्कि हो सके तो पल्लों को तोड़ ही देना चाहिए।

इन बातों को सोच कर चपला दरवाज़े के पास गई। पहले उसके तोड़ने की फिक्र की मगर न हो सका, क्योंकि वे पल्ले लोहे के थे। कब्ज़ा उसमें नहीं था सिर्फ पल्ले के बीचोंबीच में चूल बनी हुई थी जो कि ज़मीन के अन्दर घुसी हुई मालूम पड़ती थी। वह चूल ज़मीन के अन्दर कहां जाकर अड़ी थी इसका पता न लग सका।

चपला ने अपने कमर से कमन्द खोली और चैहरा करके उसका एक सिरा उस किवाड़ के पल्ले में खूब मज़बूती के साथ बांधा, दूसरा सिरा उस कमन्द का उसी दालान के एक खम्भे में जो किवाड़ के पास ही था बांधा, इसके बाद एक ढोंका पत्थर का दूर से उस तहखाने में डाला। पत्थर पड़ते ही एक तरह की आवाज़ आने लगी जैसे किसी आंधी में से ज़ोर से हवा निकलने से आवाज़ आती है, साथ ही इसके जल्दी से एक पल्ला बन्द हो गया, दूसरा पल्ला भी बन्द होने के लिए खिंचा मगर वह कमन्द से कसा हुआ था, उसको तोड़ न सका, खिंचा-का-खिंचा ही रह गया। चपला ने सोचा-"कोई हर्ज़ नहीं, मालूम हो गया कि यह कमन्द इस पल्ले को बन्द न होने देगी। अब बेखटके इसके अन्दर उतरी, देखो तो क्या होता है!" यह सोच चपला उस तहखाने में उतरी।

---

*—काफूर का दस्तूर है कि बाल कर किसी गड्ढे या कुएं में डालें तो बराबर जलता हुआ चला जाएग। और नीचे भी जलता रहेगा।

पन्द्रहवां बयान

चम्पा बेफिक्र नहीं है, वह भी कुमारी की खोज में घर से निकली हुई है। जब बहुत दिन हो गये और राजकुमारी चन्द्रकान्ता की कुछ खबर न मिली तो महारानी से हुक्म लेकर चम्पा घर से निकली। जंगल-जंगल, पहाड़-पहाड़ मारी फिरी मगर कहीं पता न लगा। कई दिन की थकी-मांदी जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगी कि अब कहां चलना चाहिए और किस जगह ढूंढ़ना चाहिए क्योंकि महारानी से मैं इतना वादा करके निकली हूं कि कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह से बिना मिले और बिना उनसे कुछ खबर लिये कुमारी का पता लगाऊंगी, मगर अभी तक कोई उम्मीद पूरी न हुई और बिना काम किये मैं विजयगढ़ भी न जाऊंगी चाहे जो हो, देखूं कब तक पता नहीं लगता।

जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठी हुई चम्पा इन सब बातों को सोच रही थी कि सामने से चार आदमी सिपाहियाना पोशाक पहने, ढाल-तलवार लगाये एक-एक तेगा हाथ में लिये आते दिखाई दिये।

चम्पा को देख कर उन लोगों ने आपस में कुछ बातें कीं जिसे दूर होने के सबब चम्पा बिलकुल सुन न सकी, मगर उन लोगों के चेहरे की तरफ गौर से देखने लगी। वे लोग कभी चम्पा की तरफ देखते, कभी आपस में बातें करके हंसते, कभी ऊंचे हो-होकर अपने पीछे की तरफ देखते, जिससे यह मालूम होता था कि ये लोग किसी की राह देख रहे हैं। थोड़ी देर बाद वे चारों चम्पा के चार तरफ हो गये और पेड़ों के नीचे छाया देखकर बैठ गये।

चम्पा का जी खटका और सोचने लगी कि ये लोग कौन हैं, चारों तरफ से मुझको घेर कर क्यों बैठ गये और इनका क्या इरादा है ? अब यहां बैठना न चाहिए। यह सोच उठ खड़ी हुई और एक तरफ का रास्ता लिया, मगर उन चारों ने न जाने दिया। दौड़ कर फिर घेर लिया और कहा, "तुम जाती कहां हो ? ठहरो, हमारे मालिक दम भर में आया ही चाहते हैं, उनके आने तक बैठी, वे आ जायें तब हम लोग उनके सामने ले चल के सिफारिश करेंगे और नौकर रखा देंगे, खुशी से तुम रहा करोगी। इस तरह से कहां तक जंगल-जंगल मारी फिरोगी।"

चम्पा: मुझे नौकरी की ज़रूरत नहीं जो मैं तुम्हारे मालिक के आने की राह देखूं, मैं नहीं ठहर सकती।

एक: नहीं नहीं, तुम जल्दी न करो, ठहरो। हमारे मालिक को देखोगी तो खुश हो जाओगी, ऐसा खूबसूरत जवान तुमने कभी न देखा होगा, बल्कि हम कोशिश करके उनसे

तुम्हारी शादी करा देंगे।

चम्पा: होश में आकर बातें करो नहीं तो दुरुस्त कर दूंगी। खाली औरत न समझना, तुम्हारे जैसे दस को मैं कुछ नहीं समझती!

चम्पा की ऐसी बात सुनकर उन लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ, एक का मुंह दूसरा देखने लगा। चम्पा फिर आगे बढ़ी। एक ने हाथ पकड़ लिया। बस फिर क्या था, चम्पा ने झट कमर से खंजर निकाल लिया और बड़ी फुर्ती के साथ दो को जख्मी करके भागी। बाकी के दो आदमियों ने उसका पीछा किया मगर कहां पा सकते थे।

चम्पा भागी तो, मगर उसकी किस्मत ने भागने न दिया। एक पत्थर से ठोकर खा बड़े ज़ोर से गिरी, चोट भी ऐसी लगी कि उठ न सकी, तब तक ये दोनों भी वहां पहुंच गये। अभी इन लोगों ने कुछ कहा भी नहीं था कि सामने से एक काफिला सौदागरों का आ पहुंचा जिसमें लगभग दो सौ आदमी होंगे। उनके आगे-आगे एक बूढ़ा आदमी था जिसकी लम्बी-सफेद दाढ़ी, काला रंग, भूरी आंखें, उम्र लगभग अस्सी वर्ष की होगी। उम्दे कपड़े पहने, ढाल तलवार लगाये, बर्छी हाथ में लिये एक बेशकीमत मुश्की घोड़े पर सवार था। साथ में उसके एक लड़का जिसकी उम्र बीस वर्ष से ज़्यादा न होगी, रेख तक न निकली थी, बड़े ठाठ के साथ एक नैपाली टांगन पर सवार था, जिसकी खूबसूरती और पोशाक देखने से मालूम होता था कि कोई राजकुमार है। पीछे-पीछे उनके बहुत से आदमी घोड़ों पर सवार और कुछ पैदल भी थे। सबसे पीछे कई ऊंटों पर असबाब और उनका डेरा लदा हुआ तथा साथ में कई डोलियां थीं जिनके चारों तरफ बहुत से प्यादे तोड़ेदार बन्दूकें लिये चले आते थे। दोनों आदमियों ने जिन्होंने चम्पा का पीछा किया था, पुकार कर कहा, "इस औरत ने हमारे दो आदमियों को जख्मी किया है...!" जब तक और कुछ कहें तब तक आदमियों ने चम्पा को घेर लिया और खंजर छीन हथकड़ी-बेड़ी डाल दी।

उस बूढ़े सवार ने जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि शायद सभी का सरदार होगा, दो-एक आदमियों की तरफ देखकर कहा, "हम लोगों का डेरा इसी जंगल में पड़े। यहां आदमियों की आमदरफ्त कम मालूम होती है, क्योंकि कोई निशान पगडंडी का ज़मीन पर दिखाई नहीं देता।"

डेरा पड़ गया, एक बड़ी रावटी में कई औरतें क़ैद की गयीं जो डोलियों पर बैठी थीं। चम्पा बेचारी भी उन्हीं में रखी गयी। सूरज अस्त हो गया, एक चिराग उस रावटी में जलाया गया जिसमें कई औरतों के साथ चम्पा भी थी। दो लौंडियां आयीं जिन्होंने औरतों से पूछा कि तुम रसोई बनाओगी या बना-बनाया खाओगी ? सभी ने कहा, "हम बना-बनाया खाएंगे ?" मगर दो औरतों ने कहा, "हम कुछ न खाएंगे।" जिसके जवाब में वे दोनों लौंडियां यह कह कर चली गईं कि 'देखें कब तक भूखी रहती हो'! इन दोनों औरतों में से एक तो बेचारी आफत की मारी चम्पा ही थी और दूसरी एक बहुत ही नाज़ुक और खूबसूरत औरत थी

जिसकी आंखों से आंसू जारी थे और जो थोड़ी-थोड़ी देर पर लम्बी-लम्बी सांस ले रही थी। चम्पा भी उसी के पास बैठी हुई थी।

पहर रात चली गई, सभी के वास्ते खाने को आया मगर उन दोनों के वास्ते नहीं जिन्होंने पहले इनकार किया था। आधी रात बीतने पर सन्नाटा हुआ, पैरों की आवाज़ डेरे के चारों तरफ मालूम होने लगी जिससे चम्पा ने समझा कि इस डेरे के चारों तरफ पहरा घूम रहा है। धीरे-धीरे चम्पा ने अपने बगल वाली खूबसूरत नाज़ुक औरत से बातें करना शुरू किया-

चम्पा: आप कौन हैं और इन लोगों के हाथ क्योंकर फंस गई ?

औरत: मेरा नाम कलावती है, मैं महाराज शिवदत्त की रानी हूं, महाराज लड़ाई पर गये थे, उनके वियोग में ज़मीन पर सो रही थी, मुझको कुछ मालूम नहीं, जब आंख खुली अपने को इन लोगों के फन्दे में पाया। बस और क्या कहूं। तुम कौन हो ?

चम्पा: हैं, आप चुनार की महारानी हैं! हा, आपकी यह दशा! वाह विधाता तू धन्य है! मैं क्या बताऊं, जब आप महाराज शिवदत्त की रानी हैं तो कुमारी चन्द्रकान्ता को भी ज़रूर जानती होंगी, मैं उन्हीं की सखी हूं, उन्हीं की खोज में मारी-मारी फिरती थी कि इन लोगों ने पकड़ लिया।

ये दोनों आपस में धीरे-धीरे बातें कर रही थीं कि बाहर से एक आवाज़ आई, "कौन है ? भागा, भागा, निकल गया!!" महारानी डरीं, मगर चम्पा को कुछ खौफ़ न मालूम हुआ। बात-ही-बात में रात बीत गई, दोनों में से किसी को नींद न आई। कुछ-कुछ दिन भी निकल आया, वही दोनों लौंडियां जो भोजन कराने आई थीं इस समय फिर आईं। तलवार दोनों के हाथ में थी। इन दोनों ने सभी से कहा, "चलो पारी-पारी से मैदान हो आओ।"

कुछ औरतें मैदान गईं, मगर ये दोनों अर्थात् महारानी और चम्पा उसी तरह बैठी रहीं, किसी ने जिद न की। पहर दिन चढ़ आया था कि इस काफिले का बूढ़ा सरदार एक बूढ़ी औरत को लिए इस डेरे में आया जिसमें सब औरतें क़ैद थीं।

बुड्ढी: इतनी ही हैं या और भी ?

सरदार: बस इस वक़्त तो इतनी ही हैं, अब तुम्हारी मेहरबानी होगी तो और हो जायेंगी!

बुड्ढी: देखिए तो सही, मैं कितनी औरतें फंसा लाती हूं। हां, अब बताइए किस मेल की औरत लाने पर कितना मिलेगा ?

सरदार: देखो ये सब मेल में हैं, इस किस्म की अगर लाओगी तो दस रुपये मिलेंगे। (चम्पा की तरफ इशारा करके) अगर इस मेल की लाओगी तो पूरे पचास रुपये। (महारानी की तरफ बताकर) अगर ऐसी खूबसूरत होंगी तो पूरे सौ रुपये मिलेंगे, समझ गई ?

बुड्ढी: हां, अब मैं बिलकुल समझ गई, इन सभी को आपने कैसे पाया ?

सरदार: यह जो सबसे खूबसूरत है इसको तो एक खोह में पाया था, बेहोश पड़ी थी, और यह कल इसी जगह पकड़ी गई है, इसने मेरे दो आदमी मार डाले हैं, बड़ी बदमाश है!

बुड्ढी: इसकी चितवन ही से बदमाशी झलकती है, ऐसी-ऐसी अगर तीन चार आ जायें तो आपका काफिला बैकुण्ठ चला जाये।

सरदार: इसमें क्या शक है! और वे सब जो हैं, वह कई तरह से पकड़ी गई हैं। एक तो वह बंगाले की रहने वाली है, इसके पड़ोस ही में मेरे लड़के ने डेरा डाला था, अपने पर आशिक करके निकाल लाया। ये चारों रुपये की लालच में फंसी हैं और बाकी सबों को मैंने उनकी मां, नानी या वारिसों से खरीद लिया है। बस चलो, अपने डेरे में बातचीत करेंगे। मैं बुड्ढा आदमी बहुत देर तक खड़ा नहीं रह सकता।

बुड्ढी: चलिए!

दोनों उस डेरे से रवाना हुए। इन दोनों के जाने के बाद औरतों ने खूब गालियां दीं-"मुए को देखो, अभी और औरतों को फंसाने के फिक्र में लगा है! न मालूम यह बुड्ढी इसको कहां से मिल गई, बड़ी शैतान मालूम पड़ती है।" कहती है 'देखो मैं कितनी औरतें फंसा लाती हूं।' हे परमेश्वर, इन लोगों पर भी तेरी कृपा बनी रहती है, न मालूम यह डाइन कितने घर चैपट करेगी ?

चम्पा ने उस बुढ़िया को खूब गौर करके देखा और आधे घण्टे तक कुछ सोचती रही। मगर महारानी को सिवाय रोने के और कोई धुन न थी। 'हाय, महाराज की लड़ाई में क्या दशा होगी, वे कैसे होंगे, मेरी याद करके कितने दु:खी हो रहे होंगे ?' धीरे-धीरे यही कह के रो रही थीं। चम्पा उनको समझाने लगी।

"महारानी, सब्र करो, घबराओ मत, मुझे पूरी उम्मीद हो गई, ईश्वर चाहेगा तो हम लोग बहुत जल्द छूट जायेंगे। क्या करूं, मैं कथकड़ी में पड़ी हूं, किसी तरह यह खुल जाती तो इन लोगों को मज़ा चखाती, लाचार हूं कि यह मज़बूत बेड़ी सिवाय कटने के दूसरी तरह खुल नहीं सकती और इसका काटना यहां मुश्किल है।"

इस तरह रोते-कलपते आज का दिन भी बीता। शाम हो गई। बुड्ढा सरदार फिर उस डेरे में आ पहुंचा जिसमें औरतें क़ैद थीं, साथ में वही सवेरे वाली बुढ़िया आफत की पुड़िया एक जवान खूबसूरत औरत को लिए हुए थी।

बुढ़िया: मिला लीजिए, अव्वल नम्बर की है कि नहीं ?

सरदार: अव्वल नम्बर की तो नहीं, हां दूसरे नम्बर की ज़रूर है, पचास रुपये की आज तुम्हारी बोहनी हुई, इसमें शक नहीं!

बुढ़िया: खैर पचास ही सही, यहां कौन गिरह की ज़मा लगती है, कल फिर लाऊंगी, चलिए।

इस समय इन दोनों की बातचीत बहुत धीरे-धीरे हुई, किसी ने सुना नहीं मगर होंठों के हिलने से चम्पा कुछ-कुछ समझ गई। यह नई औरत जो आज आई बड़ी खुश दिखाई देती थी। हाथ-पैर खुले थे। तुरन्त ही इसके वास्ते खाने को आया। इसने भी खूब लम्बे-चैड़े हाथ लगाये, बेखटके सारा भोजन उड़ा गई। दूसरी औरतों को सुस्त और रोते देख हंसती और

चुटकियां लेती थी। चम्पा ने जी में सोचा, "यह तो बड़ी भारी बला है इसको अपने क़ैद होने और फंसने की कोई फिक्र ही नहीं! मुझे तो कुछ खटका मालूम होता है!"

सोलहवां बयान

कल की तरह आज भी बीत गई। लौंडियों के साथ सुबह को सब औरतें बारी-बारी मैदान भेजी गईं। महारानी और चम्पा आज भी नहीं गई। चम्पा ने महारानी से पूछा, "आप जब से इन लोगों के हाथ फंसी हैं कुछ भोजन किया या नहीं ?" उन्होंने जवाब दिया, "महाराज के मिलने की उम्मीद में जान बचाने के लिए दूसरे-तीसरे दिन कुछ खा लेती हूं क्या करूं कुछ बस नहीं चलता।"

थोड़ी देर बाद दो आदमी इस डेरे में आये। महारानी और चम्पा से बोले, "तुम दोनों बाहर चलो, आज हमारे सरदार का हुक्म है कि सब औरतें मैदान में पेड़ों के नीचे बैठाई जायें जिसमें मैदान की हवा लगे और तन्दुरुस्ती में फ़र्क़ न पड़ने पाए।" यह कह दोनों को बाहर ले गये। वे औरतें जो मैदान में गई थीं बाहर ही एक बहुत घने महुए के तले बैठी हुई थीं। ये दोनों भी उसी जगह जा कर बैठ गई। चम्पा चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखने लगी।

दोपहर दिन चढ़ आया होगा। वही बुढ़िया जो कल एक औरत ले आई थी आज फिर एक जवान औरत, कल से ज़्यादा खूबसूरत लिए हुए पहुंची। उसे देखते ही बुड्ढे मियां ने बड़ी खातिर से अपने पास बैठाया और उस औरत को भी बारीक निगाहों से देखा। आखिर उससे न रहा गया, ऊपर की तरफ मुंह करके बोली, "मी सगमता *।" वह औरत जो आज आई थी चम्पा का मुंह देखने लगी। थोड़ी देर के बाद वह भी अपने पैर के अंगूठे की तरफ देखकर और हाथों से उसे मलती हुई बोली, "चपकलाछठमें बापरोफस *!" फिर दोनों में से कोई न बोली।

शाम हो गई। सब औरतें उस रावटी में पहुंच गईं। रात को खाने का सामान पहुंचा, महारानी और चम्पा के सिवाय सभी ने खाया। उन दोनों औरतों ने तो खूब ही हाथ फेरे जो नयी फंस कर आयी थीं।

रात बहुत चली गई, सन्नाटा हो गया, रावटी के चारों तरफ पहरा फिरने लगा। रावटी में एक चिराग जल रहा था। सब औरतें सो गईं, सिर्फ चार जाग रही हैं, महारानी, चम्पा और वे दोनों जो नयी आई थीं। चम्पा ने उन दोनों की तरफ देखकर कहा, "कड़ाक भी टेटी, नौ से पारो फेसतो *!" एक ने जवाब दिया, "तीमसे को *!" फिर चम्पा ने कहा, "रानी में सेगी *?"

उन दोनों औरतों ने अपनी कमर से कोई तेज़ औज़ार निकाला और धीरे से चम्पा की हथकड़ी और बेड़ी काट दी। अब चम्पा लापरवाह हो गई, उसके होंठों पर मुस्कुराहट मालूम होने लगी।

दो पहर रात बीत गई। एकाएक उस रावटी को चारों तरफ से बहुत-से आदमियों ने घेर लिया। शोरगुल की आवाज़ आने लगी, 'मारो, पकड़ो' की आवाज़ सुनाई देने लगी। बन्दूक की भी आवाज़ कान में पड़ी। अब सब औरतों को यकीन हो गया कि डाका पड़ा है और लड़ाई हो रही है। खलबली मच गई, रावटी में जितनी औरतें थीं, इधर-उधर दौड़ने लगीं। महारानी घबराकर 'चम्पा-चम्पा' पुकारने लगीं, मगर पता नहीं, चम्पा दिखाई न पड़ी। वे दोनों औरतें जो नई आई थीं आकर कहने लगीं, "मालूम होता है चम्पा निकल गई, मगर आप मत घबराइए यह सब आप ही के नौकर हैं जिन्होंने डाका मारा है। मैं भी आप ही का ताबेदार हूं, औरत न समझिये। मैं जाता हूं, आपके वास्ते कहीं डोली तैयार होगी, लेकर आता हूं।" यह कह दोनों ने रास्ता लिया।

जिस रावटी में औरतें थीं उसके तीन तरफ आदमियों की आवाज़ कम हो गई। सिर्फ चैथी तरफ, जिधर और बहुत से डेरे थे, लड़ाई की आहट मालूम हो रही थी। दो आदमी जिनका मुंह कपड़े या नकाब से ढंका हुआ था, डोली लिए हुए पहुंचे और महारानी को उस पर बैठाकर बाहर निकल गये। रात बीत गई, आसामान पर सफेदी दिखाई देने लगी। चम्पा और महारानी तो चली गई थीं मगर और सब औरतें उसी रावटी में बैठी हुई थीं। डर के मारे चेहरा जर्द हो रहा था, एक डोली जिस पर किमख्वाब का पर्दा पड़ा हुआ था, लिए हुए उस रावटी के दरवाज़े पर पहुंचे, डोली बाहर रख दी, आप अन्दर गये और सब औरतों को अच्छी तरह देखने लगे, फिर पूछा-"तुम लोगों में से दो औरतें दिखाई नहीं देतीं, वे कहां गईं ?"

सब औरतें डरी हुई थीं, किसी के मुंह से आवाज़ न निकली। पन्नालाल ने फिर कहा, "तुम लोग डरो मत, हम लोग डाकू नहीं हैं, तुम ही लोगों को छुड़ाने के लिए इतनी धूमधाम हुई है। बताओ वे दोनों औरतें कहां हैं ?" अब उन औरतों का जी कुछ ठिकाने हुआ। एक ने कहा, "दो नहीं बल्कि चार औरतें गायब हैं जिनमें दो औरतें तो हैं जो कल और परसों फंसकर आई थीं, वे दोनों तो एक औरत को यह कहकर चली गई कि आप डरिये मत, हम लोग आपके ताबेदार हैं, डोली लेकर आते हैं तो आपको ले चलते हैं। इसके बाद डोली आई जिस पर चढ़के वह चली गयी, और चैथी तो सबसे पहले ही निकल गई थी।"

पन्नालाल के तो होश उड़ गये, रामनारायण और चुन्नीलाल के मुंह की तरफ देखने लगे। रामनारायण ने कहा, "ठीक है, हम दोनों महारानी को ढाढ़स देकर तुम्हारी खोज में डोली लेने चले गये, जफील बजाकर तुमसे मुलाकात की और डोली लेकर चले आ रहे हंै, मगर दूसरा कौन डोली लेकर आया जो महारानी को लेकर चला गया ? इन लोगों का यह कहना भी ठीक है कि चम्पा पहले ही से गायब है। जब हम लोग औरत बने हुए उस रावटी में थे

और लड़ाई हो रही थी, महारानी ने डरकर 'चम्पा चम्पा' पुकारा, तभी उसका पता न था। मगर यह मामला क्या है कुछ समझ में नहीं आता! चलो बाहर चल कर इन बर्देफरोशों *की डोलियों को गिनें, उतनी ही हैं या कम ? इन औरतों को भी बाहर निकालो।"

सब औरतें उस डेरे के बाहर चली गईं। उन्होंने देखा कि चारों तरफ खून-ही-खून दिखाई देता है, कहीं-कहीं लाश भी नज़र आती है। काफिले का बुड्ढा सरदार और उसका खूबसूरत लड़का जंजीरों से जकड़े एक पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं। दस आदमी नंगी तलवारें लिये उनकी निगहबानी कर रहे हैं और सैकड़ों आदमी हाथ-पैर बंधे दूसरे पेड़ों के नीचे बैठाये हुए हैं। रावटियां और डेरे सब उजड़े पड़े हैं।

पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल उस जगह गये जहां बहुत-सी डोलियां रक्खी थीं। रामनारायण ने पन्नालाल से कहा, "देखो, यह सोलह डोलियां हैं, पहले हमने सत्रह गिनी थीं, इससे मालूम होता है कि इन्हीं में की वह डोली थी जिसमें महारानी गई हैं। मगर उनको ले कौन गया ? चुन्नीलाल जाओ तुम दीवान साहब को यहां बुला लाओ, उस तरफ बैठे हैं जहां फौज़ खड़ी है।"

दीवान साहब को लिए हुए चुन्नीलाल आये। पन्नालाल ने उनसे कहा "देखिये, हम लोगों की चार दिन की मेहनत बिलकुल खराब हो गई। विजयगढ़ से तीन मंजिल पर इन लोगों का डेरा था। इस बुड्ढे सरदार को हम लोगों ने औरतों का लालच देकर रोका कि कहीं आगे न चला जाये और आपको खबर दी। आप भी पूरे सामान से आये, इतना खून-खराबा हुआ, मगर महारानी और चम्पा हाथ न आई। भला चम्पा तो बदमाशी करके निकल गई, उसने कहा कि हमारी बेड़ी काट दो नहीं तो हम सब भेद खोल देंगे कि मर्द हो, धोखा देने आये हो, पकड़े जाओगे, लाचार होकर उसकी बेड़ी काट दी और वह मौका पाकर निकल गई, मगर महारानी को कौन ले गया ?"

दीवान साहब की अक्ल हैरान थी कि यह क्या हो गया। बोले, "इन बदमाशों को बल्कि इनके बुड्ढे मियां सरदार को मार-पीट के पूछो, कहीं इन्हीं लोगों की बदमाशी तो नहीं है!"

पन्नालाल ने कहा, "जब सरदार ही आपकी क़ैद में हैं तो मुझे यकीन नहीं आता कि उसके सबब से महारानी गायब हो गई हैं। आप इन बर्देफरोशों को और फौज़ लेकर जाइये और राज्य का काम देखिये, हम लोग फिर महारानी की टोह लेने जाते हैं, इसका तो बीड़ा ही उठाया है।"

दीवान साहब बर्देफरोश क़ैदियों को मय उनके माल-असबाब के साथ ले चुनार की तरफ रवाना हुए। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल महारानी की खोज में चले, रास्ते में आपस में यूं बातें करने लगे-

पन्नालाल: देखो आजकल चुनार राज्य की क्या दुर्दशा हो रही है, महाराज उधर फंसे, महारानी का पता नहीं, पता लगा मगर फिर भी कोई उस्ताद हम लोगों को उल्लू बनाकर उन्हें ले ही गया।

रामनारायण: भाई बड़ी मेहनत की थी मगर कुछ न हुआ। किस मुश्किल से इन लोगों का पता पाया, कैसी-कैसी तरकीबों से दो दिन तक इसी जंगल में रोक रक्खा, कहीं जाने न दिया, दौड़ा-दौड़ा चुनार से सेना सहित दीवान साहब को लाये, लड़े-भिड़े, अपनी तरफ के कई आदमी भी मरे, मगर वही पहला दिन, शर्मिन्दगी मुनाफे में!

चुन्नी.: हम तो बड़े खुश थे कि चम्पा भी हाथ आवेगी मगर वह तो और आफत निकली, कैसा हम लोगों को पहचाना और बेबस करके धमका के अपनी बेड़ी कटवा ही ली! बड़ी चालाक है, कहीं उसी का तो यह फसाद नहीं है ?

पन्ना.: नहीं जी, अकेली चम्पा डोली में बैठा के महारानी को नहीं ले जा सकती!

राम.: हम तीनों को महारानी की खोज में भेजने के बाद अहमद और नाज़िम को साथ लेकर पण्डित बद्रीनाथ भी महाराज को क़ैद से छुड़ाने गये हैं, देखें वह क्या जस लगाकर आते हैं।

पन्ना.: भला हम लोगों का मुंह भी तो हो कि चुनार जाकर उनका हाल सुनें और क्या जस लगाकर आते हैं इसको देखें। अगर महारानी न मिलीं तो कौन मुंह लेकर जायेंगे ?

राम.: बस मालूम हो गया कि आज जो शख्स महारानी को इस फुर्ती से चुरा ले गया वह हम लोगों का ठीक उस्ताद है। अब तो इसी जंगल में खेती करो, लड़के-बाले लेकर आ बसो, महारानी का मिलना मुश्किल है।

पन्ना.: वाह रे तेरा हौसला। क्या पिनिक के औतार हुए हैं।

थोड़ी दूर जाकर ये लोग आपस में कुछ बातें कर, मिलने का ठिकाना ठहरा अलग हो गये।

---

*—हम पहचान गए।

*—चुप रहोगी तो तुम्हारी भी जान जायेगी।

*—मेरी बेड़ी तोड़ दो नहीं तो गुल मचाकर गिरफ्तार करा दूंगी।

*—तुम्हारी क्या दशा होगी ?

*—रानी का साथ दूंगी

*—'बर्देफरोश' आदमियों की सौदागरी करते हैं, अर्थात् लौंडी गुलाम बेचते हैं।

सत्रहवां बयान

एक बहुत बड़े नाले में जिसके चारों तरफ बहुत ही घना जंगल है, पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के साथ तेजसिंह बैठे हैं। बगल में एक साधारण-सी डोली रक्खी हुई है, पर्दा उठा हुआ है, एक औरत उसमें बैठी तेजसिंह से बातें कर रही है। यह औरत चुनार के महाराज शिवदत्त की रानी कलावती कुंवर है। पीछे की तरफ एक हाथ डोली पर रक्खे चम्पा भी खड़ी है।

महारानी: मैं चुनार जाने में राज़ी नहीं हूं, मुझको राज्य नहीं चाहिए, महाराज के पास रहना मेरे लिए स्वर्ग है। अगर वे क़ैद में हैं तो मेरे पैर में भी बेड़ी डाल दो मगर उन्हीं के चरणों में रक्खो।

तेज.: नहीं, मैं यह नहीं कहता कि ज़रूर आप भी उसी क़ैदखाने में जाइये जिसमें महाराज हैं। आपकी खुशी हो तो चुनार जाइये, हम लोग हिफाज़त से पहुंचा देंगे। कोई ज़रूरत आपके यहां लाने की नहीं थी, ज्योतिषीजी ने कई दफा आपके पातिव्रत धर्म की तारीफ की थी और कहा था कि महाराज की जुदाई में महारानी को बड़ा ही दुःख होता होगा, यही जान हमलोग आपको ले आये थे, नहीं तो खाली चम्पा को ही छुड़ाने गये थे। अब आप कहिए तो चुनार पहुंचा दें नहीं तो महाराज के पास ले जायें क्योंकि सिवाय मेरे और किसी के ज़रिये आप महाराज के पास नहीं पहुंच सकतीं। और फिर महाराज क्या जाने कब तक क़ैद में रहें।

महारानी: तुम लोगों ने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की, सचमुच मुझे महाराज से इतनी जल्दी मिलाने वाला और कोई नहीं जितनी जल्दी तुम मिला सकते हो। अभी मुझको उनके पास पहुंचाओ, देर मत करो, मैं तुम लोगों का बड़ा जस मानूंगी।

तेज.: तो इस तरह डोली में आप नहीं जा सकतीं। मैं बेहोश करकें आपको ले जा सकता हूं।

महारानी: मुझको यह भी मंज़ूर है। किसी तरह वहां पहुंचाओ।

तेज.: अच्छा तब लीजिये, इस शीशी को सूंघिये।

महारानी को अपने पति के साथ बड़ी ही मुहब्बत थी, अगर तेजसिंह उनको कहते कि तुम अपना सिर दे दो तब महाराज से मुलाकात होगी तो वह उसको भी कबूल कर लेतीं।

महारानी बेखटके शीशी सूंघकर बेहोश हो गई। ज्योतिषीजी ने कहा, "अब इनको ले जाइए उसी तहखाने में छोड़ आइए। जब तक आप न आवेंगे मैं इसी जंगल में रहूंगा। चम्पा

को भी चाहिए कि विजयगढ़ जाये, हम लोग तो कुमारी चन्द्रकान्ता की खोज में घूम ही रहे हैं, ये क्यों दु:ख उठाती है ?"

तेजसिंह ने कहा, "चम्पा, ज्योतिषी ठीक कहते हैं, तुम घर जाओ, कहीं ऐसा न हो कि फिर किसी आफत में फंस जाओ!"

चम्पा ने कहा, "जब तक कुमारी का पता न लगेगा मैं विजयगढ़ कभी न जाऊंगी। अगर मैं इन बर्देफरोशों के हाथ फंसी तो अपनी ही चालाकी से छूट भी गई, आप लोगों को मेरे लिए कोई तकलीफ न करनी पड़ी।"

तेजसिंह ने कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है, हम यह नहीं कहते कि हम लोगों ने तुमको छुड़ाया! हम लोग तो कुमारी चन्द्रकान्ता को ढूंढ़ते हुए यहां तक पहुंच गये और उन्हीं की उम्मीद में बर्देफरोशों के डेरे देख डाले। उनको तो न पाया मगर महारानी और तुम फंसी हुई दिखाई पड़ी, छुड़ाने की फिक्र हुई, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल को महारानी को छुड़ाने के लिए कोशिश करते देख हम लोग यह समझ कर अलग हो गये कि मेहनत ये लोग करें, मौके में मौका हम लोगों को भी काम करने को मिल जायेगा! सो ऐसा ही हुआ भी, तुम अपनी चालाकी से छूटकर बाहर निकल गई, हमने महारानी को गायब किया। खैर, इन सब बातों को जाने दो, तुम यह बताओ कि घर न जाओगी तो क्या करोगी, कहां ढूंढ़ोगी ? कहीं ऐसा न हो कि हम लोग तो कुमारी को खोज कर विजयगढ़ ले जायें और तुम महीनों तक मारी-मारी फिरो।"

चम्पा ने कहा, "मैं एकदम से ऐसी बेवकूफ नहीं, आप बेफिक्र रहें।"

तेजसिंह को लाचार हो कर चम्पा को उसकी मर्ज़ी पर छोड़ना पड़ा और ज्योतिषीजी को भी उसी जंगल में छोड़ महारानी की गठरी बांध क़ैदखाने वाले खोह की तरफ रवाना हुए जिसमें महाराज शिवदत्त बन्द थे। चम्पा भी एक तरफ को रवाना हो गई।

अठारहवां बयान

तेजसिंह के जाने के बाद ज्योतिषीजी अकेले पड़ गये, सोचने लगे कि रमल कें जरिए पता लगाना चाहिए कि चन्द्रकान्ता और चपला कहां हैं! बस्ता खोल, पटिया निकाल रमल फेंक गिनने लगे। घड़ी भर तक खूब गौर किया। एकाएक ज्योतिषीजी के चेहरे पर खुशी झलकने लगी और होंठों पर हंसी आ गई, झटपट रमल और पटिया बांध उसी तहखाने की तरफ दौड़े जहां तेजसिंह महारानी को लिये जा रहे थे। ऐयार तो थे ही, दौड़ने में कसर न की, जहां तक बन पड़ा खूब तेजी से दौड़े।

तेजसिंह कदम-कदम झपटे हुए चले जा रहे थे। लगभग पांच कोस गये होंगे कि पीछे से आवाज़ आयी, "ठहरो, ठहरो।" फिर के देखा तो ज्योतिषी जगन्नाथजी बड़ी तेजी से चले आ रहे हैं, ठहर गये, जी में खटका हुआ कि यह क्यों दौड़े आ रहे हैं ?

जब पास पहुंचे तो इनके चेहरे पर कुछ हंसी देख तेजसिंह का जी ठिकाने हुआ। पूछा, "क्या है जो आप दौड़े आये हैं ?"

ज्योतिषी: है क्या, बस हम भी आपके साथ उसी तहखाने में चलेंगे।

तेज.: सो क्यों ?

ज्योतिषी: इसका हाल भी वहीं मालूम होगा, यहां न कहेंगे।

तेज.: तो वहां दरवाज़े पर पट्टी बांधनी पड़ेगी क्योंकि पहले वाले ताले का हाल जब से कुमार को धोखा देकर बद्रीनाथ ने मालूम कर लिया तब से एक और ताला हमने उसमें लगाया है जो पहले ही से बना हुआ था मगर अस्कत वश उसको काम में नहीं लाते थे क्योंकि खोलने और बन्द करने में ज़रा देर लगती है। हम यह निश्चय कर चुके हैं कि इस ताले का भेद किसी को न बतायेंगे।

ज्योतिषी: मैं तो अपनी आखों पर पट्टी न बंधाऊंगा और उस तहखाने में भी ज़रूर जाऊंगा। तुम झख मारोगे और ले चलोगे।

तेज.: वाह! क्या खूब! भला कुछ हाल मालूम हो!

ज्योतिषी: हाल क्या, बस पौ बारह हैं। कुमारी चन्द्रकान्ता को वहीं दिखा दूंगा!!

तेज.: हां! सच कहो!!

ज्योतिषी: अगर झूठ निकले तो उसी तहखाने में मुझको हलाल करके मार डालना।

तेज.: खूब कही, तुम्हें मार डालूंगा तो तुम्हारा क्या बिगड़ेगा, ब्रह्महत्या तो मेरे सिर पर चढ़ेगी!

ज्योतिषी: इसका भी ढंग मैं बता देता हूं जिसमें तुम्हारे ऊपर ब्रह्महत्या न चढ़े।

तेज.: वह क्या ?

ज्योतिषी: कुछ मुश्किल नहीं है, पहले मुसलमान कर डालना तब हलाल करना। ज्योतिषीजी की बात पर तेजसिंह हंस पड़े और बोले, "अच्छा भाई चलो, क्या करें, आपका हुक्म मानना भी ज़रूरी है।"

दूसरे दिन शाम को ये लोग उस तहखाने के पास पहुंचे। ज्योतिषीजी के सामने ही तेजसिंह ताला खोलने लगे। पहले उस शेर के मुंह में हाथ डाल के उसकी जुबान बाहर निकाली, इसके बाद दूसरा ताला खोलने लगे।

दरवाजे के दोनों तरफ दो पत्थर संगमरमर के दीवार के साथ जड़े हुए थे। दाहिनी तरफ के संगमरमर वाले पत्थर पर तेजसिंह ने ज़ोर से लात मारी, साथ ही एक आवाज़ हुई और वह पत्थर दीवार के अन्दर घुस कर ज़मीन के साथ सट गया। छोटे से हाथ भर के चबूतरे पर एक सांप चक्कर मारे बैठा दिखा जिसकी गर्दन पकड़ कर दो दफा पेंच की तरह घुमाया, दरवाज़ा खुल गया। महारानी की गठरी लिए हुए तेजसिंह और ज्योतिषीजी अन्दर गये, भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। भीतर दरवाज़े के बायीं तरफ दीवार में एक सूराख हाथ जाने लायक था, उसमें हाथ डाल के तेजसिंह ने कुछ किया, जिसका हाल ज्चोतिषीजी को मालूम न हो सका।

ज्योतिषीजी ने पूछा, "इसमें क्या है ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "इसके भीतर एक किल्ली है जिसके घुमाने से वह पत्थर बन्द हो जाता है जिस पर बाहर मैंने लात मारी थी और जिसके अन्दर सांप दिखाई पड़ा था। इस सूराख से सिर्फ उस पत्थर के बन्द करने का काम चलता है खुल नहीं सकता, खोलते समय इधर भी वही तरकीब करनी पड़ेगी जो दरवाज़े के बाहर की गई थी।"

दरवाज़ा बन्द कर ये लोग आगे बढ़े। मैदान में जाकर महारानी की गठरी खोल उन्हें होश में लाये और कहा, "हमारे साथ-साथ चली आइए। आपको महाराज के पास पहुंचा दें।" महारानी इन लोगों के साथ-साथ आगे बढ़ीं, तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, "बताइए चन्द्रकान्ता कहां है ?" ज्योतिषीजी ने कहा, "मैं पहले कभी इसके अन्दर आया नहीं जो सब जगहें मेरी देखी हों, आप आगे चलिए, महाराज शिवदत्त को ढूंढिए, चन्द्रकान्ता भी दिखाई दे जायेंगी।"

घूमते-फिरते महाराज शिवदत्त को ढूंढ़ते ये लोग उस नाले के पास पहुंचे जिसका हाल पहले भाग में लिख चुके हैं। एकाएक सभी की निगाह महाराज शिवदत्त पर पड़ी जो नाले के उस पार एक पत्थर के ढोंके पर खड़े ऊपर की तरफ मुंह किये कुछ देख रहे थे।

महारानी तो महाराज को देख दीवानी-सी हो गईं, किसी से कुछ न पूछा कि इस नाले में कितना पानी है या उस पार कैसे जाना होगा, झट कूद पड़ी। पानी थोड़ा ही था, पार हो गईं और दौड़ कर रोती हुई महाराज शिवदत्त के पैरों पर गिर पड़ी। महाराज ने उठाकर गले से

लगा लिया, तब तक तेजसिंह और ज्योतिषीजी भी नाले से पार हो महाराज शिवदत्त के पास आ पहुंचे।

ज्योतिषीजी को देखते ही महाराज ने पूछा, "क्यों जी, तुम यहां कैसे आए ? क्या तुम भी तेजसिंह के हाथ फंस गये ?" ज्योतिषीजी ने कहा, "नहीं, तेजसिंह के हाथ क्यों फंसेंगे, हां इन्होंने कृपा करके मुझे अपनी मंडली में मिला लिया है अब हम वीरेन्द्रसिंह की तरफ हैं आपसे कुछ वास्ता नहीं।"

ज्योतिषीजी की बात सुनकर महाराज को बड़ा गुस्सा आया, लाल-लाल आखें कर उनकी तरफ देखने लगे। ज्योतिषीजी ने कहा, "आप बेफायदा गुस्सा करते हैं, इससे क्या होगा ? जहां जी में आया, तहां रहे। जो अपनी इज़्ज़त करे उसी के साथ रहना ठीक है। आप खुद सोच लीजिए और याद कीजिए कि मुझको आपने कैसी-कैसी कड़ी बातें कही थीं। उस वक़्त यह भी न सोचा कि यह ब्राह्मण है। अब क्यों मेरी तरफ लाल आंखें करके देखते हैं!!"

ज्योतिषीजी की बातें सुन महाराज शिवदत्त ने सिर नीचा कर लिया और कुछ जवाब न दिया। इतने में एक बारीक आवाज़ आई-"तेजसिंह।"

तेजसिंह ने सिर उठाकर देखा जिधर से आवाज़ आई थी, चन्द्रकान्ता नज़र पड़ी जिसे देखते ही इनकी आंखों से आंसू निकल पड़े। हाय, क्या सूरत हो रही है, सिर के बाल खुले हैं, गुलाब-सा मुंह कुम्हला गया है, बदन पर मैल चढ़ी हुई, कपड़े फटे हुए हैं, पहाड़ के ऊपर एक छोटी-सी गुफा के बाहर खड़ी 'तेजसिंह, तेजसिंह' पुकार रही है।

तेजसिंह उस तरफ दौड़े और चाहा कि पहाड़ पर चढ़ कर कुमारी के पास पहुंच जायें मगर न हो सका, कहीं रास्ता न मिला, बहुत परेशान हुए लेकिन कोई काम न चला, लाचार होकर ऊपर चढ़ने के लिए कमन्द फेंकी मगर वह चौथाई दूर भी न गई, ज्योतिषीजी से कमन्द लेकर अपने कमन्द में जोड़कर फिर फेंकी, आधी दूर भी न पहुंची। हर तरह की तरकीबें कीं मगर कोई मतलब न निकला, लाचार होकर आवाज़ दी और पूछा, "कुमारी आप यहां कैसे आई ?"

तेजसिंह की आवाज़ कुमारी के कान तक बखूबी पहुंची मगर कुमारी की आवाज़ जो बहुत ही बारीक थी, तेजसिंह के कानों तक पूरी-पूरी न आई। कुमारी ने कुछ जवाब दिया, साफ-साफ तो समझ में न आया, हां इतना समझ पड़ा-"किस्मत आई तरह निकालो।"

हाय, हाय, कुमारी से अच्छी तरह बात भी नहीं कर सकते! यह सोच तेजसिंह बहुत घबराये, मगर इससे क्या हो सकता था। कुमारी ने कुछ और कहा जो बिलकुल समझ में न आया, हां यह मालूम होता था कि कोई बोल रहा है। तेज सिंह ने फिर आवाज़ दी और कहा, "आप घबराइए नहीं, कोई तरकीब निकालता हूं जिससे आप नीचे उतर आवे।" इसके जवाब में कुमारी मुंह से कुछ न बोली, उसी जगह एक जंगली पेड़ था जिसके पत्ते ज़रा बड़े और मोटे थे, एक पत्ता तोड़ लिया और एक छोटे नुकीले पत्थर की नोंक से उस

पत्ते पर कुछ लिखा, अपनी धोती में से थोड़ा कपड़ा फाड़ उसमें वह पत्ता और एक छोटा-सा पत्थर बांध इस अन्दाज़ से फेंका कि नाले के किनारे कुछ जल में गिरा। तेजसिंह ने उसे ढूंढ़ कर निकाला और गिरह खोली, पत्ते पर गौर से निगाह डाली, लिखा था, "तुम जाकर पहले कुमार को यहां ले आओ।"

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी को वह पत्ता दिखलाया और कहा, "आप यहां ठहरिए मैं जाकर कुमार को बुला लाता हूं तब तक आप भी कोई तरकीब सोचिए जिससे कुमारी नीचे उतर सकें।" ज्योतिषीजी ने कहा, "अच्छी बात है, तुम जाओ, मैं कोई तरकीब सोचता हूं।"

इस कैफियत को महारानी ने भी बखूबी देखा मगर यह जान न सकीं कि कुमारी ने पत्ते पर क्या लिख कर फेंका और तेजसिंह कहां चले गये, तो भी महारानी को चन्द्रकान्ता की बेबसी पर रुलाई आ गई और उसी तरफ टकटकी लगाकर देखती रहीं। तेजसिंह वहां से चल कर फाटक खोल-खोल के बाहर हुए और फिर दोहरा ताला लगा विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

उन्नीसवां बयान

जब से कुमारी चन्द्रकान्ता विजयगढ़ से गायब हुईं और महाराज शिवदत्त से लड़ाई लगी तब से महाराज जयसिंह और महल की औरतें तो उदास थीं ही, उनके सिवाय कुल विजयगढ़ की रियाया भी उदास थी, शहर में गम छाया हुआ था।

जब तेजसिंह और ज्योतिषीजी को कुमारी की खोज में भेज कुंवर वीरेन्द्रसिंह लौट-कर देवीसिंह के साथ विजयगढ़ आए तब सभी को यह आशा हुई कि राजकुमारी चन्द्रकान्ता भी आती होंगी, लेकिन जब कुमार की जुबानी महाराज जयसिंह ने पूरा-पूरा हाल सुना तो तबीयत और परेशान हुई। महाराज शिवदत्त के गिरफ्तार होने का हाल सुन कर तो खुशी हुई मगर जब नाले में से कुमारी का फिर गायब हो जाना सुना तो पूरी नाउम्मीदी हो गई। दीवान हरदयालसिंह वगैरह ने बहुत समझाया और कहा कि कुमारी अगर पाताल में भी होंगी तो तेजसिंह खोज निकालेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं, फिर भी महाराज के जी को भरोसा न हुआ। महल में महारानी की हालत तो और भी बुरी थी, खाना-पीना, बोलना बिलकुल छूट गया था, सिवाय रोने और कुमारी को याद करने के दूसरा कोई काम न था।

कई दिन तक कुमार विजयगढ़ में रहे, बीच में एक बार नौगढ़ जाकर अपने माता-पिता से भी मिल आए मगर तबीयत उनकी बिलकुल नहीं लगती थी, जिधर जाते थे उदासी ही दिखाई देती थी।

एक दिन रात को कुमार अपने कमरे में सोए थे, दरवाज़ा बन्द था, रात आधी से ज़्यादा जा चुकी थी, चन्द्रकान्ता की जुदाई में पड़े-पड़े कुछ सोच रहे थे, नींद बिलकुल नहीं आ रही थी, दरवाज़े के बाहर किसी के बोलने की आहट मालूम पड़ी बल्कि किसी के मुंह से 'कुमारी' ऐसा सुनने में आया। झट पलंग पर से उठ दरवाज़े के पास आये और किवाड़ के साथ कान लगा सुनने लगे, इतनी बातें सुनने में आई-

"मैं सच कहता हूं तुम मानो चाहे न मानो। पहले मुझे ज़रूर यकीन था कि कुमारी पर कुंवर वीरेन्द्रसिंह का प्रेम सच्चा है, मगर अब मालूम हो गया कि यह सिवाय विजयगढ़ का राज्य चाहने के कुमारी से मुहब्बत नहीं रखते, अगर सच्ची मुहब्बत होती तो ज़रूर खोज...."

इतनी बात सुनी थी कि दरबानों को कुछ चोर की आहट मालूम पड़ी, बातें करना छोड़ पुकार उठे, "कौन है ?" मगर कुछ मालूम न हुआ। बड़ी देर तक कुमार दरवाज़े के पास बैठे

रहे परन्तु फिर कुछ सुनने में न आया, हां इतना मालूम हुआ कि दरबानों में बातचीत हो रही थी।

कुमार और भी घबरा उठे, सोचने लगे कि जब दरबानों और सिपाहियों को यह विश्वास है कि कुमार चन्द्रकान्ता के प्रेमी नहीं हैं तो ज़रूर महाराज का भी यही खयाल होगा, बल्कि महल में महारानी भी यही सोचती होंगी। अब विजयगढ़ में मेरा रहना ठीक नहीं है, नौगढ़ जाने को भी जी नहीं चाहता क्योंकि वहां जाने से और भी लोगों के जी में बैठ जायेगा कि कुमारी की मुहब्बत नकली और झूठी थी। तब कहां जायें, क्या करें ? इन्हीं सब बातों को सोचते सवेरा हो गया।

आज कुमार ने स्नान-पूजा और भोजन से जल्दी छुट्टी कर ली। पहर दिन चढ़ा होगा, अपनी सवारी का घोड़ा मंगवाया और सवार हो क़िले के बाहर निकले। कई आदमी साथ हुए मगर कुमार के मना करने से रुक गये, लेकिन देवीसिंह ने साथ न छोड़ा, कुमार ने हज़ार मना किया पर एक न मानी, साथ चले ही गये। कुमार ने इस नीयत से घोड़ा तेज़ किया जिससे देवीसिंह पीछे छूट जायें और इनका भी साथ न रहे, मगर देवीसिंह ऐयारी में कुछ कम न थे, दौड़ने की आदत भी ज़्यादा थी, अस्तु घोड़े का संग न छोड़ा, इसके सिवाय पहाड़ी, जंगल की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन होने के सबब कुमार का घोड़ा भी उतना तेज़ नहीं जा सकता था जितना कि वे चाहते थे।

देवीसिंह बहुत थक गये, कुमार को भी उन पर दया आ गई। जी में सोचने लगे कि यह मुझसे बड़ी मुहब्बत रखता है। जब तक इसमें जान है मेरा संग न छोड़ेगा ऐसे आदमी को जान-बूझकर दुःख देना मुनासिब नहीं, कोई गैर तो है नहीं कि साथ रखने में किसी तरह की कड़वाहट हो। आखिर कुमार ने घोड़ा रोका और देवीसिंह की तरफ देखकर हंसे।

हांफते-हांफते देवीसिंह ने कहा, "भला कुछ यह भी तो मालूम हो कि आपका इरादा क्या है, कहीं सनक तो नहीं गये ?" कुमार घोड़े से उतर पड़े और बोले, "अच्छा इस घोड़े को चरने के लिए छोड़ो फिर हमसे सुनो कि हमारा क्या इरादा है।" देवीसिंह ने जीनपोश कुमार के लिए बिछाकर घोड़े को खोल चरने वास्ते छोड़ दिया और उनके पास बैठकर पूछा, "अब बताइए, आप क्या सोचकर विजयगढ़ से बाहर निकले" इसके जवाब में कुमार ने रात का सारा किस्सा कह सुनाया और कहा कि 'कुमारी का पता न लगेगा तो मैं विजयगढ़ या नौगढ़ न जाऊंगा।'

देवीसिंह ने कहा, "यह सोचना बिलकुल भूल है। हम लोगों से ज़्यादा आप क्या पता लगायेंगे ? तेजसिंह और ज्योतिषीजी खोजने गये ही हैं, मुझे भी हुक्म हो तो जाऊं! आपके किये कुछ न होगा। अगर आपको बिना कुमारी का पता लगाये विजयगढ़ जाना पसन्द नहीं तो नौगढ़ चलिये, वहां रहिये, जब पता लग जायेगा, विजयगढ़ चले जाइयेगा। अब आप अपने घर के पास भी आ पहुंचे हैं।" कुमार ने कुछ सोच के कहा, "यहां से मेरा घर बनिस्बत विजयगढ़ के दूर होगा कि नज़दीक ? मैं तो बहुत आगे बढ़ आया हूं।"

देवीसिंह ने कहा, "नहीं, आप भूलते हैं, न मालूम किस धुन में आप घोड़ा फेंके चले आये, पूरब-पश्चिम का ध्यान तो रहा ही नहीं, मगर मैं खूब जानता हूं कि नौगढ़ केवल दो कोस है, और वह देखिये, वह बड़ा-सा पीपल का पेड़ जो दिखाई देता है वह उस खोह के पास ही है जहां महाराज शिवदत्त क़ैद हैं। (तेजसिंह को आते देखकर) हैं.... "यह तेजसिंह कहां से चले आ रहे हैं, देखिये कुछ-न-कुछ पता ज़रूर लगा होगा!"

तेजसिंह दूर से आते दिखाई पड़े मगर कुमार से रहा न गया, खुद उनकी तरफ चले। तेजसिंह ने भी इन दोनों को देखा और कुमार को अपनी तरफ आता देखकर उनके पास पहुंचे। बेसब्री के साथ पहले कुमार ने यही पूछा, "क्या कुछ पता चला ?"

तेजसिंह: हां।

कुमार: कहां ?

तेजसिंह: चलिए दिखाये देता हूं।

इतना सुनते ही कुमार तेजसिंह से लिपट गये और बड़ी खुशी के साथ बोले, "चलो देखें।"

तेजसिंह: घोड़े पर सवार हो लीजिए, आप घबराते क्यों हैं, मैं तो आप ही को बुलाने जा रहा था मगर आप यहां आकर क्यों बैठे हें ?

कुमार: इसका हाल देवीसिंह से पूछ लेना, पहले वहां तो चलो।

देवीसिंह ने घोड़ा तैयार किया, कुमार सवार हुए। आगे-आगे तेजसिंह और देवीसिंह पीछे-पीछे कुमार रवाना हुए और थोड़ी ही देर में खोह के पास जा पहुंचे। तेजसिंह ने कहा, "लीजिए अब आपके सामने ही ताला खोलता हूं, मगर होशियार रहिएगा, कहीं ऐयार लोग आपको धोखा देकर इसका भी पता न लगा लें।" ताला खोला गया और तीनों आदमी अन्दर गये। जल्दी-जल्दी चलकर उस चश्मे के पास पहुंचे जहां ज्योतिषीजी बैठे हुए थे, उंगली के इशारे से बताकर तेजसिंह ने कहा, "देखिये वह ऊपर चन्द्रकान्ता खड़ी हैं।"

कुमारी चन्द्रकान्ता ऊंची पहाड़ी पर थीं, दूर से कुमार को आते देख मिलने के लिए बहुत घबराईं। यही कैफियत कुमार की भी थी, रास्ते का खयाल तो किया नहीं, ऊपर चढ़ने को तैयार हो गये, मगर क्या हो सकता था। तेजसिंह ने कहा, "आप घबराते क्यों हैं, ऊपर जाने के लिए रास्ता होता तो आपको यहां लाने की ज़रूरत ही क्या थी, कुमारी ही को न ले जाते ?"

दोनों की टकटकी बंध गई। कुंवर वीरेन्द्रसिंह कुमारी को देखने लगे और वह इनको, दोनों ही की आंखों से आंसू की नदी बह चली। कुछ करते नहीं बनता। हाय क्या टेढ़ा मामला है! जिसके वास्ते घर-बार छोड़ा, जिसके मिलने की उम्मीद में पहले ही जान से हाथ धो बैठे, जिसके लिए हजारों सिर कटे, जो महीनों से गायब रहकर आज दिखाई पड़ी उससे मिलना तो दूर रहा अच्छी तरह बातचीत भी नहीं कर सकते, ऐसे समय में उन दोनों की क्या दशा थी, वे ही जानते होंगे।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी की तरफ देखकर पूछा, "क्यों, आपने कोई तरकीब सोची ?" ज्योतिषीजी ने जवाब दिया, "अभी तक कोई तरकीब नहीं सूझी मगर मैं इतना ज़रूर कहूंगा कि बिना कोई भारी कार्रवाई किये कुमारी को ऊपर से उतारना मुश्किल है। जिस तरह से वे आई हैं उसी तरह बाहर होंगी, दूसरी तरकीब कभी पूरी नहीं हो सकती। मैंने रमल से भी राय ले ली थी, वह भी यही कहता है, सो अब जिस तरह हो सके कुमारी से यह पूछें, और मालूम करें कि वह किस राह से यहां तक आईं ? तब हम लोग ऊपर चल कर कोई काम करें। यह मामला तिलिस्म का है, खेल नहीं है।"

तेजसिंह ने इस बात को पसन्द किया, कुमारी से पुकार कर कहा, "आप घबरायें नहीं, जिस तरह से पहले आपने पत्ते पर लिखकर फेंका था उसी तरह अब फिर संक्षेप में यह लिखकर फेंकिये कि आप किस राह से वहां पहुंची हैं।"

बीसवां बयान

चपला तहखाने में उतरी। नीचे एक लम्बी-चैड़ी कोठरी नज़र आई जिसमें चैखट के सिवाय किवाड़ के पल्ले नहीं थे। पहले चपला ने उसे खूब गौर करके देखा, फिर अन्दर गई। दरवाज़े के भीतर पैर रखते ही ऊपर वाले चैखट के बीचोंबीच से लोहे का तख्ता बड़े ज़ोर के साथ गिर पड़ा। चपला ने चैंककर पीछे देखा तो दरवाज़ा बन्द पाया। सोचने लगी- "यह कोठरी है कि मूसेदानी ? दरवाज़ा इसका बिलकुल चूहेदानी की तौर पर है। अब क्या करें ? और कोई रास्ता कहीं जाने का मालूम नहीं पड़ता, बिलकुल अंधेरा हो गया, हाथ-को-हाथ दिखाई नहीं पड़ता!" चपला अंधेरे में चारों तरफ घूमने और टटोलने लगी।

घूमते-घूमते चपला का पैर गड्ढे में जा पड़ा, साथ ही इसके कुछ आवाज़ हुई और दरवाज़ा खुल गया। कोठरी में चांदनी भी पहुंच गयी। यह वह दरवाज़ा नहीं था जो पहले बन्द हुआ था बल्कि एक दूसरा ही दरवाज़ा था, चपला ने पास जाकर देखा, इसमें भी कहीं किवाड़ के पल्ले नहीं दिखाई पड़े। आखिर उस दरवाज़े की राह से कोठरी के बाहर हो एक बाग में पहुंची। देखा कि छोटे-छोटे फूलों के पेड़ों में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। एक तरफ से छोटी नहर के ज़रिये से पानी अन्दर पहुंच कर बाग में छिड़काव का काम कर रहा है मगर क्यारियां इसमें की कोई दुरुस्त नहीं हैं। सामने एक बारादरी नज़र आई। धीरे घूमती वहां पहुंची।

यह बारादरी बिलकुल स्याह पत्थर से बनी हुई थी। छत, जमीन, खंभे सब स्याह पत्थर के थे। बीच में संगमरमर के सिंहासन पर हाथ भर का एक सुर्ख चैखुंटा पत्थर रखा हुआ था। चपला ने उसको देखा, उस पर यह खुदा हुआ था-"यह तिलिस्म है, इसमें फंसने वाला कभी निकल नहीं सकता, हां अगर कोई इसको तोड़े तो सब क़ैदियों को छुड़ा ले और दौलत भी उसके हाथ लगे। तिलिस्म तोड़ने वाले के बदन में खूब ताकत भी होनी चाहिए नहीं तो मेहनत व्यर्थ है।"

चपला को इसे पढ़ने के साथ ही यकीन हो गया कि अब जान गई, जिस राह से मैं आई हूं उस राह से बाहर जाना कभी नहीं हो सकता। कोठरी का दरवाज़ा बन्द हो गया, बाहर वाले दरवाज़े को कमन्द से बांधना व्यर्थ हुआ मगर शायद वह दरवाज़ा खुला हो जिससे इस बाग में आई हूं। यह सोचकर चपला फिर उस दरवाज़े की तरफ गई, मगर उसका कोई निशान तक न मिला, यह भी नहीं मालूम हुआ कि किस जगह दरवाज़ा था। फिर लौटकर उसी बारहदरी में पहुंची और सिंहासन के पास गई, जी में आया कि इस पत्थर को उठा लूं।

अगर किसी तरह बाहर निकलने का मौका मिला तो इसको भी साथ लेती जाऊंगी, लोगों को दिखाऊंगी। वह पत्थर उठाने के लिए झुकी, मगर उस पर हाथ रखा ही था कि बदन में सनसनाहट पैदा हुई और सिर घूमने लगा, यहां तक कि बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

जब तक दिन बाकी था चपला बेहोश पड़ी रही। शाम होते-होते होश में आई। उठकर नहर के किनारे गई, हाथ-मुंह धोया, जी ठिकाने हुआ। उस बाग में अंगूर बहुत लगे हुए थे मगर उदासी और घबराहट के सबब चपला ने एक दाना भी न खाया, फिर उसी बारहदरी में पहुंची। रात हो गई और धीरे-धीरे वह बारहदरी चमकने लगी। जैसे-जैसे रात बीतती जाती थी बारहदरी की चमक भी बढ़ती जाती थी। छत, दीवार, ज़मीन और खम्भे सब चमक रहे थे, कोई जगह उस बारहदरी में ऐसी न थी जो दिखाई न देती हो, बल्कि उसकी चमक से सामने वाला थोड़ा हिस्सा बाग का भी उजियाला हो रहा था।

यह चमक काहे की है, इसको जानने के लिए चपला ने जमीन, दीवार और खम्भों पर हाथ फेरा मगर कुछ समझ में न आया। ताज्जुब, डर और नाउम्मीदी ने चपला को सोने न दिया, तमाम रात जागते ही बीती। कभी दीवार टटोलती, कभी उस सिंहासन के पास जा उस पत्थर को गौर से देखती जिसके छूने से बेहोश हो गई थी।

सवेरा हुआ, चपला फिर बाग में घूमने लगी। उस दीवार के पास पहुंची जिसके नीचे से बाग में नहर आई थी। सोचने लगी, "दीवार बहुत चैड़ी नहीं है नहर का मुंह भी खुला है, इस राह से बाहर हो सकती हूं, आदमी के जाने लायक रास्ता बखूबी है।" बहुत सोचने और विचारने के बाद चपला ने यही किया, कपड़े सहित नहर में उतर गई, दीवार से उस तरफ हो जाने के लिए गोता मारा। काम पूरा हो गया अर्थात् उस दीवार के बाहर हो गई। पानी से सिर निकालकर देखा तो नहर को बाग के भीतर की बनिस्बत चैड़ा पाया। पानी के बाहर निकली और देखा कि दूर सब तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़ दिखाई देते हैं। जिनके बीचोंबीच से यह नहर आई है और दीवार के नीचे से होकर बाग कें अन्दर गई है।

चपला ने अपने कपड़े धूप में सुखाए, ऐयारी का बटुआ भीगा न था, क्योंकि उसका कपड़ा रोगनी था। जब सब तरह से लैस हो चुकी, वहां से सीधे रवाना हुई। दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़, बीच में नाला, किनारे पारिजात के पेड़ लगे हुए, पहाड़ के ऊपर किसी तरफ चढ़ने की जगह नहीं, अगर चढ़े भी तो थोड़ी दूर ऊपर जाने के बाद फिर उतरना पड़े। चपला नाले के किनारे रवाना हुई। दोपहर दिन चढ़ने तक लगभग तीन कोस चली गई। आगे जाने के लिए रास्ता न मिला, क्योंकि सामने से भी एक पहाड़ ने रास्ता रोक रखा था जिसके ऊपर से गिरने वाला पानी का झरना नीचे नाले में आकर बहता था। पहाड़ी के नीचे एक दालान था जो अन्दाज़ में दस गज लम्बा और गज भर चैड़ा होगा। गौर के साथ देखने से मालूम होता था कि पहाड़ काट के बनाया गया है। इसके बीचोंबीच में पत्थर का एक अज़दहा था जिसका मुंह खुला था और आदमी उसके पेट में बखूबी जा सकता था। सामने एक लम्बा-चैड़ा संगमरमर का साफ चिकना पत्थर भी ज़मीन पर जमाया हुआ था।

अज़दहे को देखने के लिए चपला उसके पास गई। संगमरमर के पत्थर पर पैर रखा ही था कि धीरे-धीरे अज़दहे ने दम खींचना शुरू किया, और कुछ ही देर बाद यहां तक तेजी से दम खींचा कि चपला का पैर न जम सका, वह खिंचकर उसके पेट में चली गई, साथ ही बेहोश भी हो गई।

जब चपला होश में आई उसने अपने को एक कोठरी में पाया जो बहुत तंग सिर्फ दस बारह आदमियों के बैठने लायक होगी। कोठरी के बगल में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। चपला थोड़ी देर तक अचम्भे में भरी हुई बैठी रही। तरह-तरह के खयाल उसके जी में पैदा होने लगे, अक्ल चकरा गई कि यह क्या मामला है। आखिर चपला ने अपने को सम्हाला और सीढ़ी के रास्ते छत पर चढ़ गई, जाते ही सीढ़ी का दरवाज़ा बन्द हो गया, नीचे उतरने की जगह न रही। इधर-उधर देखने लगी। चारों तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़ सामने एक छोटी-सी खोह नज़र पड़ी जो बहुत अंधेरी न थी क्योंकि आगे की तरफ से उसमें रोशनी पहुंच रही थी।

चपला लाचार होकर उस खोह में घुसी। थोड़ी ही दूर जाकर एक छोटा-सा दालान मिला, यहां पहुंचकर देखा कि कुमारी चन्द्रकान्ता बहुत से बड़े-बड़े पत्ते आगे रखे हुए बैठी हैं और पत्ते पर पत्थर की नोंक से कुछ लिख रही हैं। नीचे झांककर देखा तो बहुत ढलवां पहाड़ी, उतरने की जगह नहीं, उसके नीचे कुंवर वीरेन्द्रसिंह और ज्योतिषीजी खड़े ऊपर की तरफ देख रहे हैं।

कुमारी चन्द्रकान्ता के कानों में चपला के पैर की आहट पहुंची। फिर के देखा, पहचानते ही उठ खड़ी हुई और बोली, "वाह सखी, खूब पहुंची। देख सब कोई नीचे खड़े हैं। कोई ऐसी तरकीब नज़र नहीं आती कि मैं उन तक पहुंचूं। उन लोगों की आवाज़ मेरे कान तक पहुंचती है मगर मेरी आवाज़ कोई नहीं सुनता। तेजसिंह ने पूछा है कि तुम किस राह से यहां आई हो, उसी का ज़वाब इस पत्ते पर लिख रही हूं, इसे नीचे फेंकूंगी।"

चपला ने पहले खूब ध्यान करके चारों तरफ देखा, नीचे उतरनेकी कोई तरकीब नज़र न आई तब बोली, "कोई ज़रूरत पत्ते पर लिखने की नहीं है। मैं पुकार के कहे देती हूं, मेरी आवाज़ वे लोग बखूबी सुनेंगे, पहले यह बताओ तुम्हें बगुला निगल गया था या किसी दूसरी राह से आई हो ?"

कुमारी ने कहा, "हां, मुझको वही बगुला निगल गया था जिसको तुमने खण्डहर में देखा होगा, शायद तुमको भी वही बगुला निगल गया हो!" चपला ने कहा, "नहीं, मैं दूसरी राह से आई हूं, पहले उस खण्डहर का पता इन लोगों को दे लूं तब बातें करूं, जिससे ये लोग भी कोई बन्दोबस्त हम लोगों को छुड़ाने का करें। जहां तक मैं सोचती हूं, मालूम होता है कि हम लोग कई दिनों तक यहां फंसे रहेंगे, खैर, जो होगा देखा जायेगा।"

इक्कीसवां बयान

कुमारी के पास आते हुए चपला को नीचे से कुंवर वीरेन्द्रसिंह वगैरह सभी ने देखा। ऊपर से चपला पुकार कर कहने लगी, "जिस खोह में हम लोगों को शिवदत्त ने क़ैद किया था उसके लगभग सात कोस दक्षिण में एक पुराने खण्डहर में एक बड़ा भारी पत्थर का करामाती बगुला है, वही कुमारी को निगल गया था। वह तिलिस्म किसी तरह टूटे तो हम लोगों की जान बचे, दूसरी कोई तरकीब हम लोगों के छूटने की नहीं हो सकती। मैं बहुत सम्हल कर उस तिलिस्म में गई थी पर तो भी फंस गई। तुम लोग जाना तो बहुत होशियारी के साथ उसको देखना। मैं यह नहीं जानती कि वह खोह चुनार से किस तरफ है हम लोगों को दुष्ट शिवदत्त ने क़ैद किया था।"

चपला की बात बखूबी सभी ने सुनी, कुमार को महाराज शिवदत्त पर बड़ा ही गुस्सा आया, सामने मौजूद ही थे, कहीं ढूंढ़ने जाना तो था ही नहीं, तलवार खींच मारने के लिए झपटे। महाराज शिवदत्त की रानी, जो उन्हीं के पास बैठी सब तमाशा देखती और बातें सुनती थी, कुंवर वीरेन्द्रसिंह को तलवार खींच करके महाराज शिवदत्त की तरफ झपटते देख दौड़कर कुमार के पैरों पर गिर पड़ी और बोली, "पहले मुझको मार डालिये, क्योंकि मैं विधवा होकर मुर्दों से बुरी हालत में नहीं रह सकती!" तेजसिंह ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और बहुत कुछ समझा-बुझाकर ठंडा किया। कुमार ने तेजसिंह से कहा, "अगर मुनासिब समझो और हर्ज़ न हो तो कुमारी के मां-बाप को भी यहां लाकर कुमारी का मुंह दिखला दो, भला कुछ उन्हें भी तो ढाढस हो।" तेजसिंह ने कहा, "यह कभी नहीं हो सकता, इस तहखाने को आप मामूली न समझिये, जो कुछ कहना चाहिये" मुंहजुबानी सब हाल उनको समझा दिया जायेगा, अब यह फिक्र करनी चाहिये जिससे कुमारी की जान छूटे। चलिये सब कोई महाराज जयसिंह को यह हाल कहते हुए उस खण्डहर तक चलें जिसका पता चपला ने दिया है।"

यह कह तेजसिंह ने चपला को पुकारकर कहा, "देखो, हम लोग उस खण्डहर की तरफ जाते हैं। क्या जाने कितने दिन उस तिलिस्म को तोड़ने में लगें। तुम राजकुमारी को ढाढ़स देती रहना, किसी तरह की तकलीफ न होने पाये। क्या करें, कोई ऐसी तरकीब नज़र नहीं आती कि कपड़े या खाने-पीने की चीजें तुम तक पहुंचाई जायें।"

चपला ने ऊपर से जवाब दिया, "कोई हर्ज़ नहीं, खाने की कुछ तकलीफ न होगी क्योंकि इस जगह बहुत से मेवों के पेड़ हैं, और पत्थरों में से छोटे-छोटे कई झरने पानी के ज़ारी हैं।

आप लोग बहुत होशियारी से काम कीजियेगा। इतना मुझे मालूम हो गया कि बिना कुमार के यह तिलिस्म नहीं टूटने का, मगर तुम लोग भी इनका साथ मत छोड़ना, बड़ी हिफाज़त रखना!"

महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को उसी तहखाने में छोड कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी चारों आदमी वहां से बाहर निकले। दोहरा ताला लगा दिया। इसके बाद हाल कहने के लिए कुमार ने देवीसिंह को नौगढ़ अपने मां-बाप के पास भेज दिया और यह भी कह दिया कि नौगढ़ से होकर कल ही तुम लौट के विजयगढ़ आ जाना, हम लोग वहां चलते हैं। तुम आओगे तब कहीं जायेंगे। यह सुन देवीसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

सवेरे ही से कुंवर वीरेन्द्रसिंह विजयगढ़ से गायब थे, बिना किसी को कुछ कहे चल पड़े थे इसलिए महाराज जयसिंह बहुत ही उदास हो कई जासूसों को चारों तरफ खोजने के लिए भेज चुके थे। शाम होते-होते ये लोग विजयगढ़ पहुंचे, महाराज से मिले। महाराज ने कहा, "कुमार, तुम इस तरह बिना कहे-सुने जहां जी में आता है वहां चले जाते हो, हम लोगों को इससे तकलीफ होती है, ऐसा न किया करो।"

इसका ज़वाब कुमार ने कुछ न दिया मगर तेजसिंह ने कहा, "महाराज ज़रूरत ही ऐसी थी कि कुमार को बड़े सवेरे यहां से जाना पड़ा, उस वक़्त आप आराम में थे, इसलिए कुछ कह न सके" बाद इसके तेजसिंह ने कुल हाल, लड़ाई से चुनार जाना, महाराज शिवदत्त की रानी को चुराना, खोह में कुमारी का पता लगाना, ज्योतिषीजी की मुलाकात, बर्देफरोशों की कैफियत, उस तहखाने में कुमारी और चपला को देख उनकी जुबानी तिलिस्म का हाल सुनना आदि सब कुछ हाल पूरा-पूरा ब्यौरेवार कह सुनाया, आखिर में यह भी कहा कि अब हम लोग तिलिस्म तोड़ने जाते हैं।

इतना लम्बा-चैड़ा हाल सुनकर महाराज हैरान हो गये। बोले, "तुम लोगों ने बड़ा ही काम किया, इसमें कोई शक नहीं। हद के बाहर काम किया, अब तिलिस्म तोड़ने की तैयारी है, मगर वह तिलिस्म दूसरे के राज्य में है। चाहे वहां का राजा तुम्हारे यहां क़ैद हो तो भी पूरे सामान के साथ तुम लोगों को जाना चाहिए, मैं भी तुम लोगों के साथ चलूं तो ठीक हो।"

तेजसिंह ने कहा, "आपके तकलीफ करने की कोई ज़रूरत नहीं है, थोड़ी फौज़ साथ जायेगी, वही बहुत है।" महाराज ने कहा, "ठीक है, मेरे जाने की कोई ज़रूरत नहीं, मगर इतना होगा कि चलकर उस तिलिस्म को मैं भी देख आऊंगा।" तेजसिंह ने कहा, "जैसी मर्ज़ी।" महाराज ने दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'हमारी आधी फौज़ और कुमार की कुल फौज़ रात भर में तैयार हो जाये, कल यहां से चुनार की तरफ कूच होगा।'

बमूजिब हुक्म के सब इन्तज़ाम दीवान साहब ने कर दिया, दूसरे दिन नौगढ़ से लौटकर देवीसिंह भी आ गये। बड़ी तैयारी के साथ चुनार की तरफ तिलिस्म तोड़ने के लिए कूच हुआ। दीवान हरदयालसिंह विजयगढ़ में छोड़ दिये गये।

बाईसवां बयान

चार दिन रास्ते में लगे, पांचवें दिन चुनार की सरहद में फौज़ पहुंची। महाराज शिवदत्त के दीवान ने यह खबर सुनी तो घबरा उठा, क्योंकि महाराज शिवदत्त तो क़ैद हो ही चुके थे, लड़ने की ताकत किसे थी। बहुत-सी नज़र वगैरह लेकर महाराज जयसिंह से मिलने के लिए हाज़िर हुआ। खबर पाकर महाराज ने कहला भेजा कि "मिलने की कोई ज़रूरत नहीं, हम चुनार फतह करने नहीं आये हैं क्योंकि जिस दिन तुम्हारे महाराज हमारे हाथ फंसे उसी रोज़ चुनार फतह हो गया, हम दूसरे काम को आये हैं, तुम और कुछ मत सोचो।"

लाचार होकर दीवान साहब को वापस जाना पड़ा, मगर यह मालूम हो गया कि फलां काम के लिए आये हैं। आज तक उस तिलिस्म का हाल किसी को भी मालूम न था, बल्कि किसी ने उस खण्डहर को देखा तक न था। आज यह मशहूर हो गया कि इस इलाके में कोई तिलिस्म है जिसको कुंवर वीरेन्द्रसिंह तोड़ेंगे। उस तिलिस्मी खण्डहर का पता लगाने के लिए बहुत से जासूस इधर-उधर भेजे गये। तेजसिंह और ज्योतिषीजी भी गये। आखिर उसका पता लग ही गया। दूसरे दिन मय फौज़ के सभी का डेरा उसी जंगल में जा लगा जहां यह तिलिस्मी खण्डहर था।

तेइसवां बयान

महाराज जयसिंह, कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी खण्डहर की सैर करने के लिए उसके अन्दर गये। जाते ही यकीन हो गया कि बेशक यह तिलिस्म है। हर एक तरफ वे लोग घुसे और एक-एक चीज को अच्छी तरह देखते-भालते बीच वाले बगुले के पास पहंचे। चपला की जुबानी यह तो सुन ही चुके थे कि वही बगुला कुमारी को निगल गया था, इसलिए तेजसिंह ने किसी को उसके पास जाने न दिया, खुद गये। चपला ने जिस तरह इस बगुले को आजमाया था उसी तरह तेजसिंह ने भी आजमाया।

महाराज इस बगुले का तमाशा देखकर बहुत हैरान हुए। इसका मुंह खोलना, पर फैलाना, और अपने पीछे वाली चीज को उठाकर निगल जाना सभी ने देखा और अचम्भे में आकर बनाने वाले की तारीफ करने लगे। इसके बाद उस तहखाने के पास आये जिसमें चपला उतरी थी। किवाड़ के पल्ले को कमन्द से बंधा हुआ देख तेजसिंह को मालूम हो गया कि यह चपला कि कार्रवाई है और ज़रूर यह कमन्द भी चपला की है, क्योंकि इसके एक सिरे पर उसका नाम खुदा हुआ है, मगर इस किवाड़ का बांधना बेफायदा हुआ क्योंकि इसमें घुसकर चपला निकल न सकी।

कुएं को भी बखूबी देखते हुए उस चबूतरे के पास आये जिस पर पत्थर का आदमी हाथ में किताब लिये सोया हुआ था। चपला की तरह तेजसिंह ने भी यहां धोखा खाया। चबूतरे के ऊपर चढ़ने वाली सीढ़ी पर पैर रखते ही उसके ऊपर का पत्थर आवाज़ देकर पल्ले की तरह खुला और तेजसिंह धम्म से ज़मीन पर गिर पड़े। इनके गिरने पर कुमार को हंसी आ गई, मगर देवीसिंह बड़े गुस्से में आये। कहने लगे, "सब शैतानी इसी आदमी की है जो इस पर सोया है, अभी मैं इसकी खबर लेता हूं।" यह कह कर उछल के बड़े ज़ोर से एक धौल उसके सिर पर जमाई। धौल का लगना था कि वह पत्थर का आदमी उठ बैठा, मुंह खोल दिया, हाथी की तरह उसके मुंह से हवा निकलने लगी, थोड़ी ही देर में बड़ी भारी आवाज़ हुई और सारा मकान हिलने लगा। मालूम होता था कि भूकम्प आया है, सभी की तबीयत घबरा गई। ज्योतिषीजी ने कहा, "जल्दी इस मकान से बाहर भागो, ठहरने का मौका नहीं है!"

इस दालान से दूसरे दालान में होते हुए सब-के-सब भागे। भागने के वक़्त ज़मीन हिलने के सबब किसी का पैर सीधा नहीं पड़ता था। खण्डहर के बाहर हो दूर से खड़े होकर उसकी

तरफ देखने लगे। पूरे मकान को हिलते देखा। दो घंटे वक यह कैफियत रही और तब तक खण्डहर की इमारत का हिलना बन्द न हुआ।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से कहा, "आप रमल और नजूम से पता लगाइये कि यह तिलिस्म किस तरह और किसके हाथ से टूटेगा ?" ज्योतिषीजी ने कहा, "आज दिन भर आप लोग सब्र कीजिये और जो कुछ सोचना हो सोचिये, रात को मैं सब हाल रमल से दरियाफ्त कर लूंगा, फिर कल जैसा मुनासिब होगा किया जायेगा। मगर यहां कई रोज़ लगेंगे, महाराज का रहना ठीक नहीं है, बेहतर है कि ये विजयगढ़ जायें।" इस राय को सभी ने पसन्द किया। कुमार ने महाराज से कहा, "आप सिर्फ इस खण्डहर को देखने आये थे सो देख चुके, अब जाइये। आपका यहां रहना मुनासिब नहीं।"

महाराज विजयगढ़ जाने पर राज़ी न थे, मगर सभी के ज़िद करने से कबूल किया। कुमार की जितनी फौज़ थी उसको, और अपनी जितनी फौज़ साथ आई थी उसमें से भी आधी फौज़ उसी जगह छोड़ बाकी साथ ले विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

चौबीसवां बयान

रात भर जगन्नाथ ज्योतिषी रमल फेंकने और विचार करने में लगे रहे, कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और देवीसिंह भी रात भर पास ही बैठे रहे। सब बातों को देखभाल कर ज्योतिषीजी ने कहा, "रमल से मालूम होता है कि इस तिलिस्म के तोड़ने की तरकीब एक पत्थर पर खुदी हुई है और वह पत्थर भी इसी खण्डहर में किसी जगह गड़ा हुआ है। उसकी तलाश करके निकालना चाहिये तब सब पता लगेगा। स्नान-पूजा से छुट्टी पा कुछ खा-पीकर इस तिलिस्म में घूमना चाहिए, ज़रूर उस पत्थर का भी पता लगेगा।"

सब कामों से छुट्टी पाकर दोपहर को सब लोग खण्डहर में घुसे। देखते-भालते उसी चबूतरे के पास पहुंचे जिस पर पत्थर का वह आदमी सोया हुआ था जिसे देवीसिंह ने धौल जमाई थी। उस आदमी को फिर उसी जगह सोता पाया।

ज्योतिषी ने तेजसिंह से कहा, "यह देखो, ईंटों का ढेर लगा हुआ है, शायद इसे चपला ने इकट्ठा किया हो और इसके ऊपर चढ़कर इस आदमी को देखा हो। तुम भी इस पर चढ़के खूब गौर कर देखो तो सही, किताब में जो इसके हाथ में है क्या लिखा है ?" तेजसिंह ने ऐसा ही किया और उर्स इंट के ढेर पर चढ़कर देखा। उस किताब में लिखा था-

8 पहल-5-अंक

6 हाथ-4-अंगुल

जमा पूंजी-0-जोड़ ठीक नाप तोड़।

तेजसिंह ने ज्चोतिषीजी को समझाया कि इस पत्थर की किताब में ऐसा लिखा है, मगर इसका मतलब क्या है कुछ समझ में नहीं आता। ज्योतिषीजी ने कहा, "मतलब भी मालूम हो जायेगा, तुम एक काग़ज़ पर इसकी नकल उतार लो।" तेजसिंह ने अपने बटुए में से काग़ज़, कलम, दवात निकाल उस पत्थर की किताब में जो लिखा था उसकी नकल उतार ली।

ज्योतिषीजी ने कहा, "अब घूम कर देखना चाहिए कि इस मकान में कहीं आठ पहल का कोई खंभा या चबूतरा किसी जगह पर है या नहीं।" सब कोई उस खण्डहर में घूम-घूमकर आठ पहल का खम्भा या चबूतरा तलाश करने लगे। घूमते-फिरते उस दालान में पहुंचे जहां तहखाना था। एक सिरा कमन्द का तहखाने के किवाड़ के साथ और दूसरा सिरा जिस खम्भे के साथ बंधा हुआ था, उस खम्भे को आठ पहल का पाया। उस खम्भे के ऊपर कोई छत न थी, ज्योतिषीजी ने कहा, "इसकी लम्बाई हाथ से नापनी चाहिए।" तेजसिंह ने नापा,

6 हाथ 7 अंगुल हुआ, देवीसिंह ने नापा, 6 हाथ 5 अंगुल हुआ बाद इसके ज्योतिषीजी ने नापा 6 हाथ 10 अंगुल पाया, इसके बाद कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने नापा, 6 हाथ 4 अंगुल हुआ।

ज्योतिषीजी ने खुश होकर कहा, "बस यही खंभा है, इसी का पता इस किताब में लिखा है, इसी के नीचे 'जमा पूंजी' यानी वह पत्थर जिसमें तिलिस्म तोड़ने की तरकीब लिखी हुई है, गड़ा है। यह भी मालूम हो गया कि यह तिलिस्म कुमार के हाथ से टूटेगा, क्योंकि उस किताब में जिसकी नकल कर लाये हैं इसका नाप 6 हाथ 4 अंगुल लिखा है! सो कुमार ही के हाथ से हुआ, इससे मालूम होता है कि यह तिलिस्म कुमार ही के हाथ से फतह भी होगा। अब इस कमन्द को खोल डालना चाहिए जो इस खंभे और किवाड़ के पल्ले से बंधी हुई है।"

तेजसिंह ने कमन्द खोलकर अलग किया, ज्योतिषी ने तेजसिंह की तरफ देख के कहा, "बस, बात तो मिल गई, आठ पहल भी हुआ और नाप से 6 हाथ 4 अंगुल भी है, यह देखिये, इस तरफ 5 अंक भी दिखाई देता है बाकी रह गया 'ठीक नाप तोड़' सो कुमार के हाथ से इसका नाप भी ठीक हुआ, अब यही इसको तोड़े!"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने उसी जगह से एक बड़ा भारी पत्थर (चूने का ढोंका) ले लिया जिसका मसाला सख्त और मज़बूत था। इसी ढोंके को ऊंचा करके ज़ोर से उस खम्भे पर मारा जिससे वह खम्भा हिल उठा। दो-तीन दफे में बिलकुल कमज़ोर हो गया, तब कुमार ने बगल में दबाकर ज़ोर किया और ज़मीन से निकाल डाला। खम्भा उखाड़ने पर उसके नीचे एक लोहे का संदूक निकला जिसमें ताला लगा हुआ था। बड़ी मुश्किल से इसका भी ताला तोड़ा। भीतर एक और संदूक निकला। उसका भी ताला तोड़ा। इसी तरह दर्ज़े-बदर्ज़े सात संदूक उसमें से निकले। सातवें सन्दूक में एक पत्थर निकला जिस पर कुछ लिखा हुआ था, कुमार ने उसे निकाल लिया और पढ़ा, यह लिखा था-

"सम्हाल के काम करना, तिलिस्म तोड़ने में जल्दी मत करना, अगर तुम्हारा नाम वीरेन्द्रसिंह है तो यह दौलत तुम्हारे ही लिये है।"

"बगुले के मुंह की तरफ ज़मीन पर जो पत्थर संगमरमर का जड़ा है वह पत्थर नहीं, मसाला जमा हुआ है। उसको उखाड़ कर सिरके में खूब महीन पीस कर बगुले के सारे अंग पर लेप कर दो। वह भी मसाले का ही बना हुआ है, दो घंटे में वह बिलकुल गल कर बह जायेगा। उसके नीचे जो कुछ तार, चर्खे, पहिये, पुर्ज़े हों सब तोड़ डालो। नीचे एक कोठरी मिलेगी जिसमें बगुले के बिगड़ जाने से बिलकुल उजाला हो गया होगा। उस कोठरी से एक रास्ता नीचे उस कुएं में गया है जो पूरब वाले दालान में है। वहां भी मसाले से बना एक बुड्ढा आदमी हाथ में किताब लिये दिखाई देगा। उसके हाथ से किताब ले लो, मगर एकाएक मत छीनो नहीं तो धोखा खाओगे। पहले उसका दाहिना बाजू पकड़ो, वह मुंह खोल देगा। उसका मुँह काफूर से खूब भर दो, थोड़ी ही देर में वह भी गल के बह जायेगा, तब किताब ले लो। उसके सब पन्ने भोजपत्र के होंगे। जो कुछ उसमें लिखा है वैसा करो।-विक्रम!"

कुमार ने पढ़ा, सभी ने सुना। घंटे भर तक तो सिवाय तिलिस्म बनाने वाले की तारीफ के किसी की जुबान से दूसरी बात न निकली। बाद इसके यह राय ठहरी कि अब दिन भी थोड़ा रह गया है, डेरे में चलकर आराम किया जाये, कल सवेरे ही कुल कामों से छुट्टी पाकर तिलिस्म की तरफ झुकंे।

यह खबर चारों तरफ मशहूर हो गई कि चुनारगढ़ के इलाके में कोई तिलिस्म है जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला फंस गई हैं, उनको छुड़ाने और तिलिस्म तोड़ने के लिए कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने मय फौज़ के उस जगह डेरा डाला है।

तिलिस्म किसको कहते हैं ? वह क्या चीज है ? उसमें आदमी कैसे फंसता है ? कुंवर वीरेन्द्रसिंह उसे क्योंकर तोड़ेंगे ? इत्यादि बातों को जानने और देखने के लिए दूर-दूर के बहुत से आदमी उस जगह इकट्ठे हुए जहां कुमार का लश्कर उतरा हुआ था, मगर खौफ़ के मारे खंडहर के अन्दर कोई पैर नहीं रखता था, सब बाहर से ही देखते थे।

कुमार के लश्कर वालों ने घूमते-फिरते कई नकाबपोश सवारों को भी देखा जिनकी खबर उन लोगों ने कुमार तक पहुंचाई।

पंडित बद्रीनाथ, अहमद और नाज़िम को साथ लेकर महाराज शिवदत्त को छुड़ाने गये थे, तहखाने में शेर के मुंह से जुबान खींच किवाड़ खोलना चाहा मगर न खुल सका, क्योंकि यहां तेजसिंह ने दोहरा ताला लगा दिया था। जब कोई काम न निकला तब वहां से लौटकर विजयगढ़ गये, ऐयारी की फिक्र में थे कि यह खबर कुंवर वीरेन्द्रसिंह की इन्होंने भी सुनी। लौट कर इसी जगह पहुंचे। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल भी उसी ठिकाने जमा हुए और इन सभी की यह राय होने लगी कि किसी तरह तिलिस्म तोड़ने में बाधा डालनी चाहिए। इसी फिक्र में ये लोग भेष बदल कर इधर-उधर तथा लश्कर में घूमने लगे।

पच्चीसवां बयान

दूसरे दिन स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी फिर उस खण्डहर में घुसे, सिरका साथ में लेते गये। कल जो पत्थर निकला था उस पर जो कुछ लिखा था फिर पढ़के याद कर लिया और उसी लिखने के अनुसार काम करने लगे। बाहर दरवाज़े पर, बल्कि खण्डहर के चारों तरफ पहरा बैठा हुआ था।

बगुले के पास गये, उसके सामने की तरफ जो सफेद पत्थर ज़मीन में गड़ा हुआ था जिस पर पैर रखने से बगुला मुंह खोल देता था, उखाड़ लिया। नीचे एक और पत्थर कमान पर जड़ा हुआ पाया। सफेद पत्थर को सिरके में खूब बारीक पीस कर बगुले के सारे बदन में लगा दिया। देखते-देखते वह पानी हो कर बहने लगा!

साथ ही इसके एक खुशबू-सी फैलने लगी। दो घंटे में बगुला गल गया! जिस खम्भे पर बैठा था वह भी बिलकुल पिघल गया। नीचे की कोठरी दिखाई देने लगी जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियां थीं और इधर-उधर बहुत से तार और पुर्ज़े वगैरह लगे हुए थे। सभी को तोड़ डाला और चारों आदमी नीचे उतरे, भीतर-ही-भीतर उस कुएं में जा पहुंचे जहां हाथ में किताब लिए बुड्ढा आदमी बैठा था, सामने एक पत्थर की चैकी पर पत्थर ही के बने रंग-बिरंगे फूल रखे हुए देखा।

बाजू पकड़ते ही बुड्ढे ने मुंह खोल दिया, तेजसिंह से काफूर लेकर कुमार ने उसके मुंह में भर दिया। घंटे भर तक ये लोग उसी जगह बैठे रहे। तेजसिंह ने एक मशाल खूब मोटी पहले ही से बाल ली थी। जब बुड्ढा गल गया, किताब ज़मीन पर गिर पड़ी, कुमार ने उसे उठा लिया। उसकी जिल्द भी जिस पर कुछ लिखा हुआ था,, भोजपत्र ही की थी। कुमार ने पढ़ा। उस पर यह लिखा था-

"इन फूलों को भी उठा लो, तुम्हारे ऐयारों के काम आवेंगे। इनके गुण भी इसी किताब में लिखे हुए हैं, इस किताब को डेरे में जाकर पढ़ो, आज और कोई काम मत करो।"

तेजसिंह ने बड़ी खुशी से उन फूलों को उठा लिया जो गिनती में छः थे। उस कुएं में से कोठरी में आकर ये लोग ऊपर निकले और धीरे-धीरे खण्डहर के बाहर हो गये।

थोड़ा दिन बाकी था जब कुंवर वीरेन्द्रसिंह अपने डेरे में पहुंचे। यह राय ठहरी कि रात में इस किताब को पढ़ना चाहिए मगर तेजसिंह को यह जल्दी थी कि किसी तरफ फूलों के गुण मालूम हों। कुमार से कहा, "इस वक़्त इन फूलों के गुण पढ़ लीजिये बाकी रात को पढ़ियेगा।" कुमार ने हंस कर कहा, "जब कुल तिलिस्म टूट लेगा तब फूलों के गुण पढ़े

जायेंगे।" तेजसिंह ने बड़ी खुशामद की, आखिर लाचार होकर कुमार ने जिल्द खोली। उस वक़्त सिवाय इन चारों आदमियों के उस खेमे में और कोई न था, सब बाहर कर दिये गये थे। कुमार पढ़ने लगे।

फूलों के गुण

(1) गुलाब का फूल-अगर पानी में घिस कर किसी को पिलाया जाये तो उसे सात रोज़ तक किसी तरह की बेहोशी असर न करेगी।

(2) मोतिये का फूल-अगर पानी में थोड़ा-सा घिस कर किसी कुएं में डाल दिया जाये तो चार पहर तक उस कुएं का पानी बेहोशी का काम देगा, जो पीयेगा बेहोश हो जायेगा, इसकी बेहोशी आधा घंटे बाद चढ़ेगी।

दो ही फूलों के गुण पड़े थे कि तीनों ऐयार मारे खुशी के उछल पड़े, कुमार ने किताब बन्द कर दी और कहा, "बस, अब न पढ़ेंगे।"

अब तेजसिंह हाथ जोड़ रहे हैं, कसम देते हैं कि किसी तरह परमेश्वर के वास्ते पढ़िये, आखिर यह सब आप ही के तो ताबेदार हैं। थोड़ी देर तक दिल्लगी करके कुमार ने फिर पढ़ना शुरू किया-

(3) ओरहुर (अड़हुल) का फूल-पानी में घिस कर पीने से चार रोज़ तक भूख न लगे।

(4) कनेर का फूल-पानी में घिस कर पैर धो लें तो थकावट या राह चलने की थकावट निकल जाये।

(5) गुलदाउदी का फूल-पानी में घिसकर आखों में अंजन करें तो अंधेरे में दिखाई दे।

(6) केवड़े का फूल-तेल में घिसकर लगावें तो सर्दी असर न करे, अगर पानी में रगड़कर लगावें तो गर्मी या धूप असर न करे, कत्थे के पानी में घिस कर किसी को पिलायें तो सात रोज़ तक किसी किस्म का जोश उसके बदन में बाकी न रहे।

इन फूलों को बड़ी खुशी से तेजसिंह ने अपने बटुए में डाल लिया, देवीसिंह और ज्योतिषीजी मांगते ही रहे मगर देखने को भी न दिया।

छब्बीसवां बयान

इन फूलों को पाकर तेजसिंह जितने खुश हुए शायद अपनी उम्र में आजतक कभी न हुए होंगे। एक तो पहले ही ऐयारी में बड़े-चढ़े थे, आज इन फूलों ने इन्हें और बढ़ा दिया। अब कौन है जो इनका मुकाबला करे ? हां, एक चीज़ की कसर रह गई, लोपाज्जन या कोई गुटका इस तिलिस्म में से इनको ऐसा न मिला जिससे ये लोगों की नज़रों से छिप जाते, और अच्छा हुआ जो न मिला नहीं तो इनकी ऐयारी की तारीफ न होती क्योंकि जिस आदमी के पास कोई ऐसी चीज हो जिससे वह गायब हो जाये तो फिर ऐयारी सीखने की उसे ज़रूरत ही क्या रही ? गायब होकर जो चाहा कर डाला!

आज की रात इन चारों को जागते ही बीती। तिलिस्म की तारीफ, फूलों के गुण, तिलिस्मी किताब के पढ़ने, सवेरे फिर तिलिस्म में जाने आदि की बातचीत में रात बीत गई। सवेरा हुआ, जल्दी-जल्दी स्नान-पूजा से चारों ने छुट्टी पा ली और कुछ भोजन करके तिलिस्म में जाने को तैयार हुए।

कुमार ने तेजसिंह से कहा, "हमारे पलंग पर से तिलिस्मी किताब उठा के तुम लेते चलो, वहां फिर एक दफे पढ़ के तब कोई काम करेंगे।" तेजसिंह तिलिस्मी किताब लेने गये मगर किताब नज़र न आई, चारपाई के नीचे, हर तरफ देखा, कहीं पता नहीं, आख़िर कुमार से पूछा, "किताब कहां है ? पलंग पर तो नहीं है!"

सुनते ही कुमार के होश उड़ गये, जी सन्न हो गया, दौड़े हुए पलंग के पास आये, खूब ढूंढ़ा, मगर कहीं किताब हो तब तो मिले। कुमार हाय करके पलंग के ऊपर गिर पड़े, बिलकुल हौसला टूट गया, कुमारी चन्द्रकान्ता के मिलने से नाउम्मीद हो गये, अब तिलिस्मी किताब कहां जिसमें तिलिस्म तोड़ने की तरकीब लिखी है।

तेजसिंह, देवीसिंह और जगन्नाथ ज्योतिषी भी घबरा उठे। दो घड़ी तक किसी के मुंह से आवाज़ तक न निकली, बाद इसके तलाश होने लगी। लश्कर भर में खूब शोर मचा कि कुमार के डेरे से तिलिस्मी किताब गायब हो गई, पहरे वालों पर सख्ती होने लगी, चारों तरफ चोर की तलाश में लोग निकले।

तेजसिंह ने कुमार से कहा, "आप जी मत छोटा कीजिए, मैं वादा करता हूं कि चोर को ज़रूर पकड़ूंगा आपके सुस्त हो जाने से सभी का जी टूट जायेगा, कोई काम करते न बन पड़ेगा।" बहुत समझाने पर कुमार पलंग से उठे, उसी वक़्त एक चोबदार ने आकर अजीब खबर सुनाई। हाथ जोड़कर अर्ज़ किया कि 'तिलिस्म के फाटक पर पहरे के लिए जो लोग

मुस्तैद किये गये हैं उनमें से एक पहरे वाला हाज़िर हुआ है और कहता है कि तिलिस्म के अन्दर कई आदमियों की आहट मिली है, किसी को अन्दर जाने का हुक्म तो है ही नहीं जो ठीक मालूम करे, अब जैसा हुक्म हो, किया जाये।

इस खबर को सुनते ही तेजसिंह पता लगाने के लिए तिलिस्म में जाने को तैयार हुए। देवीसिंह से कहा, "तुम भी मेरे साथ चलो, देख आवंे क्या मामला है ?" ज्योतिषीजी बोले, "हम भी चलेंगे।" कुमार भी उठ खड़े हुए। आखिर ये चारों तिलिस्म में चले। बाहर फतहसिंह सेनापति मिले, कुमार ने उनको भी साथ ले लिया। दरवाज़े के अंदर जाते ही इन लोगों के कान में भी चिल्लाने की आवाज़ आई, आगे बढ़ने से मालूम हुआ कि उसमें कई आदमी हैं। आवाज़ की धुन पर ये लोग बराबर बढ़ते चले गये। उस दालान में पहुंचे जिसमें चबूतरे के ऊपर हाथ में किताब लिए पत्थर का आदमी सोया था।

देखा कि पत्थर वाला आदमी उठ के बैठा हुआ पंडित बद्रीनाथ ऐयार को दोनों हाथों से दबाये है और वह चिल्ला रहे हैं। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल छुड़ाने का उपाय कर रहे हैं मगर कोई काम नहीं निकलता। तिलिस्मी किताब के खो जाने का इन लोगों को बड़ा भारी गम था मगर इस वक़्त पंडित बद्रीनाथ ऐयार की यह दशा देख सभी को हंसी आ गई, एकदम खिलखिला के हंस पड़े। उन ऐयारों ने पीछे फिर कर देखा तो कुंवर वीरेन्द्रसिंह मय तीनों ऐयारों के खड़े हैं, साथ में फतहसिंह सेनापति हैं।

तेजसिंह ने ललकार कर कहा, "वाह! खूब, जैसे जिसकी करनी होती है उसको वैसा ही फल मिलता है, इसमें कोई शक नहीं। बेचारे कुंवर वीरेन्द्रसिंह को बेकसूर तुम लोगों ने सताया, इसी की सज़ा तुम लोगों को मिली! परमेश्वर भी बड़ा इंसाफ करनेवाला है। क्यों पन्नालाल, तुम लोग जान-बूझकर क्यों फंसते हो ? तुमलोगों को तो किसी ने पकड़ा नहीं है, फिर बद्रीनाथ के पीछे क्यों जान देते हो ? इनको इसी तरह छोड़ दो और तुम लोग जाओ हवा खाओ।"

पन्नालाल ने कहा, "भला इनको ऐसी हालत में छोड़ के हमलोग कहीं जा सकते हैं ? अब तो आपके जो दिल में आवे सो कीजिए, हम लोग हाज़िर हैं।" तेजसिंह ने पंडित बद्रीनाथ के पास जाकर कहा, "पंडितजी परनाम! क्यों, मिजाज़ कैसा है ? क्या आप तिलिस्म तोड़ने को आये थे ? अपने राजा को तो पहले छुड़ा लिये होते ? खैर, शायद तुमने यह सोचा हो कि हम ही तिलिस्म तोड़कर कुल खज़ाना ले लें और खुद चुनार के राजा बन जायें!"

देवीसिंह ने भी आगे बढ़ के कहा, "बद्रीनाथ, भाई तिलिस्म तोड़ना तो उसमें से कुछ मुझे भी देना, अकेले मत उड़ा जाना!" ज्योतिषीजी ने कहा, "बद्रीनाथजी, अब तो तुम्हारे ग्रह बिगड़े हैं, खैरियत तभी है कि वह तिलिस्मी किताब हमारे हवाले करो जिसे आप लोगों ने रात को चुराया!"

बद्रीनाथ सबकी सुनते मगर सिवाय ज़मीन देखने के ज़वाब किसी को नहीं देते थे। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल पंडित बद्रीनाथ को छोड़ अलग हो गये और कुमार

से बोले, "ईश्वर के वास्ते किसी तरह बद्रीनाथ की जान बचाइए!"

कुमार ने कहा, "भला हम क्या कर सकते हैं, कुछ हाल तिलिस्म का मालूम नहीं, जो किताब तिलिस्म से मुझको मिली थी, जिसे पढ़कर तिलिस्म तोड़ते, वह तुम लोगों ने गायब कर ली। अगर मेरे पास होती तो उसमें देखकर कोई तरकीब इनके छुड़ाने की करता! हां अगर तुम लोग वह किताब मुझे दे दो तो ज़रूर बद्रीनाथ इस आफत से छूट सकते हैं।"

यह सुनकर पन्नालाल ने तिरछी निगाहों से बद्रीनाथ की तरफ देखा, उन्होंने भी कुछ इशारा किया। पन्नालाल ने कुमार से कहा, "हम लोगों ने किताब नहीं चुराई है, नहीं तो ऐसी बेबसी की हालत में ज़रूर दे देते। या तो किसी तरह से पंडित बद्रीनाथ को छुड़ाइए या हम लोगों के वास्ते यह हुक्म दीजिए कि बाहर जाकर इनके लिए कुछ खाने का सामान लाकर खिलावें, बल्कि जबतक आपको किताब न मिले, आप तिलिस्म न तोड़ लें और बद्रीनाथ इसी तरह बेबस रहें तब तक हम लोगों में से किसी को खिलाने-पिलाने के लिए यहां आने-जाने का हुक्म हो।"

देवीसिंह ने कहा, "पन्नालाल, भला यह तो कहो कि अगर कई रोज़ तक बद्रीनाथ इसी तरह क़ैद रह गये तो खाने-पीने का बन्दोबस्त तो तुम कर लोगे, जाकर ले आओगे, लेकिन अगर इनको दिशा मालूम पड़ेगी तो क्या उपाय करोगे ? उसको कहां ले जाकर फेंकोगे ? या इसी तरह इनके नीचे ढेर लगा रहेगा ?"

इसका ज़वाब पन्नालाल ने कुछ न दिया। तेजसिंह ने कहा, "सुनो जी, ऐयारों को ऐयार लोग खूब पहचानते हैं। अगर तुम्हारे आने-जाने के लिए कुमार हुक्म नहीं देते तो हम हुक्म देते हैं कि आया करो और जिस तरह बने, बद्रीनाथ की हिफाज़त करो। तुम लोगों ने हमारा बड़ा हर्ज़ किया, तिलिस्मी किताब चुरा ली और अब मुकरते हो। इस वक़्त हमारे अख्तियार में सब कोई हैं। जिसके साथ जो चाहे करूं, सीधी तरह से न दो तो डंडों के जोर से किताब ले लूं, मगर नहीं, छोड़ देता हूं और खूब होशियार कर देता हूं, किताब सम्हाल के रखना, मैं बिना लिए न छोड़ूंगा और तुमलोगों को गिरफ्तार भी न करूंगा।"

तेजसिंह की बात सुनकर पंडित बद्रीनाथ लाल हो गये और बोले, "इस वक़्त हमको बेबस देख के शेखी करते हो ? हिम्मत तो तब जानें कि हमारे छूटने पर कह-बदके कोई ऐयारी करो और जीत जाओ! क्या तुम ही एक दुनिया में ऐयार हो ? हम भी ज़ोर देकर कहते हैं कि हम ही ने तुम्हारी तिलिस्मी किताब चुराई है, मगर हम लोगों में से किसी को क़ैद किये या सताये बिना तुम नहीं पा सकते। यह शेखी तुम्हारी न चलेगी कि ऐयारों को गिरफ्तार भी न करो बल्कि आने-जाने के लिए छुट्टी दे दो और किताब भी ले लो। ऐसा कर लो तो उसी दिन से हम लोग तुम्हारे हो जायें और महाराज शिवदत्त को छोड़कर कुमार की ताबेदारी करें। मैं बता देता हूं कि किताब भी न दूंगा और यहां से छूट के भी निकल जाऊंगा।"

तेजसिंह ने कहा, "मैं भी कसम खाकर कहता हूं कि बिना तुम लोगों को क़ैद किये अगर किताब न ले लूं तो फिर ऐयारी का नाम न लूं और सिर मुड़ा के दूसरे देश में निकल जाऊं। मुझको भी तुम लोगों से एक ही दफे में फैसला कर लेना है।"

इस बात पर तेजसिंह और बद्रीनाथ दोनों ने कसमें र्खाइं। बेचारे कुंवर वीरेन्द्रसिंह सभी का मुंह देखते थे, कुछ कहते नहीं बन पड़ता था। तेजसिंह ने देवीसिंह और ज्योतिषीजी को अलग ले जाकर कान में कुछ कहा और वे दोनों उसी वक़्त तिलिस्म के बाहर हो गये। फिर तेजसिंह बद्रीनाथ के पास आकर बोले, "हमलोग जाते हैं। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल को जहां जी चाहे भेजो और अपने छुड़ाने की जो तरकीब सूझे, करो। पहरे वालों को कह दिया जाता है, वे तुम्हारे साथियों को आते-जाते न रोकेंगे।"

कुमार को लिए हुए तेजसिंह अपने डेरे में पहुंचे, देखा तो ज्योतिषीजी बैठे हैं। तेजसिंह ने पूछा, "क्यों ज्यातिषीजी, देवीसिंह गये ?"

ज्योतिषी: हां, वह तो गये।

तेजसिंह: आपने अभी कुछ देखा कि नहीं ?

ज्योतिषी: हां, पता लगा, पर आफत-पर-आफत नज़र आती है।

तेजसिंह: वह क्या ?

ज्योतिषी: रमल से मालूम होता है कि उन लोगों के हाथ से भी किताब निकल गई और अभी तक कहीं रखी नहीं गयी, देखें देवीसिंह क्या करके आते हैं, हम भी जाते तो अच्छा होता।

तेजसिंह: तो फिर आप राह क्या देखते हैं, जाइये, हम भी अपनी धुन में लग़ाते हैं।

यह सुन ज्योतिषीजी तुरन्त वहां से चले गये। कुमार ने कहा, "भला कुछ हमें भी तो मालूम हो कि तुम लोगों ने क्या सोचा, क्या कर रहे हो और क्या समझ के तुमने उन लोगों को छोड़ दिया ? मैं तो ज़रूर यही कहूंगा कि इस वक़्त तुम्हीं ने शेखी में आकर काम बिगाड़ दिया, नहीं तो वे लोग हमारे साथ फंस चुके थे।"

तेजसिंह ने कहा, "मेरा मतलब आप अभी तक नहीं समझे, किताब तो मैं उनसे ले ही लूंगा मगर जहां तक बने उन सभी को एक ही दफे में अपना चेला भी करूं नहीं तो यह रोज़-रोज़ की ऐयारी से कहां तक होशियारी चलेगी ? सिवा ज़िद और बदाबदी के ऐयार कभी ताबेदारी कबूल नहीं करते, चाहे जान चली जाये, मालिक का संग कभी न छोड़ेंगे।" कुमार ने कहा, "इससे तो हमको और तरद्दुद हुआ ? ईश्वर न करे, कहीं तुम हार गये और बद्रीनाथ छूट के निकल गये तो क्या तुम हमारा भी संग छोड़ दोगे ?"

तेजसिंह: "बेशक छोड़ दूंगा, फिर अपना मुंह न दिखाऊंगा।"

वीरेन्द्रसिंह: "तो तुम आप भी गये और मुझे भी मारा, अच्छी दोस्ती अदा की। हाय, अब क्या करूं ? भला यह तो बताओ कि देवीसिंह और ज्योतिषीजी कहां गये ?"

तेजसिंह: "अभी न बताऊंगा। पर आप डरिये मत, ईश्वर चाहेगा तो सब काम ठीक होगा और मेरा आपका साथ भी न छूटेगा। आप बैठिए, मैं दो घंटे के लिए कहीं जाता हूं।"

कुमार: "अच्छा जाओ।"

तेजसिंह वहां से चले गये, फतहसिंह को भी कुमार ने विदा किया, अब देखना चाहिए ये लोग क्या करते हैं और कौन जीतता है ?

सत्ताईसवां बयान

तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी के चले जाने पर कुमार बहुत देर तक सुस्त बैठे रहे। तरह-तरह के खयाल पैदा होते रहे, ज़रा खुटका हुआ और दरवाज़े की तरफ देखने लगते कि शायद तेजसिंह या देवीसिंह आते हों, जब किसी को न देखते तो फिर हाथ पर गाल रखकर सोच-विचार में पड़ जाते। पहर भर दिन बाकी रह गया पर तीनों ऐयारों में से कोई भी लौट कर न आया, कुमार की तबीयत और भी घबराई, बैठा न गया, डेरे से बाहर निकले।

कुमार को डेरे के बाहर होते देख बहुत से मुलाज़िम सामने आ खड़े हुए। बगल ही में फतहसिंह सेनापति का डेरा था, सुनते ही कपड़े बदल हरवों को लगाकर वह भी बाहर निकल आये और कुमार के पास आकर खड़े हो गये। कुमार ने फतहसिंह से कहा, "चलो, ज़रा घूम आवें, मगर हमारे साथ और कोई न आवे। यह कह आगे बढ़े। फतहसिंह ने सभी को मना कर दिया, लाचार कोई साथ न हुआ। ये दोनों धीरे-धीरे टहलते हुए डेरे से बहुत दूर निकल गये, तब कुमार ने फतहसिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा, "सुनो फतहसिंह, तुम भी हमारे दोस्त हो, साथ ही पढ़े और बड़े हुए, तुमसे हमारी कोई बात छिपी नहीं रहती, तेजसिंह भी तुमको बहुत मानते हैं। आज हमारी तबीयत बहुत उदास हो गयी है, अब हमारा जीना मुश्किल समझो, क्योंकि आज तेजसिंह को न मालूम क्या सूझी कि बद्रीनाथ से ज़िद कर बैठे, हाथ में फंसे हुए चोर को छोड़ दिया, क्या जाने अब क्या होता है! किताब हाथ लगे या न लगे, तिलिस्म टूटे या न टूटे, चन्द्रकान्ता मिले या तिलिस्म ही में तड़प-तड़प कर मर जाये!"

फतहसिंह ने कहा, "आप कुछ सोच न कीजिये। तेजसिंह ऐसे बेवकूफ नहीं हैं, उन्होंने ज़िद की सो अच्छा ही किया। सब ऐयार एकदम से आपकी तरफ हो जायेंगे। आज का भी बिलकुल हाल मुझको मालूम है, इन्तज़ाम भी उन्होंने बहुत अच्छा किया है। मुझको भी एक काम सुपुर्द कर गये हैं वह भी बहुत ठीक हो गया है, देखिये तो क्या होता है!"

बातचीत करते दोनों बहुत दूर निकल गये, एकाएक इन लोगों की निगाहें कई औरतों पर पड़ीं जो इनसे बहुत दूर न थीं। इन्होंने आपस में बातचीत करना बन्द कर दिया और पेड़ों की आड़ से औरतों को देखने लगे।

अन्दाज़ से बीस औरतें होंगी, अपने घोड़ों की बाग थामे धीरे-धीरे उसी तरफ आ रही थीं। एक औरत के हाथ में दो घोड़ों की बाग थी। यों तो सभी औरतें एक-से-एक खूबसूरत थीं

मगर सभी के आगे जो आ रही थी बहुत ही खूबसूरत और नाज़ुक थी। उम्र करीब पन्द्रह वर्ष की होगी, पोशाक और जेवरों के देखने से यही मालूम होता था कि वह ज़रूर किसी राजा की लड़की है। सिर से पांव तक जवाहरात से लदी हुई, हर एक अंग उसके सुन्दर और सुडौल, गुलाब-सा चेहरा दूर से दिखाई दे रहा था। साथ वाली औरतें भी एक-से-एक खूबसूरत और बेशकीमत पोशाक पहने हुए थीं।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह एकटक उसी औरत की तरफ देखने लगे जो सभी के आगे थी। ऐसे तरद्दुद की हालत में भी कुमार के मुंह से निकल पड़ा, "वाह! क्या सुडौल हाथ-पैर हैं! बहुत-सी बातें कुमारी चन्द्रकान्ता की इसमें मिलती हैं, नज़ाकत और चाल भी उसी ढंग की है, हाथ में कोई किताब है जिससे मालूम होता है कि पढ़ी-लिखी भी है।"

वे औरतें और पास आ गईं। अब कुमार को बखूबी देखने का मौका मिला। जिस जगह पेड़ों की आड़ में दोनों छिपे हुए थे किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी। वह औरत जो सभी के आगे आ रही थी, जिसको हम राजकुमारी कह सकते हैं, चलते-चलते अटक गई, उस किताब को खोलकर देखने लगी साथ ही इसकी दोनों आंखों से आंसू गिरने लगे।

कुमार ने पहचाना कि यह वही तिलिस्मी किताब है, क्योंकि इसकी जिल्द पर एक तरफ मोटे-मोटे सुनहरे हरफों में 'तिलिस्म' लिखा हुआ है। सोचने लगे-"इस किताब को तो ऐयार लोग चुरा ले गये थे, तेजसिंह इसकी खोज में गये हैं। इसके हाथ में यह किताब क्योंकर लगी ? यह कौन है और किताब देखकर रोती क्यों है!!"

चन्द्रकान्ता

भाग-तीन

पहला बयान

वह नाज़ुक औरत जिसके हाथ में किताब है और सब औरतों के आगे-आगे आ रही है, कौन और कहां की रहने वाली है जब तक यह मालूम हो जाये तब तक हम उसको वनकन्या के नाम से लिखेंगे।

धीरे-धीरे चलकर वनकन्या जब उन पेड़ों के पास पहुंची जिधर आड़ में कुंवर वीरेन्द्रसिंह और फतहसिंह छिपे खड़े थे तो ठहर गई और पीछे फिर के देखा। उसके साथ एक और जवान नाज़ुक तथा चंचल औरत अपने हाथ में एक तस्वीर लिए हुए चल रही थी जो वनकन्या को अपनी तरफ देखते देख आगे बढ़ आई। वनकन्या ने अपनी किताब उसके हाथ में दे दी और तस्वीर उससे ले ली।

तस्वीर की तरफ देख लम्बी सांस ली, साथ ही आंखें डबडबा आईं, बल्कि कई बूंद आंसुओं के भी गिर पड़े। इस बीच में कुमार की निगाह भी उसी तस्वीर पर जा पड़ी, एक टक देखते रहे और जब वनकन्या बहुत दूर निकल गई तब फतहसिंह से बातचीत करने लगे।

कुमार: क्यों फतहसिंह, यह कौन है, कुछ जानते हो ?

फतहसिंह: मैं कुछ भी नहीं जानता, मगर इतना कह सकता हूं कि किसी राजा की लड़की है।

कुमार: यह किताब, जो इसके हाथ में है, ज़रूर वही है जो मुझको तिलिस्म से मिली थी, जिसको शिवदत्त के ऐयारों ने चुराया था, जिसके लिए तेजसिंह और बद्रीनाथ में बदाबदी हुई, और जिसकी खोज में हमारे ऐयार गये हुए हैं।

फतहसिंह: मगर फिर वह किताब इसके हाथ कैसे लगी ?

कुमार: इसका तो ताज्जुब ही है मगर इससे भी ज़्यादा ताज्जुब की एक बात और है, शायद तुमने खयाल नहीं किया।

फतहसिंह: नहीं वह क्या ?

कुमार: वह तस्वीर भी मेरी है जिसको बगल वाली औरत के हाथ से उसने लिया था।

फतहसिंह: यह तो आपने और भी आश्चर्य की बात सुनाई!

कुमार: मैं तो अजब हैरानी में पड़ा हूं, कुछ समझ नहीं आता कि क्या मामला है। अच्छा चलो, पीछे-पीछे, देखें ये सब जाती कहां हैं।

फतहसिंह: चलिए।

कुमार और फतहसिंह उसी तरफ चले जिधर वे औरतें गई थीं। थोड़ी ही दूर बढ़े होंगे कि पीछे से किसी ने आवाज़ दी। फिर के देखा तो तेजसिंह पर नज़र पड़ी। ठहर गये, जब पास पहुंचे उन्हें घबराये हुए और बदहवास देखकर पूछा, "क्यों, क्या है जो ऐसी सूरत बनाए हो ?"

तेजसिंह ने कहा, "बस अब हम आपसे ज़िन्दगी भर के लिए जुदा होते हैं।" इससे ज़्यादा न बोल सके, गला भर आया, आंखों से आंसुओं की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। तेजसिंह की अधूरी बात सुन और उनकी ऐसी हालात देख कुमार भी बेचैन हो गये मगर यह कुछ भी न जान पड़ा कि तेजसिंह के इस तरह बेदिल होने का क्या सबब है।

फतहसिंह से इनकी यह दशा देखी न गई। अपने रूमाल से दोनों की आंखें पोंछीं इसके बाद तेजसिंह से पूछा, "आपकी ऐसी हालत क्यों हो रही है ? कुछ तो कहिए। क्या सबब है जो जन्म भर के लिए कुमार से जुदा होंगे ?" तेजसिंह ने अपने को सम्हाल कर कहा-

"तिलिस्मी किताब हम लोगों के हाथ न लगी और न मिलने की कोई उम्मीद ही है, इसलिए अपने कौल पर सिर मुड़ा के निकल जाना पड़ेगा।"

इसका जवाब कुंवर वीरेन्द्र सिंह और फतहसिंह कुछ दिया ही चाहते थे कि देवीसिंह और पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी भी घूमते हुए आ पहुंचे। ज्योतिषी जी ने पुकार कर कहा, "तेजसिंह घबराओ मत, अब अगर आपको किताब न मिली तो उन लोगों के पास भी न रही। जो मैंने पहले कहा था वही हुआ, उस किताब को कोई तीसरा ही ले गया।"

अब तेजसिंह का जी कुछ ठिकाने हुआ। कुमार ने कहा, "वाह! खूब! आप भी रोये और मुझको भी रुलाया। जिसके हाथ में किताब पहुंची, उसे मैंने देखा, मगर उसका हाल कहने का कुछ मौका तो मिला नहीं, तुम पहले से ही रोने लगे!" इतना सुन के तेजसिंह ने कहा, "आपने किसके हाथ में किताब देखी ? वह आदमी कहां है ?" कुमार ने जवाब दिया, "मैं क्या बताऊं, कहां है ? चलो उस तरफ शायद दिखलाई दे जाये, हाय! विपत-पर-विपत बढ़ती ही जाती है।"

आगे-आगे कुमार तथा पीछे-पीछे तीनों ऐयार और फतहसिंह उस तरफ चले जिधर वे औरतें गई थीं, मगर तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी हैरान थे कि कुमार किसको खोज रहे हैं, वह किताब किसके हाथ लगी, या जब देखा ही था तो छीन क्यों न लिया ? कई दफे चाहा कि कुमार से इन बातों को पूछें मगर उनको घबराये हुए इधर-उधर देखते और लम्बी सांसें लेते देख तेजसिंह ने कुछ न पूछा। पहर भर तक कुमार ने चारों तरफ खोजा मगर

फिर उन औरतों पर निगाह न पड़ी। आखिर आंखें डबडर्बा आइं और एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये।

तेजसिंह ने पूछा, "आप कुछ खुलासा कहिए भी तो, क्या मामला है ?" कुमार ने कहा, "अब इस जगह कुछ न कहेंगे। लश्कर में चलो, फिर जो कुछ है सुन लेना।"

सब कोई लश्कर में पहुंचे, कुमार ने कहा, "पहले तिलिस्मी खण्डहर में चलो। देखें बद्रीनाथ की क्या कैफियत है।" यह कहकर खण्डहर की तरफ चले। ऐयार सब-के-सब पीछे-पीछे रवाना हुए। खण्डहर के दरवाज़े के अन्दर पैर रक्खा ही था कि सामने पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल वगैरह आते दिखाई पड़े।

कुमार: यह देखो, वह लोग इधर ही चले आ रहे हैं। मगर हैं... यह बद्रीनाथ छूट कैसे गये ?

तेजसिंह: बड़े ताज्जुब की बात है।

देवीसिंह: कहीं किताब उन लोगों के हाथ तो नहीं लग गई ? अगर ऐसा हुआ तो बड़ी मुश्किल होगी।

फतहसिंह: इससे निश्ं्िचत रहो। वह किताब इनके हाथ अब तक नहीं लगी। हां, आगे मिल जाये तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि अभी थोड़ी ही देर हुई है वह दूसरे के हाथ में देखी जा चुकी है।

इतने में बद्रीनाथ वगैरह पास आ गये। पन्नालाल ने पुकार के कहा, "क्यों तेजसिंह, अब तो हार गये ना ?"

तेजसिंह: हम क्यों हारे ?

बद्रीनाथ: क्यों नहीं हारे, हम छूट भी गये और किताब भी न दी!

तेजसिंह: किताब तो हम पा गये, तुम चाहे आप-से-आप छूटो या मेरे छुड़ाने से छूटो! किताब पाना ही हमारा जीतना हो गया, अब तुमको चाहिए कि महाराज शिवदत्त को छोड़कर कुमार के साथ आ रहो।

बद्रीनाथ: हमको वह किताब दिखा दो, हम अभी ताबेदारी कबूल करते हैं।

तेजसिंह: तो तुम ही क्यों नहीं दिखा देते, जब तुम्हारे पास नहीं है तो साबित हो गया कि हम पा गये।

बद्रीनाथ: बस-बस, हम बेफिक्र हो गये, तुम्हारी बातचीत से मालूम हो गया कि तुमने किताब नहीं पाई और उसे कोई तीसरा ही उड़ा ले गया, अभी तक हम डरे हुए थे।

देवीसिंह: फिर आखिर हारा कौन ? यह भी तो कहो।

बद्रीनाथ: कोई भी नहीं हारा।

कुमार: यह कहो, तुम छूटे कैसे ?

बद्रीनाथ: बस ईश्वर ने छुड़ा दिया, जान-बूझ के कोई युक्ति नहीं की गयी, पन्नालाल ने उसके सिर पर एक लकड़ी रक्खी, उस पत्थर के आदमी ने मुझको छोड़ लकड़ी पकड़ ली,

बस मैं छूट गया, उसके हाथ में वह लकड़ी अभी तक मौज़ूद है।

कुमार: अच्छा हुआ, दोनों की ही बात रह गई।

बद्रीनाथ: कुमार, मेरा जी तो चाहता है कि आपके साथ रहूं, मगर क्या करूं, नमकहरामी नहीं कर सकता, कोई तो सबब होना चाहिए। अब मुझे आज्ञा हो तो विदा होऊं ?

कुमार: हां जाओ।

ज्यो०: अच्छा, हमारी तरफ नहीं होते, न सही, मगर ऐयारी तो बन्द करो।

तेजसिंह: वाह ज्योतिषीजी, आखिर वेदपाठी ही रहे! ऐयारी से क्या डरना ? ये लोग जितना जी चाहें ज़ोर लगा लें।

पन्ना०: खैर देखा जायेगा, अब तो जाते हैं, जय माया की।

तेजसिंह: जय माया की।

बद्रीनाथ वगैरह वहां से चले गये। फिर कुमार भी तिलिस्म में न गये और अपने डेरे में चले आये। रात को कुमार के डेरे में सब ऐयार और फतहसिंह इकट्ठे हुए। दरबानों को हुक्म दे दिया कि कोई अन्दर न आने पावे। तेजसिंह ने कुमार से पूछा, "अब बताइए, किताब किसके हाथ में देखी थी, वह कौन है और आपने किताब लेने की कोशिश क्यों न की ?"

कुमार ने जवाब दिया, "यह तो मैं नहीं जानता कि वह कौन है लेकिन जो भी हो, अगर कुमारी चन्द्रकान्ता से बढ़ के नहीं है तो किसी तरह कम भी नहीं है। उसके हुस्न ने उससे किताब छीनने न दिया।"

तेज०: (ताज्जुब से) कुमारी चन्द्रकांता से और उस किताब से क्या संबंध ? खुलासा कहिये तो कुछ मालूम हो।

कुमार०: क्या कहें, हमारी तो अजब हालत है! (ऊंची सांस लेकर चुप हो रहे)।

तेज०: आपकी विचित्र ही दशा हो रही है, कुछ समझ में नहीं आता। (फतहसिंह की तरफ देख के) आप तो इनके साथ थे, आप ही खुलासा हाल कहिए, यह तो बारह दफे लम्बी सांसें लेंगे तो डेढ़ बात कहेंगे। जगह-जगह तो इनको इश्क पैदा होता है, एक बला से छूटे नहीं, दूसरी खरीदने को तैयार हो गये।

फतहसिंह ने सब हाल खुलासा कह सुनाया। तेजसिंह बहुत हैरान हुए कि वह कौन थी और उसने कुमार को पहले कब देखा, कब आशिक हुई, और तस्वीर कैसे उतरवा मंगाई ?

ज्योतिषीजी ने कई दफे रमल फेंका मगर खुलासा हाल मालूम न हो सका, हां, इतना कहा कि किसी राजा की लड़की है। आधी रात तक सब कोई बैठे रहे मगर कोई काम न हुआ, आखिर यह बात तय ठहरी कि जिस तरह बने उन औरतों को ढूंढ़ना चाहिए।

सब कोई अपने डेरे में आराम करने चले गये। रात भर कुमार को वनकन्या की याद ने सोने न दिया। कभी उसकी भोली-भाली सूरत याद करते, कभी उसकी आंखों से गिरे हुए

आंसुओं के ध्यान में डूबे रहते। इसी तरह करवटें बदलते और लम्बी सांस लेते रात बीत गई बल्कि घंटा भर दिन चढ़ आया, पर कुमार अपने पलंग पर से न उठे।

तेजसिंह ने आकर देखा तो कुमार चादर से मुंह लपेटे पड़े हैं, मुंह की तरफ का बिलकुल कपड़ा गीला हो रहा है, दिल में समझ गये कि वनकन्या का इश्क पूरे तौर पर असर कर गया है, इस वक़्त नसीहत करना भी उचित नहीं। आवाज़ दी, "आप सोते है या जागते ?"

कुमार०: (मुंह खोल कर) नहीं, जागते तो हैं।

तेज०: फिर उठे क्यों नहीं ? आप तो रोज़ सवेरे ही स्नान-पूजा से छुट्टी पा लेते हैं, आज क्या हुआ ?

"नहीं, कुछ नहीं।" कहते हुए कुमार उठ बैठे। जल्दी-जल्दी स्नान से छुट्टी पाकर भोजन किया। तेजसिंह वगैरह इनके पहले ही सब कामों से निश्ंिचत हो चुके थे, उन लोगों ने भी भोजन कर लिया और उन औरतों को ढूंढ़ने के लिए जंगल में जाने को तैयार हुए। कुमार ने कहा, हम भी चलेंगे। सभी ने समझाया कि आप चलकर क्या करेंगे हम लोग पता लगाते हैं, आपके चलने से हमारे काम में हर्ज़ होगा-कुमार ने कहा, "कोई हर्ज़ न होगा, हम फतहसिंह को अपने साथ ले चलते हैं, तुम्हारा जहां जी चाहे घूमना, हम उनके साथ इधर-उधर फिरेंगे।" तेजसिंह ने फिर समझाया कि कहीं शिवदत्त के ऐयार लोग आपको धोखे में न फंसा लें, मगर कुमार ने एक न मानी। आखिर लाचार होकर कुमार और फतहसिंह को साथ ले जंगलों की तरफ रवाना हुए।

थोड़ी दूर घने जंगल में जाकर उन दोनों को एक जगह बैठाकर तीनों ऐयार अलग-अलग उन औरतों की खोज में रवाना हुए। ऐयारों के चले जाने के बाद कुंवर वीरेन्द्र सिंह फतहसिंह से बातें करने लगे मगर सिवाय वनकन्या के कोई दूसरा ज़िक्र कुमार की जुबान पर न था।

दूसरा बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह बैठे फतहसिंह से बातें कर रहे थे कि एक मालिन, जो जवान और कुछ खूबसूरत भी थी हाथ में जंगली फूलों की डाली लिए फिर कुमार के बगल से इस तरह निकली जैसे उसको यह मालूम न हो कि यहां कोई है। मुंह से कहती जाती थी-"आज जंगली फूलों का गहना बनाने में देरी हो गई, ज़रूर कुमारी खफा होंगी, देखें क्या दुर्दशा होती है।"

इस बात को दोनों ने सुना। कुमार ने फतहसिंह से कहा, "मालूम होता है उन्हीं की मालिन है, इसको बुला के पूछो तो सही।" फतहसिंह ने आवाज़ दी, उसने चैंककर पीछे देखा, फतहसिंह ने हाथ से फिर बुलाया, वह डरती-कांपती उनके पास आ गई। फतहसिंह ने पूछा, "तू कौन है और फूलों के गहने किसके वास्ते ले जा रही है ?"

उसने जवाब दिया, "मैं मालिन हूं, यह नहीं कह सकती कि किसके यहां रहती हूं और ये फूलों के गहने किसके वास्ते लिए जाती हूं ? आप मुझको छोड़ दें, मैं बहुत गरीब हूं, मेरे मारने से कुछ हाथ न लगेगा, हाथ जोड़ती हूं, मेरी जान मत लीजिए।"

ऐसी-ऐसी बातें कह मालिन रोने और गिड़गिड़ाने लगी। फूलों की डलिया आगे रक्खी हुई थी जिनकी तेज खुशबू फैल रही थी। इतने में एक नकाबपोश वहां आ पहुंचा और कुमार की तरफ मुंह करके बोला, "आप इसके फेर में न पड़ें यह ऐयार है, अगर थोड़ी देर और फूलों की खुशबू दिमाग में चढ़ेगी तो आप बेहोश हो जायेंगे।"

उस नकाबपोश ने इतना कहा ही था कि वह मालिन उठकर भागने लगी, मगर फतहसिंह ने झट हाथ पकड़ लिया, सवार उसी वक़्त चला गया। कुमार ने फतहसिंह से कहा, "मालूम नहीं सवार कौन है और मेरे साथ यह नेकी करने की उसको क्या ज़रूरत थी ?" फतहसिंह ने जवाब दिया, "इसका हाल मालूम होना मुश्किल है क्योंकि वह खुद अपने को छिपा रहा है, खैर जो हो यहां ठहरना मुनासिब नहीं, दखिये अगर यह सवार न आता तो हम लोग फंस ही चुके थे।"

कुमार ने कहा, "तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है, खैर, अब चलो और इसको अपने साथ लेते चलो, वहां चलकर पूछ लेंगे कि यह कौन है ?" जब कुमार अपने खेमे में फतहसिंह और उस ऐयार को लिए पहुंचे तो बोले, "अब इससे पूछो, इसका नाम क्या है ?" फतहसिंह ने जवाब दिया, "भला यह ठीक-ठाक अपना नाम क्यों बतायेगा, देखिये मैं अभी मालूम किये लेता हूं।"

फतहसिंह ने गरम पानी मंगवा कर उस ऐयार का मुंह धुलाया, अब साफ पहचाने गये कि वह पंडित बद्रीनाथ हैं। कुमार ने पूछा, "क्यों, अब तुम्हारे साथ क्या सलूक किया जाये ?" बद्रीनाथ ने जवाब दिया, "जो मुनासिब हो कीजिये।"

कुमार ने फतहसिंह से कहा, "इनकी तुम हिफाज़त करो, जब तेजसिंह आयेंगे तो वही इनका फैसला करेंगे!" यह सुन फतहसिंह बद्रीनाथ को ले अपने खेमे में चले गये। शाम को बल्कि कुछ रात जाते तेजसिंह देवीसिंह और ज्योतिषजी लौटकर आये और कुमार के खेमे में गये। उन्होंने पूछा, "कहो, कुछ पता लगा ?"

तेजसिंह: कुछ पता न लगा, दिन भर परेशान हुए मगर कोई काम न चला।

कुमार०: (ऊंची सांस लेकर) फिर अब किया क्या जायेगा ?

तेजसिंह: किया क्या जायेगा, आजकल में पता लगेगा ही।

कुमार०: हमने भी एक ऐयार को गिरफ्तार किया है।

तेजसिंह: हैं, किसको! वह कहां है ?

कुमार०: फतहसिंह के पहरे में है, उसको बुला के देखो, कौन है ?

देवीसिंह को भेज कर फतहसिंह को भेजकर फतहसिंह को मय ऐयार के बुलवाया। जब बद्रीनाथ की सूरत देखी तो खुश हो गये और बोले-"क्यों, अब क्या इरादा है ?"

बद्रीनाथ: इरादा जो पहले था वही अब भी है।

तेजसिंह: अब भी शिवदत्त का साथ छोड़ोगे या नहीं ?

बद्रीनाथ: महाराज शिवदत्त का साथ क्यों छोड़ने लगे ?

तेजसिंह: तो फिर क़ैद हो जाओगे।

बद्रीनाथ: चाहे जो हो।

तेजसिंह: यह मत समझना कि तुम्हारे साथी लोग छुड़ा ले जायेंगे, हमारा क़ैदखाना ऐसा नहीं है।

बद्रीनाथ: उस क़ैदखाने का हाल भी मालूम है, वहां भेजो भी तो सही!

देवीसिंह: वाह रे निडर!

तेजसिंह ने फतहसिंह से कहा, "इनके ऊपर सख्त पहरा मुकर्रर कीजिए। अब रात हो गई है, कल इनको बड़े घर पहुंचाया जायेगा।"

फतहसिंह ने अपने मातहत सिपाहियों को बुलावाकर कर बद्रीनाथ को उनके सुपुर्द किया। इतने ही में चोबदार ने आकर एक चिट्ठी उनके हाथ में दी और कहा कि 'एक नकाबपोश सवार बाहर हाज़िर है जिसने यह चिट्ठी कुमार को देने के लिए दी है! तेजसिंह ने लिफाफे को देखा, यह लिखा हुआ थाः

"कुंवर वीरेन्द्रसिंह जी के चरण कमलों में-"

तेजसिंह ने कुमार के हाथ में दिया, उन्होंने खोलकर पढ़ा,

* बरवा *

"सुख संपत्ति सब त्याग्यो जिनके हेत।
वे निरमोही ऐसे, सुधिहुं न लेत।।
राज छोड़ बन जोगी, भस्म रमाय।
विरह अनल की धूनी तापस हाय।।

-कोई वियोगिनी।

पढ़ते ही आँखें डबडबा आयीं, रुंधे गले से अटककर बोले, "उसको अन्दर बुलाओ जो चिट्ठी लाया है।" हुक्म पाते ही चोबदार उस नकाबपोश सवार को लेने बाहर गया मगर तुरंत वापस आकर बोला-"वह सवार तो मालूम नहीं कहां चला गया!"

इस बात को सुनते ही कुमार के जी को कितना दुःख हुआ वे ही जानते होंगे। वह चिट्ठी तेजसिंह के हाथ में दे दी, उन्होंने भी पढ़ा, कहा, "इसके पढ़ने से मालूम होता है कि यह चिट्ठी उसी ने भेजी है जिसकी खोज में दिन भर हम लोग हैरान हुए और यह तो साफ ही है कि वह भी आपकी मुहब्बत में डूबी हुई है, फिर आपको इतना रंज न करना चाहिए।"

कुमार ने कहा, "इस चिट्ठी ने तो इश्क की आग में घी का काम किया। उसका खयाल और भी बढ़ गया, घट कैसे सकता है। खैर, अब जाओ, तुम लोग भी आराम करो, कल जो कुछ होगा देखा जायेगा।"

तीसरा बयान

कल रात से आज की रात कुमार की और भी भारी गुज़री! बार-बार उस बरवै को पढ़ते रहे। सवेरा होते ही उठे, स्नान-पूजा कर जंगल में जाने के लिए तेजसिंह को बुलाया, वे भी आये। आज फिर तेजसिंह ने मना किया मगर कुमार ने न माना, तब तेजसिंह ने उन तिलिस्मी फूलों में से गुलाब का फूल पानी में घिस कर कुमार और फतहसिंह को पिलाया और कहा कि "अब जहां जी चाहे घूमिये, कोई बेहोश करके आपको नहीं ले जा सकता, हां, ज़बरदस्ती पकड़ ले तो मैं नहीं कह सकता।" कुमार ने कहा, "ऐसा कौन है जो मुझको ज़बरदस्ती पकड़ ले।"

पांचों आदमी जंगल में गये, कुछ दूर पर कुमार और फतहसिंह को छोड़ तीनों ऐयार अलग हो गये। कुंवर वीरेन्द्रसिंह फतहसिंह के साथ इधर-उधर घूमने लगे। घूमते-घूमते कुमार बहुत दूर निकल गये, देखा कि दो नकाबपोश सवार सामने से आ रहे हैं। जब कुमार से थोड़ी दूर रह गये तो एक सवार घोड़े पर से उतर पड़ा और ज़मीन पर कुछ रख के फिर सवार हो गया। कुमार उसकी तरफ बढ़े, जब पास पहुंचे तो वे दोनों सवार यह कह के चले गये कि 'इस किताब और चिट्ठी को ले लीजिए'।

कुमार ने पास जाकर देखा तो वही तिलिस्मी किताब नज़र पड़ी। उसके ऊपर एक चिट्ठी और बगल में कलम-दवात और काग़ज़ भी मौज़ूद पाया। कुमार ने खुशी-खुशी उस किताब को उठा लिया और फतहसिंह की तरफ देख के बोले, "यह किताब देकर दोनों सवार चले क्यों गये सो कुछ समझ में नहीं आता मगर बोली से मालूम होता है कि वह सवार औरत है जिसने मुझे किताब उठा लेने के लिए कहा। देखें चिट्ठी में क्या लिखा है!" यह कह चिट्ठी खोल पढ़ने लगे, लिखा था-

"मेरा जी तुममें अटका है और जिसको तुम चाहते हो वह बेचारी तिलिस्म में फंसी है। अगर उसको किसी तरह की तकलीफ होगी तो तुम्हारा जी दुःखी होगा। तुम्हारी खुशी से मुझको भी खुशी है यह समझ कर किताब तुम्हारे हवाले करती हूं। खुशी से तिलिस्म तोड़ो और चन्द्रकान्ता को छुड़ाओ मगर मुझको भूल न जाना, तुम्हें उसी की कसम जिसको ज़्यादा चाहते हो। इस चिट्ठी का जवाब लिखकर उसी जगह रख देना जहां से किताब उठाओगे।"

चिट्ठी पढ़कर कुमार ने तुरंत जवाब लिखा-

"इस तिलिस्मी किताब को हाथ में लिये मैंने जिस वक़्त तुमको देखा उसी वक़्त से तुम्हारे मिलने को जी तरस रहा है, मैं उस दिन अपने को बड़ा भाग्यवान मानूंगा जिस दिन मेरी आंखें दोनों प्रेमियों को देख-देख ठंडी होंगी मगर तुमको तो मेरी सूरत से नफरत है।

-तुम्हारा वीरेन्द्र

जवाब लिख कर कुमार ने उसी जगह पर रख दिया। वे दोनों सवार दूर खड़े दिखाई दिये, कुमार देर तक खड़े राह देखते रहे मगर वे नज़दीक न आये, जब कुमार कुछ दूर हट गये तब उनमें से एक ने आकर चिट्ठी का जवाब उठा लिया और देखते-देखते नज़रों से ओझल हो गया। कुमार भी फतहसिंह के साथ लश्कर में आये।

कुछ रात गये तेजसिंह भी वापस आकर कुमार के खेमे में इकट्ठे हुए। तेजसिंह ने कहा, "आज भी किसी का पता न लगा, हां, कई नकाबपोश सवारों को इधर-उधर घूमते ज़रूर देखा। मैंने चाहा कि उनका पता लगाऊं मगर न हो सका, क्योंकि वे लोग भी चालाकी से घूमते थे, मगर कल ज़रूर हम उन लोगों का पता लगा लेंगे।"

कुमार ने कहा, "देखो तुम्हारे किये कुछ न हुआ मगर मैंने ऐयारी की खोई हुई चीज़ को ढूंढ़ निकाला, देखो यह तिलिस्मी किताब।" यह कह कुमार ने किताब तेजसिंह के आगे रख दी।

तेजसिंह ने कहा, "आप जो कुछ ऐयारी करेंगे वह तो मालूम ही है मगर यह बताइये कि किताब कैसे हाथ लगी ? जो बात होती है, ताज्जुब की!"

कुमार ने किताब पाने का सारा हाल कह सुनाया, तब चिट्ठी दिखाई और जो कुछ जवाब लिखा वह भी कहा।

ज्योतिषीजी ने कहा, "क्यों न हो, फिर बड़े घर की लड़की है, किसी तरह से कुमार को दुःख देना पसन्द न किया। सिवाय इसके चिट्ठी पढ़ने से यह मालूम होता है कि वह कुमार के पूरे हाल से वाकिफ है, मगर हम लोग बिलकुल नहीं जान सकते कि वह है कौन ?"

कुमार ने कहा, "इसकी शर्म तो तेजसिंह को होनी चाहिये कि इतने बड़े ऐयार होकर दो-चार औरतों का पता नहीं लगा सकते।"

तेजसिंह: "पता तो ऐसा लगायेंगे कि आप भी खुश हो जायेंगे, मगर अब किताब मिल गई है तो पहले तिलिस्म के काम से छुट्टी पा लेना चाहिए।"

कुमार: तब तक क्या वे सब बैठी रहेंगी ?

तेजसिंह: क्या अब आपको कुमारी चन्द्रकान्ता की फिक्र न रही ?

कुमार: क्यों नहीं, कुमारी की मुहब्बत तो मेरे नस-नस में बसी हुई है, मगर तुम भी तो इन्साफ करो कि इसकी मुहब्बत मेरे साथ कैसी सच्ची है, यहां तक कि मेरे ही सबब से कुमारी चन्द्रकान्ता को मुझसे भी बढ़ के समझ रक्खा है।

तेजसिंह: हम यह तो नहीं कहते कि उसकी मुहब्बत की तरफ खयाल न करें, मगर तिलिस्म का भी खयान होना चाहिए।

कुमार: तो ऐसा करो जिसमें दोनों का काम चले।

तेजसिंह: ऐसा ही होगा, दिन को तिलिस्म तोड़ने का काम करेंगे, रात को उन लोगों का पता लगायेंगे।

आज की रात फिर उसी तरह कटी, सवेरे कामों से छुट्टी पाकर कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और ज्योतिषीजी तिलिस्म में घुसे, तिलिस्मी किताब साथ थी। जैसे-जैसे उसमें लिखा हुआ था उसी तरह ये लोग तिलिस्म तोड़ने लगे।

तिलिस्मी किताब में पहले ही यह लिखा हुआ था कि तिलिस्म तोड़ने वाले को चाहिए कि जब पहर दिन बाकी रहे तिलिस्म से बाहर हो जाये और उसके बाद कोई काम तिलिस्म तोड़ने का न करे।

चौथा बयान

तिलिस्मी खण्डहर में घुस कर पहले वे लोग दालान में गये जहां पत्थर के चबूतरे पर पत्थर ही का आदमी सोया हुआ था। कुमार ने इसी जगह से तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाया।

जिस चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था उसके सिरहाने की तरफ पांच हाथ हटकर कुमार ने अपने हाथ से ज़मीन खोदी। गज भर खोदने के बाद एक सफेद पत्थर की चट्टान दिखी जिसमें उठाने के लिए लोहे की मज़बूत कड़ी लगी हुई भी दिखाई पड़ी। कड़ी में हाथ डाल के पत्थर उठाकर बाहर किया। तहखाना मालूम हुआ जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियां बनी थीं।

तेजसिंह ने मशाल जला ली, उसी की रोशनी में सब कोई नीचे उतरे। खूब खुलासा कोठरी देखी, कहीं गर्द या कूड़े का नामो-निशान नहीं, बीच में संगमरमर पत्थर की खूबसूरत पुतली एक हाथ में कांटा दूसरे हाथ में हथौड़ी लिये खड़ी थी।

कुमार ने उसके हाथ से हथौड़ी कांटा लेकर उसी के बाएं कान में कांटा डाल हथौड़ी से ठोंक दी, साथ ही उस पुतली के होंठ हिलने लगे और उसमें से बाजे की-सी आवाज़ आने लगी, मालूम होता था मानो वह पुतली गा रही है।

थोड़ी देर तक यही कैफियत रही, एकाएक पुतली के बायें दाहिने दोनों अंग के दो टुकड़े हो गये और उसके पेट में से आठ अंगुल का छोटा-सा गुलाब का पेड़ जिसमें कई फूल भी लगे हुए थे और डाल में एक ताली लटक रही थी, निकला साथ ही इसके एक छोटा-सा तांबे का पत्र भी मिला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। कुमार ने उसे पढ़ा-

"इस पेड़ को हमारे यहां के वैद्य अजायबदत्त ने मसाले से बनाया है। इन फूलों से बराबर गुलाब की खुश्बू निकल कर दूर-दूर तक फैला करेगी। दरबार में रखने के लिए यह एक नायाब पौधा सौगात के तौर पर वैद्यजी ने तुम्हारे वास्ते रक्खा है।"

इसको पढ़कर कुमार बहुत खुश हुए और ज्योतिषजी की तरफ देख कर बोले, "यह बहुत अच्छी चीज़ मुझको मिली, देखिए, इस वक़्त भी फूलों में से कैसी अच्छी खुश्बू निकल कर फैल रही है।"

तेजसिंह: इसमें तो कोई शक नहीं।

देवीसिंह: एक-से-एक कारीगरी दिखाई पड़ती है।

अभी कुमार बात कर रहे थे कि कोठरी के एक तरफ का दरवाज़ा खुल गया। अंधेरी कोठरी में अभी तक इन लोगों ने कोई दरवाज़ा या निशान नहीं देखा था, पर इस दरवाज़े के खुलने से कोठरी में बखूबी रोशनी पहुंची। मशाल बुझा दी गई और ये लोग उस दरवाज़े की राह से बाहर हुए। एक छोटा-सा खूबसूरत बाग देखा। यह बाग वही था जिसमें चपला आई थी और जिसका हाल हम दूसरे हिस्से में लिख चुके हैं।

बमूजिब लिखे तिलिस्मी किताब क,े कुमार ने उस ताली में एक रस्सी बांधी जो पुतली के पेट से निकली थी। रस्सी हाथ में थाम ताली को ज़मीन में घसीटते हुए कुमार बाग में घूमने लगे। हर एक रविशों और क्यारियों में घूमते हुए एक फौहारे के पास ताली ज़मीन से चिपक गई। उसी जगह ये लोग भी ठहर गये। कुमार के कहे मुताबिक सभी ने उस ज़मीन को खोदना शुरू किया, दो-तीन हाथ खोदा था कि ज्योतिषीजी ने कहा, "अब पहर भर दिन बाकी रह गया, तिलिस्म से बाहर होना चाहिए।"

कुमार ने ताली उठा ली और चारों आदमी कोठरी की राह से होते हुए ऊपर चढ़ के उस दालान में पहुंचे जहां चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था, उसके सिरहाने की तरफ ज़मीन खोद कर जो पत्थर की चट्टान निकली थी उसी को उलटकर तहखाने के मुंह पर ढांक दिया। उसके दोनों तरफ उठाने के लिए कड़ी लगी हुई थी और उलटी तरफ पर ताला भी बना हुआ था। उसी ताली से जो पुतली के पेट से निकली थी यह ताला बन्द भी कर दिया।

चारों आदमी खण्डहर से निकल कुमार के खेमे में आये। थोड़ी देर आराम कर लेने के बाद तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी कुमार से कह के वनकन्या की टोह में जंगल की तरफ रवाना हुए। इस समय दिन अनुमान से दो घंटे बाकी होगा।

ये तीनों ऐयार थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक नकाबपोश जाता हुआ दिखा, देवीसिंह वगैरह पेड़ों की आड़ दिए उसी के पीछे-पीछे रवाना हुए। वह सवार कुछ पच्छिम हटता हुआ सीधे चुनार की तरफ जा रहा था। कई दफे रास्ते में रुका, पीछे फिर कर देखा और फिर आगे बढ़ा।

सूरज अस्त हो गया। अंधेरी रात ने अपना दखल कर लिया, घना जंगल अंधेरी राज में डरावना मालूम होने लगा। अब ये तीनों ऐयार सूखे पत्तों की आवाज़ पर जो टापों के पड़ने से होती थी, जाने लगे। घण्टे भर रात जाते-जाते उस जंगल के किनारे पहुंचे।

नकाबपोश सवार घोड़े पर से उतर पड़ा। उस जगह बहुत से घोड़े बंधे थे। वहीं पर अपना घोड़ा भी बांध दिया, एक तरफ घास का ढेर लगा हुआ था, उसमें से घास उठा कर घोड़े के आगे रख दी और वहां से पैदल रवाना हुआ।

उस नकाबपोश के पीछे-पीछे चलते हुए ये तीनों ऐयार पहर रात बीते गंगा किनारे पहुंचे। दूर से जल में दो रोशनियां दिखाई पड़ीं, मालूम होता था जैसे दो चन्द्रमा गंगाजी में उतर आये हैं। सफेद रोशनी जल पर फैल रही थी। जब पास पहुंचे, देखा कि एक सजी हुई नाव

पर कई खूबसूरत औरतें बैठी हैं, बीच में ऊंची गद्दी पर एक कमसिन नाज़ुक औरत जिसका रौआब देखने वालों पर छा रहा है बैठी है, चांद-सा चेहरा दूर से चमक रहा है। दोनों तरफ दो महताब जल रहे हैं।

नकाबपोश ने किनारे पहुंचकर ज़ोर से सीटी बजाई, साथ ही इस नाव में से भी इस तरह सीटी की आवाज़ आई जैसे किसी ने जवाब दिया हो। उन कई औरतों में जो उस नाव पर बैठी थीं दो औरतें उठ खड़ी हुइं तथा नीचे उतर एक डोंगी उस नाव के साथ बंधी हुई थी, खोल कर किनारे ला नकाबपोश को उस पर चढ़ा ले गईं।

अब ये तीनों ऐयार आपस में बातें करने लगे-

तेजसिंह: वाह, इस नाव पर छूटते हुए दो महताबों के बीच ये औरतें कैसी भली मालूम होती हैं ?

ज्योतिषी: परियों का अखाड़ा मालूम होता है, चलो तैर के उनके पास चलें।

देवीसिंह: ज्योतिषजी, कहीं ऐसा न हो कि परियां आपको उड़ा ले जायें, फिर हमारी मंडली में एक दोस्त कम हो जायेगा।

तेजसिंह: मैं जहां तक खयाल करता हूं यह उन्हीं लोगों की मंडली है जिन्हें कुमार ने देखा था।

देवीसिंह: इसमें तो कोई शक नहीं है।

ज्योतिषी: तो तैर के चलते क्यों नहीं ? तुम तो जल से ऐसा डरते हो जैसे कोई बुड्ढा आफियूनी डरता हो।

देवीसिंह: फिर तुम्हारे साथ आने से क्या फायदा हुआ ? तुम्हारी तो बड़ी तारीफ सुनते थे कि ज्योतिषीजी ऐसे हैं, वैसे हैं, पहिया हैं, चर्खे हैं, मगर कुछ नहीं, अदनी-सी मंडली का पता नहीं लगा सकते।

ज्योतिषी: मैं क्या खाक बताऊं, वे लोग तो मुझसे भी ज़्यादा उस्ताद मालूम होती हैं। सभी ने अपने-अपने नाम ही बदल दिये हैं, असल नाम का पता लगाना चाहते हैं तो अजीब-अजीब नामों का पता लगता है। किसी का नाम वियोगिनी, किसी का नाम योगिन, किसी का भूतनी, किसी का डाकिनी। भला बताइये, क्या मैं मान लूं कि इन लोगों के यही नाम हैं ?

तेजसिंह: तो इन लोगों ने अपना नाम क्यों बदल दिया ?

ज्योतिषी: हम लोगों को उल्लू बनाने के लिए।

देवीसिंह: अच्छा नाम जाने दीजिये, इनके मकान का पता लगाइए।

ज्योतिषी: मकान के बारे में जब रमल से दरियाफ्त करते हैं तो मालूम होता है कि इन लोगों का मकान जल में है, तो क्या हम समझ लें कि ये लोग जलवासी अर्थात् मछली हैं ?

तेजसिंह: यह तो ठीक है, देखिए जलवासी हैं कि नहीं ?

ज्योतिषी: भाई सुनो, रमल के काम में ये चारों पदार्थ-हवा, पानी, मिट्टी और आग हमेशा विघ्न डालते हैं। अगर कोई आदमी ज्योतिषी या रम्माल को छकाना चाहे तो इन चारों के हेर-फेर से खूब ही छका सकता है। ज्योतिषी बेचारा खाक न कर सके, पोथी-पत्रा बेकार का बोझ हो जाये।

तेजसिंह: यह कैसे ? खुलासा बताओ तो कुछ हम लोग भी समझें, वक़्त पर काम ही आवेगा।

ज्योतिषी: बता देंगे, इस वक़्त जिस काम को आये हो वह करो। चलो तैरकर चलें।

तेजसिंह: चलो।

ये तीनों ऐयार तैर कर नाव के पास जाने लगे। ऐयारी का बटुआ कमर में बांध कपड़ा-लत्ता किनारे रख जल में उतर गये। मगर दो ही चार हाथ गये होंगे कि पीछे से सीटी की आवाज़ आई, साथ ही नाव पर जो महताब जल रहे थे बुझ गये, जैसे किसी ने उन्हें जल्दी से जल में फेंक दिया हो। अब बिलकुल अंधेरा हो गया, नाव नज़रों से छिप गई। देवीसिंह ने कहा, "लीजिए, चलिए तैर के!"

तेजसिंह: ये सब बड़ी शैतान मालूम होती हैं।

ज्योतिषी: मैंने तो पहले ही कहा कि ये सब-की-सब आफत हैं, अब आपको मालूम हुआ न कि मैं सच कहता था, इन लोगों ने हमारे नज़ूम को मिट्टी कर दिया है।

देवीसिंह: चलिये किनारे, इन्होंने तो बेढव छकाया, मालूम होता है किनारे पर कोई पहरे वाला खड़ा देखता था। जब हम लोग तैरकर जाने लगे उसने सीटी बजाई, बस अंधेरा हो गया, पहले ही से इशारा बंधा हुआ था।

ज्योतिषी: इस नालायक को यह क्या सूझी कि हम लोग पानी में उतर चुके तब सीटी बजाई, पहले बजाता तो हम लोग क्यों भींगते ?

ये तीनों ऐयार लौटकर किनारे आये, पहनने के वास्ते अपने कपड़े खोजते हैं तो मिलते नहीं।

देवीसिंह: ज्योतिषीजी पालागी, लीजिए कपड़े भी गायब हो गये। हाय, इस वक़्त अगर इन लोगों में से किसी को पा जाऊं तो कच्चा ही चबा जाऊं ?

तेजसिंह: हम तो उनलोगों की तारीफ़ करेंगे। खूब ऐयारी की।

देवीसिंह: हां हां, खूब तारीफ कीजिये जिससे उन लोगों में से अगर कोई सुनता हो तो अब भी आप पर रहम करे और आगे न सतावे।

ज्योतिषी: अब क्या सताना बाकी रह गया ? कपड़े तक तो उतरवा लिए।

तेजसिंह: चलिए, अब लश्कर में चलें, इस वक़्त और कुछ करते न बन पड़ेगा।

आधी रात जा चुकी होगी जब ये लोग ऐयारी के सताये, बदन से नंगे-धडं़गे, कांपते-कलपते लश्कर की तरफ रवाना हुए।

पांचवां बयान

तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी के जाने के बाद कुंवर वीरेन्द्रसिंह इन लोगों के वापस आने के इन्तज़ार में रात भर जागते रह गये। ज्यों-ज्यों रात गुज़रती थी कुमार की तबीयत घबराती थी। सवेरा हुआ ही चाहता था जब ये तीनों ऐयार लश्कर में पहुंचे। तेजसिंह की राय हुई कि इसी तरह नंग-धड़ंग कुमार के पास चलना चाहिए, आखिर तीनों उसी तरह उनके खेमे में गये।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह जाग रहे थे, शमादान जल रहा था, इन तीनों ऐयारों की विचित्र सूरत देखकर हैरान हो गये। पूछा, "यह क्या हाल है ?" तेजसिंह ने कहा, "अभी तो सूरत देख लीजिए, बाकी हाल ज़रा दम ले के कहेंगे।"

तीनों ऐयारों ने अपने कपड़े मंगवाकर पहने, इतने में साफ सवेरा हो गया, कुमार ने तेजसिंह से पूछा, "अब बताओ, तुम लोग किस बला में फंस गये ?"

तेजसिंह: ऐसा धोखा खाया कि जन्म भर याद करेंगे।

कुमार: वह क्या ?

तेजसिंह: जिनके ऊपर आप जान दिये बैठे हैं, जिनकी खोज में हम लोग मारे-मारे फिरते हैं, इसमें तो कोई शक नहीं कि उनका भी प्रेम आपके ऊपर बहुत है, मगर न मालूम इतनी छिपी क्यों फिरती हैं और इसमें इन्होंने क्या फायदा सोचा है ?

कुमार: क्या कुछ पता लगा ?

तेजसिंह: पता क्या, आंख से देख आये हैं, तभी तो इतनी सज़ा मिली। उनके साथ भी एक-से-एक बढ़ के ऐयार हैं, अगर ऐसा जानते तो होशियारी से जाते।

कुमार: भला खुलासा कहो तो कुछ मालूम भी हो।

तेजसिंह ने सब हाल कहा, कुमार सुनकर हंसने लगे और ज्योतिषीजी से बोले, "आपके रमल को भी उन लोगों ने धोखा दिया ?"

ज्योतिषी: कुछ न पूछिये, सब-की-सब आफत हैं।

कुमार: उन लोगों को खुलासा हाल नहीं मालूम हुआ तो भला इतना ही विचार लेते कि शिवदत्त के ऐयारों से और उन लोगों से कोई वास्ता नहीं बल्कि उन लोगों को इनकी खबर भी न होगी, इस बात को मैं खूब विचार चुका हूं।

तेजसिंह: इतनी ही खैरियत है।

ज्योतिषी: आज दिन ही को चलकर पता लगायेंगे।

तेजसिंह: तिलिस्म तोड़ने का काम कैसे चलेगा ?

कुमार: एक रोज़ काम बन्द रहेगा तो क्या होगा ?

तेजसिंह: इसी से तो मैं कहता हूं कि चन्द्रकान्ता की मुहब्बत आपके दिल से कम हो गई है।

कुमार: कभी नहीं, चन्द्रकान्ता से बढ़कर मैं दुनिया में किसी को नहीं चाहता मगर न मालूम क्या सबब है कि वनकन्या का हाल मालूम करने के लिए भी जी बेचैन रहता है।

तेजसिंह: (हंसकर) खैर, पहले तो पंडित बद्रीनाथ ऐयार को ले जाकर उस खोह में क़ैद करना है फिर दूसरा काम देखेंगे, कहीं ऐसा न हो कि वह छूट के चल दें।

कुमार: आज ही ले जाकर छोड़ आओ।

तेजसिंह: हां, अभी उनको ले जाता हूं, वहां रखकर रातों-रात लौट आऊंगा, पन्द्रह कोस का मामला ही क्या है, तब तक देवीसिंह और ज्योतिषीजी वनकन्या की खोज में जायें।

तेजसिंह की राय पक्की ठहरी, वे स्नान-पूजा से छूट्टी पाकर तैयार हुए, खाने की चीज़ों में बेहोशी की दवा मिलाकर बद्रीनाथ को खिलाई और जब वे बेहोश हो गये तब तेजसिंह गट्ठर बांधकर पीठ पर लाद खोह की तरफ रवाना हुए। कुमार ने देवीसिंह और ज्योतिषी को वनकन्या की टोह में भेजा।

तेजसिंह पंडित बद्रीनाथ की गठरी लिये शाम होते-होते तहखाने पहुंचे। शेर के मुंह में हाथ डाल जुबान खीचीं और तब दूसरा ताला खोला, मगर दरवाज़ा न खुला। अब तेजसिंह के होश उड़ गये, फिर कोशिश की, लेकिन किवाड़ न खुला। बैठ के सोचने लगे, मगर कुछ समझ में न आया। आखिर लाचार हो बद्रीनाथ की गठरी लादे वापिस हुए।

छठवां बयान

देवीसिंह और ज्योतिषीजी वनकन्या की टोह में निकलकर थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक नकाबपोश सवार मिला जिसने पुकार के कहा-

"देवीसिंह, कहां जाते हो ? तुम्हारी चालाकी हम लोगों से न लगेगी, अभी कल आप लोगों की खातिर की गई है और जल में गोते देकर कपड़े सब छीन लिए गये, अब क्या गिरफ्तार ही होना चाहते हो ? थोड़े दिन सब्र करो, हम लोग तुम लोगों को ऐयारी सिखलाकर पक्का करेंगे तब काम चलेगा।"

नकाबपोश सवार की बातें सुन देवीसिंह मन में तो हैरान हो गये पर ज्योतिषीजी की तरफ देखकर बोले, "सुन लीजिए! यह सवार साहब हम लोगों को ऐयारी सिखलायेंगे जो शर्म के मारे अपना मुंह तक नहीं दिखा सकते।"

नकाबपोश: ज्योतिषीजी क्या सुनेंगे, यह भी तो शर्माते होंगे क्योंकि इनके रमल को हमलोगों ने बेकाम कर दिया। हज़ार दफे फेकें मगर पता खाक न लगेगा।

देवीसिंह: अगर इस इलाके में रहोगे तो बिना पता लगाए न छोड़ेंगे।

नकाबपोश: रहेंगे नहीं तो जायेंगे कहां ? रोज़ मिलेंगे मगर पता न लगने देंगे।

बात करते-करते देवीसिंह ने चालाकी से कूदकर सवार के मुंह पर से नकाब खींच ली। देखा कि तमाम चेहरे पर रोली मली हुई है, कुछ पहचान न सके।

सवार ने फुर्ती के साथ देवीसिंह की पगड़ी उतार ली और एक चिट्ठी उनके सामने फेंक घोड़ा तेजकर निकल गया। देवीसिंह ने शर्मिन्दगी के साथ चिट्ठी उठाकर देखा, लिफाफे पर लिखा हुआ था-

"कुमार वीरेन्द्रसिंह"

ज्योतिषीजी ने देवीसिंह से कहा, "न मालूम ये लोग कहां के रहने वाले हैं ? मुझे तो मालूम होता है कि इस मंडली में जितने हैं सब ऐयार ही हैं।"

देवीसिंह: (चिट्ठी जेब में रखकर) इसमें तो शक नहीं, देखिए हर दफा हम ही लोग नीचा देखते हैं, समझा था कि नकाब उतार लेने से सूरत मालूम होगी, मगर उसकी चालाकी तो देखिए, चेहरा रंग के तब नकाब डाले हुए था।

ज्योतिषी: खैर देखा जायेगा, इस वक़्त तो फिर से लश्कर में चलना पड़ेगा क्योंकि चिट्ठी कुमार को देनी ज़रूरी है, देखें इससे क्या हाल मालूम होता है। अगर इस पर कुमार का नाम न लिखा होता तो हम लोग भी पढ़ लेते।

देवीसिंह: हां चलो, पहले चिट्ठी का हाल सुन लें, तब कोई कार्रवाई सोचें।

दोनों आदमी लौटकर लश्कर में आये और कुंवर वीरेन्द्रसिंह के डेरे में पहुंच कर सब हाल कह के चिट्ठी हाथ में दे दी। कुमार ने पढ़ा, यह लिखा हुआ था-

"चाहे जो हो, पर मैं आपके सामने तब तक नहीं आ सकती जब तक आप नीचे लिखी बातों को लिखकर इकरार न करे लें-

(1) चन्द्रकान्ता से और मुझसे एक ही दिन एक ही सायत से शादी हो।

(2) चन्द्रकान्ता से रुतबे में मैं किसी तरह कम न समझी जाऊं क्योंकि मैं हर तरह से दजेर् में उसके बराबर हूं।

अगर इन दोनों बातों का इकरार आप न करेंगे तो कल ही अपने घर का रास्ता लूंगी। इसके अलावा यह भी कहे देती हूं कि बिना मेरी मदद के चाहे आप हज़ार बरस भी कोशिश करें मगर चन्द्रकान्ता को नहीं पा सकते।"

कुमार का इश्क वनकन्या पर पूरे दर्ज़े का है। चन्द्रकान्ता से किसी तरह वनकन्या की चाह कम न थी, मगर इस चिट्ठी को पढ़ने से उनको कई तरह की फिक्रों ने आ घेरा। सोचने लगे कि यह कैसे हो सकता है कि कुमारी से और इससे एक ही सायत में शादी हो, वह कब मंज़ूर करेगी और महाराज जयसिंह ही कब इस बात को मानेंगे! इसके अलावा यह क्या लिखा है कि बिना मेरी मदद के आप चन्द्रकान्ता से नहीं मिल सकते, यह क्या बात है ? खैर, अब जो भी हो, वनकन्या के बिना मेरी ज़िन्दगी मुश्किल है, मैं ज़रूर उसे लिखे मुताबिक इकरारनामा लिख दूंगा, पीछे समझा जायेगा। कुमारी चन्द्रकान्ता मेरी बात ज़रूर मान लेगी।

देवीसिंह और ज्योतिषीजी को भी कुमार ने वह चिट्ठी दिखाई। वे लोग भी हैरान थे कि वनकन्या ने यह क्या लिखा और इसका जवाब क्या देना चाहिए ?

दिन और रात भर कुमार इसी सोच में रहे कि इस चिट्ठी का क्या जवाब दिया जाये ? दूसरे दिन सुबह होते-होते तेजसिंह भी पंडित बद्रीनाथ ऐयार की गठरी पीठ पर लादे हुए आ पहुंचे।

कुमार ने पुछा, "वापस क्यों आ गये ?"

तेजसिंह: क्या बतायें, मामला ही बिगड़ गया।

कुमार: सो क्या ?

तेजसिंह: तहखाने का दरवाज़ा नहीं खुलता।

कुमार: किसी ने भीतर से बन्द तो नहीं कर लिया ?

तेजसिंह: नहीं, भीतर तो कोई ताला ही नहीं है!

ज्योतिषी: दो बातों में से एक बात ज़रूर है, या तो कोई नया आदमी पहुंचा जिसने दरवाज़ा खोलने की कल बिगाड़ दी, या फिर महाराज शिवदत्त ने भीतर से कोई चालाकी की!

तेजसिंह: भला शिवदत्त अन्दर से बन्द करके अपने को और बला में क्यों फंसवायेगा ? इसमें तो उसका हर्ज़ ही है, कुछ फायदा नहीं।

कुमार: कहीं वनकन्या ने तो कोई युक्ति नहीं की ?

तेजसिंह: आप भी ग़ज़ब करते हैं, कहां बेचारी वनकन्या, कहां वह तिलिस्मी तहखाना!

कुमार: तुमको मालूम ही नहीं। उसने चिट्ठी लिखी है कि बिना मेरी मदद के तुम चन्द्रकान्ता से नहीं मिल सकते। और भी दो बातें लिखी हैं, मैं इसी सोच में था कि क्या जवाब दूं और वह कौन-सी बात है जिससे मुझको वनकन्या की मदद की ज़रूरत पड़ेगी मगर अब तुम्हारे लौट आने से शक पैदा होता है।

देवीसिंह: मुझे भी कुछ उन्हीं का बखेड़ा मालूम होता है।

तेजसिंह: अगर वनकन्या को हमारे साथ कुछ फसाद करना होता तो तिलिस्मी किताब क्यों वापस देती ? देखिये, उस खत में क्या लिखा है जो किताब के साथ आया था।

ज्योतिषी: यह भी तुम्हारा कहना ठीक है।

तेजसिंह: (कुमार से) भला वह चिट्ठी तो दीजिए जिसमें वनकन्या ने लिखा कि 'बिना मेरी मदद के चन्द्रकान्ता से मुलाकात नहीं हो सकती'।

कुमार ने वह चिट्ठी तेजसिंह के हाथ में दे दी, पढ़कर तेजसिंह बड़े सोच में पड़ गये कि यह क्या बात है ? कुछ अक्ल काम नहीं करती। कुमार ने कहा, "तुम लोग यह जानते ही हो कि वनकन्या की मुहब्बत मेरे दिल में कैसा असर कर गई है, बिना देखे एक घड़ी चैन नहीं पड़ता तो फिर उसके लिखे अनुसार इकरारनामा लिख देने में क्या हर्ज़ है ? जब खुश होगी तो उससे ज़रूर ही कुछ-न-कुछ भेद मिलेगा।"

तेजसिंह: जो मुनासिब समझिए कीजिए, चन्द्रकान्ता बेचारी तो कुछ न बोलेगी मगर महाराज जयसिंह यह कब मंज़ूर करेंगे कि एक ही मड़वे में दोनों के साथ शादी हो! क्या जाने वह कौन, कहां की रहने वाली और किसकी लड़की है ?

कुमार: उनकी चिट्ठी में तो यह भी लिखा है कि मैं किसी तरह रुतबे में कुमारी से कम नहीं हूं।

ये बातें हो रही थीं कि चोबदार ने आकर अर्ज़ किया, "एक सिपाही बाहर आया है जो हाज़िर होकर कुछ कहना चाहता है।" कुमार ने कहा, "उसे ले आओ।" चोबदार उस सिपाही को अन्दर ले आया, सभी ने देखा कि अजीब रंग-ढंग का आदमी है। नाटा-सा कद, काला रंग, टाट का चपकन, पायजामा जिसके ऊपर से लैस टंकी हुई। सिर पर दौरी की तरह बांस की टोपी, ढाल-तलवार लगाए था। उसने झुक कर कुमार को सलाम किया।

सभी को उसकी सूरत देखकर हंसी आयी, मगर हंसी को रोक तेजसिंह ने पूछा, "तुम कौन हो और कहां से आये ?" उस बांके जवान ने कहा, "मैं देवता हूं, दैत्यों की मण्डली से आ रहा हूं, कुमार से उस चिट्ठी का जवाब चाहता हूं जो कल एक सवार ने देवीसिंह और जगन्नाथ ज्योतिषी को दी थी।"

तेजसिंह: भला तुमने ज्योतिषीजी और देवीसिंह का नाम कैसे जाना ?

बांका०: ज्योतिषीजी को तो मैं तब से जानता हूं जब वे इस दुनिया में नहीं आये थे, और देवीसिंह तो हमारे चेले ही हैं।

देवीसिंह: क्यों बे शैतान, हम कब से तेरे चेले हुए ? बेअदबी करता है ?

बांका०: बेअदबी तो आप करते हैं कि उस्ताद को अबे-तबे करके बुलाते हैं, कुछ इज़्ज़त नहीं करते!

देवीसिंह: मालूम होता है तेरी मौत तुझको यहां ले आई है!

बांका०: मैं तो स्वयं मौत हूं।

देवीसिंह: इस बेअदबी का मज़ा चखाऊं तुझको ?

बांका०: मैं कुछ ऐसे-वैसे का भेजा नहीं आया हूं, मुझको उसने भेजा है जिसको तुम दिन में साढ़े सत्रह बार झुककर सलाम करोगे।

देवीसिंह और कुछ कहना ही चाहते थे कि तेजसिंह ने रोक दिया और कहा, "चुप रहो, मालूम होता है यह कोई ऐयार या मसखरा है, तुम खुद ऐयार होकर ज़रा-सी दिल्लगी से नाराज़ हो जाते हो!"

बांका०: अगर अब भी न समझोगे तो समझाने के लिए मैं चम्पा को बुला लाऊंगा। उस बांके टेढ़े जवान की बात पर सबलोग एकदम हंस पड़े मगर हैरान थे कि यह कौन है ? अजब तमाशा तो यह है कि वनकन्या के कुल आदमी हम लोगों का रत्ती-रत्ती हाल जानते हैं और हम लोग कुछ नहीं समझ सकते कि वे कौन हैं!

तेजसिंह उस शैतान की सूरत को गौर से देखने लगे। वह बोला, "आप मेरी सूरत क्या देखते हैं, मैं ऐयार नहीं हूं, अपनी सूरत मैंने रंगी नहीं है, गरम पानी मंगवाइये धोकर दिखा दूं। मैं आज से काला नहीं हूं, लगभग चार सौ वर्षाें से मेरा यही रंग रहा है।"

तेजसिंह हंस पड़े और बोले, "जो हो, अच्छे हो, मुझे और जांचने की कोई ज़रूरत नहीं, अगर दुश्मन का आदमी होता तो ऐसा करते। मगर तुमसे क्या ? ऐयार हो, तो मसखरे हो तो, इसमें कोई शक नहीं कि दोस्त आदमी हो।"

यह सुन उसने झुक कर सलाम किया और कुमार की तरफ देखकर कहा, "मुझको जवाब मिल जाये, क्योंकि बड़ी दूर जाना है।" कुमार ने उसी चिट्ठी की पीठ पर यह लिख दिया, "मुझको सब कुछ दिलोजान से मंज़ूर है!" बाद इसके अपनी अंगूठी से मोहर कर उस बांके जवान के हवाले किया, वह चिट्ठी लेकर खेमे के बाहर हो गया।

सातवां बयान

आज तेजसिंह के वापस आने और बांके तिरछे जवान के पहुंच कर बातचीत करने और चिट्ठी लिखने में देर हो गई, दो पहर दिन चढ़ आया। तेजसिंह ने बद्रीनाथ को होश में लाकर पहरे में किया और कुमार से कहा, "अब स्नान-पूजा करें फिर जो होगा सोचा जायेगा, दो रोज़ से तिलिस्म का भी कोई काम नहीं हुआ है।"

कुमार ने दरबार बरखास्त किया, स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर खेमे में बैठे, ऐयार लोग और फतहसिंह भी हाज़िर हुए। अभी किसी किस्म की बातचीत नहीं हुई थी कि चोबदार ने आकर अर्ज़ किया, "एक बुड्ढी औरत बाहर हाज़िर हुई है, कुछ कहना चाहती है, हम लोग पूछते हैं तो कुछ नहीं बताती। कहती है जो कुछ है कुमार से कहूंगी क्योंकि उन्हीं के मतलब की बात है।"

कुमार ने कहा, "जल्दी अन्दर लाओ।" चोबदार न उस बुड्ढी को हाज़िर किया, देखते ही तेजसिंह के मुंह से निकला, "क्या पिशाचों और डाकिनियों का दरबार खुल पड़ा है ?"

उस बुड्ढी ने भी यह बात सुन ली, लाल-लाल आंखें कर तेजसिंह की तरफ देखने लगी और बोली, "बस, अब कुछ न कहूंगी, जाती हूं, मेरा क्या बिगड़ेगा, जो कुछ नुकसान होगा कुमार का होगा।" यह कह खेमे के बाहर चली गई। कुमार का इशारा पा चाबेदार समझा-बुझा कर उसे पुनः ले आया।

यह औरत भी अजीब सूरत की थी। उम्र लगभग सत्तर वर्ष की होगी, बाल कुछ-कुछ सफेद, आधे से ज़्यादा दांत गायब, लेकिन दो बड़े-बड़े और टेढ़े आगे वाले दांत दो-दो अंगुल बाहर निकले हुए थे जिनमें ज़र्दी और कीट ज़मी हुई हुई थी। मोटे कपड़े की साड़ी बदन पर थी जो बहुत ही मैली और सिर की तरफ से चिक्कट हो रही थी। बड़ी-सी पीतल की नथ नाक में और पीतल ही के घुंघरू पैरों में पहने हुए थी।

तेजसिंह ने पूछा, "क्यों, क्या चाहती है ?"

बुड्ढी: ज़रा दम ले लूं तो कहूं, फिर तुमसे क्यों कहने लगी, जो कुछ है खास कुमार ही से कहूंगी।

कुमार: अच्छा मुझ ही से कह, क्या चाहती है ?

बुड्ढी: तुमसे तो कहूंगी ही, तुम्हारे बड़े मतलब की बात है। (खांसने लगती है)।

देवीसिंह: अब डेढ़ घण्टे तक खांसेगी तब कहेगी ?

बुड्ढी: फिर दूसरे ने दखल दिया!

कुमार: नहीं, नहीं, कोई न बोलेगा ?

बुड्ढी: एक बात है, मैं जो कुछ कहूंगी तुम्हारे मतलब की कहूंगी जिसको सुनते ही खुश हो जाओगे, मगर उसके बदले में मैं भी कुछ चाहती हूं।

कुमार: हां, हां, तुझे भी खुश कर देंगे।

बुड्ढी: पहले तुम इस बात की कसम खाओ कि तुम या तुम्हारा कोई आदमी मुझको कुछ न कहेगा और मारने-पीटने या क़ैद करने का तो नाम भी न लेगा।

कुमार: जब हमारे भले की बात है तो कोई तुमको क्यों मारने या क़ैद करने लगा ?

बुड्ढी: हां, यह तो ठीक है, मगर मुझे डर मालूम होता है क्योंकि मैंने आपके लिए वह काम किया है कि अगर हज़ार बरस भी आपके ऐयार लोग कोशिश करते तो वह न होता, इस सबब से मुझे डर मालूम होता है कि कहीं आपके ऐयार लोग खार खाकर मुझे तंग न करें।

उस बुड्ढी की बात सुन कर सब दंग हो गये और सोचने लगे कि यह कौन-सा काम कर आई है कि आसमान पर चढ़ी जाती है। आखिर कुमार ने कसम खाई कि 'चाहे तू कुछ कहे मगर हम या हमारा कोई आदमी तुझे कुछ न कहेगा।' तब वह फिर बोली, "मैं उस वनकन्या का पूरा पता आपको दे सकती हूं और एक युक्ति ऐसी बता सकती हूं कि आप घड़ी भर में सारा तिलिस्म तोड़कर कुमारी चन्द्रकान्ता से जा मिलें।"

बुड्ढी की बात सुनकर सब खुश हो गये। कुमार ने कहा, "अगर ऐसा ही है तो जल्द बता कि वह वनकन्या कौन है और घड़ी भर में तिलिस्म कैसे टूटेगा ?"

बुड्ढी: पहले इनाम की बात तो तय कर लीजिए।

कुमार: अगर तेरी बात सच हुई तो जो कहेगी वही इनाम मिलेगा।

बुड्ढी: तो इसके लिए कसम खाइये।

कुमार: अच्छा क्या इनाम लेगी पहले यह तो सुन लूं।

बुड्ढी: बस और कुछ नहीं, केवल इतना ही कि आप मुझसे शादी कर लें, वनकन्या और चन्द्रकान्ता से तो चाहे जब शादी हो मगर मुझसे आज ही हो जाये, क्योंकि मैं बहुत दिनों से तुम्हारे इश्क में फंसी हुई हूं, बल्कि तुम्हारे मिलने की तरकीबें सोचते-सोचते बुड्ढी हो चली। आज मौका मिला कि तुम मेरे हाथ फंस गये, बस अब देर मत करो नहीं तो मेरी जवानी निकल जायेगी, फिर पछताओगे।

बुड्ढी की बातें सुन मारे गुस्से के कुमार का चेहरा लाल हो गया और उनके ऐयार लोग भी दांत पीसने लगे, मगर क्या करें, लाचार थे, अगर कुमार कसम न खा चुके होते तो ये लोग उस बुड्ढी की पूरी दुर्गति कर देते।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, "आप बताइए, ये कोई ऐयार है या सचमुच जैसी दिखाई देती है वैसी ही है ? अगर कुमार कसम न खाए होते तो हम लोग किसी युक्ति से मालूम कर ही लेते।"

ज्योतिषजी ने अपनी नाक पर हाथ रखकर स्वांस का विचार करके कहा, "यह ऐयार नहीं है, जो देखते हो वही है।" अब तो तेजसिंह और भी बिगड़े, बुड्ढी से कहा, "बस तू यहां से चली जा, हम लोग कुमार के कसम खाने को पूरा कर चुके कि तुझे कुछ न कहा, अगर अब जाने में देर करेगी तो कुत्तों से नुचवा डालूंगा।"

बुड्ढी ने कहा, "अगर मेरी बात न मानोगे तो पछताओगे, तुम्हारा सब काम बिगाड़ दूंगी, देखो, उस तहखाने में मैंने ताला लगा दिया कि तुमसे खुल न सका, आखिर बद्रीनाथ की गठरी लेकर वापस आये, अब जाकर महाराज शिवदत्त को छिपा देती हूं फिर और फसाद करूंगी!"

यह कहती हुई वह गुस्से के मारे लाल-लाल आंखें किये खेमे से बाहर निकल गई। तेजसिंह के इशारे से देवीसिंह भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

कुमार: क्यों तेजसिंह, यह चुड़ैल तो अजब आफत मालूम पड़ती है, कहती है कि तहखाने में मैंने ही ताला लगा दिया था।

तेजसिंह: क्या मामला है, कुछ समझ में नहीं आता।

ज्योतिषी: अगर यह सच है तो हम लोगों के लिए यह बड़ी भारी बला पैदा हुई।

तेजसिंह: इसकी सच्चाई-झुठाई तो शिवदत्त के छूटने ही से मालूम हो जायेगी, अगर सच्ची निकली तो बिना जान से मारे न छोडूंगा।

ज्योतिषी: ऐसे को मारना ही ज़रूरी है।

तेजसिंह: कुमार ने यह कसम तो खाई नहीं है कि जन्म भर कोई कुछ न कहेगा।

कुमार: (लम्बी सांस लेकर) हाय, आज मुझको यह दिन भी देखना पड़ा।

तेजसिंह: आप चिन्ता न कीजिए, देखिए तो हम लोग क्या करते हैं, देवीसिंह उसके पीछे गये हैं, पता लिए बिना नहीं आयेंगे!

कुमार: आजकल तुम लोगों की ऐयारी उल्ली लग गई है, कुछ वनकन्या का पता लगाया कि कुछ अब डाकिनी की खबर लगाओगे!

कुमार की यह बात तेजसिंह और ज्योतिषीजी को तीर के समान लगी मगर कुछ बोले नहीं, सिर्फ उठ के खेमे के बाहर चले गये।

इन लोगों के चले जाने के बाद कुमार खेमे में अकेले रह गये, तरह-तरह की बातें सोचने लगे, कभी चन्द्रकान्ता की बेबसी और तिलिस्म में फंस जाने पर कभी तिलिस्म टूटने में देर और वनकन्या की खबर या ठीक-ठाक हाल न पाने पर, कभी इसी बुड्ढी चुड़ैल की बातों पर जो शादी करने आई थी, अफसोस और गम करते रहे। तबीयत बिलकुल उदास थी। आखिर दिन बीत गया और शाम हुई।

कुमार ने फतहसिंह को बुलाया, जब वे आये तो पूछा, "तेजसिंह कहां है ?" उन्होंने जवाब दिया, "कुछ मालूम नहीं, ज्योतिषीजी को साथ लेकर कहीं गये हैं।"

आठवां बयान

देवीसिंह उस बुड्ढी के पीछे रवाना हुए। जब तक दिन बाकी रहा बुड्ढी चलती गई। उन्होंने भी पीछा न छोड़ा। कुछ रात गये तक वह चुड़ैल एक छोटे से पहाड़ के दर्रे में पहुंची जिसके दोनों तरफ उंची-उंची पहाड़ियां थीं। थोड़ी दूर इस दर्रे के अन्दर जा वह एक खोह में घुस गई जिसका मुंह बहुत छोटा, सिर्फ एक आदमी के जाने लायक था।

देवीसिंह ने समझा शायद यही इसका घर होगा, यह सोच एक पेड़ के नीचे बैठ गये। रात भर उसी तरह बैठे रह गये मगर फिर वह बुढ़िया उस खोह में से बाहर न निकली, सवेरा होते ही देवीसिंह भी उसी खोह में घुसे।

उस खोह के अन्दर बिलकुल अन्धकार था, देवीसिंह टटोलते हुए चले जा रहे थे। अगल-बगल जब हाथ फैलाते तो दीवार मालूम पड़ती जिससे जाना जाता कि यह खोह एक सुरंग के तौर पर है, इसमें कोई कोठरी या रहने की जगह नहीं है। लगभग दो मील गये होंगे कि सामने की तरफ चमकती हुई रोशनी नज़र आई। जैसे-जैसे आगे जाते थे रोशनी बड़ी मालूम होती थी, जब पास पहुंचे तो सुरंग के बाहर निकलने का दरवाज़ा देखा।

देवीसिंह बाहर हुए, अपने को एक छोटी-सी नदी के किनारे पाया, इधर-उधर निगाह दौड़ा कर देखा तो चारों तरफ घना जंगल, कुछ मालूम न पड़ा कि कहां चले आये और लश्कर में जाने की कौन राह है ? दिन भी पहर भर से ज़्यादा जा चुका था। सोचने लगे कि उस बुड्ढी ने खूब छकाया, न मालूम वह किस राह से निकल कर कहां चली गई, अब उसका पता लगना मुश्किल है, फिर इसी सुरंग की राह से फिरना पड़ा क्योंकि ऊपर से जंगल-ही-जंगल! लश्कर में जाने की राह मालूम नहीं, कहीं ऐसा न हो कि भटक जायें तो और भी खराबी हो। बड़ी भूल हुई कि रात ही को बुड्ढी के पीछे-पीछे हम भी इस सुरंग में घुसे, मगर यह क्या मालूम था कि इस सुरंग में दूसरी तरफ निकल जाने के लिए रास्ता है।

देवीसिंह मारे गुस्से के दांत पीसने लगे, मगर कर ही क्या सकते थे ? बुड्ढी तो मिली नहीं कि कसर निकालते, आखिर लाचार हो उसी सुरंग की राह से वापस हुए और शाम होते-होते लश्कर में पहुंचे।

कुमार के खेमे में गये, देखा कि कई आदमी बैठे हैं और वीरेन्द्रसिंह फतहसिंह से बातें कर रहे हैं। देवीसिंह को देख सब कोई खेमे के बाहर चले गये, सिर्फ फतहसिंह रह गये। कुमार ने पूछा, "क्यों, उस बुड्ढी की क्या खबर लाये ?"

देवीसिंह: बुड्ढी ने तो बेहिसाब धोखा दिया।

कुमार: (हंसकर) क्या धोखा दिया ?

देवीसिंह ने बुड्ढी के पीछे जाकर परेशान होने का सब हाल कहा जिसे सुनकर कुमार और भी उदास हुए।

देवीसिंह ने फतहसिंह से पूछा, "हमारे उस्ताद और ज्योतिषीजी कहां हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया कि 'बुड्ढी चुड़ैल के आने से कुमार बहुत गुस्से में थे, उसी हालत में तेजसिंह से कह बैठे कि तुम लोगों की ऐयारी में इन दिनों उल्ली लग गई है। इतना सुन गुस्से में आकर ज्योतिषीजी को साथ ले कहीं चले गये। अभी तक नहीं आये।'

देवीसिंह: कब गये ?

फतहसिंह: तुम्हारे जाने के थोड़ी देर बाद।

देवीसिंह: इतने गुस्से में उस्ताद का जाना खाली न होगा, ज़रूर कोई अच्छा काम करके आयेंगे।

कुमार: देखना चाहिए।

इतने में तेजसिंह और ज्योतिषीजी वहां आ पहुंचे। इस वक़्त उनके चेहरे पर खुशी और मुस्कुराहट झलक रही थी जिससे सब समझ गये कि ज़रूर कोई काम कर आये हैं। कुमार ने पूछा, "क्यों, क्या खबर है ?"

तेजसिंह: अच्छी खबर है।

कुमार: कुछ कहोगे भी कि इसी तरह!

तेजसिंह: आप सुन के क्या कीजियेगा ?

कुमार: क्या मेरे सुनने लायक नहीं है ?

तेजसिंह: आपके सुनने लायक क्यों नहीं है, मगर अभी न कहेंगे।

कुमार: भला कुछ तो कहो।

तेजसिंह: कुछ भी नहीं।

देवीसिंह: भला उस्ताद हमें भी बताओगे या नहीं ?

तेजसिंह: क्या तुमने उस्ताद कहकर पुकारा, इससे तुमको बता दें ?

देवीसिंह: झख मारोगे और बताओगे!

तेजसिंह: (हंसकर) तुम कौन-सा जस लगा आये, पहले यह तो कहो।

देवीसिंह: मैं तो आपकी शागिर्दी में बट्टा लगा आया!

तेजसिंह: तो बस हो चुका।

ये बातें हो ही रही थीं कि चोबदार ने आकर हाथ जोड़ अर्ज़ किया कि 'महाराज शिवदत्त के दीवान आये हैं'। सुनकर कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखा फिर कहा, "अच्छा आने दो, उनके साथ वाले बाहर ही रहें।"

महाराज शिवदत्त के दीवान खेमे में हाज़िर हुए और सलाम करके बहुत-से जवाहरात नज़र किये। कुमार ने हाथ से छू दिया। दीवान ने अर्ज़ किया, "यह नज़र महाराज शिवदत्त

की तरफ से ले आया हूं। ईश्वर की दया और आपकी कृपा से महाराज क़ैद से छूट गये हैं। आते ही दरबार करके हुक्म दे दिया कि आज से हमने कुंवर वीरेन्द्रसिंह की ताबेदारी कुबूल की, हमारे जितने मुलाज़िम या ऐयार हैं वे भी आज से कुमार को अपना मालिक समझें, इसके बाद मुझको यह नज़र और अपने हाथ की लिखी चिट्ठी देकर हज़ूर ने भेजा है, इस नज़र को कबूल किया जाये!"

कुमार ने नज़र कबूल कर तेजसिंह के हवाले की और दीवान साहब को बैठने का इशारा किया, वे चिट्ठी देकर बैठ गये।

कुछ रात जा चुकी थी, कुमार ने उसी वक़्त दरबारेआम किया, जब अच्छी तरह दरबार भर गया तब तेजसिंह को हुक्म दिया कि चिट्ठी ज़ोर से पढ़ो, तेजसिंह ने पढ़ना शुरू किया, लम्बे-चैड़े सिरनामे के बाद यह लिखा था-

"मैं किसी ऐसे सबब से उस तहखाने की क़ैद से छूटा जो आप ही की कृपा से छूटना कहलाया जा सकता है। आप ज़रूर इस बात को सोचेंगे कि आपकी दया से कैसे छूटा ? आपने तो क़ैद ही किया था, तो ऐसा सोचना न चाहिए। किसी सबब से मैं अपने छूटने का खुलासा हाल नहीं कह सकता, और न हाज़िर ही हो सकता हूं। मगर जब मौका होगा और आपको मेरे छूटने का हाल मालूम होगा, यकीन हो जायेगा कि मैंने झूठ नहीं कहा था। अब मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेरे सारे कसूरों को माफ करके यह नज़र कबूल करेंगे। आज से हमारा कोई ऐयार या मुलाज़िम आपसे ऐयारी या दंगा न करेगा और आप भी इस बात का खयाल रखें।"

आपका शिवदत्त।

इस चिट्ठी को सुनकर सब खुश हो गये। कुमार ने हुक्म दिया कि पंडित बद्रीनाथ जो हमारे यहां क़ैद हैं, लाये जायें। जब वे आये, कुमार के इशारे से उनके हाथ-पैर खोल दिये गये। उन्होंने भारी खिलअत अता कर दीवान साहब के हवाले किया और हुक्म दिया कि आप दो रोज़ यहां रहकर तब चुनार जायें! फतहसिंह को उनकी मेहमानी के लिए हुक्म देकर दरबार बर्खास्त किया।

नौवां बयान

जब दरबार बर्खास्त हुआ आधी रात जा चुकी थी। फतहसिंह दीवान साहब को लेकर अपने खेमें में गये। थोड़ी देर बाद कुमार के खेमें में तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी फिर इकट्ठे हुए। उस वक़्त सिवाय इन चार आदमियों के और कोई यहां न था।

कुमार: क्यों तेजसिंह, बुढ़िया की बात तो ठीक निकली!

तेजसिंह: जी हां, मगर महाराज शिवदत्त की चिट्ठी से तो कुछ और ही बात पाई जाती है।

देवीसिंह: उसके लिखने का कौन ठिकाना, कहीं वह धोखा न देता हो ?

ज्योतिषी: इस वक़्त बहुत सोच-विचार कर काम करने का मौका है। चाहे शिवदत्त कैसी ही सफाई दिखाए, मगर दुश्मन का विश्वास कभी न करना चाहिए।

तेजसिंह: आप ज्योतिषी हैं, विचारिए तो, यह चिट्ठी शिवदत्त ने सच्चे दिल से लिखी है या खुंदक खाकर के ?

ज्योतिषी: (कुछ विचार कर) यह चिट्ठी तो उसने सच्चे दिल से लिखी है मगर यह विश्वास नहीं होता कि आगे भी उसका दिल साफ बना रहेगा।

तेजसिंह: आज कल तो ऐसे-ऐसे मामले हो रहे हैं कि किसी के सिर-पैर का कुछ पता ही नहीं लगता! अगर यह चिट्ठी उसने सच्चे दिल से ही लिखी है तो अपने छूटने का खुलासा हाल क्यों नहीं लिखा ?

ज्योतिषी: इसका भी ज़रूर कोई सबब होगा।

कुमार: जी नहीं, तिलिस्म में रमल काम नहीं करता और वह तहखाना तिलिस्म है जिसमें महाराज शिवदत्त क़ैद किये गये थे।

तेजसिंह: कुछ समझ में नहीं आता!

देवीसिंह: वह चुड़ैल भी कोई पूरी ऐयार मालूम होती है।

ज्योतिषी: कभी नहीं, मैं सोच चुका हूं, ऐयारी का तो वह नाम तक नहीं जानती।

कुमार: खैर, जो कुछ होगा देखा जायेगा, अब कल से तिलिस्म तोड़ने में ज़रूर हाथ लगाना चाहिए।

तेजसिंह: हां, कल ज़रूर तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई शुरू हो।

कुमार: अच्छा अब तुम लोग भी जाओ।

तीनों ऐयार कुमार से विदा हो अपने-अपने डेरे में गये। दूसरे दिन कुंवर वीरेन्द्रसिंह तीनों ऐयारों को साथ ले तिलिस्म में गये, तिलिस्मी किताब और ताली भी साथ ले ली। दालान में

पहुंचकर तहखाने का ताला खोल पत्थर की चट्टान निकालकर अलग की और नीचे उतरकर कोठरी में होते हुए बाग में पहुंचे जहां थोड़ी-सी ज़मीन खोदकर छोड़ आये थे।

उसी ज़मीन को ये लोग मिलकर फिर खोदने लगे। आठ-नौ हाथ ज़मीन खोदने के बाद एक संदूक मालूम पड़ा जिसके ऊपर का पल्ला बंद था और ताले का मुंह एक छोटे से तांबे से पत्थर से ढका हुआ था जिससे अन्दर मिट्टी न जाने पाये।

कुमार ने चाहा कि संदूक को बाहर निकाल लें, मगर न हो सका, ज्यों-ज्यों चारों तरफ से मिट्टी हटाते थे नीचे से संदूक चैड़ा निकला आता था। कोशिश करने पर भी इसका पता न लग सका कि वह ज़मीन में कितने नीचे तक गड़ा हुआ है। आखिर लाचार होकर कुमार ने तिलिस्मी किताब खोली और पढ़ने लगे! यह लिखा हुआ था-

"ताली में रस्सी बांधकर जब बाग में उसे घसीटते फिरोगे तो एक जगह वह ताली ज़मीन से चिपक जायेगी। यहां की थोड़ी मिट्टी हटा कर ताली उठा लेना, इसके बाद उस ज़मीन को खोदना तब तक कि एक संदूक का मुंह न दिखाई पड़े। जब संदूक के ऊपर का हिस्सा निकल आवे, खोदना बंद कर देना क्योंकि असल में वह संदूक नहीं दरवाज़ा है। बाग के बीचोंबीच जो फौवारा है उसके पूरब की तरफ ठीक सात हाथ हटकर ज़मीन खोदना, एक हांडी निकलेगी, उसी में उसकी ताली है, उसे लाकर उस तहखाने का ताला खोलना, सीढ़ियां दिखलाई पड़ेंगी, उसी रास्ते से नीचे उतरना।"

"भीतर से वह तहखाना बहुत अंधेरा और धुएं से भरा हुआ होगा। खबरदार, कोई रोशनी मत करना, क्योंकि आग या मशाल के लगने ही से वह धुआं जल उठेगा जिससे बड़ा उपद्रव होगा और तुम लोगों की जान न बचेगी। मुंह पर कपड़ा लपेट कर उस तहखाने में उतरना, टटोलते हुए जिधर रास्ता मिले जल्दी-जल्दी चले जाना जिससे नाक के रास्ते धुआं दिमाग में न चढ़ने पाये। थोड़ी ही दूर जाकर एक चमकती कोठरी मिलेगी जिसमें की कुल चीजें दिखाई पड़ती होंगी। तमाम कोठरी में नीचे से ऊपर तक तार लगे होंगे। बहुत खोज करने की कोई ज़रूरत नहीं, तलवार से जल्दी-जल्दी उन तारों को काटकर बाहर निकल आना।"

इतना पढ़कर कुमार ने छोड़ दिया। लिखे बमूजिब बाग के बीचोंबीच वाले फौवारे से सात हाथ पूरब हटकर ज़मीन खोदी। हांडी निकली, उसमें से ताली निकालकर तहखाने का मुंह खोला। देवीसिंह ने कहा, "अब अपने-अपने मुंह पर कपड़ा लपेटते जाओ। तिलिस्म क्या है जान जोखम है। रोशनी मत करो, अंधेरे में टटोलकर चलो, आंख रहते अन्धे बनो और जल्दी चलो, दिमाग में धुआं भी न चढ़ने पाये!"

देवीसिंह की बात सुनकर कुमार हंस पड़े। सभी ने मुंह पर कपड़े लपेटे और अन्दर घुसकर चमकती हुई कोठरी में पहुंचे। जहां तक हो सका जल्दी-जल्दी उन तारों को काटकर तहखाने के बाहर निकल आये।

मुंह पर कपड़ा तो लपेटे हुए थे तिस पर भी थोड़ा-बहुत धुआं दिमाग में चढ़ ही गया जिससे सभी की तबीयत घबरा गई। तहखाने के बाहर निकलकर दो घण्टे तक चारों

आदमी बेसुध पड़े रहे, जब होश-हवास ठिकाने हुए तब तेजसिंह ने ज्योतिषी जी से पूछा, "अब दिन कितना बाकी है ?" उन्होंने जवाब दिया, "अभी चार घण्टे बाकी हैं।"

कुमार ने कहा, "अब कोई काम करने का वक़्त नहीं रहा। एक घण्टे में क्या हो सकता है ?" ज्योतिषीजी की भी यही राय ठहरी। आखिर चारों आदमी बाग के बाहर रवाना हुए और कोठरी तथा तहखाने के रास्ते होकर खण्डहर के दालान में आये। पहले की तरह चट्टान को तहखाने के मुंह पर रख ताला बन्द कर दिया और खण्डहर के बाहर होकर अपने खेमे में चले आये।

थोड़ी देर आराम करने के बाद कुमार के जी में आया कि ज़रा जंगल में इधर-उधर घूमकर हवा खानी चाहिये। तेजसिंह से कहा, वह भी इस बात पर मुस्तैद हो गये, आखिर तीनों ऐयारों को साथ लेकर लश्कर के बाहर हुए। कुमार घोड़े पर तीनों ऐयार पैदल थे।

कुमार धीरे-धीरे जा रहे थे। कोस भर के करीब गये होंगे कि एक मोटे से साखू के पेड़ में कुछ लिखा हुआ एक काग़ज़ चिपका नज़र पड़ा। तेजसिंह ने कहा, "देखो यह काग़ज़ चिपका है और इस पर कुछ लिखा है।" यह सुनकर देवीसिंह ने उस पेड़ के पास जाकर पढ़ा, यह लिखा हुआ था-

"क्यों, अब तो तुमको मालूम हुआ कि मैं कैसी आफत हूं ? कहती थी कि मुझसे शादी कर लो तो एक घण्टे में तिलिस्म तोड़कर चन्द्रकान्ता से मिलने की तरकीब बता दूं। किन्तु तुमने न माना, आखिर मैंने भी गुस्से में आकर महाराज शिवदत्त को छुड़ा दिया। अब क्या इरादा है ? शादी करोगे या नहीं ? अगर मंज़ूर हो तो जवाब लिखकर इसी पेड़ से चिपका दो, मैं तुरन्त तुम्हारे पास चली आऊंगी, और अगर नामंज़ूर हो तो साफ जवाब दे दो। अब की दफा चन्द्रकान्ता और चपला को जान से मार कलेजा ठंडा करूंगी। मुझे तिलिस्म में जाते कितनी देर लगती है, दिल में तेरह बार जाऊं और आऊं। अपनी भलाई और मेरी जवानी की तरफ खयाल करो। मेरे सामने तुम्हारे ऐयारों की ऐयारी कुछ न चलेगी। उस दिन देवीसिंह ने मेरा पीछा किया मगर क्या कर सके ? मेरी मानो, जिद्द मत करो, मेरे ही कहने से शिवदत्त तुम्हारा दोस्त बना है, अब भी समझ जाओ!

तुम्हारी-सूरजमुखी।"

इसे पढ़ देवीसिंह ने हाथ के इशारे से सभी को अपने पास बुलाया और कहा, "आप लोग भी इसे पढ़ लीजिए।"

आखिर में 'सूरजमुखी' पढ़कर सभी को हंसी आई। कुमार ने कहा, "देखो, चुड़ैल ने अपना नाम कैसे मज़े का लिखा है।" तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से कहा, "देखिए यह सब क्या लिखा है।"

ज्योतिषीजी ने जवाब दिया, "चाहे जो हो मगर मैं भी ठीक कहे देता हूं कि वह चुड़ैल कुमार का कुछ बिगाड नहीं सकती। इस लिखावट की तरफ-खयाल न कीजिए।"

कुमार ने कहा, "आपका कहना ठीक है, मगर वह जो कहती है उसे कर दिखाती है।" इतना कह कुमार आगे बढ़े। घूमते समय कई पेड़ों पर इसी तरह के लिखे हुए काग़ज़ चिपके दिखाई पड़े। ज्योतिषीजी के कहने से कुमार की तबीयत न भरी, उदास होकर अपने लश्कर में लौट आये और तीनों ऐयारों के साथ अपने खेमे में चले गये।

थोड़ी देर उसी सूरजमुखी की बातचीत होती रही। पहर रात गई होगी जब तेजसिंह ने कुमार से कहा, "हम लोग इस वक़्त बालादवी को जाते हैं, शायद कोई नई बात नज़र पड़ जाये।" कहकर तेजसिंह, देवीसिंह और ज्चोतिषीजी कुमार से विदा हो गश्त लगाने चले गये। कुमार भी कुछ भोजन करके पलंग पर जा लेटे। नींद काहे को आती थी, पड़े-पड़े कुमारी चन्द्रकान्ता की बेबसी, वनकन्या की चाह और बुड्ढी चुड़ैल की शैतानी को सोचते आधी रात से भी ज़्यादा गुज़र गई। इतने में खेमे के अन्दर किसी के आने की आहट मिली, दरवाज़े की तरफ देखा तो तेजसिंह दिखाई पड़े। बोले, "कहो तेजसिंह, कोई नई खबर लाये क्या ?"

तेजसिंह: हां एक बढ़िया चीज़ हाथ लगी है।

कुमार: क्या है ? देखूं!

तेजसिंह: चलिए!

कुंवर वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह के पीछे-पीछे खेमे के बाहर हुए। देखा कि कुछ दूर पर रोशनी हो रही है और बहुत से आदमी इकट्ठे हैं। पूछा, "यह भीड़ कैसी है ?" तेजसिंह ने कहा, "चलिए देखिये, बड़ी खुशी की बात है!"

कुमार के पास पहुंचते ही भीड़ हटा दी गयी। कई मशालें जल रही थीं जिनकी रोशनी में कुमार ने देखा कि क्रूरसिंह की खून से भरी हुई लाश पड़ी है, कलेजे में एक खंजर घुसा हुआ अभी तक मौज़ूद है। कुमार ने तेजसिंह से कहा, "क्यों तेजसिंह, आखिर तुमने इसको मार ही डाला।"

तेजसिंह: भला हम लोग एकाएक इस तरह किसी को मारते हैं ?

कुमार: तो फिर किसने मारा ?

तेजसिंह: मैं क्या जानूं ?

कुमार: फिर लाश को कहां से लाये ?

तेजसिंह: बालादवी करते (गश्त लगाते) हम लोग इस तिलिस्मी खण्डहर के पिछवाड़े चले गये! दूर देखा कि तीन-चार आदमी खड़े हैं। जब तक हम लोग पास जायें वे सब भाग गये। देखा तो क्रूरसिंह की लाश पड़ी थी। तब देवीसिंह को भेज यहां से डोली और कहार मंगवाये और इस लाश को ज्यों-का-त्यों उठवा लाये। अभी मरा नहीं है, बदन गर्म है, मगर बचेगा नहीं।

कुमार: बड़े ताज्जुब की बात है! इसे किसने मारा ? अच्छा वह खंजर तो निकालो जो इसके कलेजे में घुसा है।

तेजसिंह ने खंजर निकाला और पानी से धोकर कुमार के पास लाये। मशाल की रोशनी में उसके कब्ज़े पर निगाह डाली तो कुछ खुदा हुआ मालूम पड़ा। खूब गौर करके देखा तो बारीक हरफों में 'चपला' नाम खुदा हुआ था। तेजसिंह ने ताज्जुब से कहा, "देखिये, इस पर तो चपला का नाम खुदा है और इस खंजर को मैं बखूबी पहचानता भी हूं, यह बराबर चपला की कमर में बंधा रहता था, मगर फिर यहां कैसे आया ? क्या चपला ने इसे मारा है ?"

देवीसिंह: चपला बेचारी तो खोह में कुमारी चन्द्रकान्ता के पास बैठी होगी जहां चिराग भी न जलता होगा।

कुमार: तो वहां से इस खंजर को कौन लाया ?

तेजसिंह: इसके सिवाय यह भी सोचना चाहिए कि क्रूरसिंह यहां क्यों आया ? वह तो महाराज शिवदत्त के साथ था, और उसका दीवान खुद ही आया हुआ है जो कहता है कि महाराज अब आपसे दुश्मनी नहीं करेंगे।

कुमार: किसी को भेजकर महाराज शिवदत्त के दीवान को बुलवाओ।

तेजसिंह ने देवीसिंह को कहा कि तुम ही जाकर बुला लाओ। देवीसिंह गये, उन्हें नींद से उठाकर कुमार का सन्देशा दिया, वे बेचारे भी घबराये हुए जल्दी-जल्दी कुमार के पास आये। फतहसिंह भी उसी जगह पहुंचे। दीवान साहब क्रूरसिंह की लाश को देखते ही बोले, "बस, यह बदमाश तो अपनी सज़ा को पहुंच चुका, मगर इसके साथी अहमद और नाज़िम बाकी हैं, उनकी भी यही गति होती तो कलेजा ठण्डा होता!" कुमार ने पूछा, "क्या यह आपके यहां अब नहीं है ?" दीवान साहब ने जवाब दिया, "नहीं, जिस रोज़ महाराज तहखाने से छूटकर आये और हुक्म दिया कि हमारे यहां का कोई भी आदमी कुमार के साथ दुश्मनी का खयाल न रखे उसी वक़्त क्रूरसिंह अपने बाल-बच्चों तथा नाज़िम और अहमद को साथ लेकर चुनार से भाग गया, पीछे महाराज ने खोज भी कराई मगर कुछ पता न लगा।"

देखते-देखते क्रूरसिंह ने तीन-चार दफे हिचकी ली और दम तोड़ दिया। कुमार ने तेजसिंह से कहा, "अब यह मर गया, इसको ठिकाने पहुंचाओ और खंजर को तुम अपने पास रखो, सुबह देखा जायेगा।" तेजसिंह ने क्रूरसिंह की लाश को उठवा दिया और सब अपने खेमे में चले गये।

दसवां बयान

सुबह को कुमार ने स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर तिलिस्म तोड़ने का इरादा किया और तीनों ऐयारों को साथ ले तिलिस्म में घुसे। कल की तरह तहखाने और कोठरियों में से होते हुए उसी बाग में पहुंचे। स्याह पत्थर के दालान में बैठ गये और तिलिस्मी किताब खोलकर पढ़ने लगे, यह लिखा हुआ था-

"जब तुम तहखाने में उतरकर धुएं से, जो उसके अन्दर भरा होगा, दिमाग को बचा कर तारों को काट डालोगे तब उसके थोड़ी देर बाद कुल धुआं जाता रहेगा। स्याह पत्थर की बारहदरी में संगमरमर के सिंहासन पर चैखुंटे सुर्ख पत्थर पर कुछ लिखा हुआ तुमने देखा होगा, उसके छूने से आदमी के बदन में सनसनाहट पैदा होती है बल्कि उसे छूने वाला थोड़ी देर में बेहोश होकर गिर पड़ता है, मगर ये कुल बातें उन तारों के काटने से जाती रहेंगी क्योंकि अन्दर-ही-अन्दर यह तहखाना उस बारहदरी के नीचे तक चला गया है और उसी सिंहासन से उन तारों का लगाव है जो नीचे मसालों और दवाइयों में घुसे हुए हैं। दूसरे दिन फिर धुएं वाले तहखाने में जाना, धुआं बिलकुल न पाओगे, मशाल जला लेना और बेखौफ जाकर देखना कि कितनी दौलत तुम्हारे वास्ते वहां रखी हुई है। वह दौलत बाहर निकाल लो और जहां मुनासिब समझो रखो। जब तक सारी दौलत तहखाने में से निकल न जाये तब तक दूसरा काम तिलिस्म का मत करो। स्याह बारहदरी में संगमरमर के सिंहासन पर जो चैखुंटा सुर्ख पत्थर रखा है उसको ले जाओ, असल में वह एक छोटा-सा सन्दूक है जिसके भीतर नायाब चीजें़ हैं। उसकी ताली इसी तिलिस्म में तुमको मिलेगी।"

कुमार ने इन सब बातों को फिर दोहरा के पढ़ा, इसके बाद उस धुएं वाले तहखाने में जाने को तैयार हुए। तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी ने तीनों मशालें बाल लीं और कुमार के साथ उस तहखाने में उतरे। अन्दर उसी कोठरी में गये जिसमें बहुत-सी तारें काटी थीं। इस वक़्त रोशनी में मालूम हुआ कि सब तारें कटी हुई इधर-उधर फैल रही हैं। कोठरी खूब लम्बी-चैड़ी है। सैकड़ों लोहे और चांदी के बड़े-बड़े सन्दूक चारों तरफ पड़े हुए हैं। एक तरफ दीवार में खूंटी के साथ तालियों का एक गुच्छा भी लटक रहा है।

कुमार ने उस ताली के गुच्छे को उतार लिया। मालूम हुआ कि इन्हीं सन्दूकों की यह तालियां हैं। एक सन्दूक को खोलकर देखा तो हीरे के जड़ाऊं जनाने जेवरों से भरा पाया, तुरन्त बन्द कर दिया और दूसरे सन्दूक को खोला, कीमती हीरों से जड़ी नायाब कब्ज़ों की

तलवारें और खंजर नज़र आये। कुमार ने उसे भी बन्द कर दिया और बहुत खुश होकर तेजसिंह से कहा-

"वाकई इस कोठरी में बड़ा भारी खज़ाना है। अब इसको यहां खोलकर देखने की कोई ज़रूरत नहीं, सन्दूकों को बाहर निकलवाओ, एक-एक कर देखते और नौगढ़ भिजवाते जायेंगे। जहां तक जल्दी हो इन सभी को उठवाना चाहिए।"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "चाहे कितनी भी जल्दी की जाये मगर दस रोज़ से कम में इन सन्दूकों का यहां से किलना मुश्किल है। अगर आप एक-एक को देखकर नौगढ़ भेजने लगेंगे तो बहुत दिन लग जायेंगे और तिलिस्म तोड़ने का काम अटका रहेगा, इससे मेरी समझ में यही बेहतर है कि इन सन्दूकों को बिना देखे ज्यों-का-त्यों नौगढ़ भिजवा दिया जाये। जब सब कामों से छुट्टी मिलेगी तब खोलकर देख लिया जायेगा। ऐसा करने से किसी को मालूम भी न होगा कि इनमें क्या निकला और दुश्मनों की आंख भी न पड़ेगी। न मालूम कितनी दौलत इनमें भरी हुई है जिसकी हिफाज़त के लिए इतना बड़ा तिलिस्म बनाया गया!"

इस राय को कुमार ने पसन्द किया और देवीसिंह और ज्योतिषी ने भी कहा कि ऐसा ही होना चाहिए। चारों आदमी उस तहखाने के बाहर हुए और उसी मामूली रास्ते से खंडहर के दालान में आकर पत्थर की चट्टान में ऊपर वाले तहखाने का मुंह ढांप तिलिस्मी ताले से बन्द कर खण्डहर से बाहर हो अपने खेमे में चले आये।

आज ये लोग बहुत जल्दी तिलिस्म के बाहर हुए। अभी कुल दो पहर दिन चढ़ा था। कुमार ने तिलिस्म की और खज़ाने की तालियों का गुच्छा तेजसिंह के हवाले किया और कहा कि 'अब तुम सन्दूकों को निकलवा कर नौगढ़ भेजवाने का इन्तज़ाम करो।'

ग्यारहवां बयान

तेजसिंह को तिलिस्म में से खज़ाने के सन्दूकों को निकलवा कर नौगढ़ भेजवाने में कई दिन लग गये क्योंकि उसके साथ पहरे वगैरह का बहुत कुछ इन्तज़ाम करना पड़ा। रोज़ तिलिस्म में जाते और पहर दिन जब बाकी रहता, तिलिस्म से बाहर निकल आया करते। जब तक कुल असबाब नौगढ़ रवाना नहीं कर दिया गया तब तक तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई बन्द रही।

एक रात कुमार अपने पलंग पर सोये हुए थे। आधी रात जा चुकी थी, कुमारी चन्द्रकान्ता और वनकन्या की याद में अच्छी तरह नींद नहीं आ रही थी, कभी जागते, कभी सो जाते। आखिर एक गहरी नींद ने अपना असर यहां तक ज़माया कि सुबह क्या दो घड़ी दिन चढ़े तक आंख खुलने न दी।

जब कुमार की नींद खुली तो अपने को उस खेमे में न पाया जिसमें सोए थे अथवा जो तिलिस्म के पास जंगल में था, बल्कि उसकी जगह एक बहुत सजे हुए कमरे में पाया। देखा जिसकी छत में कई बेशकीमती झाड़ और शीशे लटक रहे थे। ताज्जुब में पड़ इधर-उधर देखने लगे। मालूम हुआ कि यह एक बहुत भारी दीवानखाना है जिसमें तीन तरफ संगमरमर की दीवार और चैथी तरफ बड़े-बड़े खूबसूरत दरवाज़े हैं जो इस समय बन्द हैं। दीवारों पर कई दीवारगीरें लगी हुई हैं। जिसमें दिन निकल आने पर भी अभी तक मोमबत्तियां जल रहीं हैं। उनके ऊपर चारों तरफ बड़ी-बड़ी खूबसूरत और हसीन औरतों की तस्वीरें लटक रही थीं। लम्बी दीवार के बीचोबीच में एक तस्वीर आदमी के कद के बराबर सोने के चैखटें में जड़ी दीवार के साथ लगी हुई थी।

कुमार की निगाह तमाम तस्वीरों पर से दौड़ती हुई उस बड़ी तस्वीर पर आकर अटक गई। सोचने लगे, बल्कि धीमी आवाज़ में इस तरह बोलने लगे जैसे अपने बगल में बैठे हुए किसी दोस्त को कोई कहता हो-

"अहा! इस तस्वीर से बढ़कर इस दीवानखाने में कोई चीज़ नहीं है और बेशक यह तस्वीर भी उसी की है जिसके इश्क ने मुझे तबाह कर रखा है! वाह, क्या साफ भोली सूरत दिखलाई है!"

कुमार झट से उठ बैठे और उस तस्वीर के पास जाकर खड़े हो गये। दीवानखाने के दरवाज़े बन्द थे मगर हर दरवाज़े के ऊपर छोटे-छोटे मोटे (सुराख) बने हुए थे जिनमें शीशे की टोटियां लगी हुई थीं, उन्हीं में से सीधी रोशनी ठीक उस लम्बी-चैड़ी तस्वीर पर पड़ रही

थी जिसके देखने के लिए कुमार पलंग पर से उतर कर उसके पास गये थे। असल में वह तस्वीर कुमारी चन्द्रकान्ता की थी।

कुमार उस तस्वीर के पास जाकर खड़े हो गये और फिर उसी तरह बोलने लगे जैसे किसी दूसरे को जो पास खड़ा हो, सुना रहे हों।

"अहा, क्या अच्छी और साफ तस्वीर बनी हुई है। इसमें ठीक उतना ही बड़ा कद है, वैसी ही बड़ी-बड़ी आंखें हैं जिनमें काग़ज़ की लकीरें कैसी साफ मालूम हो रही हैं। आहा, गालों पर गुलाबीपन कैसा दिखलाया है, बारीक होंठों में पान की सुर्खी और मुस्कुराहट साफ मालूम हो रही है, कानों में बाले, माथे पे बिंदी और नाक में नथ तो पड़ी ही हुई है मगर यह गले की गोप क्या ही अच्छी और साफ बनाई है जिसके बीच में चमकते हुए मानिक और अगल-बगल के कुन्दन की उभाड़ में तो हर दर्ज़े की कारीगरी खर्च की गई है। गोप क्या, सभी गहने अच्छे हैं। गले की माला, हाथों में बाजूबन्द, कंगन, छत्र, पहुंची, अंगूठी, सभी चीजें अच्छी बनाई हैं, और देखो, एक बगल चपला और दूसरी तरफ चम्पा क्या मजे में अपनी ठुड्डियों पर उंगली रखे खड़ी हैं!"

"हाय चन्द्रकान्ता कहां होगी!" इतना कह एक लम्बी सांस से एकटक उस तस्वीर की तरफ देखने लगे।

ऊपर की तरफ कहीं से पायज़ेब की छन्न से आवाज़ आई जिसे सुनते ही कुमार चैंक पड़े। ऊपर की तरफ कई छोटी-छोटी खिड़कियां थीं जो सब-की-सब बन्द थीं। तब यह आवाज़ कहां से आई ? इस घर में कौन औरत है ? इतनी देर तक तो कुमार अपने पूरे होशहवास में न थे मगर अब चैंके और सोचने लगे-

"हैं, इस जगह मैं कैसे आ गया ? कौन मुझे उठा लाया। उसने मेरे साथ बड़ी नेकी कीं जो प्यारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर मुझे दिखला दी, मगर कहीं ऐसा न हो कि मैं यह सब बातें स्वप्न में देखता होऊं ? ज़रूर यह स्वप्न है, चलो फिर उसी पलंग पर सो रहें।"

यह सोच कुमार फिर उसी पलंग पर आके लेट गये, आंखें बन्द कर लीं, मगर नींद कहां आती है! इतने में फिर पायज़ेब की आवाज़ ने कुमार को चैंका दिया। अबकी दफे उठते ही सीधे दरवाज़े की तरफ गये और सातों दरवाज़ों को धक्का दिया, सब खुल गये। एक छोटा-सा हरा-हरा बाग दिखाई पड़ा। अनुमान के अनुसार उस समय पहर भर दिन चढ़ चुका होगा।

यहां बाग बिलकुल जंगली फूलों और लताओं से भरा हुआ था, बीच में एक छोटा-सा तालाब भी दिखाई पड़ा। कुमार सीधे तालाब के पास चले गये जो पूरी तरह पत्थर का बना हुआ था। उसके एक तरफ खूबसूरत सीढ़ियां उतरने के लिए बनी हुई थीं, ऊपर सीढ़ियों के दोनों तरफ दो बड़े-बड़े जामुन के पेड़ लगे हुए थे जो बहुत ही घने थे। तमाम सीढ़ियों पर बल्कि कुछ जल तक उन दोनों की छाया पहुंची हुई थी और दोनों पेड़ों के नीचे छोटे-छोटे संगमरमर के चबूतरे बने हुए थे। बाईं तरफ के चबूतरे पर नरम गलीचा बिछा हुआ था,

बगल में एक टोटीदार चांदी का गड़वा, उसके पास ही शहतूत के पत्तों पर बना-बनाया दातून एक तरफ से चिरा हुआ था, बगल में एक छोटी-सी चांदी की चैकी पर धोती और गमछा पहनने के खूबसूरत और कीमती कपड़े भी रखे हुए थे।

दाहिनी तरफ वाले संगमरमर के चबूतरे पर चांदी की एक चैकी थी जिस पर पूजा का सामान धरा हुआ था। छोटे-छोटे कई जड़ाऊ पंचपात्र, तष्टी, कटोरियां सब साफ की हुई रखी थीं और नरम ऊनी आसन बिछा हुआ था जिस पर एक छोटा-सा बेल भी पड़ा था।

कुमार इस बात पर गौर कर रहे थे कि वे कहां आ पहुंचे ? उन्हें कौन लाया इस जगह ? उसका नाम क्या है, तथा वह बाग और कमरा किसका है ? इतने में ही उस पेड़ की तरफ निगाह जा पड़ी जिसके नीचे पूजा का सब सामान सजाया हुआ था। एक काग़ज़ चिपका हुआ नज़र पड़ा। उसके पास गये, देखा, कुछ लिखा हुआ है। पढ़ा, यह लिखा था-

"कुंवर वीरेन्द्रसिंह, यह सब सामान तुम्हारे वास्ते है। इसी बावली में नहाओ और इन चीजों को बरतो, क्योंकि आज के दिन तुम हमारे मेहमान हो।"

कुमार और भी सोच में पड़ गये कि यह क्या, इंतज़ाम तो इतना लम्बा-चैड़ा किया गया है मगर आदमी कोई भी नज़र नहीं पड़ता। ज़रूर यह जगह परियों के रहने की है और वे लोग भी इसी बाग में फिरती होंगी मगर दिखाई नहीं पड़ती। अच्छा, इस बाग में पहले घूमकर देख लें कि क्या-क्या है। फिर नहाना-धोना होगा, आखिर इतना दिन तो चढ़ ही चुका है। अगर कहीं दरवाज़ा नज़र पड़ा तो इस बाग के बाहर हो जायेंगे, मगर नहीं, इस बाग का मालिक कौन है और वह मुझे यहां क्यों लाया, जब तक इसका हाल मालूम न हो इस बाग से जाने को जी कैसे चाहेगा ? यही सोचकर कुमार बाग में घूमने लगे।

जिस कमरे में नींद से कुमार की आंखें खुली थीं वह बाग के पश्चिमी तरफ था। पूर्वी तरफ कोई इमारत न थी क्योंकि निकलता हुआ सूरज पहले ही से दिखाई पड़ा था जो इस वक़्त नेज़े के बराबर ऊंचा आ चुका था। घूमते हुए बाग के उत्तरी तरफ पहुंचे जहां एक और कमरा नज़र पड़ा जो पूर्वी तरफ वाले कमरे के साथ सटा हुआ था।

कुमार ने चाहा कि उस कमरे की भी सैर करें, मगर न हो सका, क्योंकि उसके सब दरवाज़े बन्द थे, अस्तु आगे बढ़े और जंगली फूलों, बेलों और खूबसूरत क्यारियों को देखते हुए बाग के दक्षिणी तरफ पहुंचे। एक छोटी-सी कोठरी नज़र पड़ी जिसकी दीवार पर कुछ लिखा हुआ था, पढ़ने से मालूम हुआ कि पाखाना है। उस जगह पर लकड़ी की चैकी पर पानी भरा हुआ एक लोटा भी रखा था।

दिन डेढ़ पहर से ज़्यादा चढ़ चुका होगा, कुमार की तबीयत घबराई हुई थी। आखिर सोच-विचार कर चैकी पर से लोटा उठा लिया और पाखाने गये, इसके बाद बावली में हाथ-मुंह धोया। सीढ़ियां के ऊपर जामुन के पेड़ के तले चैकी पर बैठकर दातुन किया, बावली में स्नान करके उन्हीं कपड़ों को पहना जो उनके लिए संगमरमर के चबूतरे पर रखे हुए थे, दूसरे पर बैठकर सन्ध्या-पूजा की।

जब इन सब कामों से छुट्टी पा चुके तो फिर उसी कमरे की तरफ आये जिसमें सोते से आंख खुली थी और कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी, मगर उस कमरे के कुल किवाड़ बन्द पाये, खोलने की कोशिश की मगर खुल न सके। बाहर दालान में खूब कड़ी धूप फैली हुई थी। धूप के मारे तबीयत घबरा उठी, यही जी चाहता था कि कहीं ठंडी जगह मिले तो आराम किया जाये। आखिर उस जगह से हट कुमार घूमते हुए उस दूसरी तरफ वाले कमरे को देखने चले जिसके किवाड़ पहर भर पहले बन्द पाये थे। वे अब खुले हुए दिखलाई पड़े, वे अन्दर चले गये!

भीतर से यह कमरा बहुत साफ संगमरमर के फर्श का था, मालूम होता था कि अभी कोई धोकर इसे साफ कर गया है। बीच में एक कश्मीरी गलीचा बिछा हुआ था। उसके आगे कई तरह की भोजन की चीज़ें चांदी और सोने के बरतनों में सजाई हुई रखी थीं। आसन पर एक चिट्ठी भी पड़ी हुई थी जिसे कुमार ने उठाकर पढ़ा, यह लिखा हुआ था-

"आप किसी तरह घबरायें नहीं, यह मकान आपके एक दोस्त का है जहां हर तरह से आपकी खातिर की जायेगी। इस वक़्त भोजन करके बगल की कोठरी में जहां आपके लिए पलंग बिछा है कुछ देर आराम करें।"

इसे पढ़कर कुमार जी में सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए ? भूख ज़ोर की लगी है पर बिना मालिक के इन चीजों के खाने को जी नहीं चाहता, और कुछ पता भी नहीं लगता कि मकान का मालिक कौन है जो छिप-छिपकर हमारी खातिरदारी की चीजें़ तैयार कर रहा है ? यह भी मालूम नहीं होता कि कौन किधर से आता है, कहां खाने को बनता हैं, मालिक मकान या उसके नौकर-चाकर किस जगह रहते हैं या किस राह से आते जाते हैं ? उन लोगों को जब इसी तरह छिपे रहना मंज़ूर था तो मुझे यहां लाने की ज़रूरत क्या थी ?

उसी आसन पर बैठे हुए बड़ी देर तक कुमार तरह-तरह की बातें सोचते रहे, यहां तक कि भूख नें उन्हें बेताब कर दिया। आखिर कब तक भूखे रहते, लाचार भोजन की तरफ हाथ बढ़ाया, मगर फिर कुछ सोचकर रुक गये और हाथ खींच लिया।

भोजन करने के लिए तैयार होकर फिर कुमार के हाथ खीचें जाने से बड़े ज़ोर के साथ हंसने की आवाज़ आई जिसे सुनकर कुमार और भी हैरान हुए। इधर-उधर देखने लगे मगर कुछ पता न लगा, ऊपर कई खिड़कियां दिखाई पड़ी मगर कोई आदमी नज़र न आया।

कुमार ऊपर वाली खिड़कियों की तरफ गौर से देख ही रहे थे कि एक आवाज़ आई-

"आप भोजन करने में देर न कीजिए, कोई खतरे की जगह नहीं है।"

भूख के मारे कुमार विकल हो रहे थे, लाचार होकर खाने लगे। सब चीजें एक-से-एक स्वादिष्ट बनी हुई थीं। अच्छी तरह से भोजन करने के बाद कुमार उठे, एक तरफ हाथ धोने के लिए लोटे में जल रखा हुआ था। अपने हाथ से लोटा उठा हाथ धोये और बगल वाली कोठरी की तरफ चले। जैसा कि पुरज़े में लिखा हुआ था उसी के मुताबिक सोने के लिए उस कोठरी में निहायत खूबसूरत पलंग बिछा हुआ पाया।

मसहरी पर लेटकर वह तरह-तरह की बातें सोचने लगे। इस मकान का मालिक कौन है और मुलाकात न करने में उसने क्या फायदा सोचा है ? यों कब तक पड़े रहना होगा ? वहां लश्कर वालों की हमारी खोज में क्या दशा होगी इत्यादि बातों को सोचते-सोचते कुमार को नींद आ गई और बेखबर सो गये।

दो घण्टे रात बीते तक कुमार सोते रहे। इसके बाद बीन की और उसके साथ ही किसी के गाने की आवाज़ कान में पड़ी, झट आंखें खोल इधर-उधर देखने लगे। मालूम हुआ कि यह वह कमरा नहीं है जिसमें भोजन करके सोये थे, बल्कि इस वक़्त अपने को एक निहायत खूबसूरत सजी हुई बारहदरी में पाया जिसके बाहर से बीन और गाने की आवाज़ आ रही थी।

कुमार पलंग पर से उठे और बाहर आकर देखने लगे। रात बिलकुल अंधेरी थी मगर रोशनी खूब हो रही थी जिससे मालूम पड़ा कि यह वह बाग नहीं है जिसमें दिन को स्नान और भोजन किया था।

इस वक़्त यह नहीं मालूम होता था कि बाग कितना बड़ा है क्योंकि इसकी दूसरी तरफ दीवार बिलकुल नज़र नहीं आ रही थी। बड़े-बड़े दरख्त भी इस बाग में बहुत थे। रोशनी खूब हो रही थी। कई औरतें जो कमसिन और खूबसूरत थीं टहलती और कभी-कभी गाती या बजाती हुई नज़र पड़ीं जिनका तमाशा दूर से खड़े हुए कुमार देखने लगे। वे सब आपस में हंसती और ठिठोली करती हुई एक रविश से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर घूम ही थीं। कुमार का दिल न माना और ये धीरे-धीरे उनके पास जाकर खड़े हो गये।

वे सब कुमार को देखकर रुक गंइ और आपस में कुछ बातें करने लगीं, जिसे कुमार बिलकुल नहीं समझ सकते थे, मगर उनके हाव-भाव से मालूम होता था कि वे कुमार को देखकर ताज्जुब कर रही हैं। इतने में एक औरत आगे बढ़कर कुमार के पास आई और उनसे बोली, "आप कौन हैं और बिना हुक्म इस बाग में क्यों चले आये ?"

कुमार ने उसे नज़दीक से देखा तो निहायत हसीन और चंचल पाया। जवाब दिया, "मैं नहीं जानता कि यह बाग किसका है ? अगर हो सके तो बताओ कि यहां का मालिक कौन है ?"

औरत: हमने जो कुछ पूछा है पहले उसका जवाब दे दो, फिर हमसे जो पूछोगे सो बता देंगे।

कुमार: मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि मैं यहां क्योंकर आ गया!

औरत: क्या खूब! कैसे सीधे-सादे आदमी हैं! (दूसरी औरत की तरफ देखकर) बहन, ज़रा इधर आना, देखो कैसे भोले-भाले चोर इस बाग में आ गये हैं जो अपने आने का सबब भी नहीं जानते!

उस औरत के आवाज़ देने पर सभी ने आकर कुमार को घेर लिया और पूछना शुरू किया, "सच बताओ, तुम कौन हो और यहां क्यों आये ?"

दूसरी औरत: इनकी कमर में तो हाथ डालो, देखो कुछ चुराया तो नहीं है।

तीसरी: जरूर, कुछ-न-कुछ चुराया होगा।

चैथी: अपनी सूरत इन्होंने कैसी बना रक्खी है, मालूम होता है किसी राजा ही के लड़के हैं।

पहली: भला यह तो बताइए कि ये कपड़े आपने कहां से चुराये ?

इन सभी की बातें सुनकर कुमार बड़े हैरान हुए। जी में सोचने लगे कि अजब आफत में आ फंसे, कुछ समझ में नहीं आता, ज़रूर इन्हीं लोगों की बदमाशी से मैं यहां पहुंचा और यही लोग अब मुझे चोर बनाती हैं। यों ही कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद फिर बातचीत होने लगी।

कुमार: मालूम होता है कि तुम्हीं लोगों ने मुझे यहां लाकर रक्खा है ?

एक औरत: हम लोगों को क्या गरज़ थी जो आपको यहां लाते या आप ही खुश होकर हमें क्या दे देंगे जिसकी उम्मीद से हम लोग ऐसा करते ? अब यह कहने से क्या होता है, ज़रूर चोरी की नीयत से ही आप आये हैं।

कुमार: मुझको यह भी मालूम नहीं कि यहां आने या यहां से जाने का रास्ता कौन-सा है ? अगर यह भी बतला दो तो मैं यहां से चला जाऊं।

दूसरी: वाह, बेचारे क्या अनजान बनते हैं। यहां तक आये भी और रास्ता भी नहीं मालूम।

तीसरी: बहन, तुम नहीं समझतीं, यह चालाकी से भागना चाहते हैं।

चैथी: अब इनको गिरफ्तार करके ले चलना चाहिए।

कुमार: भला मुझे कहां ले चलोगी ?

एक औरत: अपने मालिक के सामने।

कुमार: तुम्हारे मालिक का क्या नाम है ?

एक: ऐसी किसकी मजाल है जो हमारे मालिक का नाम ले!

कुमार: क्या अपने मालिक का नाम बताने में भी कुछ हर्ज़ है ?

दूसरी: हर्ज़! नाम लेते ही जुबान कटकर गिर पड़ेगी!

कुमार: तो तुम लोग अपने मालिक से बातचीत कैसे करती होगी ?

दूसरी: मालिक की तस्वीर से बातचीत करते हैं, सामना नहीं होता।

कुमार: अगर कोई पूछे कि तुम किसकी नौकर हो तो कैसे बताओगी ?

तीसरी: हम लोग अपनी मालिक राजकुमारी की तस्वीर अपने गले में लटकाए रहती हैं जिससे मालूम हो कि हम सब फलां की लौंडी हैं।

कुमार: तो क्या यहां कई राजकुमारियां हैं जो लौंडियां की पहचान में गड़बड़ी हो जाने का डर है ?

पहली: नहीं, यहां सिर्फ दो राजकुमारियां हैं और दोनों के यहां यही चाल है, कोई अपने मालिक का नाम नहीं ले सकता। जब पहचान की ज़रूरत होती है तो गले की तस्वीर दिखा दी जाती है।

कुमार: भला मुझे भी वह तस्वीर दिखाओगी ?

"हां हां, लो देख लो!" कहकर एक ने अपने गले की छोटी-सी तस्वीर जो धुकधुकी की तरह लटक रही थी निकालकर कुमार को दिखाई जिसे देखते ही उनके होश उड़ गये। "हैं, यह तस्वीर तो कुमारी चन्द्रकान्ता की है तो क्या ये सब उन्हीं की लौंडी हैं। नहीं-नहीं, कुमारी चन्द्रकान्ता यहां भला कैसे आयेगी ? उनका राज्य तो विजयगढ़ है। अच्छा पूछें तो यह मकान किस शहर में है ?"

कुमार: भला यह तो बताओ इस शहर का क्या नाम है जिसमें हम इस वक़्त हैं ?

एक: इस शहर का नाम चित्रनगर है क्योंकि सभी के गले में कुमारी की तस्वीर लटकती रहती है।

कुमार: और इस शहर का यह नाम कब से पड़ा ?

एक: हज़ारों बरस से यही नाम है और इसी ढंग की तस्वीर कई पुश्त से हम लोगों के गले में है। पहले मेरी परदादी को सरकार से मिली थी, होते-होते अब मेरे गले में आ गई!

कुमार: क्या तब से ही यही राजकुमारी यहां का राज्य करती आई है, कोई इनका मां-बाप नहीं है ?

दूसरी: अब यह सब हम लोग क्या जानें, कुछ राजकुमारी से तो मुलाकात होती नहीं जो मालूम हो कि यही हैं या दूसरी, जवान हैं या बुड्ढी हो गईं।

कुमार: तो कचहरी कौन करता है ?

दूसरी: एक बड़ी-सी तस्वीर हम लोगों की मालिक राजकुमारी की है, उसी के सामने दरबार लगता है। जो कुछ हुक्म होता है उसी तस्वीर से आवाज़ आती है।

कुमार: तुम लोगों की बातों ने मुझे पागल बना दिया। ऐसी बातें करती हो जो कभी मुमकिन ही नहीं, अक्ल में नहीं आ सकतीं। अच्छा, उस दरबार में मुझे भी ले जा सकती हो ?

औरत: इसमें कहने की कौन-सी बात है! आखिर आपको गिरफ्तार करके उसी दरबार में तो ले चलना है, आप खुद ही देख लीजिए।

कुमार: जब तुम लोगों का मालिक कोई भी नहीं, या अगर है भी तो एक तस्वीर, तब हमने उसका क्या बिगाड़ा है ? क्यों हमें बांध के ले चलोगी ?

औरत: हमारी राजकुमारी सभी की नज़रों से छिपकर अपने राज्य भर में घूमा करती हैं और अपने मकान और बगीचों की सैर किया करती हैं, मगर किसी की निगाह उन पर नहीं पड़ती। हमलोग रोज़ बाग और कमरों की सफाई करती हैं और रोज़ ही कमरों के सामान, फर्श, पलंग के बिछौने वगैरह ऐसे हो जाते हैं जैसे किसी के प्रयोग में आये हों। वह रौंदे

जाते और मैले भी हो जाते हैं इससे मालूम होता है कि हमारी राजकुमारी सभी की नज़रों से छिपकर घूमा करती हैं!

जिनकी हजारों बरस की उम्र है, और इसी तरह हमेशा जीती रहेंगी।

दूसरी: बहन, तुम इनकी बातों का जवाब कब तक देती रहोगी ? ये तो इसी तरह जान बचाना चाहते हैं।

पहली: नहीं नहीं, ये ज़रूर किसी रईस बल्कि राजा के लड़के हैं, इनकी बातों का जवाब देना मुनासिब है और इनको इज़्ज़त के साथ क़ैद करके दरबार में ले चलना चाहिए।

तीसरी: भला इनका और इनके बाप का नाम-धाम भी तो पूछ लो कि इसी तरह राजा का लड़का समझ लोगी। (कुमार की तरफ देखकर) क्यों जी, आप किसके लड़के हैं और आपका क्या नाम है ?

कुमार: मैं नौगढ़ के महाराज सुरेन्द्रसिंह का लड़का वीरेन्द्रसिंह हूं।

इनका नाम सुनते ही वे खुश होकर आपस में कहने लगीं, "वाह, इनको तो ज़रूर पकड़ के ले चलना चाहिए, बहुत कुछ इनाम मिलेगा, क्योंकि इन्हीं को गिरफ्तार करने के लिए तो सरकार की तरफ से मुनादी की गई थी, इन्होंने बड़ा भारी नुकसान किया है, सरकारी तिलिस्म तोड़ डाला और खज़ाना लूट कर घर ले गये। अब इनसे बात न करनी चाहिए। जल्दी इनके हाथ-पैर बांधो और इसी वक़्त सरकार के पास ले चलो। अभी रात नहीं गई है, दरबार होता होगा, देर हो जायेगी तो कल दिन भर इनकी हिफाज़त करनी पड़ेगी क्योंकि हमारे सरकार का दरबार रात को होता है।"

इन सभी की ये बातें सुन कुमार की तो अक्ल चकरा गयी। कभी ताज्जुब, कभी सोच, कभी घबराहट से इनकी अजब हालत हो गयी। आखिर उन औरतों की तरफ देख कर बोले, "फसाद क्यों करती हो, हम तो आप ही तुम लोगों के साथ चलने को तैयार हैं, चलो देखें, तुम्हारी राजकुमारी का दरबार कैसा है ?"

एक: जब आप खुद ही चलने को तैयार हैं तब हम लोगों को ज़्यादा बखेड़ा करने की क्या ज़रूरत है, चलिए।

कुमार: चलो।

वे सब औरतें गिनती में नौ थीं, चार कुमार के आगे, चार पीछे हो उनको लेकर रवाना हुईं और एक यह कहकर चली गई कि मैं पहले जाकर खबर करती हूं कि फलां डाकू को हम लोगों ने गिरफ्तार किया है जिसको साथ वाली सखियां लिये आती हैं।

वे सब कुमार को लिये बाग के एक कोने में गईं जहां दूसरी तरफ निकल जाने के लिए छोटा-सा दरवाज़ा नज़र पड़ा जिसमें शीशे की सिर्फ एक सफेद हांडी जल रही थी। वे सब कुमार को लिये हुए इसी दरवाज़े में घुसीं। थोड़ी दूर जाकर दूसरा बाग जो बहुत सज़ा था, नज़र पड़ा, जिसमें हद से ज़्यादा रोशनी हो रही थी और कई चोबदार हाथों में सोने-चांदी के

आसे लिये हुए इधर-उधर टहल रहे थे। उनके अलावा और भी बहुत-से आदमी घूमते दिखाई पड़े।

उन औरतों से किसी ने कुछ बातचीत या रोक-टोक न की। ये सब कुमार को लिये हुए बराबर धड़धड़ाती हुई एक बड़े भारी दीवानखाने में पहुंचीं जहां की सजावट और कैफियत देखकर कुमार के होश जाते रहे।

सबसे पहले कुमार की निगाह उस बड़ी तस्वीर के ऊपर पड़ी जो ठीक सामने सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर रखी हुई थी। मालूम होता था कि सिंहासन पर कुमारी चन्द्रकान्ता सिर पर मुकुट धरे बैठी है, ऊपर छत्र लगा हुआ है, और सिंहासन के दोनों तरफ दो ज़िन्दा शेर बैठे हुए हैं। जो कभी डकारते और गुर्राते भी थे। बाद इसके बड़े-बड़े सरदार बेशकीमत पोशाकें पहने सिंहासन के सामने दोपट्टी कतार बांधे सिर झुकाए बैठे थे। दरबार में सन्नाटा छाया था, सब चुप मारे बैठे थे।

चन्द्रकान्ता की तस्वीर और ऐसे दरबार को देखकर एक बार तो कुमार पर भी रौब छा गया। चुपचाप सामने खड़े हो गये, उनके पीछे और दोनों बगल वे सब औरतें खड़ी हो गईं जिन्होंने कुमार को चोरों की तरह हाज़िर किया था।

तस्वीर के पीछे से आवाज़ आई, "ये कौन है ?"

उन औरतों में से एक ने जवाब दिया, "ये सरकारी बाग में घूमते हुए पकड़े गये हैं और पूछने से मालूम हुआ कि इनका नाम वीरेन्द्रसिंह है, विक्रमी तिलिस्म इन्होंने ही तोड़ा है।" फिर आवाज़ आई, "अगर यह सच है तो इनके बारे में बहुत कुछ विचार करना पड़ेगा, इस वक़्त इन्हें ले जाकर हिफाज़त से रखो, फिर हुक्म पाकर दरबार में हाज़िर करना।"

उन लौंडियों ने कुमार को एक अच्छे कमरे में ले जाकर रखा जो हर तरह से सजा हुआ था, मगर कुमार अपने खयाल में डूबे हुए थे। नये बाग की सैर और तस्वीर के दरबार ने उन्हें और भी अचम्भे में डाल दिया था। गर्दन झुकाए सोच रहे थे। पहले बाग में जो ताज्जुब की बातें देखीं उनका तो पता लगा ही नहीं, इस बाग में तो और भी बातें दिखाई देती हैं जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर और आगे दरबार का लगना और भी हैरान कर रहा है। इसी सोच-विचार में गर्दन झुकाए लौंडियों के साथ चले गये, इसका कुछ भी खयाल नहीं कि कहां जाते हैं, कौन लिये जाता है कैसे सजे हुए मकान में बैठाए गये हैं ?

ज़मीन पर फर्श बिछा हुआ और गद्दी लगी हुई थी, बड़े तकिये के सिवाय और भी कई तकिये पड़े हुए थे। कुमार उस गद्दी पर बैठ गये और दो घंटे तक सिर झुकाए ऐसा सोचते रहे कि तन-बदन की बिलकुल खबर न रही। प्यास मालूम हुई तो पानी के लिए इधर-उधर देखने लगे। एक लौंडी सामने खड़ी थी उसने हाथ जोड़कर पूछा, "क्या हुक्म होता है ?" जिसके जवाब में कुमार ने हाथ के इशारे से पानी मांगा। सोने के कटोरे में पानी भर के लौंडी ने कुमार के हाथ में दिया, पीते ही एक दम उनके दिमाग तक ठंडक पहुंच गई, साथ ही आखों में झपकी आने लगी और धीरे-धीरे बिलकुल बेहोश होकर उसी गद्दी पर लेट गये।

बारहवां बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह के गायब होने से उनके लश्कर में खलबली पड़ गई। तेजसिंह और देवीसिंह ने घबरा कर चारों तरफ खोज की मगर कुछ पता न लगा। दिन भर बीत जाने पर ज्योतिषीजी ने तेजसिंह से कहा "मुझे रमल से जान पड़ता है कि कुमार को कई औरतें बेहोशी की दवा सुंघा बेहोश करके उठा ले गई हैं और नौगढ़ के इलाके में अपने मकान के अन्दर क़ैद कर रखा है, इससे ज़्यादा कुछ मालूम नहीं होता।"

ज्योतिषीजी की बात सुन तेजसिंह बोले, "नौगढ़ में तो अपना ही राज्य है, वहां कुमार के दुश्मनों का कहीं ठिकाना नहीं। महाराज सुरेन्द्रसिंह की अमलदारी से उनकी रियाया बहुत खुश तथा उनके और उनके खानदान के लिए वक़्त पर जान देने को तैयार है, फिर कुमार को वहां ले जाकर क़ैद करने वाला कौन हो सकता है ?"

बहुत देर तक सोच-विचार करते रहने के बाद तेजसिंह कुमार की खोज में जाने के लिए तैयार हुए। देवीसिंह और ज्योतिषीजी ने भी उनका साथ दिया और ये तीनों नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। जाते वक़्त महाराज शिवदत्त के दीवान को चुनार विदा करने गये जो कुंवर वीरेन्द्रसिंह की मुलाकात को महाराज शिवदत्त की तरफ से तोहफा और सौगात लेकर आये हुए थे, और तिलिस्मी किताब फतहसिंह सिपहसालार के सुपुर्द कर दी जो कुंवर वीरेन्द्रसिंह के गायब हो जाने के बाद उनके पलंग पर पड़ी हुई पाई थी।

ये तीनों ऐयार आधी रात गुज़र जाने के बाद नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। पांच कोस तक बराबर चलते गये, सवेरा होने पर तीनों एक घने जंगल में रुके और अपनी-अपनी सूरतें बदलकर फिर रवाना हुए। दिन भर चलकर भूखे-प्यासे शाम को नौगढ़ की सरहद पर पहुंचे। इन लोगों ने आपस में यह राय ठहराई कि किसी से मुलाकात न करें बल्कि ज़ाहिर भी न होकर छिपे-हीं-छिपे कुमार की खोज करें।

तीनों ऐयारों ने अलग-अलग होकर कुमार का पता लगाना शुरू किया। कहीं मकान में घुसकर, कहीं बाग में जाकर, कहीं आदमियों से बातें करके उन लोगों ने दरियाफ्त किया, मगर कहीं पता न लगा, दूसरे दिन तीनों इकट्ठे होकर सूरत बदले हुए राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में गये और एक कोने में खड़े बातचीत सुनने लगे।

उसी वक़्त कई जासूस दरबार में पहुंचे जिनकी सूरत से घबराहट और परेशानी साफ मालूम होती थी। तेजसिंह के पिता दीवान जीतसिंह ने उन जासूसों से पूछा, "क्या बात है जो तुम लोग इस तरह घबराये हुए हो ?"

एक जासूस ने कुछ आगे बढ़ के जवाब दिया, "लश्कर से कुमार की खबर लाया हूं।"

जीतसिंह: क्या हाल है जल्द कहो।

जासूस: दो रोज़ से उनका पता नहीं लगता।

जीतसिंह: क्या कहीं चले गये ?

जासूस: जी नहीं, रात को खेमे में सोये हुए थे, उसी हालत में कुछ औरतें उन्हें उठा ले गईं, मालूम नहीं कहां क़ैद कर रखा है।

जीतसिंह: (घबराकर) यह कैसे मालूम हुआ कि उन्हें कई औरतें ले गईं ?

जासूस: उनके गायब हो जाने के बाद ऐयारों ने बहुत तलाश किया। जब कुछ पता न लगा तो ज्योतिषी जगन्नाथजी ने रमल से पता लगा के कहा कि कई औरतें उन्हें ले गई हैं और इस नौगढ़ के इलाके में ही कहीं क़ैद कर रखा है।

जीतसिंह: (ताज्जुब से) इसी नौगढ़ के इलाके में ? यहां तो हम लोगों का कोई दुश्मन नहीं है।

जासूस: जो कुछ हो, ज्थोतिषीजी ने तो ऐसा ही कहा है।

जीतसिंह: फिर तेजसिंह कहां गया ?

जासूस: कुमार की खोज में कहीं गये हैं, देवीसिंह और ज्योतिषीजी भी उनके साथ हैं। मगर उन लोगों के जाते ही हमारे लश्कर पर आफत आ गई।

जीतसिंह: (चैंककर) हमारे लश्कर पर क्या आफत आ गई ?

जासूस: मौका पाकर महाराज शिवदत्त ने हमला कर दिया।

हमले का नाम सुनते ही तेजसिंह वगैरह ऐयार लोग जो सूरत बदले हुए एक कोने में खड़े थे आगे की सब बातें बड़े गौर से सुनने लगे।

जीतसिंह: पहले तो तुम लोग यह खबर लाये थे कि महाराज शिवदत्त ने कुमार की दोस्ती कबूल कर ली और उनका दीवान बहुत कुछ नज़र लेकर आया है, अब क्या हुआ ?

जासूस: उस वक़्त की वह खबर बहुत ठीक थी पर आखिर में उसने धोखा दिया और बेईमानी पर कमर बांध ली।

जीतसिंह: उसके हमले में क्या हुआ ?

जासूस: पहर भर तक तो फतहसिंह सिपहसालार खूब जूझे, आखिर शिवदत्त के हाथ़ से जख्मी होकर गिरफ्तार हो गये। उनके गिरफ्तार होते ही बेसिर की फौज़ छितिर-बितिर हो गई।

अभी तक सुरेन्द्रसिंह चुपचाप बैठे इन बातों को सुन रहे थे। फतहसिंह के गिरफ्तार हो जाने और लश्कर के भाग जाने का हाल सुन आंखें लाल हो गयीं, दीवान जीतसिंह की तरफ देखकर बोले, "हमारे यहां इस वक़्त फौज़ तो है नहीं, थोड़े-बहुत सिपाही जो कुछ हैं उनको लेकर इसी वक़्त कूच करूंगा, ऐसे नामर्द को मारना कोई बड़ी बात नहीं है।"

जीत: ऐसा ही होना चाहिए। सरकार के कूच की बात सुन भागी हुई फौज़ भी इकट्ठी हो जायेगी।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि दो जासूस और दरबार में हाज़िर हुए। पूछने पर उन्होंने कहा, "कुमार के गायब होने, ऐयारों के उनकी खोज में जाने, फतहसिंह के गिरफ्तार हो जाने और फौज़ के भाग जाने की खबर सुनकर महाराज जयसिंह अपनी कुल फौज़ लेकर चुनार पर चढ़ गये हैं। रास्ते में खबर लगी कि फतहसिंह के गिरफ्तार होने के दो ही पहर बाद रात को महाराज शिवदत्त भी कहीं गायब हो गये और उनके पलंग पर एक पुर्जा पड़ा हुआ मिला जिसमें लिखा हुआ था कि 'इस बेईमान को पूरी सज़ा दी जायेगी, जन्म भर क़ैद से छुट्टी न मिलेगी'। बाद इसके सुनने में आया कि फतहसिंह भी छूटकर तिलिस्म के पास आ गये और कुमार की फौज़ फिर इकट्ठी हो रही है।"

इस खबर को सुनकर राजा सुरेन्द्रसिंह ने दीवान जीतसिंह की तरफ देखा।

जीतसिंह: जो कुछ भी हो, महाराज जयसिंह ने चढ़ाई कर ही दी, मुनासिब है कि हम भी पहुंचकर चुनार का बखेड़ा ही तय कर दें, यह रोज़-रोज़ की खटपट अच्छी नहीं।

राजा: तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा ही किया जाये। क्या कहें, हमने सोचा था कि लड़के के हाथ से चुनार फतह हो जिससे उसका हौसला बढ़े, मगर अब बर्दाश्त नहीं होता।

इन सब बातों और खबरों को सुन तीनों ऐयार वहां से रवाना हो गये और एकांत में जाकर आपस में सलाह करने लगे।

तेजसिंह: अब क्या करना चाहिये ?

देवीसिंह: चाहे जो भी हो पहले तो कुमार को खोजना चाहिए।

तेजसिंह: मैं कहता हूं कि तुम लश्कर की तरफ जाओ, हम दोनों कुमार की खोज करते हैं।

ज्योतिषी: मेरी बात मानो तो पहले एक दफे उस तहखाने (खोह) में चलो जिसमें महाराज शिवदत्त को क़ैद किया गया था।

तेजसिंह: उसका तो दरवाज़ा ही नहीं खुलता।

ज्योतिषी: भला चलो तो सही, शायद किसी तरकीब से खुल जाये!

तेजसिंह: इसकी कोशिश तो आप बेफायदे करते हैं, अगर दरवाज़ा खुला भी तो क्या काम निकलेगा ?

ज्योतिषी: अच्छा चलो तो।

तेजसिंह: खैर चलो!

तीनों ऐयार तहखाने की तरफ रवाना हुए।

तेरहवां बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह धीरे-धीरे बेहोश होकर उस गद्दी पर लेट गये। जब आंख खुली अपने को एक पत्थर की चट्टान पर सोए पाया, घबराकर इधर-उधर देखने लगे। चारों तरफ ऊंची-ऊंची पहाड़ियां, बीच में बहता चश्मा, किनारे-किनारे जामुन के दरख्तों की बहार, देखने से मालूम हो गया कि यह वही तहखाना है जिसमें ऐयार लोग क़ैद किये जाते थे, जिस जगह तेजसिंह ने महाराज शिवदत्त को मय उनकी रानी के क़ैद किया था, या कुमार ने पहाड़ी के ऊपर चन्द्रकान्ता और चपला को देखा था मगर पास न पहुंच सके थे।

कुमार घबराकर पत्थर की चट्टान पर से उठ बैठे और उस खोह को अच्छी तरह पहचानने के लिए चारों तरफ घूमने लगे और हर एक चीज़ को देखने लगे। अब शक जाता रहा और बिलकुल यकीन हो गया कि यह वही खोह है, क्योंकि उसी तरह क़ैदी महाराज शिवदत्त को जामुन के पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर लेटे और पास ही उसकी रानी को बैठे और पैर दबाते देखा। इन दोनों का रुख दूसरी तरफ था, कुमार ने उनको देखा मगर उनको कुमार का गुमान तक भी न हुआ।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह दौड़े हुए उस पहाड़ी के नीचे गये जिसके ऊपर वाले दालान में कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को छोड़ तिलिस्म तोड़ने खोह के बाहर गये थे। इस वक़्त भी कुमारी चन्द्रकान्ता को उस दिन की तरह वही मैली और फटी साड़ी पहने उसी तौर से चेहरे और बदन पर मैल चढ़ी और बालों की लट बांधे बैठे हुए देखा।

देखते ही फिर वही मुहब्बत की बला सिर पर सवार हो गयी। कुमारी को पहले की तरह बेबसी की हालत में देख आखों में आंसू भर आये, गला रुक गया और कुछ शरमा के सामने से हट पेड़ की आड़ में खड़े हो जी में सोचने लगे, "हाय, अब कौन मुंह लेकर चन्द्रकान्ता के सामने जाऊं और उससे क्या बातचीत करूं ? पूछने पर क्या यह कह सकूंगा कि तुम्हें छुड़ाने के लिए तिलिस्म तोड़ने गये थे लेकिन अभी तक वह नहीं टूटा। हां! मुझसे तो यह बात कभी नहीं कही जायेगी। क्या करूं, वनकन्या के फेर में तिलिस्म तोड़ने की भी सुध जाती रही और कई दिन का हर्ज़ भी हुआ। जब कुमारी पूछेगी कि तुम यहां कैसे आये तो क्या जवाब दूंगा ? शिवदत्त भी यहां दिखाई देता है, लश्कर में तो सुना था कि वह छूट गया बल्कि उसका दीवान खुद नज़र लेकर आया था, "यह सब क्या मामला है ?"

इन सब बातों को कुमार सोच ही रहे थे कि सामने से तेजसिंह आते दिखाई पड़े जिनके कुछ दूर पीछे देवीसिंह और पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी भी थे। कुमार उनकी तरफ बढ़े।

तेजसिंह सामने से कुमार को अपनी तरफ आते देख दौड़े और उनके पास जाकर पैरों पर गिर पड़े, उन्होंने उठाकर गले से लगा लिया। देवीसिंह से भी मिले और ज्योतिषी को दण्डवत् किया। अब ये चारों एक पेड़ के नीचे पत्थर पर बैठकर बातचीत करने लगे।

कुमार: देखो तेजसिंह, वह सामने कुमारी चन्द्रकान्ता उसी दिन की तरह उदास और फटे कपड़े पहने बैठी है और बगल में उनकी सखी चपला बैठी अपने आंचल से उनका मुंह पोंछ रही है।

तेजसिंह: आपसे कुछ बातचीत भी हुई ?

कुमार: नहीं, कुछ नहीं, अभी मैं यही सोच रहा था कि उनके सामने जाऊं या नहीं।

तेजसिंह: कितने दिन से आप यह सोच रहे हैं ?

कुमार: अभी मुझको इस घाटी में आये दो घड़ी भी नहीं हुई।

तेजसिंह: (ताज्जुब से) क्या आप अभी इस खोह में आये हैं ? इतने दिनों तक कहां रहे ? आपको लश्कर से आये तो कई दिन हुए! इस वक़्त आपको एकाएक यहां देख के मैंने सोचा कि कुमारी के इश्क में चुपचाप लश्कर से निकलकर इस जगह आ बैठे हैं।

कुमार: नहीं, मैं अपनी खुशी से लश्कर से नहीं आया, न मालूम कौन उठा ले गया था ?

तेजसिंह: (ताज्जुब से) हैं, क्या अभी तक आपको यह भी मालूम नहीं हुआ कि लश्कर से आपको कौन उठा ले गया था ?

कुमार: नहीं, बिलकुल नहीं।

इतना कहकर कुमार ने अपना सारा हाल पूरा-पूरा कह सुनाया। जब तक कुमार अपनी कैफियत कहते रहे तीनों ऐयार अचम्भे से सुनते रहे। जब कुमार ने अपनी कहानी समाप्त की तब तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, "यह क्या मामला है, आप कुछ समझे ?"

ज्योतिषी: कुछ नहीं, बिलकुल खयाल में ही नहीं आता कि कुमार कहां गये थे और उन्हें ऐसे तमाशे दिखलाने वाला कौन था ?

कुमार: तिलिस्म तोड़ने के वक़्त जो ताज्जुब की बातें देखी थीं उनसे बढ़कर इन दो-तीन दिनों में दिखाई पड़ीं।

देवीसिंह: किसी छोटे दिल के डरपोक आदमी को मौका पड़े तो घबरा के जान ही दे दे।

ज्योतिषीजी: इसमें क्या सन्देह है!

कुमार: और एक ताज्जुब की बात सुनो, शिवदत्त भी यहां दिखाई पड़ रहा है।

तेजसिंह: सो कहां ?

कुमार: (हाथ का इशारा करके) वह, उस पेड़ के नीचे नज़र दौड़ाओ।

तेजसिंह: हां, ठीक तो है, मगर यह क्या मामला है! चलो उससे बात करें, शायद कुछ पता लगे।

कुमार: उसके सामने ही कुमारी चन्द्रकान्ता पहाड़ी के ऊपर है, पहले उससे कुछ हाल पूछना चाहिए। मेरा जी तो अजब पेच में पड़ा हुआ है, कोई बात बैठती ही नहीं कि वह क्या

पूछेगी और मैं क्या जवाब दूंगा ?

तेजसिंह: आशिकों की यही दशा होती है, कोई बात नहीं है, चलिए मैं आपकी तरफ से बात करूंगा।

चारों आदमी शिवदत्त की तरफ चले। पहले उस पहाड़ी के नीचे गये जिसके ऊपर छोटे दालान में कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बैठी थीं। कुमारी की निगाह दूसरी तरफ थी, चपला ने इन लोगों को देखा, वह उठ खड़ी हुई और आवाज़ देकर कुमार के राज़ी-खुशी का हाल पूछने लगी जिसका जवाब खुद कुमार ने देकर कुमारी चन्द्रकान्ता के मिजाज़ का हाल पूछा। चपला ने कहा, "इनकी हालत तो देखने ही से मालूम होती होगी, कहने की ज़रूरत ही नहीं।"

कुमारी अभी तक सिर नीचा किये बैठी थी। चपला के बातचीत की आवाज़ सुन चैंककर उसने सिर उठाया। कुमार को देखते ही हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और आखों से आंसू बहाने लगी।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने कहा, "कुमारी तुम थोड़े दिन और सब्र करो। तिलिस्म टूट गया, थोड़ा काम बाकी है। कई कारणों से मुझे यहां आना पड़ा, अब मैं फिर उसी तिलिस्म की तरफ जाऊंगा!"

चपला: कुमारी कहती हैं कि मेरा दिल यह कह रहा है कि इन दिनों या तो मेरी मुहब्बत आपके दिल से कम हो गई है या फिर मेरी जगह किसी और ने ले ली। मुद्दत से इस जगह तकलीफ उठा रही हूं जिसका खयाल मुझे कुछ भी न था, मगर कई दिनों से यह नया खयाल जी में पैदा होकर मुझे बेहद सता रहा है।

चपला इतना कह के चुप हो गयी। तेजसिंह ने मुस्कुराते हुए कुमार की तरफ देखा और बोले, "क्यों, कहो तो भण्डा फोड़ दूं ?"

कुमार इसके जवाब में कुछ कह न सके, आखों से आंसू की बूंदें गिरने लगीं और हाथ जोड़ के उनकी तरफ देखा। हंसकर तेजसिंह ने कुमार के जुड़े हुए हाथ छुड़ा दिये और उनकी तरफ से खुद चपला को जवाब दिया-

"कुमारी को समझा दो कि कुमार की तरफ से किसी तरह का अन्देशा न करें, तुम्हारे इतना ही कहने से कुमार की हालत खराब हो गई!"

चपला: आप लोग आज यहां किस लिये आये ?

तेजसिंह: महाराज शिवदत्त को देखने आये हैं, वहां खबर लगी थी कि ये छूटकर चुनार पहुंच गये।

चपला: किसी ऐयार ने सूरत बदली होगी, इन दोनों को तो मैं बराबर यहीं देखती रहती हूं।

तेजसिंह: ज़रा मैं उससे बातचीत कर लूं।

तेजसिंह और चपला की बातचीत महाराज शिवदत्त कान लगाकर सुन रहे थे। अब ये कुमार के पास आये, कुछ कहना चाहते थे कि ऊपर चन्द्रकान्ता और चपला की तरफ देखकर चुप हो रहे।

तेजसिंह: शिवदत्त, हां क्या कहने को थे, कहो रुक क्यों गये ?

शिवदत्त: अब न कहूंगा।

तेजसिंह: क्यों ?

शिवदत्त: शायद न कहने से जान बच जाये!

तेजसिंह: अगर कहोगे तो तुम्हारी जान कौन लेगा ?

शिवदत्त: जब इतना ही बता दूं तो बाकी क्या रहा ?

तेजसिंह: न बताओगे तो मैं तुम्हें कब छोड़ूंगा।

शिवदत्त: जो चाहो कहो, मगर मैं कुछ न बताऊंगा।

इतना सुनते ही तेजसिंह ने कमर से खंजर निकाल लिया, साथ ही चपला ने ऊपर से आवाज़ दी, "हां-हां ऐसा मत करना!" तेजसिंह ने हाथ रोककर चपला की तरफ देखा।

चपला: शिवदत्त के ऊपर खंजर खींचने का क्या सबब है ?

तेजसिंह: यह कुछ कहने आये थे मगर तुम्हारी तरफ देखकर चुप हो रहे, अब पूछता हूं तो कुछ बताते नहीं, बस कहते हैं कि 'कुछ बोलूंगा तो जान चली जायेगी'। मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्या मामला है ? एक तो इनके बारे में हम लोग आप ही हैरान थे, दूसरे कुछ कहने के लिए हम लोगों के पास आना और फिर तुम्हारी तरफ देखकर चुप हो रहना और पूछने से जवाब देना कि कहेंगे तो जान चली जायेगी, इन सब बातों से तबीयत और परेशान होती है।

चपला: आज कल ये पागल हो गये हैं, मैं देखा करती हूं कि कभी-कभी चिल्लाया और इधर-उधर दौड़ा करते हैं। बिलकुल हालत पागलों की-सी पाई जाती है, इनकी बातों का खयाल मत करो।

शिवदत: उलटे मुझी को पागल बनाती है!

तेजसिंह: (शिवदत्त से) क्या कहा फिर तो कहो ?

शिवदत्त: कुछ नहीं, तुम चपला से बात करो, मैं तो आजकल पागल हो गया हूं।

देवीसिंह: वाह, क्या पागल बने हैं!

शिवदत्त: चपला का कहना बहुत सही है, मेरे पागल होने में कोई शक नहीं।

कुमार: ज्योतिषी जी ज़रा इन नयी गढ़न्त के पागल को देखना!

ज्योतिषी: (हंसकर) जब आकाशवाणी ही हो चुकी कि ये पागल हैं तो अब क्या बाकी रहा!

कुमार: दिल में कई तरह के खटके पैदा होते हैं।

तेजसिंह: इसमें ज़रूर कोई भारी भेद है। न मालूम वह कब खुलेगा, लाचारी यह है कि हम कुछ कर नहीं सकते।

देवीसिंह: हमारी उस्तादिन इस भेद को जानती हैं मगर उनको भी इसे खोलना मंज़ूर नहीं है।

कुमार: यह बिलकुल ठीक है।

देवीसिंह की बात पर तेजसिंह हंसकर चुप हो रहे। महाराज शिवदत्त भी वहां से उठकर अपने ठिकाने जा बैठे। तेजसिंह ने कुमार से कहा, "अब हम लोगों को लश्कर में चलना चाहिए। सुनते हैं कि हम लोगों के पीछे महाराज शिवदत्त ने लश्कर पर धावा मारा जिससे बहुत कुछ खराबी हुई। मालूम नहीं पड़ता, वह कौन शिवदत था, मगर फिर सुनने में आया कि शिवदत्त भी गायब हो गया। अब यहां आकर फिर शिवदत्त को देख रहे हैं।"

कुमार: इसमें तो कोई शक नहीं कि ये सब बातें बहुत ही ताज्जुब की हैं, खैर, तुमने किसकी जुबानी सुना है साफ कहो।

तेजसिंह ने अपने तीनों आदमियों का कुमार की खोज में लश्कर से बाहर निकलना, नौगढ़ राज्य में राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में भेष बदले हुए पहुंच कर दो जासूसों की जुबानी लश्कर का हाल सुनना, महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह का चुनार पर चढ़ाई करना इत्यादि का हाल कहा जिसे सुन कुमार परेशान हो गये, खोह से बाहर चलने के लिए तैयार हुए। कुमारी चन्द्रकान्ता से फिर कुछ बातें कर और धीरज दे आखों से आंसू बहाते कुंवर वीरेन्द्रसिंह उस खोह के बाहर हुए।

शाम हो चुकी थी जब ये चारों खोह के बाहर आये। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा कि हम लोग यहां बैठते हैं, तुम नौगढ़ जाकर सरकारी अस्तबल में से एक उम्दा घोड़ा खोल लाओ जिस पर कुमार को सवार कराके तिलिस्म की तरफ ले चलें, मगर देखो, किसी को मालूम न हो कि देवीसिंह घोड़ा ले गये हैं।

देवीसिंह: जब किसी को मालूम हो ही गया तो मेरे जाने से फायदा क्या ?

तेजसिंह: कितनी देर में आओगे ?

देवीसिंह: यह कोई भारी बात नहीं जो देर लगेगी, पहर भर के अन्दर आ जाऊंगा। *

यह कह देवीसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए, उनके जाने के बाद ये तीनों भी घने पेड़ों के नीचे बैठकर बातें करने लगे।

कुमार: क्यों ज्योतिषीजी, शिवदत्त का भेद कुछ न खुलेगा ?

ज्योतिषी: इसमें तो कोई शक नहीं कि वह असल में शिवदत्त ही था जिसने क़ैद से छूटकर अपने दीवान के हाथ आपके पास तोहफा भेजकर सुलह के लिए कहलाया था, और विचार से मालूम होता है कि यह भी असली शिवदत्त ही है जिसे आप इस वक़्त खोह में छोड़ आये हैं, मगर बीच का हाल कुछ मालूम नहीं होता कि क्या हुआ ?

कुमार: पिताजी ने चुनार पर चढ़ाई की है, देखें इसका नतीज़ा क्या होता है, हम लोग भी वहां जल्दी पहुंचते तो ठीक था।

ज्योतिषी: कोई हर्ज़ नहीं, वहाँ बोलने वाला कौन है। आपने सुना ही है कि शिवदत्त फिर गायब हो गया बल्कि उस पुरजे से जो उसके पलंग पर मिला मालूम होता है फिर गिरफ्तार हो गया।

तेजसिंह: हां, चुनार दखल होने में शक नहीं है, क्योंकि सामना करने वाला कोई नहीं, मगर उनके ऐयारों का ज़रा खौफ़ बना रहता है।

कुमार: बद्रीनाथ वगैरह भी गिरफ्तार हो जाते तो बेहतर था।

तेजसिंह: अबकी बार चलकर ज़रूर गिरफ्तार करूंगा।

इसी तरह की बात करते इनको पहर भर से ज़्यादा गुज़र गया। देवीसिंह घोड़ा लेकर आ पहुंचे जिस पर कुमार सवार हो तिलिस्म की तरफ रवाना हुए, साथ-साथ तीनों ऐयार पैदल बातें करते जाने लगे।

---

*—उस खोह से नौगढ़ सिर्फ डेढ़ या दो कोस होगा।

चौदहवां बयान

कुमार के गायब हो जाने के बाद तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषजी उनकी खोज में निकले हैं, इस खबर को सुनकर महाराज शिवदत्त के जी में फिर बेईमानी पैदा हुई। एकान्त में अपने ऐयारों और दीवान को बुलाकर उसने कहा, "इस वक़्त कुमार लश्कर से गायब हैं और उनके ऐयार लोग भी उन्हें ढूंढ़ने गये हैं, मौका अच्छा है। मेरे जी में आता है कि चढ़ाई करके कुमार के लश्कर को खत्म कर दूं और उस खज़ाने को भी लूट लूं जो तिलिस्म में से उनको मिला है।"

इस बात को सुन दीवान तथा बद्रीनाथ, पन्नालाल रामनारायण और चुन्नीलाल ने बहुत समझाया कि आपको ऐसा न करना चाहिए क्योंकि आप कुमार से सुलह कर चुके हैं, अगर इस लश्कर को आप जीत भी लेंगे तो क्या हो जायेगा, फिर दुश्मनी पैदा होने में ठीक नहीं है, ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें करके इन लोगों ने समझाया, मगर शिवदत्त ने एक न मानी। इन्हीं ऐयारों में नाज़िम और अहमद भी थे जो शिवदत्त की राय में शरीक थे और उसे हमला करने के लिए उकसाते थे।

आखिर महाराज शिवदत्त ने कुंवर वीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर हमला किया और खुद मैदान में आ फतहसिंह सिपहसालार को मुकाबले के लिए ललकारा। वह भी जवांमर्द था, तुरंत मैदान में निकल आया और पहर भर तक खूब लड़ा, लेकिन आखिर शिवदत्त के हाथ से जख्मी होकर गिरफ्तार हो गया।

सेनापति के गिरफ्तार होते ही फौज़ बेदिल होकर भाग गई। सिर्फ खेमा वगैरह महाराज शिवदत्त के हाथ लगे, तिलिस्मी खज़ाना उसके हाथ कुछ भी न लगा क्योंकि तेजसिंह ने बन्दोबस्त करके उसे पहले ही नौगढ़ भिजवा दिया था, हां तिलिस्मी किताब उसके कब्ज़े में ज़रूर पड़ गई जिसे पाकर वह बहुत खुश हुआ और बोला, "अब तिलिस्म को मैं खुद तोड़ कुमारी चन्द्रकान्ता को उस खोह से निकाल ब्याहूंगा।"

फतहसिंह को क़ैद में भेज कर शिवदत्त ने जलसा किया। नाच की महफिल से उठकर अपने खास दीवानेखाने में आकर पलंग पर सो रहा। उसी रोज़ वह पलंग पर से गायब हुआ, मालूम नहीं कौन कहां ले गया, सिर्फ वह पुर्ज़ा पलंग पर मिला जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं। उसके गायब होने पर फतहसिंह सिपहसालार भी क़ैद से छूट गया, उसकी आंख सुनसान जंगल में खुली। यह कुछ मालूम न हुआ कि उसको क़ैद से किसने छुड़ाया बल्कि आसम और फायदा मालूम होता था।

फतहसिंह फिर तिलिस्म के पास आये जहां उनके लश्कर के कई आदमी मिले बल्कि धीरे-धीरे वह फौज़ इकट्ठा हो गई जो भाग गई थी। इसके बाद ही यह खबर लगी कि महाराज शिवदत्त को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

अकेले फतहसिंह ने सिर्फ थोड़े ही बहादुरों पर भरोसा कर चुनार पर चढ़ाई कर दी। दो कोस गया होगा कि लश्कर लिये हुए महाराज जययिंह के पहुंचने की खबर मिली। चुनार का जाना छोड़ जयसिंह के इस्तकबाल (अगुवानी) को गया और उनका भी इरादा अपने ही-सा सुन उनके साथ चुनार की तरफ बढ़ा।

जयसिंह की फौज़ ने पहुंच कर चुनार का क़िला घेर लिया। शिवदत्त की फौज़ ने क़िले के अन्दर घुसकर दरवाज़ा बन्द कर लिया, फसीलों पर तोपें चढ़ा दीं और कुछ रसद का सामान कर फसीलों और बुर्जों पर से लड़ाई करने लगे।

पन्द्रहवां बयान

चुनार के पास दो पहाड़ियों के बीच के एक नाले के किनारे शाम के वक़्त पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल, नाज़िम और अहमद बैठे आपस में बातें कर रहे हैं।

नाज़िम: क्या कहें, हमारा मालिक तो बहिश्त में चला गया, तकलीफ उठाने को हम रह गये।

अहमद: अभी तक इसका पता नहीं लगा कि उन्हें किसने मारा ?

बद्रीनाथ: उन्हें उनके पापों ने मारा और तुम दोनों की भी बहुत जल्द वही दशा होगी। कहने के लिए तुम लोग ऐयार कहलाते हो मगर बेईमान और हरामखोर पूरे दर्ज़े के हो, इसमें कोई शक नहीं।

नाज़िम: क्या हम लोग बेईमान हैं ?

बद्री. : जरूर, इसमें भी कुछ कहना है ? जब तुम अपने मालिक महाराज जययिंह के न हुए तो किसके होओगे ? आप भी गारत हुए, क्रूरसिंह की भी जान ली और हमारे राजा को भी चैपट बल्कि क़ैद कराया। यही जी में आता है कि खाली जूतियां मार-मारकर तुम दोनों की जान ले लूं।

अहमद: जुबान सम्हाल कर बात करो नहीं तो कान पकड़ के उखाड़ लूंगा। अहमद का इतना कहना था कि मारे गुस्से के बद्रीनाथ कांप उठे, उसी जगह से पत्थर का टुकड़ा उठाकर इस ज़ोर से अहमद के सिर में मारा कि वह तुरन्त ज़मीन सूंघ कर दोजख (नंर्क) की तरफ रवाना हो गया। उसकी यह कैफियत देख नाज़िम भागा मगर बद्रीनाथ तो पहले ही से उन दोनों की {??} प्यासा हो रहा था, कब जाने देता! बड़ा-सा पत्थर छागे *में रखकर मारा जिसकी चोट से वह भी ज़मीन पर गिर पड़ा और पन्नालाल वगैरह ने पहुंच कर मारे लातों के भुर्ता करके उसे भी अहमद के साथ क्रूर की ताबेदारी को रवाना कर दिया। इन दोनों के मरने के बाद फिर चारों ऐयार उसी जगह आ बैठे और आपस में बातें करने लगे।

पन्ना. : अब हमारे दरबार की झंझट दूर हुई।

बद्री. : महाराज को ज़रा भी रंज न होगा!

पन्ना. : अब किसी तरह गद्दी बचाने की फिक्र करनी चाहिए। महाराज जयसिंह ने बेतरह आ घेरा है और बिना महाराज के फौज़ मैदान में निकल कर लड़ नहीं सकती।

चुन्नी. : आखिर क़िले में भी रहकर कब तक लड़ेंगे। हम लोगों के पास सिर्फ दो महीने के लायक गल्ला क़िले के अन्दर है, इसके बाद क्या करेंगे ?

राम. : यह भी मौका न मिला कि कुछ गल्ला बटोर के रख लेते।

बद्री. : एक बात है, किसी तरह महाराज जयसिंह को उनके लश्कर से उड़ाना चाहिए, अगर वह हम लोगों की क़ैद में आ जायें तो मैदान में निकल कर उनकी फौज़ को भगाना मुश्किल न होगा।

पन्ना. : ज़रूर ऐसा करना चाहिए। जिसका नमक खाया उसके लिए जान देना हम लोगों का धर्म है।

राम. : हमारे राजा ने भी तो बेईमानी पर कमर बांधी है। बेचारे कुंवर वीरेन्द्रसिंह का क्या दोष है ?

चुन्नी. : चाहे जो हो, मगर हम लोगों को मालिक का साथ देना ज़रूरी है।

बद्री. : नाज़िम और अहमद, ये ही दोनों हमारे राजा पर क्रूर ग्रह थे, सो निकल गये। अबकी दफे ज़रूर दोनों राजाओं में सुलह करवाऊंगा तब वीरेन्द्रसिंह की ताबेदारी नसीब होगी। वाह, क्या जवांमर्द और होनहार कुमार है!

पन्ना. : अब रात भी बहुत गई, चलो कोई ऐयार करके महाराज जयसिंह को गिरफ्तार करें और गुप्त राह से क़िले में ले जाकर क़ैद करें।

बद्री. : हमने एक ऐयारी सोची है, वही ठीक होगी।

पन्ना. : वह क्या ?

बद्री. : हम लोग चल के पहले उनके रसोइये को फांसें। मैं उसकी शक्ल बनाकर रसोई बनाऊं और तुम लोग रसोई के खिदमतगारों को फांस कर उनकी शक्ल बनाकर हमारे साथ काम करो। मैं खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिलाकर महाराज और बाद मैं उन लोगों को भी खिलाऊंगा जो उनके पहरे पर होंगे, बस फिर हो गया काम!

पन्ना. : अच्छी बात है, तुम रसोइया बनो क्योंकि ब्राह्मण हो, तुम्हारे हाथ का महाराज जयसिंह खायेंगे तो उनका धर्म भी न जायेगा, इसका भी खयाल ज़रूर होना चाहिए, मगर बात का ध्यान रहे कि चीजों में तेज़ बेहोशी की दवा न पड़ने पाये।

बद्री. : नहीं, नहीं, क्या मैं ऐसा बेवकूफ हूं, क्या मुझे मालूम नहीं कि राजा लोग पहले दूसरे को खिला कर देख लेते हैं! ऐसी नरम दवा डालूंगा कि खाने के दो घंटे बाद तक बिलकुल मालूम न पड़े कि हमने बेहोशी की दवा मिली हुई चीजें खाई हैं।

राम. : बस यह राय पक्की हो गई, अब यहां से उठो।

---

*छागा-एक किस्म का छींका (ढेलवांस) होता है। छींके में चारों तरफ डोरी रहती है मगर छागे में दो ही तरफ। एक तरफ की डोरी कलाई में पहन लेते हैं और दूसरी डोरी चुटकी में थाम कर बीच में से घुमा कर निशाना मारते हैं।

सोलहवां बयान

राजा सुरेन्द्रसिंह भी नौगढ़ से रवाना हो दौड़े-दौड़े बिना मुकाम किये दो रोज़ में चुनार के पास पहुंचे। शाम के वक़्त महाराज जयसिंह को खबर लगी। फतहसिंह सेनापति को जो उनके लश्कर के साथ थे इस्तकबाल के लिए रवाना किया।

फतहसिंह की जुबानी राजा सुरेन्द्रसिंह ने सब हाल सुना। सुबह होते-होते इनका लश्कर भी चुनार पहुंचा और जयसिंह के लश्कर के साथ मिलकर पडाव डाला गया। राजा सुरेन्द्रसिंह ने फतहसिंह को महाराज जयसिंह के पास भेजा कि जाकर मुलाकात के लिए बातचीत करे।

फतहसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के खेमे से निकल कर कुछ ही दूर गये होंगे कि सामने से महाराज जयसिंह के दीवान हरदयालसिंह सरदारों को साथ लिये परेशान और बदहवास आते दिखाई पड़े जिन्हें देख यह अटक गये, कलेजा धक-धक करने लगा। जब वे लोग पास आ गये तो पूछा, "क्या हाल ह,ै जो आप लोग इस तरह घबराये हुए आ रहे हैं ?"

एक सरदार: कुछ मत पूछो, बड़ी आफत आ पड़ी!

फतहसिंह: (घबरा कर) सो क्या ?

दूसरा सरदार: राजा साहब के पास चलो, वहीं सब कुछ कहेंगे।

इन सभी को लिये हुए फतहसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के खेमे में आये। कायदे के माफिक सलाम किया, बैठने के लिए हुक्म पाकर बैठ गये।

राजा सुरेन्द्रसिंह को भी इन लोगों के बदहवास आने से खटका हुआ। हाल पूछने पर हरदयालसिंह ने कहा, "आज बहुत सवेरे क़िले के अन्दर से तोप की आवाज़ आई जिसे सुन खबर करने के लिए मैं महाराज के खेमे में गया। दरवाज़े पर पहरे वालों को बेहोश पड़े हुए देख कर ताज्जुब मालूम हुआ मगर मैं बराबर खेमे के अन्दर चला गया। अन्दर जाकर देखा तो महाराज का पलंग खाली पाया। देखते ही जी सन्न हो गया, पहरे वालों को देखकर कविराजजी ने कहा कि इन लोगों को बेहोशी की दवा दी गई है, तुरन्त ही कई जासूस महाराज का पता लगाने के लिए इधर-उधर भेजे गये मगर अभी तक कुछ भी खबर न मिली।"

यह हाल सुनकर सुरेन्द्रसिंह ने जीतसिंह की तरफ देखा जो उनके बाईं तरफ बैठे हुए थे।

जीतसिंह ने कहा, "अगर खाली महाराज गायब हुए होते तो मैं कहता कि कोई ऐयार किसी दूसरी युक्ति से ले गया, मगर जब कई आदमी अभी तक बेहोश पड़े हैं तो विश्वास

होता है कि खास महाराज के खाने-पीने की चीजों में बेहोशी की दवा दी गई है। अगर उनका रसोइया आये तो पूरा पता लग सकता है।"

कई चोबदार दौड़ गये। बहुत दूर जानें की ज़रूरत न थी, दानों लश्करों का पड़ाव साथ-ही-साथ पड़ा था। चोबदार खबर लेकर बहुत जल्दी लौट आये कि रसोइया कोई भी नहीं है। उसी वक़्त कई आदमियों ने आकर यह खबर दी कि महाराज के रसोइए और खिदमतगार लश्कर के बाहर पाये गये जिनको डोली पर लादकर लोग यहां लिये आते हैं।

दीवान जीतसिंह ने कहा, "सब डोलियां बाहर रक्खी जायें, सिर्फ एक रसोइए की डोली यहां लाई जाये।"

बेहोश रसोइया खेमे के अन्दर लाया गया जिसे जीतसिंह लखलखा सुंघाकर उसे होश में लाये और उससे बेहोश होने का सबब पूछा। जवाब में उसने कहा कि "पहर रात गये हम लोगों के पास एक हलवाई खोमचा लिए हुए आया जो बोलने में बहुत ही तेज़ और अपने सौदे की बेहद तारीफ करता था, हम लोगों ने उससे कुछ सौदा खरीदाकर खाया, उसी समय सिर घूमने लगा, दाम देने की भी सुध न रही, इसके बाद क्या हुआ मालूम नहीं।"

यह सुन दीवान जीतसिंह ने कहा, "बस, सब हाल मालूम हो गया, अब तुम अपने डेरे पर जाओ।" इसके बाद थोड़ा-सा लखलखा देकर उन सरदारों को भी विदा किया और यह कह दिया कि इसे सुंघाकर आप उन लोगों को होश में लाइये जो बेहोश हैं, और दीवान हरदयालसिंह को कहा कि अभी आप यहीं बैठिए।

सब आदमी विदा कर दिये गये। राजा सुरेन्द्रसिंह, जीतसिंह और दीवान हरदयालसिंह रह गये।

राजा सुरेन्द्रसिंह: (दीवान जीतसिंह की तरफ देखकर) महाराज को छुड़ाने की कोई फिक्र होनी चाहिए।

जीतसिंह: क्या फिक्र की जाये, कोई ऐयार भी यहां नहीं है जिससे कुछ काम लिया जाये, तेजसिंह और देवीसिंह कुमार की खोज में गये हुए हैं, अभी तक उनका भी कुछ पता नहीं!

राजा: तुम ही कुछ तरकीब करो।

जीतसिंह: भला मैं क्या कर सकता हूं, मुद्दत हुई, ऐयारी छोड़ दी। जिस दिन तेजसिंह को इस फन में होशियार करके सरकार के नज़र किया उसी दिन सरकार ने ऐयारी करने से ताबेदार को छुट्टी दे दी, अब फिर यह काम लिया जाता है तो ताबेदार को यकीन नहीं कि काम को कर पाऊँगा या नहीं। मेरे पास तो अब ऐयारी का बटुआ तक नहीं है।

राजा: तुम्हारा कहना ठीक है मगर इस वक़्त दब जाना या ऐयारी से इनकार करना मुनासिब नहीं, और मुझे यकीन है कि चाहे तुम ऐयारी का बटुआ न भी रखते हो मगर उसका कुछ-न-कुछ सामन ज़रूर अपने साथ लाये होगे!

जीतसिंह: (मुस्कुराकर) जब सरकार के साथ हैं और इस फन को जानते हैं तो सामान क्यों न रखेंगे, तिस पर सुर में!

राजा: तब फिर क्या सोचते हो, इस वक़्त अपनी पुरानी कारीगरी याद करो और महाराज जयसिंह को छुड़ाओ।

जीतसिंह: जो हुक्म! (हरदयालसिंह की तरफ देखकर) आप एक काम कीजिए, इन बातों को जो इस वक़्त हुई हैं छिपाये रहिए और फतहसिंह को लेकर शाम होने के बाद लड़ाई छेड़ दीजिए। चाहे जो हो मगर, आज रात भर लड़ाई बन्द न होने पाये, यह काम आपके ज़िम्मे रहा।

हरदयालसिंह: बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा।

जीतसिंह: आप जाकर लड़ाई का इन्तज़ाम कीजिए, मैं भी महाराज से विदा हो अपने डेरे में जाता हूं, क्योंकि समय कम और काम बहुत है।

दीवान हरदयालसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह से विदा हो अपने डेरे की तरफ रवाना हुए। दीवान जीतसिंह ने फतहसिंह को बुलाकर लड़ाई के बारे में बहुत कुछ समझा-बुझा के विदा किया और आप भी हुक्म लेकर अपने खेमे में गये। पहले पूजा-भोजन इत्यादि से छुट्टी पाई, तब ऐयारी का सामान दुरुस्त करने लगे।

दीवान जीतसिंह का एक बहुत पुराना बुड्ढा खिदमतगार था जिसको ये बहुत मानते थे। इनका ऐयारी का सामान उसी के सुपुर्द रहा करता था। नौगढ़ से रवाना होते दफे अपना ऐयारी का असबाब दुरुस्त करके चलने का इन्तज़ाम इसी बुड्ढे के सुपुर्द किया था। इनको ऐयारी छोड़े मुद्दत हो चुकी थी मगर जब इन्होंने अपने राजा को लड़ाई पर जाते देखा और यह भी मालूम हुआ कि ऐयार लोग कुमार की खोज में गये हैं, शायद कोई ज़रूरत पड़ जाये, तब बहुत-सी बातों को सोच उन्होंने अपना सब सामान दुरुस्त करके साथ ले लेना मुनासिब समझा था। उसी बुड्ढे खिदमतगार से ऐयारी का सन्दूक मंगवाया और सामन दुरुस्त करके बटुए में भरने लगे। इन्होंने बेहोशी की दवाओं का तेल उतारा था उसे भी एक शीशी में बन्द कर बटुए में रख लिया। पहर दिन बाकी रहा तब सब सामान दुरुस्त कर एक ज़मींदार की सूरत बना अपने खेमे के बाहर निकल गये।

जीतसिंह लश्कर से निकलकर क़िले के दक्खिन की एक पहाड़ी की तरफ रवाना हुए और थोड़ी दूर जाने के बाद सुनसान मैदान में जाकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। बटुए में से कलम, दवात और काग़ज़ निकाला और कुछ लिखने लगे, जिसका मतलब यह था:

"तुम लोगों की चालाकी कुछ काम न आई और आखिर मैं क़िले के अन्दर घुस ही आया। देखो, क्या ही आफत मचाता हूं। तुम चारों ऐयार हो और मैं ऐयारी नहीं जानता तिस पर भी तुम लोग मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते, लानत है तुम्हारी ऐयारी पर।"

इस तरह के बहुत से पुरजे लिखकर और थोड़ी-सी गोंद तैयार कर बटुए में रख ली और क़िले की तरफ रवाना हुए। पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई, अस्तु क़िले के इधर-उधर घूमने लगे। जब खूब अंधेरा हो गया, मौका पाकर एक दीवार पर, जो नीची और टूटी हुई थी, कमन्द लगाकर चढ़ गये। अन्दर सन्नाटा पाकर उतरे और घूमने लगे।

क़िले के बाहर दीवान हरदयालसिंह और फतहसिंह ने दिल खोलकर लड़ाई मचा रक्खी थी, दनादन तोपों की आवाजें आ रही थीं, क़िले की फौज़ बुर्जियों या मीनारों पर चढ़कर लड़ रही थी और बहुत-से आदमी भी दरवाज़े की तरफ खड़े घबराये हुए लड़ाई का नतीज़ा देख रहे थे; इस सबब से जीतसिंह को घूमने का कुछ मौका मिला।

उन पुर्ज़ों को जिन्हें पहले से लिखकर बटुए में रख छोड़ा था इधर-उधर दीवारों और दरवाज़ों पर चिपकाना शुरू किया, जब किसी को आते देखते, हटकर छिप रहते और सन्नाटा होने पर फिर अपना काम करते, यहां तक कि सब काग़ज़ों को चिपका दिया।

क़िले के फाटक पर लड़ाई हो रही है, जितने अफसर और ऐयार हैं, सब उसी तरफ जुटे हुए हैं, किसी को यह खबर नहीं कि ऐयारों के सरताज जीतसिंह क़िले के अन्दर आ घुसे और अपनी ऐयारी की फिक्र कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि इतने लम्बे-चैड़े क़िले में महाराज जयसिंह कहां क़ैद हैं इस बात का पता लगायें और फिर उन्हें छुड़ायें, और साथ ही शिवदत्त के ऐयारों को भी गिरफ्तार करके लेते चलें, एक ऐयार भी बचने न पाये जो फंसे हुए ऐयारों की फिक्र करे या छुड़ाये।

सत्रहवां बयान

फतहसिंह सेनापति की बहादुरी ने क़िले वालों के छक्के छुड़ा दिये। यही मालूम होता था कि अगर इसी तरह रात भर लड़ाई होती रही तो सवेरे तक क़िला हाथ से जाता रहेगा और फाटक टूट जायेगा। मुश्किल में पड़े बद्रीनाथ वगैरह ऐयार इधर-उधर घबराये घूम रहे थे, इतने में एक चोबदार ने आकर शोर-गुल मचाना शुरू किया जिससे बद्रीनाथ और भी घबरा गये। चोबदार बिलकुल ज़ख्मी हो रहा था और उसके चेहरे पर इतने ज़ख्म लगे हुए थे कि खून निकलने से उसको पहचानना मुश्किल हो रहा था।

बद्रीनाथ: (घबराकर) यह क्या, तुमको किसने जख्मी किया ?

चोबदार: आप लोग तो इधर के खयाल में ऐसा भूले हैं कि और बातों की कोई सुध ही नहीं। पिछवाड़े की तरफ से कुंवर वीरेन्द्रसिंह के कई आदमी घुस आये हैं और क़िले में चारों तरफ घूम-घूमकर न मालूम क्या कर रहे हैं। मैने एक का मुकाबला भी किया मगर वह बहुत ही चालाक और फुर्तीला था, मुझे इतना जख्मी किया कि दो घंटे तक बदहवास ज़मीन पर पड़ा रहा, मुश्किल से यहां तक खबर देने आया हूं। आती दफे रास्ते में उसे फिर दीवारों पर काग़ज़ चिपकाते देखा मगर खौफ़ के मारे कुछ न बोला।

पन्ना.: यह बुरी खबर सुनने में आई।

बद्रीनाथ: वे लोग कितने आदमी हैं, तुमने देखा है ?

चोबदार: कई आदमी मालूम होते हैं, मगर मुझे एक ही से वास्ता पड़ा था।

बद्रीनाथ: तुम उसे पहचान सकते हो ?

चोबदार: हां, ज़रूर पहचान लूंगा क्योंकि मैंने रोशनी में उसकी सूरत बखूबी देखी है।

बद्रीनाथ: मैं उन लोगों को ढूंढ़ने चल रहा हूं, तुम साथ चल सकते हो ?

चोबदार: क्यों न चलूंगा ? मुझे उसने अधमुआ कर डाला था, अब बिना गिरफ्तार कराये कब चैन पड़ता है।

बद्रीनाथ: अच्छा चलो।

बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल चारों आदमी अन्दर की तरफ चले, साथ-साथ ज़ख्मी चोबदार भी रवाना हुआ। जनाने महल के पास पहुंच कर देखा कि एक आदमी ज़मीन पर बदहवास पड़ा है, एक मशाल थोड़ी दूर पर पड़ी हुई है जो कुछ जल रही है, पास ही तेल की कुप्पी भी नज़र पड़ी, मालूम हो गया कि कोई मशालची है। चोबदार ने चैंककर कहा, देखो-देखो, एक और आदमी उसने मारा! "यह कह मशाल और कुप्पी झट

से उठा ली और उस कुप्पी से मशाल में तेल छोड़ उसके चेहरे के पास ले गया। बद्रीनाथ ने देखकर पहचाना कि यह अपना ही मशालची है। नाक पर हाथ रख के देखा, समझ गये कि इसे बेहोशी की दवा दी गई है। चोबदार ने कहा, "आप इसे छोड़िए, चलकर पहले उस बदमाश का ढूंढिए, मैं यही मशाल लिये आपके साथ चलता हूं, कहीं ऐसा न हो कि वे लोग महाराज जयसिंह को छुड़ाकर ले जायें।"

बद्रीनाथ ने कहा, "पहले उसी जगह चलना चाहिए जहां महाराज जयसिंह क़ैद हैं।" सभी की यही राय हुई और सब सीधे उसी जगह पहुंचे। देखा तो महाराज जयसिंह कोठरी में हथकड़ी-बेड़ी पहने लेटे हैं। चोबदार ने खूब गौर से उस कोठरी और दरवाज़े को देखकर कहा, "नहीं, वे लोग यहां तक नहीं पहुंचे, चलिए दूसरी तरफ ढूंढ़ें।" चारों सब तरफ ढूंढ़ने लगे। घूमते-घूमते दीवारों और दरवाज़ों पर सटे हुए कई पुर्जे दिखाई पड़े जिसे पढ़ते ही उन ऐयारों के होश जाते रहे, खड़े हो सोच ही रहे थे कि चोबदार चिल्ला उठा और एक कोठरी की तरफ इशारा करके बोला, "देखो, देखो अभी एक आदमी उस कोठरी में घुसा है, ज़रूर वही है जिसने मुझे जख्मी किया था।" यह कह उस काठरी की तरफ दौड़ा, मगर दरवाज़े पर रुक गया, तब तक ऐयार लोग भी पहुंच गये।

बद्रीनाथ: (चोबदार से) चलो, अन्दर चलो।

चोबदार: पहले तुम लोग हाथों में खंजर या तलवार ले लो, क्योंकि वह ज़रूर वार करेगा।

बद्रीनाथ: हम लोग होशियार हैं तुम अन्दर चलो क्योंकि तुम्हारे हाथ में मशाल है।

चोबदार: नहीं बाबा, मैं अन्दर नहीं जाऊंगा, एक दफे किसी तरह जान बची अब कौन-सी कम्बख्ती सवार है कि जान-बूझकर भाड़ में जाऊं।

बद्रीनाथ: वाह रे डरपोक! इसी जीवट पर महाराज की नौकरी करता है ? ला मेरे हाथ में मशाल दे, मत जा अन्दर!

चोबदार: लो, मशाल लो, मैं डरपोक सही, इतने ज़ख्म खाये अभी डरपोक ही रह गया, अपने को लगती तो मालूम होता, इतनी मदद कर दी, यही बहुत है!

इतना कह चोबदार मशाल और कुप्पी बद्रीनाथ के हाथ में देकर अलग हा गया। चारों ऐयार कोठरी के अन्दर घुसे। थोड़ी दूर गये होंगे कि बाहर से चोबदार ने किवाड़ बन्द करके जंज़ीर चढ़ा दी, तब अपनी कमर से पथरी निकाल आग झाड़कर बत्ती चलाई और चैखट के नीचे जो एक छोटी-सी बारूद की चुपड़ी हुई पलीती निकली हुई थी, उसमें आग लगा दी। वह रस्सी जलकर सरसराती हुई अन्दर घुस गई।

पाठक समझ गये होंगे कि यह चोबदार साहब कौन थे ? ये ऐयारों के सरताज जीतसिंह थे। चोबेदार बन ऐयारों का खौफ़ दिलाकर अपने साथ ले आये और घुमाते-फिराते वह जगह देख ली जहां महाराज जयसिंह क़ैद थे, फिर धोखा देकर इन ऐयारों को उस कोठरी में बन्द कर दिया जिसे पहले ही अपने ढंग का बना रखा था।

इस कोठरी के अन्दर पहले ही बेहोशी का बारूद *पाव भर के अन्दाज़ कोने में रख दिया था।

पलीती से आग लगा और दरवाज़े को उसी तरह बन्द छोड़ उस जगह गये जहां महाराज जयसिंह क़ैद थे। वहां बिलकुल सन्नाटा था, दरवाज़ा खोलकर कहा, "जल्दी यहां से चलिये।"

जिधर से जीतसिंह कमन्द लगाकर क़िले में आये थे उसी राह से महाराज जयसिंह को नीचे उतारा और तब कहा, "आप नीचे ठहरिये, मैंने ऐयारों को भी बेहोश किया है, एक-एक करके कमन्द में बांधकर उन लोगों को लटकाता जाता हूं आप खोलते जाइये। अन्त में मैं भी उतरकर आपके साथ लश्कर में चलूंगा।" महाराज जयसिंह ने खुश होकर इसे मंज़ूर किया।

जीतसिंह ने लौटकर उस कोठरी की जं़जीर खोली जिसमें बद्रीनाथ वगैरह चारों ऐयारों को फंसाया था। अपने नाक में लखलखे से तर की हुई रूई डाली और कोठरी के अन्दर घुसे, तमाम धुएं से भरा हुआ पाया, बत्ती जला बद्रीनाथ बगैरह बेहोश ऐयारों को घसीट कर बाहर लाये और क़िले की पिछली दीवार की तरफ ले जाकर एक-एक करके सभी को नीचे उतार आप भी उतर आये। चारों ऐयारों को एक तरफ छिपा महाराज जयसिंह को लश्कर में पहुंचाया, फिर कई कहारों को साथ ले उस जगह जा ऐयारों को उठवा लाये, हथकड़ी-बेड़ी डाल कर खेमे में क़ैद कर पहरा मुकर्रर कर दिया।

महाराज जससिंह और सुरेन्द्रसिंह आपस में गले मिले, जीतसिंह की बहुत कुछ तारीफ करके दोनों राजाओं ने कई इलाके उनको दिये, जिनकी सनद भी उसी वक़्त मुहर करके उनके हवाले की गई।

रात बीत गई, पूरब की तरफ से धीरे-धीरे लालिमा झलकने लगी और लड़ाई बंद कर दी गई।

---

*बेहोशी के बारूद से आग लगने या मकान उड़ जाने का खौफ नहीं होता, उसमें धुआं बहुत होता है और जिसके दिमाग में वह धुआं चढ़ जाता है सूंघने वाला फौरन बेहोश हो जाता है।

अट्ठारहवां बयान

तेजसिंह वगैरह ऐयारों के साथ कुमार खोह से निकल कर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए। एक रात रास्ते में बिताकर दूसरे दिन सवेरे जब रवाना हुए तो एक नकाबपोश दूर से दिखाई पड़ा जो कुमार की तरफ ही आ रहा था। जब इनके करीब पहुंचा, घोड़े से उतर ज़मीन पर कुछ रख दूर जा खड़ा हुआ। कुमार ने वहां जाकर देखा तो तिलिस्मी किताब दिखाई पड़ी और चिट्ठी पाई जिसे देख वे बहुत खुश होकर तेजसिंह से बोले-

"तेजसिंह, क्या करें ? यह वनकन्या मेरे ऊपर बराबर अपने एहसान के बोझ डाल रही है। इसमें कोई शक नहीं कि यह उसी का आदमी है जो तिलिस्मी किताब मेरे रास्ते में रख दूर जा खड़ा हुआ! हाय, इसके इश्क ने भी मुझे निकम्मा कर दिया है!"

यह कहकर कुमार ने चिट्ठी पढ़ी-

"किसी तरह वह तिलिस्मी किताब मेरे हाथ आ गई जो तुम्हें देती हूं। अब जल्दी तिलिस्म तोड़ कर कुमारी चन्द्रकान्ता को छुड़ाओ, वह बेचारी बड़ी तकलीफ में पड़ गई होगी। चुनार में लड़ाई हो रही है, तुम भी वहीं जाओ और अपनी जवांमर्दी दिखाकर फतह अपने नाम लिखाओ!

तुम्हारी दासी
वियोगिनी।"

कुमार: तेजसिंह, तुम भी इसे पढ़ लो।

तेजसिंह: (चिट्ठी पढ़कर) न मालूम यह वनकन्या मनुष्य है या अप्सरा, कैसे-कैसे काम इसके हाथ से होते हैं।

कुमार: (ऊंची सांस लेकर) हाय, एक बला हो तो सिर से टले।

देवीसिंह: मेरी राय है कि आप लोग यहीं ठहरें, मैं चुनार जाकर पहले सब हाल दरियाफ्त कर आता हूं!

कुमार: ठीक है, अब चुनार सिर्फ पांच कोस होगा, तुम वहां की खबर ले आओ तब हम चलें, क्योंकि कोई बहादुरी का काम करके हम लोगों का ज़ाहिर होना ज़्यादा मुनासिब होगा।

देवीसिंह चुनार की तरफ रवाना हुए। कुमार को रास्ते में एक दिन और अटकना पड़ा, दूसरे दिन देवीसिंह लौटकर कुमार के पास आये और चुनार की लड़ाई का हाल, महाराज जयसिंह के गिरफ्तार होने की खबर, और जीतसिंह की ऐयारी की तारीफ करके बोले-

"लड़ाई अभी हो रही है, हमारी फौज़ कई दफे चढ़कर क़िले के दरवाज़े तक पहुंची मगर वहां अटक कर दरवाज़ा नहीं तोड़ सकी। क़िले की तापों की मार ने हमारा बहुत नुकसान किया।"

इन खबरों को सुनकर कुमार ने तेजसिंह से कहा, "अगर हम लोग किसी तरह क़िले के अन्दर पहुंच कर फाटक खोल सकते तो बड़ी बहादुरी का काम होता।"

तेजसिंह: इसमें कोई शक नहीं कि यह बड़ी दिलावरी का काम है। या तो क़िले का फाटक ही खोल देंगे या फिर जान से हाथ धोएंगे।

कुमार: हम लोगों के वास्ते लड़ाई से बढ़कर मरने के लिए और कौन-सा मौका है ? या तो चुनार फतह करेंगे, या बैकुण्ठ की ऊंची गद्दी दखल करेंगे, दोनों हाथ में लड्डू हैं।

तेजसिंह: शाबाश, इससे बढ़कर और क्या बहादुरी होगी! तो चलिए हम लोग भेष बदलकर क़िले में घुस जायें। मगर यह काम दिन में नहीं हो सकता।

कुमार: क्या हर्ज़ है, रात ही को सही। रात भर क़िले के अन्दर छिपे रहेंगे, सुबह जब लड़ाई खूब रंग पर आवेगी उसी वक़्त फाटक पर टूट पड़ेंगे। सब फसीलों पर चढ़े होंगे, फाटक पर सौ-पचास आदमियों में घुसकर दरवाज़ा खोल देना कोई बड़ी बात नहीं है।

देवीसिंह: कुमार की राय बहुत सही है, मगर ज्योतिषी जी को बाहर ही छोड़ देना चाहिए।

ज्योतिषीजी: सो क्यों ?

देवीसिंह: आप ब्राह्मण हैं, वहां क्या ब्रह्महत्या के लिए आपको ले चलें ? यह काम क्षत्रियों का है, आपका नहीं।

कुमार: हां ज्योतिषीजी, आप क़िले में मत जाइये।

ज्योतिषीजी: अगर मैं ऐयारी न जानता होता तो आपका ऐसा कहना मुनासिब था, मगर जो ऐयारी जानता है उसके आगे जवांमर्दी और दिलावरी हाथ जोड़े खड़ी रहती है।

देवीसिंह: इसमें तो कोई शक नहीं कि ज्योतिषीजी हम लोगों के पूरे दोस्त हैं, कभी संग न छोड़ेंगे, अगर यह मर भी जायेंगे, तो ब्रह्मराक्षस होंगे, और भी हमारा काम इनसे निकला करेगा।

ज्योतिषीजी: क्या हमारी ही अधोगति होगी ? अगर ऐसा हुआ तो तुम्हें कब छोड़ूंगा! तुम्हीं से तो ज़्यादा मुहब्बत है।

इनकी बातों पर कुमार हंस पड़े और घोड़े पर सवार हो ऐयारों को साथ ले चुनार की तरफ रवाना हुए। शाम होते-होते ये लोग चुनार पहुंचे और रात को मौका पा कमन्द लगा क़िले के अन्दर घुस गये।

उन्नीसवां बयान

दिन अनुमान पहर भर के आ गया होगा कि फतहसिंह की फौज़ लड़ती हुई फिर क़िले के दरवाज़े तक पहुंची। शिवदत्त की फौज़ बुर्जियों पर से गोलों की बौछार कर इन लोगों को भगाया ही चाहती थी कि एकाएक क़िले का दरवाज़ा खुल गया और जर्द रंग की चार झंडियां दिखाई पड़ीं जिसे देख राजा सुरेन्द्रसिंह अपनी फौज़ के साथ धड़ाधड़ कर फाटक के अन्दर घुस गये और बन्द इसके धीरे-धीरे कुल फौज़ क़िले में दाखिल हुई। फिर किसी को मुकाबले की ताब न रही, साथ वाले आदमी चारों तरफ दिखाई देने लगे। फतहसिंह ने बुर्ज पर से महाराज शिवदत्त का सब्ज झण्डा गिराकर अपना जर्द *–झण्डा खड़ा कर दिया और हाथ से चोब उठा कर जोर से तीन चोटें डंके पर लगाईं जो उसी झण्डे के नीचे रखा हुआ था। 'क्रूम धूम फतह' की आवाज निकली जिसके साथ ही क़िले वालों का जी टूट गया और कुंवर वीरेन्द्रसिंह की मुहब्बत दिल में असर कर गई।

अपने हाथ से कुमार ने फाटक पर चालीस आदमियों के सिर काटे थे, मगर ऐयारों के सहित वे भी बहुत जख्मी हो गये थे। राजा सुरेन्द्रसिंह क़िले के अन्दर घुसे ही थे कि कुमार, तेजसिंह और देवीसिंह झंडियां लिये चरणों पर गिर पड़े, ज्योतिषजी ने आशीर्वाद दिया। इससे ज़्यादा न ठहर सके, जख्मों के दर्द से चारों बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े और बदन से खून निकलने लगा।

जीतसिह ने पहुंच कर चारों के ज़ख्मों पर पट्टी बांधी, चेहरा धुलने से ये चारों पहचाने गये। थोड़ी देर में सब होश में आये। राजा सुरेन्द्रसिंह अपने प्यारे लड़के को देर तक छाती से लगाए रहे और तीनों ऐयारों पर भी बहुत मेहरबानी की। महाराज जयसिंह कुमार की दिलावरी पर मोहित हो तारीफ करने लगे, कुमार ने उनके पैरों को भी हाथ लगाया और खुशी-खुशी दूसरे लोगों से मिले।

चुनार का क़िला फतह हो गया। महाराज जीतसिंह और सुरेन्द्रसिंह दोनों ने मिलकर उसी रोज़ कुमार को राजगद्दी पर बैठा कर तिलक कर दिया। जश्न शुरू हुआ और अनाथों को खैरात बंटने लगी। सात रोज़ तक जश्न रहा। महाराज शिवदत्त की कुल फौज़ ने दिलोजान से कुमार की ताबेदारी कबूल की।

उनका कोई आदमी जनाने महल में नहीं गया बल्कि वहां इन्तज़ाम करके पहरा मुकर्रर कर दिया गया।

कई दिन बाद महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह कुंवर वीरेन्द्रसिंह को तिलिस्म तोड़ने की ताकीद करके खुशी-खुशी विजयगढ़ और नौगढ़ रवाना हुए।

---

*—वीरेन्द्रसिंह के लश्कर का निशान जर्द रंग का था।

बीसवां बयान

तिलिस्म के दरवाज़े पर कुंवर वीरेन्द्रसिंह का डेरा ज़मा हो गया। खज़ाना पहले ही निकाल चुके थे, अब कुल दो टुकड़े तिलिस्म के टूटने को बाकी थे, एक तो वह चबूतरा जिस पर पत्थर का आदमी सोया था, दूसरे अज़दहे वाले दरवाज़े को तोड़ कर वहां पहुंचना जहां कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला थीं। तिलिस्मी किताब कुमार के हाथ लग चुकी थी, उसके कई पन्ने बाकी रह गये थे, आज पूरी पढ़ गये। कुमारी चन्द्रकान्ता के पास पहुंचने तक जो-जो काम इनको करने थे सब ध्यान से पढ़ लिया, मगर उस चबूतरे के तोड़ने की युक्ति किताब में न देखी जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ था। हां, उसके बारे में इतना लिखा था कि वह चबूतरा एक दूसरे तिलिस्म का दरवाज़ा है जो इस तिलिस्म से कहीं बढ़-चढ़कर है और माल खज़ाने की तो इन्तहा नहीं कि उसमें कितना कुछ रखा हुआ है। वहां की एक-एक चीजें ऐसे ताज्जुब की हैं कि जिसके देखने से बड़े-बड़े दिमाग वालों की अक्ल चकरा जाये। उसके तोड़ने की विधि दूसरी ही है, ताली भी उसकी उसी आदमी के कब्जे में है जो उस पर सोया हुआ है।

कुमार ने ज्योतिषीजी की तरफ देखकर कहा, "क्यों ज्योतिषीजी, क्या वह चबूतरे वाला तिलिस्म मेरे हाथ से न टूटेगा ?"

ज्योतिषीजी: देखा जायेगा, पहले आप चन्द्रकान्ता को छुड़ाइये।

कुमार: अच्छा चलिए, यह काम तो आज ही खत्म हो जायेगा।

तीनों ऐयारों को साथ लेकर कुंवर वीरेन्द्रसिंह उस तिलिस्म में घुसे जो कुछ उस तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था। खूब खयाल कर लिया और उसी तरह काम करने लगे।

खंडहर के अन्दर जाकर उस मामूली दरवाज़े *–को खोला जो उस पत्थर वाले चबूतरे के सिरहाने की तरफ था। नीचे उतर कर कोठरी में से होते हुए उसी बाग में पहुंचे जहां खज़ाने और बारादरी के सिंहासन का वह पत्थर हाथ लगा था जिसको छू कर चपला बेहोश हो गई थी और जिसके बारे में तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था कि 'वह एक डिब्बा है और उसके अन्दर एक नायाब चीज़ रखी है।'

चारों आदमी नहर के रास्ते गोता मार कर उसी जगह बाग के उस पार हुए जिस तरह चपला उसके बाहर गई थी और उसी तरह पहाड़ी के नीचे वाले नहर के किनारे-किनारे चलते हुए उस छोटे से दालान में पहुंचे जिसमें वह अजदहा था जिसके मुंह में चपला घुसी थी।

एक दीवार में आदमी के कद के बराबर काला पत्थर जड़ा हुआ था। कुमार ने उस पर ज़ोर से लात मारी, साथ ही वह पत्थर पल्ले की तरह खुल के बगल हो गया और नीचे उतरने की सीढ़ियां दिखाई पड़ीं।

किताब से पहले ही मालूम हो चुका था कि यही खोह की-सी गली उस दालान में जाने के लिए राह है जहां चपला और चन्द्रकान्ता बेबस पड़ी हैं।

अब कुमारी चन्द्रकान्ता से मुलाकात होगी, इस खयाल से कुमार का जी धड़कने लगा, चपला की मुहब्बत ने तेजसिंह के पैर हिला दिये। खुशी-खुशी ये लोग आगे बढ़े। कुमार सोचते जाते थे कि "आज जैसी निराली कुमारी चन्द्रकान्ता से मुलाकात होगी वैसी पहले कभी न हुई थी। मैं अपने हाथों से उसके बाल सुलझाऊंगा, अपनी चादर से उसके बदन की गर्द झाडूंगा। हाय, बड़ी भारी भूल हो गई! वह फटे कपड़ों में कैसी दु:खी होगी ? मैं उसके लिए कोई कपड़ा नहीं लाया इसलिए वह ज़रूर खफा होगी और मुझे खुदगर्ज़ समझेगी।" नहीं-नहीं, वह कभी दु:खी न होगी क्योंकि उसको मुझसे बड़ी मुहब्बत है, देखते ही खुश हो जायेगी, कपड़े का कुछ खयाल न करेगी। हां, खूब याद पड़ा, मैं अपनी चादर अपनी कमर में लपेट लूंगा और अपनी धोती उसे पहनाऊंगा, इस वक़्त का काम चल जायेगा। (चैंक कर) यह क्या, सामने से कई आदमियों के पैर की चापें सुनाई पड़ती हैं! शायद मेरा आना मालूम करके चन्द्रकान्ता और चपला आगे से मिलने को चली आ रही हैं! नहीं-नहीं, उनको क्या मालूम कि मैं यहां आ पहूंचा हूँ।

ऐसी-ऐसी बातें सोचते धीरे-धीरे कुमार बढ़ रहे थे कि इतने में ही आगे दो भेड़ियों के लड़ने की आवाज़ आई जिसे सुनते ही कुमार के पैर दो-दो मन के हो गये। तेजसिंह की तरफ देखकर कुछ कहना चाहते थे मगर मुंह से आवाज़ न निकली। चलते-चलते उस दालान में पहुंचे जहां नीचे खोह के अन्दर से कुमारी और चपला को बैठे देखा था।

पूरी उम्मीद थी कि कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को यहां देखेंगे, मगर वे कहीं नज़र न आईं, हां ज़मीन पर पड़ी दो लाशें ज़रूर दिखाई दीं जिनमें मांस बहुत कम था, सिर से पैर तक नुची हड्डी दिखाई देती थी, चेहरे किसी के भी दुरुस्त न थे।

इस वक़्त कुमार की कैसी दशा थी, वे ही जानते होंगे। पागलों की-सी सूरत हो गई, चिल्ला कर रोने और बकने लगे-"हाय चन्द्रकान्ता, तुझे कौन ले गया ? नहीं, ले नहीं बल्कि मार गया ? ज़रूर उन्हीं भेड़ियों ने तुझे मुझसे जुदा किया जिनकी आवाज़ यहां पहुंचने के पहले मैंने सुनी थी। हां, वह भेड़िया बड़ा ही बेवकूफ था जो उसने तेरे खाने में जल्दी की, उसके लिए तो मैं पहुंच ही गया था, मेरा खून पीकर वह बहुत खुश होता क्योंकि इसमें मुहब्बत की मिठास भरी हुई है! तेरे में क्या बचा था, सूख के पहले ही कांटा हो रही थी। मगर क्या सचमुच तुझे भेड़िया खा गया या मैं भूलता हूं ? क्या यह दूसरी जगह तो नहीं है ? नहीं-नहीं, सामने दुष्ट शिवदत्त बैठा है। हाय, अब मैं जीकर क्या करूंगा, मेरी ज़िन्दगी किस काम आयेगी, मैं कौन मुंह लेकर महाराज जयसिंह के सामने जाऊंगा ? आज नौगढ़

विजयगढ़ और चुनारगढ़ तीनों राज्य ठिकाने पर गये। मैं तो तुम्हारे पास ही आता हूं, मेरे साथ ही और कई आदमी आयेंगे जो तुम्हारी खिदमत के लिए बहुत होंगे। हाय, इस सत्यानाशी तिलिस्म ने, इस दुष्ट शिवदत्त ने, इन भेड़ियों ने आज बड़े-बड़े दिलावरों को खाक में मिला दिया! बस हो गया, दुनिया इतनी ही बड़ी थी, अब खत्म हो गई। हां, हां, दौड़ी क्यों जाती हो! लो मैं भी आया!"

इतना कह और पहाड़ी के नीचे की तरफ देख कुमार कूदकर के अपनी जान देना ही चाहते थे और तीनों ऐयार सन्न खड़े देख ही रहे थे कि एकाएक भरी आवाज़ के साथ दालान की तरफ की दीवार फट गई और उसमें से एक वृद्ध महापुरुष ने निकल कर कुमार का हाथ पकड़ लिया।

कुमार ने मुड़ कर देखा। लगभग अस्सी वर्ष की उम्र, लम्बी-लम्बी सफेद रुई की तरह दाढ़ी नाभि तक आई हुई, सिर की लम्बी जटा ज़मीन तक लटकती हुई, तमाम बदन में भस्म लगाये, लाल और बड़ी-बड़ी आंखें निकाले, दाहिने हाथ में त्रिशूल उठाये, बायें हाथ से कुमार को थामे, गुस्से से बदन कंपाते तामसी रूप शिवजी की तरह दिखाई पड़े जिन्होंने कड़क कर आवाज़ दी और कहा, "खबरदार, जो किसी को विधवा करेगा!"

यह आवाज़ इस जोर की थी कि सारा मकान दहल उठा, तीनों ऐयारों के कलेजे कांप उठे। कुंवर वीरेन्द्रसिंह का बिगड़ा हुआ दिमाग फिर ठिकाने आ गया। देर तक उन्हें सिर से पैर तक देखकर कुमार ने कहा-

"मालूम हुआ, मैं समझ गया कि आप साक्षात् शिवजी या कोई योगी हैं, मेरी भलाई के लिए आये हैं। वाह, वाह, खूब किया जो आ गये। अब मेरा धर्म बच गया, मैं क्षत्रिय होकर आत्महत्या के पाप से बच गया। एक हाथ आप से लड़ूंगा और इस अद्भूत त्रिशूल पर अपनी जान न्यौछावर करूंगा। आप ज़रूर इसलिए आये हैं, मगर महात्माजी, यह तो बताइए कि मैं किसको विधवा करूंगा ? आप इतने बड़े महात्मा होकर झूठ क्यों बोलते हैं ? मेरा है कौन ? मैंने किसके साथ शादी की है ? हाय, कहीं यह बात कुमारी सुनती तो उसको ज़रूर यकीन हो जाता, ऐसे महात्मा की बात भला कौन काट सकता है ?"

वृद्ध योगी ने फिर कड़क कर कहा, "क्या मैं झूठा हूं ? क्या तू क्षत्रिय है ? क्षत्रियों के यही धर्म होते हैं ? क्या वे अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाते हैं ? क्या तूने किसी से विवाह की प्रतिज्ञा नहीं की ? ले देख, पढ़ किसका लिखा हुआ है ?"

यह कह अपनी जटा के नीचे से एक चिट्ठी निकाल कर कुमार के हाथ में दे दी। पढ़ते ही कुमार चैंक उठे। "हैं, यह तो मेरा ही लिखा है! क्या लिखा है ? मुझे सब कुछ मंज़ूर है! इसके दूसरी तरफ क्या लिखा है! हां अब मालूम हुआ, यह तो उस वनकन्या की चिट्ठी है, इसी में उसने अपने साथ ब्याह करने के लिए मुझे लिखा था, उसी के जवाब में मैंने उसकी बात कबूल की थी। मगर यह चिट्ठी इनके हाथ कैसे लगी ? वनकन्या का इनसे क्या वास्ता ?"

कुछ ठहर कर कुमार ने पूछा, "क्या इस वनकन्या को आप जानते हैं ?" इसके जवाब में फिर कड़क के वृद्ध योगी बोले, "अभी तक जानने को कहता है! क्या उसे तेरे सामने कर दूं ?"

इतना कह कर एक लात ज़मीन पर मारी, ज़मीन फट गई *और उसमें से निकल कर वनकन्या ने कुमार का पांव पकड़ लिया।

---

*पहले लिख चुके हैं कि इसकी ताली तेजसिंह के सुपुर्द थी।

*ज़मीन का फटना संभव है या असम्भव, यह चैथे भाग में मालूम होगा।

चन्द्रकान्ता

भाग-चार

पहला बयना

वनकन्या को एकाएक ज़मीन से निकल पैर पकड़ते देख कुंवर वीरेन्द्रसिंह एकदम घबरा उठे। देर तक सोचते रहे कि यह क्या मामला है, यहां वनकन्या क्योंकर आ पहुंची और यह योगी कौन हैं जो इसकी मदद कर रहे हैं ? आखिर बहुत देर तक चुप रहने के बाद कुमार ने योगी से कहा, "मैं इस वनकन्या को जानता हूं। इसने हमपर बड़ा भारी उपकार किया है और मैं इससे बहुत कुछ वादा भी कर चुका हूं, लेकिन मेरा वह वादा बिना कुमारी चन्द्रकान्ता के मिले पूरा नहीं हो सकता। देखिये, इस चिट्ठी में, जो आपने दी है, क्या शर्त है! खुद इन्होंने लिखा है कि 'मुझसे और कुमारी चन्द्रकान्ता से एक ही दिन शादी हो और इस बात को मैंने मंज़ूर किया था, पर जब कुमारी चन्द्रकान्ता ही इस दुनिया से चली गयी तब मैं किसी से ब्याह नहीं कर सकता, इकरार दोनों से एक साथ ही शादी करने का है।"

योगी: (वनकन्या की तरफ देखकर) क्यों री, तू मुझे झूठा बनाना चाहती है ?

वनकन्या: (हाथ जोड़कर) नहीं महाराज, मैं आपको कैसे झूठा बना सकती हूं! आप इनसे यह पूछें कि इन्होंने कैसे मालूम किया कि चन्द्रकान्ता मर गई ?

योगी: (कुमार से) कुछ सुना! यह लड़की क्या कहती है ? तुमने कैसे जाना कि कुमारी चन्द्रकान्ता मर गई ?

कुमार: (कुछ चैकन्ने होकर) क्या कुमारी जीती हैं ?

योगी: जो मैं पूछता हूं पहले उसका जवाब दे लो।

कुमार: पहले जब मैं इस खोह में आया था तब इस जगह मैंने कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को देखा ही नहीं था बल्कि बातचीत भी की थी। आज उन दोनों की जगह इन दो लाशों को देखने से मालूम हुआ कि वे दोनों... (इतना कहना था कि गला भर आया)।

योगी: (तेजसिंह की तरफ देखकर) क्या तुम्हारी अक्ल भी घास चरने चली गई ? इन दोनों लाशों को देखकर इतना न पहचान सके कि ये मर्दों की लाशें हैं या औरतों की ? इनकी लम्बाई और बनावट पर भी कुछ खयाल न किया ?

तेजसिंह: (घबरा कर दोनों लाशों की तरफ गौर से देखकर शर्मा कर) मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने इन दोनों लाशों पर गौर नहीं किया, कुमार के साथ ही मैं भी घबरा गया था। हकीकत में ये दोनों लाशें मर्दों की हैं, औरतों की नहीं।

योगी: ऐयारों से ऐसी भूल का होना कितने शर्म की बात है। इस ज़रा-सी भूल से कुमार की जान जा चुकी थी। (उँगली से इशारा करके) देखो उस तरफ उन दोनों पहाड़ियों के बीच में! इतना कहना बहुत है, क्योंकि तुम इस तहखाने का हाल जानते हो, अपने उस्ताद से सुन चुके हो।

तेजसिंह ने उस तरफ देखा, साथ ही टकटकी बंध गयी। कुमार भी उस तरफ घूमे मगर उनको न पाया, वनकन्या भी दिखाई न पड़ी, बल्कि यह भी मालूम न हुआ कि वे दोनों किस राह से आये थे और कब चले गये ? जब तक वनकन्या और योगीजी यहां थे, उनके आने का रास्ता भी खुला हुआ था, दीवार में दरार मालूम पड़ती थी, ज़मीन फटी हुई दिखाई देती थी, मगर अब कहीं कुछ नहीं था।

दूसरा बयान

आखिर कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा, "मुझे अभी तक यह न मालूम हुया कि योगी जी ने उंगली के इशारे से तुम्हें क्या दिखलाया और इतनी देर तक तुम्हारा ध्यान कहां अटका रहा, तुम क्या देखते रहे और अब वे दोनों कहां गायब हो गये ?"

तेजसिंह: क्या बतायें कि दोनों कहां चले गये ? कुछ खुलासा हाल उनसे न मिल सका, अब बहुत कठिन प्रयास करना पड़ेगा।

वीरेन्द्रसिंह: आखिर तुम उस तरफ क्या देखने लगे थे ?

तेजसिंह: हम क्या देखते थे इस हाल के कहने में बड़ी देर लगेगी, और अब यहां इन मुर्दों की बदबू से रुका नहीं जाता। इन्हें इसी जगह छोड़ इस तिलिस्म से बाहर चलिये, वहां जो कुछ हाल है, कहूंगा। मगर यहां से चलने के पहले उसे देख लीजिये, जिसे इतनी देर तक मैं ताज्जुब से देख रहा था। वह दोनों पहाड़ियों के बीच में जो दरवाज़ा खुला नज़र आ रहा है, वो पहले बन्द था, यही ताज्जुब की बात थी। अब चलिये, मगर हम लोगों को कल फिर यहां लौटना पड़ेगा। यह तिलिस्म ऐसी राह पर बना हुआ है कि अन्दर वहां तक आने में लगभग पांच कोस का फासला मालूम पड़ता है और बाहर की राह से अगर इस तहखाने तक आवंे तो पन्द्रह कोस चलना पड़ेगा।

कुमार: खैर, यहां से चलो, मगर इस हाल का खुलासा सुने बिना तबीयत घबरा रही है।

जिस तरह चारों आदमी तिलिस्म की राह से यहां तक पहुंचे थे उसी तरह तिलिस्म के बाहर हुए। आज इन लोगों को बाहर आने तक आधी रात बीत गयी। इनके लश्कर वाले घबरा रहे थे कि पहले तो पहर दिन बाकी रहते बाहर निकल आते थे, आज क्यों देर हुई ? जब ये लोग खेमे में पहुंचे तो सभी का जी ठिकाने हुआ! तेजसिंह ने कुमार से कहा, "इस वक़्त आप सो जायें, कल आपसे जो कुछ कहना है, कहूंगा।"

तीसरा बयान

यह तो मालूम हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता जीती हैं। मगर कहां हैं, और उस खोह में से क्यों निकल गयीं, वनकन्या कौन है, योगी जी कहां से आये, तेजसिंह को उन्होंने क्या दिखाया ? इत्यादि बातों को सोचते और खयाल दौड़ाते कुमार ने सुबह कर दी, एक घड़ी भी नींद न आयी। अभी सवेरा नहीं हुआ था कि पलंग से उतर जल्दी के मारे खुद तेजसिंह के डेरे में गये। वे अभी तक सोये थे, उन्हें जगाया।

तेजसिंह ने उठकर कुमार को सलाम किया। जी में तो समझ ही गये थे-वही बात पूछने के लिए कुमार बेताब हैं और इसी से इन्होंने आकर मुझे इतनी जल्दी उठाया है मगर फिर भी पूछा, "कहिये, क्या है जो इतने सवेरे आप उठे हैं ?"

कुमार: रात भी नींद नहीं आयी, अब जो कुछ कहना हो जल्दी कहो, जी बेचैन है।

तेजसिंह: अच्छा, आप बैठ जाइये, मैं कहता हूं!

कुमार बैठ गये और देवीसिंह तथा ज्योतिषीजी को भी उसी जगह बुलवा भेजा। जब वे आ गये, तेजसिंह ने कहना शुरू किया, "यह तो मुझे अभी तक मालूम नहीं हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता को कौन ले गया या वह योगी कौन थे और वनकन्या की मदद क्यों करने लगे ? मगर उन्होंने जो कुछ दिखाया वह इतने ताज्जुब की बात थी कि मैं उसे देखने में ही इतना डूबा कि योगीजी से कुछ पूछ न सका और वे भी बिना कुछ खुलासा हाल कहे चलते बने। उस दिन पहले-पहल जब मैं आपको खोह में ले गया तब वहां का हाल जो कुछ मैंने अपने गुरुजी से सुना था सो आपसे कहा था। याद है ?"

कुमार: बखूबी याद है।

तेजसिंह: मैंने क्या कहा था ?

कुमार: तुमने यही कहा था कि उसमें बड़ा खज़ाना है, मगर उस पर एक छोटा-सा तिलिस्म बंधा हुआ है जो बहुत सहज में टूट सकेगा, क्योंकि उसके तोड़ने की युक्ति तुम्हारे उस्ताद तुम्हें कुछ बता गये हैं।

तेजसिंह: हां ठीक है, मैंने यही कहा था। उस खोह में मैंने आपको एक दरवाज़ा दो पहाड़ियों के बीच में दिखाया था, जिसे योगी ने मुझे इशारे से बताया था। उस दरवाज़े को खुला देख मुझे मालूम हो गया कि उस तिलिस्म को किसी ने तोड़ डाला और वहां का खज़ाना ले लिया, उसी वक़्त मुझे यह खयाल आया कि योगी ने उस दरवाज़े की तरफ इसीलिए इशारा किया कि जिसने तिलिस्म तोड़ कर वह खज़ाना लिया है वही कुमारी

चन्द्रकान्ता को भी ले गया होगा। इसी सोच और तरद्दुद में डूबा हुआ मैं एकटक उस दरवाज़े की तरफ देखता रह गया और योगी महाराज चलते बने।

तेजसिंह की इतनी बात सुनकर बड़ी देर तक कुमार चुप बैठे रहे, बदहवासी-सी आ गयी, इसके बाद सम्हल कर बैठे और बोले-

कुमार: तो कुमारी चन्द्रकान्ता फिर एक नयी बला में फँस गयी ?

तेजसिंह: मालूम तो ऐसा ही पड़ता है।

कुमार: तब इसका पता कैसे लगे ? अब क्या करना चाहिए ?

तेजसिंह: पहले हम लोगों को उस खोह में चलना चाहिए। वहां चलकर उस तिलिस्म को देखें जिसे तोड़ कर कोई दूसरा वह खज़ाना ले गया है, शायद वहां कुछ मिले या कोई निशान पाया जाये, इसके बाद जो कुछ सलाह होगी, किया जायेगा।

कुमार: अच्छा चलो, मगर इस वक़्त एक बात का खयाल और मेरे जी में आता है।

तेजसिंह: वह क्या ?

कुमार: जब बद्रीनाथ को ¬क़ैद करने उस खोह में गये थे और दरवाज़ा न खुलने पर वापस आये, उस वक़्त भी शायद उस दरवाज़े को भीतर से उसी ने बन्द कर लिया हो जिसने उस तिलिस्म को तोड़ा है। वह उस वक़्त उसके अन्दर रहा होगा।

तेजसिंह: आपका खयाल ठीक है, ज़रूर यही बात है, इसमें कोई शक नहीं। बल्कि उसी ने शिवदत्त को भी छुड़ाया होगा।

कुमार: हो सकता है, मगर जब छूटने पर शिवदत्त ने बेईमानी पर कमर बांधी और पीछे मेरे लश्कर पर धावा मारा तो क्या उसी ने फिर शिवदत्त को गिरफ्तार करके उस खोह में डाल दिया ? और क्या वह पुर्ज़ा भी उसी का लिखा था जो शिवदत्त के गायब होने के बाद उसके पलंग पर मिला था ?

तेजसिंह: हो सकता है।

कुमार: इससे तो मालूम होता है कि वह हमारा दोस्त भी है, मगर दोस्त है तो फिर कुमारी को क्यों ले गया ?

तेजसिंह: इसका जवाब देना मुश्किल है, कुछ अक्ल काम नहीं करती, सिवाय इसके, शिवदत्त के छूटने के बाद भी तो आपको उस खोह में जाने का मौका पड़ा था और हम लोग भी आपको खोजते हुए उस खोह में पहुंचे, उस वक़्त चपला ने तो नहीं कहा कि इस खोह में कोई आया था जिसने शिवदत्त को एक दफे छुड़ा के फिर क़ैद कर लिया। उसने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया, बल्कि उसने तो कहा था कि हम शिवदत्त को बराबर इसी खोह में देखते हैं, न उसने और कोई खौफ़ की बात बतायी।

कुमार: मामला तो बहुत ही पेचीदा मालूम पड़ता है, मगर तुम भी कुछ गलती कर गये।

तेजसिंह: मैंने क्या गलती की ?

कुमार: कल योगी ने दीवार से निकलकर मुझे कूदने से रोका, इसके बाद ज़मीन पर लात मारी और वहीं की ज़मीन फट गई और वनकन्या निकल आई, तो योगी कोई देवता तो थे नहीं कि लात मार के ज़मीन फाड़ डालते। ज़रूर वहां पर ज़मीन के अन्दर कोई रहस्य है! तुम्हें भी मुनासिब था कि उसी तरह लात मारके देखते कि ज़मीन फटती है या नहीं।

तेजसिंह: ठीक है। चलिये।

आज फिर कुमार और तीनों ऐयार उस तिलिस्म में गये। मामूली राह से घूमते हुए उसी दालान में पहुंचे जहां योगी निकले थे। जाकर देखा तो वे दोनों सड़ी और जानवरों की खाई हुई लाशें वहां न थीं, ज़मीन धोई साफ मालूम पड़ती थी। थोड़ी देर तक ताज्जुब से भरे ये लोग खड़े रहे, इसके बाद तेजसिंह ने गौर करके उसी जगह ज़ोर से लात मारी जहां योगी ने लात मारी थी।

फौरन उसी जगह से ज़मीन फट गई और नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियां नज़र पड़ीं। खुशी-खुशी ये चारों आदमी नीचे उतरे। वहां एक अंधेरी कोठरी में घूम-घूम कर इन लोगों को कोई दूसरा दरवाज़ा खोजना पड़ा मगर पता न लगा। लाचार होकर फिर बाहर निकल आये, लेकिन वह फटी हुई ज़मीन फिर न जुटी, उसी तरह खुली रह गयी। तेजसिंह ने कहा, "मालूम होता है कि भीतर सें बन्द करने की कोई युक्ति इसमें है जो हम लोगों को मालूम नहीं, खैर जो भी हो काम कुछ न निकला, अब बिना बाहर की राह इस खोह में आये कोई मतलब सिद्ध नहीं होगा।"

चारों आदमी तिलिस्म के बाहर हुए। तेजसिंह ने ताला बन्द कर दिया। *

एक रोज़ टिक कर कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने फतहसिंह सेनापति को नायब मुकर्रर करके चुनार भेज देने के बाद नौगढ़ की तरफ कूच किया और वहां पहुंच कर अपने पिता से मुलाकात की। राजा सुरेन्द्रसिंह के इशारे पर जीतसिंह ने रात को एकान्त में तिलिस्म का हाल कुंवर वीरेन्द्रसिंह से पूछा। उसके जवाब में जो कुछ ठीक-ठीक हाल था, कुमार ने उनसे कहा।

जीतसिंह ने उसी जगह तेजसिंह को बुलवा कर कहा, "तुम दोनों ऐयार कुमार को साथ लेकर खोह में जाओ और उस छोटे तिलिस्म को कुमार के हाथ से फतह करवाओ जिसका हाल तुम्हारे उस्ताद ने तुमसे कहा था। जो कुछ हुआ है सब इसी बीच में खुल जायेगा। लेकिन तिलिस्म फतह करने के पहले दो काम करो, एक तो थोड़े आदमी ले जाओ और महाराज शिवदत्त को उनकी रानी समेत यहां भेजवा दो, दूसरे जब खोह के अन्दर जाना तो दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लेना। अब महाराज से मुलाकात करने और कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं, तुम लोग इसी वक़्त यहां से कूच कर जाओ और रानी के वास्ते एक डोली भी साथ लिवाते जाओ।"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने तीनों ऐयारों और थोड़े से आदमियों को साथ ले खोह की तरफ कूच किया। सुबह होते-होते ये लोग वहां पहुंचे। सिपाहियों को कुछ दूर छोड़ चारों आदमी खोह

का दरवाज़ा खोल कर अन्दर गये।

सवेरा हो गया था, तेजसिंह ने महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को खोह के बाहर लाकर सिपाहियों के सुपुर्द किया और महाराज शिवदत्त को पैदल और उनकी रानी को डोली पर चढ़ाकर जल्दी नौगढ़ पहुंचाने के लिए ताकीद करके फिर खोह के अन्दर पहुंचे।

---

*—जिस चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था उसके सिरहाने की तरफ दो पत्थर रख कर ताला बन्द कर देते थे। वही तिलिस्म का मुंह बन्द कर देना या ताला बन्द कर देना था, फिर कोई खोल नहीं सकता था।

चौथा बयान

राजा सुरेन्द्रसिंह के सिपाहियों ने महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को नौगढ़ पहुंचाया। जीतसिंह की राय से उन दोनों के रहने के लिए सुन्दर मकान दिया गया। उनकी हथकड़ी-बेड़ी खोल दी गयी, मगर हिफ़ाज़त के लिए मकान के चारों तरफ सख्त पहरा मुकर्रर कर दिया गया।

दूसरे दिन राजा सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह आपस में कुछ राय करके पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण, और चुन्नीलाल इन चारों क़ैदी ऐयारों को साथ ले उस मकान में गये जिसमें महाराज शिवदत्त और उनकी महारानी को रक्खा था।

राजा सुरेन्द्रसिंह के आने की खबर सुनकर महाराज शिवदत्त अपनी रानी को साथ लेकर दरवाज़े तक इस्तकबाल (आगवानी) के लिए आये और मकान में ले जाकर आदर के साथ बैठाया, इसके बाद खुद दोनों आदमी सामने बैठे। हथकड़ी और बेड़ी पहने ऐयार भी एक तरफ बैठाये गये। महाराज शिवदत्त ने पूछा, "इस वक़्त आपने किसलिए तकलीफ की ?"

राजा सुरेन्द्रसिंह ने इसके जवाब में कहा, "आज तक आपके जी में जो कुछ आया, किया, क्रूरसिंह के बहकाने से हम लोगों को तकलीफ देने के लिए बहुत कुछ उपाय किये, धोखा दिया, लड़ाई ठानी, मगर अभी तक परमेश्वर ने हम लोगों की रक्षा की। क्रूरसिंह, नाज़िम और अहमद भी अपनी सज़ा को पहुंच गये और हम लोगों की बुराई सोचते-सोचते ही मर गये। अब आपका क्या इरादा है ? इसी तरह क़ैद में पड़े रहना मंज़ूर है या और कुछ सोचा है ?"

महाराज शिवदत्त ने कहा, "आपकी और कुंवर वीरेन्द्रसिंह की बहादुरी में कोई शक नहीं, जहां तक तारीफ की जाये थोड़ी है। परमेश्वर आपको खुश रखे और पोते का मुख दिखाये। उसे गोद में लेकर आप खिलायें! मैंने जो कुछ किया उसको आप मांफ करें। मुझे राज्य की बिलकुल अभिलाषा नहीं है। चुनार को आपने जिस तरह फतह किया और वहां जो कुछ हुआ मुझे मालूम है। मैं अब सिर्फ एक बात चाहता हूं परमेश्वर के लिए तथा अपनी जवांमर्दी और बहादुरी की तरफ खयाल करके मेरी इच्छा पूरी कीजिए।" इतना कह हाथ जोड़ कर सामने खड़े हो गये।

राजा सुरेन्द्रसिंह: जो कुछ आपके जी में हो कहिये, जहां तक हो सकेगा मैं उसको पूरा करूंगा।

शिवदत्त: जो कुछ मैं चाहता हूं आप सुन लीजिए। मेरे आगे कोई लड़का नहीं है जिसकी मुझे फिक्र हो, हां, चुनार के क़िले में मेरे रिश्तेदारों की कई बेवाएं हैं जिनकी परवरिश मेरे ही सबब से होती थी, उनके लिए आप कोई ऐसा बन्दोबस्त कर दें जिससे उन बेचारियों की जिन्दगी आराम से गुज़रे। और भी रिश्ते के कई आदमी हैं, लेकिन मैं उनके लिए सिफारिश नहीं करूंगा बल्कि उनका नाम भी न बतलाऊंगा, क्योंकि वे मर्द हैं हर तरह से कमा-खा सकते हैं, और हमको अब आप क़ैद से छुट्टी दीजिए। अपनी स्त्री को साथ ले जंगल में चला जाऊंगा, किसी जगह बैठकर ईश्वर का नाम लूंगा, अब मुंह किसी को दिखाना नहीं चाहता, बस और कोई आरजू नहीं है!

सुरेन्द्रसिंह: आपके रिश्ते की जितनी औरतें चुनार में हैं सभी की अच्छी तरह से परवरिश होगी, उनके लिए आपको कुछ कहने की ज़रूरत नहीं, मगर आपको छोड़ देने में कई बातों का खयाल है।

शिव०: कुछ नहीं, (जनेऊ हाथ में लेकर) मैं धर्म की कसम खाता हूं, अब जी में किसी तरह की बुराई नहीं है, कभी आपकी बुराई न सोचूंगा।

सुरेन्द्र०: अभी आपकी उम्र भी इस लायक नहीं हुई है कि आप तपस्या करें।

शिव०: जो हो, अगर आप बहादुर हैं तो मुझे छोड़ दीजिए।

सुरेन्द्र०: आपकी कसम का तो मुझे कोई भरोसा नहीं, मगर आप जो यह कहते हैं कि अगर आप बहादुर हैं तो मुझे छोड़ दें तो मैं छोड़ देता हूं, जहां जी चाहे जाइये और जो कुछ आपको खर्च के लिए चाहिए ले लीजिये।

शिव०: मुझे खर्च की कोई ज़रूरत नहीं बल्कि रानी के बदन पर जो कुछ ज़ेवर हैं यह भी उतार के दिये जाता हूं।

यह कहकर रानी की तरफ देखा, उस बेचारी ने फौरन अपने बदन के सारे गहने उतार दिये।

सुरेन्द्र०: रानी के बदन से गहने उतरवा दिये यह अच्छा नहीं किया।

शिव०: जब हम लोग जंगल में ही रहना चाहते हैं तो यह हत्या क्यों लिये जायें ? क्या चोरों और डकैतों के हाथों से तकलीफ उठाने के लिए और रात भर सुख की नींद न सोने के लिए ?

सुरेन्द्र०: (उदासी से) देखो शिवदत्तसिंह, तुम हाल ही तक चुनार की गद्दी के मालिक थे, आज तुम्हारा इस तरह से जाना मुझे बुरा मालूम होता है। चाहे तुम हमारे दुश्मन थे, तो भी मुझको इस बेचारी तुम्हारी रानी पर दया आती है। मैंने तो तुम्हें छोड़ दिया, चाहे जहां जाओ, मगर एक दफे फिर कहता हूं कि अगर तुम यहां रहना कबूल करो तो मेरे राज्य का कोई काम जो चाहो मैं खुशी से तुमको दूं, तुम यहीं रहो।

शिव०: नहीं, अब यहां न रहूंगा, मुझे छुट्टी दे दीजिये। इस मकान के चारों तरफ से पहरा हटा दीजिए, रात को जब मेरा जी चाहेगा चला जाऊंगा।

सुरेन्द्र०: अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।

महाराज शिवदत्त के चारों ऐयार चुपचाप बैठे सब बातें सुन रहे थे। बात खत्म होने पर दोनों राजाओं के चुप हो जाने के बाद महाराज शिवदत्त की तरफ देखकर पंडित बद्रीनाथ ने कहा, "आप तो अब तपस्या करने जाते हैं, हम लोगों के लिए क्या हुक्म होता है ?"

शिव०: जो तुम लोगों के जी में आये करो, जहां चाहो जाओ, हमने अपनी तरफ से तुम लोगों को छुट्टी दे दी, बल्कि अच्छी बात हो कि तुम लोग कुंवर वीरेन्द्रसिंह के साथ रहना पसन्द करो, क्योंकि ऐसा बहादुर और धार्मिक राजा तुम लोगों को न मिलेगा।

बद्रीनाथ: ईश्वर आपको सुखी रक्खे। आज से हम लोग कुंवर वीरेन्द्रसिंह के हुए, आप अपने हाथों से हमारी हथकड़ी-बेड़ी खोल दीजिए।

महाराज शिवदत्त ने अपने हाथों से चारों ऐयारों की हथकड़ी-बेड़ी खोल दी, राजा सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह ने कुछ भी न कहा कि आप इनकी बेड़ी क्यों खोलते हैं। हथकड़ी-बेड़ी खुलने के बाद चारों ऐयार राजा सुरेन्द्रसिंह के पीछे जा खड़े हुए। जीतसिंह ने कहा, "अभी एक दफे आप लोग चारों ऐयार मेरे सामने आइये, फिर वहां जाकर खड़े होइये, पहले अपनी मामूली-सी रस्म तो अदा कर लीजिए।"

मुस्कुराते हुए पं. बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल जीतसिंह के सामने आये और बिना कहे जनेऊ और ऐयारी का बटुआ हाथ में लेकर कसम खाकर बोले-"आज से मैं राजा सुरेन्द्रसिंह और उनके खानदान का नौकर हुआ। ईमानदारी और मेहनत से अपना काम किया करूंगा। तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी को अपना भाई समझूंगा। बस, अब तो रस्म पूरी हो गई ?"

"बस, और कुछ बाकी नहीं।" इतना कहकर जीतसिंह ने चारों को गले से लगा लिया, फिर ये चारों ऐयार सुरेन्द्रसिंह के पीछे जा खड़े हुए।

राजा सुरेन्द्रसिंह ने महाराज शिवदत्त से कहा, "अच्छा, अब मैं विदा होता हूं। पहरा अभी उठाता जाता हूं, रात को जब जी चाहे चले जाना, मगर आओ, गले तो मिल लें।"

शिव०: (हाथ जोड़कर) नहीं, मैं इस लायक नहीं रहा कि आपसे गले मिलूं।

"नहीं, ज़रूर ऐसा करना होगा!" कहकर सुरेन्द्रसिंह ने शिवदत्त को जबरदस्ती गले लगा लिया और उदास मुख से विदा हो अपने महल की तरफ रवाना हुए। मकान के चारों तरफ से पहरा उठाते गये।

जीतसिंह, बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण, और चुन्नीलाल को साथ लिये राजा सुरेन्द्रसिंह अपने दीवान खाने में जाकर बैठे। घण्टों महाराज शिवदत्त के बारे में अफसोस भरी बातचीत होती रही। मौका पाकर जीतसिंह ने अर्ज़ किया, "अब तो हमारे दरबार में और चार ऐयार हो गये हैं जिसकी बहुत ही खुशी है। अगर ताबेदार को पन्द्रह दिन की छुट्टी मिल जाती तो अच्छी बात थी, यहां से दूर बिरादरी में कुछ काम है, जाना ज़रूरी है।"

सुरेन्द्र०: इधर एक-एक, दो-दो रोज़ की कई दफे तुम छुट्टी ले चुके हो।

जीतसिंह: जी हां, घर ही में कुछ काम था, मगर अब की तो दूर जाना है इसलिए पन्द्रह दिन की छुट्टी मांगता हूं। मेरी जगह पर पं. बद्रीनाथजी काम करेंगे, किसी बात का हर्ज़ न होगा।

सुरेन्द्र०: अच्छा जाओ, लेकिन जहां तक हो सके जन्द आना।

राजा सुरेन्द्रसिंह से विदा हो जीतसिंह अपने घर गये और बद्रीनाथ वगैरह चारों ऐयारों को भी कुछ समझाने-बुझाने के लिए साथ लेते गये।

पांचवां बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह तीनों ऐयारों के साथ खोह के अन्दर घूमने लगे। तेजसिंह ने इधर-उधर के कई निशानों को देखकर कुमार से कहा, "बेशक यहां का छोटा तिलिस्म तोड़ कोई खज़ाना ले गया। ज़रूर कुमारी चन्द्रकान्ता को भी उसी ने क़ैद किया होगा। मैंने अपने उस्ताद की जुबानी सुना था कि इस खोह में कई इमारतें और बाग देखने बल्कि रहने लायक हैं। शायद वह चोर इन्हीं में कहीं मिल जाये, ताज्जुब नहीं।"

कुमार: तब जहां तक हो सके काम में जल्दी करनी चाहिए।

तेजसिंह: बस हमारे साथ चलिए, अभी से काम शुरू हो जाये।

यह कह तेजसिंह कुंवर वीरेन्द्रसिंह को उसी पहाड़ी के नीचे ले गये जहां से पानी का चश्मा शुरू होता था। उस चश्मे में उतर चालीस हाथ नाप कर कुछ ज़मीन खोदी।

कुमार से तेजसिंह ने कहा था कि "इस छोटे तिलिस्म के तोड़ने और खज़ाना पाने की युक्ति किसी धातु के पत्र पर खुदी हुई यहीं ज़मीन में गड़ी है, मगर इस वक़्त यहां खोदने से उसका कुछ पता न लगा, हां एक चिट्ठी उसमें से ज़रूर मिली जिसको कुमार ने निकालकर पढ़ा, यह लिखा था-"

"अब क्या खोदते हो! मतलब की कोई चीज नहीं है, जो था, सो निकल गया, तिलिस्म टूट गया। अब हाथ मल के पछताओ!"

तेजसिंह: (कुमार की तरफ देखकर) देखिए, यह पूरा सबूत तिलिस्म टूटने का मिल गया।

कुमार: जब तिलिस्म टूट ही चुका है तो उसके हर एक दरवाज़े भी खुले होंगे।

"हां, ज़रूर खुले होंगे" यह कहकर तेजसिंह पहाड़ियों पर चढ़ाते-घुमाते-फिराते कुमार को एक गुफा के पास ले गये जिसमें सिर्फ एक आदमी के जाने लायक राह थी।

तेजसिंह के कहने से एक-एक करके चारों आदमी उस गुफा में घूमे। भीतर कुछ दूर जाकर खुलासा जगह मिली, यहां तक कि चारों आदमी खड़े होकर चलने लगे मगर टटोलते हुए, क्योंकि बिलकुल अंधेरा था, हाथ तक नहीं दिखाई देता था। चलते-चलते कुंवर वीरेन्द्रसिंह का हाथ एक बन्द दरवाज़े पर लगा जो धक्का देने से खुल गया और भीतर बखूबी रोशनी मालूम होने लगी।

चारों आदमी अन्दर गये, छोटा-सा बाग देखा जो चारों तरफ से साफ, कहीं तिनके तक का नाम-निशान नहीं मालूम होता था, अभी कोई झाड़ू देकर गया है। इस बाग में कोई

इमारत न थी, सिर्फ एक फौवारा बीच में था, मगर यह नहीं मालूम होता था कि इसका हौज़ कहां है।

बाग में घूमने और इधर-उधर देखने से मालूम हुआ कि ये लोग पहाड़ी के ऊपर चले गये हैं। जब फौवारे के पास पहुंचे तो एक बात ताज्जुब की दिखाई पड़ी। उस जगह ज़मीन पर ज़नाने हाथों का एक जोड़ा कंगन नज़र पड़ा, जिसे देखते ही कुमार ने पहचान लिया कि कुमारी चन्द्रकान्ता के हाथों का है। झट उठा लिया, आखों से आंसू की बूंदें टपकने लगीं, तेजसिंह से पूछा-"यह कंगन यहां क्योंकर पहुंचा ? इसके बारे में क्या खयाल किया जाये ?" तेजसिंह कुछ जवाब देना ही चाहते थे कि उनकी निगाह एक काग़ज़ पर जा पड़ी जो उस जगह चिट्ठी की तरह मोड़ा हुआ पड़ा था। जल्दी से उठा लिया और खोलकर पढ़ा, यह लिखा था-

"बड़ी होशियारी से जाना, ऐयार लोग पीछा करेंगे, ऐसा न हो कि पता लग जाये नहीं तो तुम्हारा और कुमार दोनों ही का बड़ा भारी नुकसान होगा। अगर मौका मिला तो कल आऊंगा। वही।"

इस पुर्ज़े को पढ़कर तेजसिंह किसी सोच में पड़ गये, देर तक चुपचाप खड़े न जाने क्या-क्या विचार करते रहे। आखिर कुमार से न रहा गया, पूछा, "क्यों ? क्या सोच रहे हो ? इस चिट्ठी में क्या लिखा है ?"

तेजसिंह ने वह चिट्ठी कुमार के हाथ में दे दी, वे भी पढ़कर हैरान हो गये, बोले, "इसमें जो कुछ लिखा है उस पर गौर करने से तो मालूम होता है कि हमारे वनकन्या के मामले में ही कुछ है मगर किसने लिखा यह पता नहीं लगता।"

तेजसिंह: आपका कहना ठीक है, पर मैं एक और बात सोच रहा हूं जो इससे भी ताज्जुब की है।

कुमार: वह क्या ?

तेजसिंह: इन हरफों को मैं कुछ पहचानता हूं मगर साफ समझ में नहीं आता क्योंकि लिखने वाले ने अपना हर्फ़ छिपाने के लिए कुछ बिगाड़ कर लिखा है।

कुमार: खैर, इस चिट्ठी को रख छोड़ो। कभी-न-कभी कुछ पता लग ही जायेगा, अब आगे का काम करो।

फिर ये लोग घूमने लगे, बाग के कोने में इन लोगों को छोटी-छोटी चार खिड़कियां नज़र आईं जो एक के साथ एक बराबर-सी बनी हुई थीं, पहले चारों आदमी बाईं तरफ वाली खिड़की में घुसे। थोड़ी दूर जाकर एक दरवाज़ा मिला जिसके आगे जाने की बिलकुल राह न थी क्योंकि नीचे बेढब खतरनाक पहाड़ी दिखाई देती थी।

इधर-उधर देखने और खूब गौर करने से मालूम हुआ कि यह वही दरवाज़ा है जिसको इशारे से उस योगी ने तेजसिंह को दिखाया था। इस जगह से वह दालान बहुत साफ दिखाई देता था जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बहुत दिनों तक बेबस पड़ी रही थीं।

ये लोग वापस होकर फिर उसी बाग में चले आये और उसके बगल वाली दूसरी खिड़की में घुसे जो बहुत अंधेरी थी। कुछ दूर जाने पर उजाला नज़र पड़ा बल्कि हद तक पहुंचने पर एक बड़ा-सा खुला फाटक मिला। जिससे बाहर होकर ये चारों आदमी खड़े हो चारों ओर निगाह दौड़ाने लगे।

लम्बे-चैड़े मैदान के सिवाय और कुछ नज़र न आया। तेजसिंह ने चाहा कि घूमकर इस मैदान का हाल मालूम करें, मगर कई सबबों से वे ऐसा न कर सके। एक तो धूप कड़ी थी दूसरे कुमार ने घूमने की राय दी और कहा, "फिर जब मौका होगा इसको देख लेंगे। इस वक़्त तीसरी व चैथी खिड़की में चलकर देखना चाहिए क्या है ?"

चारों आदमी लौट आये और तीसरी खिड़की में घुसे। एक बाग में पहुंचते ही देखा कि वनकन्या कई सखियों को लिये घूम रही है, लेकिन कुंवर वीरेन्द्रसिंह वगैरह को देखते ही तेजी के साथ बाग के एक कोने में जाकर गायब हो गयी।

चारों आदमियों ने उसका पीछा किया और घूम-घूमकर तलाश भी किया, मगर कहीं कुछ भी पता न लगा, हां, जिस कोने में वे सब गायब हुई थीं वहां जाने पर एक बन्द दरवाज़ा ज़रूर देखा जिसके खोलने की बहुत युक्ति लगायी मगर न खुला।

उस बाग के एक तरफ छोटी-सी बारादरी थी। लाचार होकर ऐयारों के साथ कुंवर वीरेन्द्रसिंह उस बारादरी में एक ओर बैठकर सोचने लगे, "यह वनकन्या यहां कैसे आयी ? क्या उसके रहने का यही ठिकाना है ? फिर हम लोगों को देखकर भाग क्यों गई ? क्या अभी हमसे मिलना उसे मंज़ूर नहीं ?" इन सब बातों को सोचते-सोचते शाम हो गई मगर किसी की अक्ल ने कुछ काम न दिया। इस बाग में मेवों के दरख्त बहुत थे और एक छोटा-सा चश्मा भी था। चारों आदमियों ने मेवों से अपना पेट भरा और चश्मे का पानी पीकर उसी बारादरी में ज़मीन पर लेट गये। यह राय ठहरी कि रात को इसी बारादरी में गुज़ारा करेंगे, सवेरे जो कुछ होगा देखा जायेगा।

देवीसिंह ने अपने बटुए में से सामान निकालकर चिराग जलाया, इसके बाद बैठकर आपस में बातें करने लगे।

कुमार: चन्द्रकान्ता की मुहब्बत में हमारी दुर्गति हो गई, तिस पर भी अब तक कोई उम्मीद मालूम नहीं पड़ती।

तेजसिंह: कुमारी सही सलामत हैं और आपको मिलेंगी इसमें कोई शक नहीं। जितनी मेहनत से जो चीज़ मिलती है उसके साथ उतनी ही खुशी से ज़िंदगी बीतती है।

कुमार: तुमने चपला के लिए कौन-सी तकलीफ उठाई ?

तेजसिंह: तो चपला ने ही मेरे लिए कौन-सा दु:ख भोगा ? जो कुछ किया, कुमारी चन्द्रकान्ता के लिए।

ज्योतिषी: क्यों तेजसिंह, क्या यह चपला तुम्हारी ही जात की है ?

तेजसिंह: इसका हाल तो कुछ मालूम नहीं कि यह कौन जात है, लेकिन जब मुहब्बत हो गयी तो फिर चाहे कोई जात हो।

ज्योतिषी: लेकिन क्या उसका कोई वली वारिस भी नहीं है ? अगर तुम्हारी जाति की न हुई तो उसके मां-बाप कब कबूल करेंगे ?

तेजसिंह: अगर कुछ ऐसा वैसा हुआ तो उसको मार डालूंगा और अपनी भी जान दे दूंगा।

कुमार: कुछ इनाम दो तो हम चपला का हाल तुम्हें बता दें।

तेजसिंह: इनाम में हम चपला ही को आपके हवाले कर देंगे।

कुमार: खूब याद रखना, चपला फिर हमारी हो जायेगी।

तेजसिंह: जी हां, जी हां, आपकी हो जायेगी।

कुमार: चपला हमारी ही जाति की है, इसका बाप बड़ा भारी ज़मींदार और पूरा ऐयार था। इसको सात दिन का छोड़कर इसकी मां मर गयी। इसके बाप ने इसे पाला और ऐयारी सिखाई, अभी कुछ वर्ष गुज़रे हैं कि इसका बाप भी मर गया। महाराज जयसिंह उसको बहुत मानते थे, उसने इनके बहुत बड़े-बड़े काम किये थे। मरने के वक़्त अपनी सारी ज़मा-पूंजी और चपला को महाराज के सुपुर्द कर गया। क्योंकि उसका कोई वारिस नहीं था। महाराज जयसिंह इसको अपनी लड़की की तरह मानते हैं और महारानी भी इसे बहुत चाहती हैं। कुमारी चन्द्रकान्ता का और उसका लड़कपन ही से साथ होने के सबब से दोनों में बड़ी मुहब्बत है।

तेजसिंह: आज तो आपने बड़ी खुशी की बात सुनाई, बहुत दिनों से इसका खटका लगा हुआ था पर कई बातों को सोचकर आपसे नहीं पूछा। भला यह बातें आपको मालूम कैसे हुईं ?

कुमार: खास चन्द्रकान्ता की जुबानी।

तेजसिंह: तब तो बहुत ठीक है।

तमाम रात बातचीत में गुज़र गई, किसी को नींद न आई। सवेरे ही उठ कर ज़रूरी कामों से छुट्टी पा उसी चश्मे में नहा कर संध्या-पूजा की और कुछ मेवा खा जिस राह से उस बाग में गये थे उसी राह से लौट आये और चैथी खिड़की के अन्दर क्या है देखने के लिए उसमें घुसे। उसमें भी जाकर हरा-भरा बाग देखा जिसे देखते ही कुमार चैंक पड़े।

छठवां बयान

तेजसिंह ने कुंवर वीरेन्द्रसिंह से पूछा, "आप इस बाग को देखकर चैंके क्यों ? इसमें कौन-सी अद्भुत चीज आपको नज़र पड़ी ?"

कुमार: मैं इस बाग को पहचान गया।

तेजसिंह: (ताज्जुब से) आपने इसे देखा था ?

कुमार: यह वही बाग है जिसमें मैं लश्कर से लाया गया था। इसी में मेरी आंखें खुली थीं, इसी बाग में जब आंखें खुलीं तो कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी और इस बाग में खाना भी मिला था जिसे खाते ही मैं बेहोश होकर दूसरे बाग पहुंचाया गया था। वह देखो सामने, वह छोटा-सा तालाब है जिसमें मैंने स्नान किया था, दोनों तरफ दो जामुन के पेड़ कैसे ऊंचे दिखाई दे रहे हैं।

तेजसिंह: हम लोग भी इस बाग की सैर कर लेते तो बेहतर था।

कुमार: चलो घूमो, मैं खयाल करता हूं कि उस कमरे का दरवाज़ा भी खुला होगा जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी।

चारों आदमी उस बाग में घूमने लगे। तीसरे हिस्से में इस बाग की पूरी कैफियत लिखी जा चुकी है, दोहरा कर लिखना पढ़ने वालों को समय खराब करना है।

कमरे के दरवाज़े खुले हुए थे। जो-जो चीजें पहले कुमार ने देखी थीं आज भी नज़र पड़ी। सफाई भी अच्छी थी, किसी जगह गर्द या कतवार का नाम-निशान न था।

पहली दफे जब कुमार इस बाग में आये थे तब इनकी दूसरी ही हालत थी, ताज्जुब में भरे हुए थे, तबीयत घबरा रही थी, कई बातों का सोच घेरे था इसलिए इस बाग की सैर पूरी तरह से नहीं कर सके थे। पर आज अपने ऐयारों के साथ हैं, किसी बात की फिक्र नहीं बल्कि बहुत से अरमानों के पूरा होने की उम्मीद बंध रही है, खुशी-खुशी ऐयारों के साथ घूमने लगे। आज इस बाग की कोई कोठरी, कोई कमरा, कोई दरवाज़ा बन्द नहीं है, जगहों को देखते अपने ऐयारों को दिखाते और मौके-मौके पर यह भी कहते जाते हैं-"इस जगह हम बैठे थे, इस जगह भोजन किया था। इस जगह सो गये थे कि दूसरे बाग में पहुंचे।" तेजसिंह ने कहा, "दोपहर को भोजन करके सो रहने के बाद आप जिस कमरे में पहुंचे थे, ज़रूर उस बाग का रास्ता भी कहीं इस बाग में से ही होगा, अच्छी तरह घूम के खोजना चाहिए।"

कुमार: मैं भी यही सोचता हूं।

देवी०: (कुमार से) पहली दफे जब आप इस बाग में आये थे तो खूब खातिर की गयी थी, नहा कर पहनने के कपड़े मिले, पूजा-पाठ का सामान दुरुस्त था, भोजन करने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें मिली थीं पर आज तो कोई बात भी नहीं पूछता, यह क्या ?

कुमार: यह तुम लोगों के कदमों की बरकत है।

घूमते-घूमते एक दरवाज़ा इन लोगों को मिला जिसे खोल ये लोग दूसरे बाग में पहुंचे, कुमार ने कहा, "बेशक यह वही बाग है जिसमें दूसरी दफे मेरी आंख खुली थी या जहां कई औरतों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन ताज्जुब है कि आज किसी की भी सूरत दिखाई नहीं देती। वाह रे चित्रनगर! पहले तो कुछ और था आज कुछ और ही है। खैर, चलो इस बाग में चलकर देखें कि क्या कैफियत है, वह तस्वीर का दरबार और रौनकें बाकी हैं या नहीं। रास्ता याद है और मैं इस बाग में बखूबी जा सकता हूं।" इतना कहकर कुमार आगे हुए और उसके पीछे-पीछे चारों ऐयार भी तीसरे बाग की तरफ बढ़े।

सातवां बयान

विजयगढ़ के महाराज जयसिंह को पहले खबर मिली थी कि तिलिस्म टूट जाने पर भी कुमारी चन्द्रकान्ता की कोई खबर न लगी। इसके बाद यह मालूम हुआ कि कुमारी जीती-जागती है और उसी की खोज में वीरेन्द्रसिंह फिर खोह के अन्दर गये हैं। इन सब बातों को सुन-सुनकर महाराज जयसिंह बराबर उदास रहा करते थे। महल में महारानी की भी बुरी दशा थी। चन्द्रकान्ता की जुदाई में खाना-पीना बिलकुल छूटा हुआ था, सूख के कांटा हो रही थीं और जितनी औरतें महल में थीं सभी उदास और दु:खी रहा करती थीं।

एक दिन महाराज जयसिंह दरबार में बैठे थे। दीवान हरदयालसिंह ज़रूरी अर्जियां पढ़कर सुनाते और हुक्म लेते जाते थे। इतने में एक जासूस हाथ में एक छोटा-सा लिखा हुआ काग़ज़ लेकर हाज़िर हुआ।

इशारा पाकर चोबदार ने उसे पेश किया। दीवान हरदयालसिंह ने उससे पूछा, "यह कैसा काग़ज़ लाया है और क्या कहता है ?"

जासूस ने अर्ज़ किया, "इस तरह के लिखे हुए काग़ज़ शहर में बहुत जगह चिपके हुए दिखाई दे रहे हैं। तिरमुहानियों पर, बाजार में, बड़ी-बड़ी सड़कों पर इसी तरह के काग़ज़ नज़र पड़ते हैं। मैंने एक आदमी से पढ़वाया था जिसके सुनने से जी में डर पैदा हुआ और एक काग़ज़ उखाड़ कर दरबार में ले आया हूं। बाजार में इन काग़ज़ों को पढ़-पढ़कर लोग बहुत घबरा रहे हैं।"

जासूस के हाथ से काग़ज़ लेकर दीवान हरदयालसिंह ने पढ़ा और महाराज को सुनाया। लिखा हुआ था:

"नौगढ़ और विजयगढ़ के राजा आजकल बड़े जोश में आये होंगे। दोनों को इस बात की बड़ी शेखी होगी कि हम चुनार फतह करके निश्चिन्त हो गये, अब हमारा कोई दुश्मन नहीं रहा। इसी तरह वीरेन्द्रसिंह भी फूले न समाते होंगे, आजकल मजे में खोह की हवा खा रहे हैं। मगर यह किसी को मालूम नहीं कि उन लोगों का बड़ा भारी दुश्मन मैं अभी तक जीता हूं। आज से मैं अपना काम शुरू करूंगा। नौगढ़ और विजयगढ़ के राजाओं, सरदारों और बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों को चुन-चुन कर मारूंगा, दोनों राज्य मिट्टी में मिला दूंगा और फिर भी गिरफ्तार न होऊंगा। यह न समझना कि हमारे यहां बड़े-बड़े ऐयार हैं, मैं ऐसे-ऐसे ऐयारों को कुछ भी नहीं समझता। मैं भी एक बड़ा भारी ऐयार हूं लेकिन मैं किसी को गिरफ्तार न

करूंगा, बस जान से मार डालना मेरा काम होगा! अब अपनी-अपनी जान की हिफाज़त चाहो तो यहां से भागते जाओ। खबरदार! खबरदार! खबरदार!"

ऐयारों का गुरुघंटाल-"ज़ालिम खां।"

इसकों सुन महाराज जयसिंह घबरा उठे। हरदयालसिंह के भी होश जाते रहे और दरबार में जितने आदमी थे सभी कांप उठे। मगर सभी को ढाढ़स देने के लिए महाराज ने गम्भीर भाव से कहा, "हम ऐसे लुच्चों के डराने से नहीं डरते। कोई घबराने की ज़रूरत नहीं। अभी शहर में मुनादी करा दी जाये कि ज़ालिम खां के गिरफ्तार करने की फिक्र सरकार की तरफ से की जाती है, वह किसी का कुछ न बिगाड़ सकेगा। कोई आदमी घबरा कर या डर कर अपना मकान न छोड़े। मुनादी के बाद शहर में पूरा-पूरा पहरे का इन्तज़ाम किया जाये और बहुत से जासूस उस शैतान की टोह में रवाना किये जायें।"

थोड़ी देर बाद महाराज ने दरबार बर्खास्त किया। दीवान हरदयालसिंह भी सलाम करके घर जाना चाहते थे, मगर महाराज का इशारा पाकर रुक गये।

दीवान को साथ ले महाराज जयसिंह दीवानखाने में गये और एकान्त में बैठकर उसी ज़ालिमखां के बारे में सोचने लगे। कुछ देर तक सोच-विचार कर हरदयालसिंह ने कहा, "हमारे यहां कोई ऐयार नहीं है जिसका होना ज़रूरी है।" महाराज जयसिंह ने कहा, "तुम इसी वक़्त एक चिट्ठी यहां के हालचाल की राजा सुरेन्द्रसिंह को लिखो। वह विज्ञापन (इश्तिहार) भी उसी के साथ भेज दो जो जासूस लाया था।"

महाराज के हुक्म के मुताबिक हरदयालसिंह ने चिट्ठी लिखकर तैयार की और जासूस को देखकर उसे पोशीदा तौर पर नौगढ़ की तरफ रवाना किया, इसके बाद महाराज ने महल के चारों तरफ पहरा बढ़ाने के लिए हुक्म देकर दीवान को विदा किया।

इन सब कामों से छुट्टी पा महाराज महल में गये। रानी से भी यह हाल कहा। वह भी सुनकर बहुत घबराईं। औरतों में इस बात की खलबली पड़ गई। आज का दिन और रात इसी चिन्ता में गुज़र गई।

दूसरे दिन दरबार में फिर एक जासूस ने कल की तरह एक और काग़ज़ लाकर पेश किया और कहा, "आज तमाम शहर में इसी तरह के काग़ज़ चिपके दिखाई देते हैं।" दीवान हरदयालसिंह ने जासूस के हाथ से वह काग़ज़ ले लिया और पढ़कर महाराज को सुनाया, जिसमें लिखा था-

"वाह! वाह!! वाह!!! आपके किये कुछ न बन पड़ा तो नौगढ़ से मदद मांगने लगे! यह नहीं जानते कि नौगढ़ में भी मैंने उपद्रव मचा रखा है। क्या आपका जासूस मुझसे छिप कर कहीं जा सकता था ? मैंने उसे खत्म कर दिया। किसी को भेजिये, उसकी लाश उठा लाये। शहर के बाहर कोस भर पर उसकी लाश मिलेगी।

-वही ज़ालिमखाँ।"

इस इश्तिहार के सुनने से महाराज का कलेजा कांप उठा। दरबार में जितने आदमी बैठे थे सभी के छक्के छूट गये, सबको अपनी-अपनी फिक्र पड़ गई। महाराज के हुक्म से कई आदमी शहर के बाहर उस जासूस की लाश उठा लाने के लिए भेजे गये, जब तक उसकी लाश दरबार के बाहर लाई जाये, हलचल-सी मच गई। हजारों आदमियों की भीड़ लग गई। सभी की जुबान पर ज़ालिम खां सवार था। नाम से लोगों के रोएं खड़े होते थे। जासूस के सिर का पता न था और जो चिट्ठी वह ले गया था वह उसके बाजू में बंधी हुई थी।

ज़ाहिर में महाराज ने सभी को ढाढ़स दिया मगर तबीयत में अपनी जान का भी खौफ़ मालूम हुआ। दीवान से कहा, "शहर में मुनादी करा दी जाये कि जो कोई इस ज़ालिमखाँ को गिरफ्तार करेगा, उसे सरकार से दस हज़ार रुपया इनाम मिलेगा, और यहां के सारे हाल-चाल की चिट्ठी पांच सवारों के साथ नौगढ़ रवाना की जाये।"

यह हुक्म देकर महाराज ने दरबार बर्खास्त किया। पांचों सवार जो चिट्ठी लेकर नौगढ़ रवाना हुए डर के मारे कांप रहे थे। डर था कि अपनी जान से हाथ न धो बैठें। आपस में इरादा कर लिया कि शहर के बाहर होते ही बेतहाशा घोड़े फेंके निकल जायेंगे, मगर न हो सका।

दूसरे दिन सवेरे ही फिर इश्तिहार लिये एक पहरेदार दरबार में हाज़िर हुआ। हरदयालसिंह ने इश्तिहार लेकर देखा, लिखा था:

"उन पांचों सवारों की क्या मजाल थी जो मेरे हाथ से बचकर निकल जाते। आज तो इन्हीं पर गुज़री, कल से तुम्हारे महल में खेल मचाऊंगा। लो, अब खूब सम्हल कर रहना। तुमने यह मुनादी कराई है कि ज़ालिमखां को गिरफ्तार करने वाला दस हज़ार इनाम पायेगा। मैं भी कहे देता हूं कि जो कोई मुझे गिरफ्तार करेगा उसे बीस हज़ार इनाम दूंगा!"

-ज़ालिमखां

आज का इश्तिहार पढ़ने से लोगों की जो स्थिति हुई वे ही जानते होंगे। महाराज के तो होश उड़ गये। उनको अब उम्मीद न रही कि हमारी खबर नौगढ़ पहुंचेगी। एक चिट्ठी के साथ पूरी पल्टन को भेजना-यह भी जवांमर्दी से दूर था। सिवाय इसके दरबार में जासूसों ने यह खबर सुनाई कि ज़ालिमखां के खौफ़ से शहर कांप रहा है, ताज्जुब नहीं कि दो या तीन दिन में तमाम रियाया शहर खाली कर दे। यह सुनकर और भी तबीयत घबरा उठी।

महाराज ने कई आदमी उन सवारों की लाशों के लिये रवाना किये। वहां जाते उन लोगों की जान कांपती थी, मगर हाकिम का हुक्म था, क्या करते! लाचार जाना पड़ रहा था।

पांचों आदमियों की लाशें आईं। उन सभी के सिर कटे हुए न थे, मालूम होता था फांसी लगाकर जान ली गई है क्योंकि गर्दन में रस्सी के दाग थे।

इस कैफियत को देखकर महाराज हैरान हो चुपचाप बैठे थे। कुछ अक्ल काम नहीं करती थी। इतने में सामने से पंडित बद्रीनाथ आते दिखाई दिये।

आज पंडित बद्रीनाथ का ठाट देखने लायक था। पोर-पोर से फुर्तीलापन झलक रहा था। ऐयारी के पूरे ठाट से सजे थे, बल्कि उससे फाज़िल तीर कमान लगा, चुस्त जांघिया कसे, बटुआ और खंजर कमर से, कमन्द पीठ पर लगाये, पत्थरों की झोली गले में लटकती हुई, छोटा-सा डंडा हाथ में लिए कचहरी में आ मौजूद हुए।

महाराज को यह खबर पहले ही लग चुकी थी कि राजा शिवदत्त अपनी रानी को लेकर तपस्या करने के लिए जंगल की तरफ चले गये और पंडित बद्रीनाथ पन्नालाल वगैरह ऐयार राजा सुरेन्द्रसिंह के साथ हो गये हैं।

ऐसे वक़्त में पंडित बद्रीनाथ का पहुंचना महाराज के लिए ऐसा हुआ जैसे मरते हुए पर अमृत का बरसना। देखते ही खुश हो गये, प्रणाम करके बैठने का इशारा किया। बद्रीनाथ आशीर्वाद देकर बैठ गये।

जय०: आज आप बड़े मौके पर पहुंचे!

बद्री०: जी हां, अब आप कोई चिन्ता न करें। दो ही एक दिन में ज़ालिमखां को गिरफ्तार कर लूंगा।

जय०: आपको ज़ालिमखां की खबर कैसे लगी ?

बद्री०: इसकी खबर तो नौगढ़ में ही लग गई थी, जिसका खुलासा हाल दूसरे वक़्त कहूंगा। यहां पहुंचने पर शहर वालों को मैंने बहुत उदास और डर के मारे कांपते देखा। रास्ते में जो भी मुझको मिलता था, उसे बराबर ढाढ़स देता था कि "घबराओ मत, अब मैं आ पहुंचा हूं। बाकी हाल एकान्त में कहूंगा और जो कुछ काम करना होगा उसकी राय भी दूसरे वक़्त एकान्त में ही आपके और दीवान हरदयालसिंह के सामने पक्की होगी, क्योंकि अभी तक मैंने स्नान-पूजा कुछ भी नहीं किया। उससे छुट्टी पाकर तभी कोई काम करूंगा।"

अब महाराज जयसिंह के चेहरे पर कुछ खुशी दिखाई देने लगी। दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि "पंडित बद्रीनाथ को आप अपने मकान में उतारिये और इनके आराम की सारी चीजों का बन्दोबस्त कर दीजिए जिससे किसी बात की तकलीफ न हो, मैं भी अब उठता हूं।"

बद्री०: शाम को महाराज के दर्शन कहां होंगे ? क्योंकि उसी वक़्त मेरी बातचीत होगी।

जय०: जिस वक़्त चाहो मुझसे मुलाकात होगी।

महाराज जयसिंह ने दरबार बर्खास्त किया, पंडित बद्रीनाथ को साथ ले दीवान हरदयालसिंह अपने मकान पर आये और उनकी ज़रूरत की चीज़ों का पूरा-पूरा इन्तज़ाम कर दिया।

कुछ दिन बाकी था जो पंडित बद्रीनाथ ने ज़ालिमखां के गिरफ्तार करने का उपाय सोचने में गुजारा। शाम के वक़्त दीवान हरदयालसिंह को साथ ले महाराज जयसिंह से मिलने गये। मालूम हुआ कि महाराज बाग की सैर कर रहे हैं तो वे दोनों बाग में गये।

उस समय वहां महाराज के पास बहुत से आदमी थे, पंडित बद्रीनाथ के आते ही वे लोग विदा कर दिये गये। सिर्फ बद्रीनाथ और हरदयालसिंह महाराज के पास रह गये।

पहले कुछ देर तक चुनार के राजा शिवदत्तसिंह के बारे में बातचीत होती रही, इसके बाद महाराज ने पूछा कि "नौगढ़ में ज़ालिमखां की खबर कैसे पहुंची ?"

बद्रीनाथ: नौगढ़ में भी उसने इसी तरह के इश्तिहार चिपकाये हैं, जिनके पढ़ने से मालूम हुआ कि- विजयगढ़ में भी उपद्रव मचायेगा, इसीलिए हमारे महाराज ने मुझे यहां भेजा है।

महाराज: इस दुष्ट ज़ालिमखां ने वहां किसी की जान न ली ?

बद्रीनाथ: नहीं, अभी उसका दांव नहीं लगा, ऐयार लोग भी बड़ी मुस्तैदी से उसकी गिरफ्तारी की फिक्र में लगे हुए हैं।

महाराज: यहां तो उसने कई खून किये।

बद्रीनाथ: शहर में आते ही मुझे खबर लग चुकी है, खैर देखा जायेगा।

महाराज: अगर ज्योतिषीजी को भी साथ लाते तो उनके रमल की मदद से बहुत जल्द गिरफ्तार हो जाता।

बद्रीनाथ: महाराज, ज़रा इसकी बहादुरी की तरफ खयाल कीजिए कि इश्तिहार देकर डंके की चोट पर काम कर रहा है! ऐसे शख्स की गिरफ्तारी भी उसी तरह होनी चाहिए। ज्योतिषीजी की मदद की इसमें क्या ज़रूरत है ?

महाराज: देखें, वह कैसे गिरफ्तार होता है, शहर भर उसके खौफ़ से कांप रहा है।

बद्रीनाथ: घबराइए नहीं, सुबह-शाम में किसी-न-किसी को गिरफ्तार करता हूं।

महाराज: क्या ये लोग कई आदमी हैं ?

बद्रीनाथ: ज़रूर कई आदमी होंगे। यह अकेले का काम नहीं है कि यहां से नौगढ़ तक की खबर रखे और दोनों तरफ नुकसान पहुंचाने की हिम्मत करे।

महाराज: अच्छा, जो चाहो करो, तुम्हारे आ जाने से बहुत कुछ ढाढस हो गया नहीं तो बड़ी फिक्र लगी हुई थी।

बद्रीनाथ: अब मैं रुखसत होऊंगा, बहुत कुछ काम करना है।

हर०: क्या आप डेरे की तरफ नहीं जायेंगे ?

बद्रीनाथ: कोई ज़रूरत नहीं, मैं पूरे बन्दोबस्त से आया हूं और जिधर जी चाहेगा चल दूंगा।

कुछ रात जा चुकी थी जब महाराज से विदा हो बद्रीनाथ ज़ालिमखां की टोह में रवाना हुए।

आठवां बयान

बद्रीनाथ ज़ालिमखां की फिक्र में रवाना हुए। वह क्या करेंगे या कैसे ज़ालिमखां को गिरफ्तार करेंगे इसका हाल किसी को मालूम नहीं। ज़ालिमखां ने आखिरी इश्तिहार में महाराज को धमकाया था कि अब तुम्हारे महल में डाका मारूंगा।

महाराज पर इश्तिहार का बहुत कुछ असर हुआ। पहरे पर आदमी चैगुने कर दिये गये। आप भी रात भर जागने लगे, हरदम तलवार का कब्ज़ा हाथ में रहता था। बद्रीनाथ के आने से कुछ तसल्ली हो गयी थी, मगर जिस रोज़ वह ज़ालिमखां को गिरफ्तार करने चले गये उसके दूसरे ही दिन फिर इश्तिहार शहर में हर चैमुहानी और सड़कों पर चिपका हुआ लोगों की नज़र में पड़ा, जिसका एक काग़ज़ जासूस ने लाकर दरबार में महाराज के सामने पेश किया और दीवान हरदयालसिंह ने पढ़कर सुनाया- उसमें लिखा हुआ था-

"महाराज जयसिंह,

होशियार रहना, पंडित बद्रीनाथ की ऐयारी के भरोसे मत फूलना, वह कल का छोकरा क्या कर सकता है ? पहले तो ज़ालिमखां तुम्हारा दुश्मन था, अब मैं भी पहुंच गया हूं। पन्द्रह दिन के अन्दर इस शहर को उजाड़ दूंगा और आज के चैथे दिन बद्रीनाथ का सिर लेकर बारह बजे रात को तुम्हारे महल में पहुंचूंगा। होशियार! उस वक़्त भी जिसका जी चाहे मुझे गिरफ्तार कर ले। देखूँ तो, माई का लाल कौन निकलता है ? जो कोई महाराज का दुश्मन हो और मुझसे मिलना चाहे वह 'टेटी-चोटी' में बारह बजे रात को मिल सकता है।"

-आफतखां खूनी

इस इश्तिहार ने तो महाराज के बचे-बचाये होश भी उड़ा दिये। बस यही जी में आता था कि इस वक़्त विजयगढ़ छोड़कर भाग जायें, मगर जवांमर्दी और हिम्मत ऐसा करने से रोकती थी।

जल्दी से दरबार बर्खास्त किया, दीवान हरदयालसिंह को साथ ले दीवानखाने में चले गये और इस नये आफतखां खूनी के बारे में बातचीत करने लगे।

महाराज: अब क्या किया जाये! एक ने आफत मचा ही रखी थी अब दूसरे इस आफतखां ने आकर जान और भी सुखा दी। अगर ये दोनों गिरफ्तार न हुए तो हमारे राज्य करने पर लानत है।

हरदयाल: बद्रीनाथ के आने से कुछ उम्मीद हो गयी थी कि ज़ालिमखां को गिरफ्तार करेंगे, मगर अब तो उनकी जान भी बचती नज़र नहीं आती।

महाराज: किसी उपाय से आज की यह खबर नौगढ़ पहुंचती तो बेहतर होता। वहां से बद्रीनाथ की मदद के लिए कोई और ऐयार आ जाता।

हरदयाल: नौगढ़ जिस आदमी को भेजेंगे उसी की जान जायेगी, हां, सौ-दो सौ आदमियों के पहरे में कोई खत जाये तो शायद पहुंचे।

महाराज: (गुस्से में आकर) नाम को हमारे यहां पचासों जासूस हैं, वर्षों से हरामखोरों की तरह बैठे खा रहे हैं मगर आज एक काम उनके किये नहीं हो सकता! न कोई ज़ालिमखां की खबर लाता है न कोई नौगढ़ खत पहुंचाने लायक है।

हरदयाल: एक ही जासूस के मरने से सभी के छक्के छूट गये।

महाराज: खैर, आज शाम को हमारे सारे जासूसों को लेकर बाग में आओ, या तो कुछ काम ही निकालेंगे या सारे जासूस तोप के सामने खड़े कर उड़ा दिये जायेंगे, फिर जो कुछ होगा, देखा जायेगा। मैं खुद उस हरामजादे को पकड़ूंगा।

हरदयाल: जो हुक्म।

महाराज: बस अब जाओ, जो हमने कहा है उसकी फिक्र करो।

दीवान हरदयालसिंह महाराज से विदा हो अपने मकान पर गये, मगर हैरान थे कि क्या करें, क्योंकि महाराज को बेतरह क्रोध चढ़ आया था। उम्मीद तो यही थी कि किसी जासूस के किये कुछ न होगा और वे बेचारे मुफ्त में तोप के आगे उड़ा दिये जायेंगे। फिर वे सोचते थे कि जब महाराज खुद उन दुष्टों की गिरफ्तारी की फिक्र में घर से निकलेंगे तो मेरी जान भी गयी, अब जिन्दगी की क्या उम्मीद है।

नौवां बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह तीसरे बाग की तरफ रवाना हुए जिसमें राजकुमारी चन्द्रकान्ता की दरबारी तस्वीर देखी थी और जहां कई औरतें क़ैदियों की तरह इन्हें गिरफ्तार करके ले गयी थीं।

उसमें जाने का रास्ता इनको मालूम था। जब कुमार उस दरवाज़े के पास पहुंचे जिसमें से होकर ये लोग उस बाग में पहुंचते तो वहां एक कमसिन औरत नज़र पड़ी जो इन्हीं की तरफ आ रही थी। देखने में खूबसूरत और पोशाक भी उसकी बेशकीमती थी। हाथ में एक चिट्ठी लिए कुमार के पास आकर खड़ी हो गयी, चिट्ठी कुमार के हाथ में दे दी। उन्होंने ताज्जुब में आकर खुद उसे पढ़ा, लिखा हुआ था-

"कई दिनों से आप हमारे इलाके में आये हुए हैं, इसलिए आपकी मेहमानी हमको लाज़िम है। आज सब सामान दुरुस्त किया है। इसी लौंडी के साथ आइये और झोंपड़ी को पवित्र कीजिए। इसका एहसान जन्म भर न भूलूंगा।"

-सिद्धनाथ योगी।"

कुमार ने चिट्ठी तेजसिंह के हाथ में दे दी, उन्होंने पढ़कर कहा, "साधु हैं, योगी हैं, इसी से इस चिट्ठी में कुछ हुकूमत झलकती है।" देवीसिंह और ज्योतिषीजी ने भी चिट्ठी को पढ़ा।

शाम हो चुकी थी, कुमार ने अभी उस चिट्ठी का कुछ जवाब नहीं दिया था कि तेजसिंह ने उस औरत से कहा, "हम लोगों को महात्माजी की खातिर मंज़ूर है, मगर अभी तुम्हारे साथ नहीं जा सकते, घड़ी भर के बाद चलेंगे, क्योंकि संध्या करने का समय हो चुका है।"

औरत: तब तक मैं ठहरती हूं, आप लोग संध्या कर लीजिए, अगर हुक्म हो तो संध्या के लिए जल और आसन ले आऊं ?

देवी०: नहीं, कोई ज़रूरत नहीं।

औरत: तो फिर यहां संध्या कैसे कीजियेगा ? इस बाग में कोई नहर नहीं, बावली नहीं।

तेज०: उस दूसरे बाग में बावली है।

औरत: इतनी तकलीफ करने की क्या ज़रूरत है, मैं अभी सब सामान लिए आती हूं फिर मेरे साथ चलिए, उस बाग में संध्या कर लीजियेगा, अभी तो उसका समय भी नहीं बीत चला है।

तेज०: नहीं, हम लोग इसी बाग में संध्या करेंगे, अच्छा जल ले आओ।

इतना सुनते ही वह औरत लपकती हुई तीसरे बाग में चली गयी।

कुमार: इस चिट्ठी के भेजने वाले अगर वे ही योगी हैं जिन्होंने मुझे कूदने से बचाया था तो बड़ी खुशी की बात है, ज़रूर वहां वनकन्या से भी मुलाकात होगी। मगर तुम रुक क्यों गये ? उसी बाग में चलकर संध्या कर लेते! मैं तो उसी वक़्त कहने को था मगर यह समझ कर चुप हो रहा कि शायद इसमें भी तुम्हारा कोई मतलब हो।

तेज०: ज़रूर ऐसा ही है।

देवी०: क्यों उस्ताद, इसमें क्या मतलब है ?

तेज०: देखो, मालूम ही हुआ जाता है!

कुमार: तो कहते क्यों नहीं, आखिर कब बतलाओगे

तेज०: हमने यह सोचा कि कहीं योगीजी हम लोगों से धोखा न करें! कहीं खाने-पीने में बेहोशी की दवा मिलाकर न खिला दें, और हम लोग बेहोश हो जायें तो उठवा कर खोह के बाहर रखवा दें और यहां आने का रास्ता बंद करा दें, ऐसा होगा तो कुल मेहनत ही बर्बाद हो जायेगी। देखिए आप भी इसी बाग में बेहोश किये गये थे, जब क़ैदी बनकर आये थे और प्यास लगने पर एक कटोरा पानी पिया था, उसी वक़्त बेहोश हो गये और खोह में ले जाकर रख दिये गये थे। अगर ऐसा न हुआ होता तो उसी समय कुछ-न-कुछ हाल यहां का मिल गया होता। फिर मैं यह भी सोचता हूं कि अगर हम लोग वहां जाकर भोजन से इनकार करेंगे तो ठीक न होगा क्योंकि निमंत्रण कबूल करके मौके पर खाने से इनकार कर जाना उचित नहीं है।

देवी०: तो फिर इसकी युक्ति क्या सोची है ?

तेज०: (हंसकर) युक्ति क्या, बस वही तिलिस्मी गुलाब का फूल घिस कर सभी को पिलाऊंगा और आप भी पीऊंगा, फिर रात-दिन तक बेहोश करने वाला कौन है ?

कुमार०: हां ठीक है, पर वह वैद्य भी कैसा चतुर होगा जिसने दवाइयों से ऐसे काम के नायाब फूल बनाये।

तेज०: ठीक ही है।

इतने में वही औरत सामने से आती दिखाई पड़ी, उसके पीछे तीन लौंडिया आसन, पंचपात्र, जल इत्यादि हाथों में लिए आ रही थीं।

उस बाग में एक पेड़ के नीचे कई पत्थर बैठने लायक रखे हुए थे। औरतों ने उन पत्थरों पर सामान दुरुस्त कर दिया इसके बाद तेजसिंह ने उन लोगों से कहा, "अब थोड़ी देर वास्ते तुम लोग अपने बाग में चली जाओ क्योंकि औरतों के सामने हम लोग संध्या नहीं करते।"

"आप ही लोगों की खिदमत करते जनम बीत गया, ऐसी बातें क्यों करते हैं, सीधी तरह से क्यों नहीं कहते कि हट जाओ! लो मैं जाती हूं।" कहती हुई वह औरत लौंडियों को साथ ले चली गयी। उसकी बात पर ये लोग हंस पड़े और बोले, "जरूर ऐयारों के संग रहने वाली है।"

संध्या करने के बाद तेजसिंह ने तिलिस्मी गुलाब का फूल पानी में घिस कर सभी को पिलाया तथा आप भी पीया और तब राह देखने लगे कि फिर वह औरत आये तो उसके साथ हम लोग चलें।

थोड़ी देर बाद वही औरत फिर आई और उसने इन लोगों को चलने के लिए कहा। ये लोग भी तैयार थे, उठ खड़े हुए और उसके पीछे रवाना होकर तीसरे बाग में पहुंचे। ऐयारों ने अभी तक इस बाग को नहीं देखा था मगर कुंवर वीरेन्द्रसिंह इसे खूब पहचानते थे। इसी बाग में क़ैदियों की तरह लाये गये थे और यहीं पर कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था, मगर आज इस बाग को वैसा नहीं पाया, न तो वह रोशनी ही थी न उतने आदमी ही। हां, पांच-सात औरतें इधर-उधर घूमती फिरती दिखाई पड़ीं, और दो तीन पेड़ों के नीचे कुछ रोशनी भी थी जहां उसका होना ज़रूरी था।

शाम हो गयी थी बल्कि कुछ अंधेरा भी हो चुका था। वह औरत इन लोगों को लिए उस कमरे की तरफ चली जहां कुमार ने तस्वीर का दरबार देखा था। रास्ते में कुमार सोचते जाते थे, "चाहे जो हो, आज सब भेद मालूम किये बिना योगी का पिण्ड न छोड़ूंगा। आज मालूम हो जायेगा कि वनकन्या कौन है ? तिलिस्मी किताब उसने क्योंकर पाई थी ? हमारे साथ उसने इतनी भलाई क्यों की और कुमारी चन्द्रकान्ता कहां चली गई ?"

दीवानखाने में पहुंचे। आज वहां तस्वीर का दरबार न था बल्कि उन्हीं योगी का दरबार था जिन्होंने पहाड़ी से कूदते हुए कुमार को बचाया था। लम्बा-चैड़ा फर्श बिछा हुआ था और उसके ऊपर एक मृगछाला बिछाए योगी जी बैठे हुए थे, बाईं तरफ कुछ पीछे हटकर वनकन्या बैठी थी और सामने की तरफ चार-पांच लौंडियां हाथ जोड़े खड़ी थीं।

कुमार को आते देख योगीजी उठ खड़े हुए, दरवाज़े तक आकर उनका हाथ पकड़ अपनी गद्दी के पास ले गये और अपनी बगल में दाहिनी ओर मृगछाला पर बैठाया। वनकन्या उठकर कुछ दूर जा खड़ी हुई और प्रेम भरी निगाहों से कुमार की तरफ देखने लगी।

सब तरफ से हटकर कुमार की निगाह भी वनकन्या की तरफ जा डटी। इस वक़्त इन दोनों की निगाहों से मुहब्बत, हमदर्दी और शर्म टपक रही थी। चारों आंखें आपस में मिल रही थीं। अगर योगी का खयाल न होता तो दोनों दिल खोल कर मिल लेते, मगर नहीं, दोनों ही को इस बात का खयाल था कि इन प्रेम की निगाहों को योगी न जानने पायें। कुछ ठहर कर योगी और कुमार में बातचीत होने लगी-

योगी: आप और आपकी मण्डली के लोग कुशल-मंगल से तो हैं ?

कुमार: आपकी दया से हर तरह से प्रसन्न हैं, परन्तु...

योगी: परन्तु क्या ?

कुमार: परन्तु कई बातों का भेद न खुलने से तबीयत को चैन नहीं है, फिर भी आशा है कि आपकी कृपा से हम लोगों का यह दु:ख भी दूर हो जायेगा।

योगी: परमेश्वर की दया से अब कोई चिन्ता न रहेगी और आपके सब सन्देह दूर हो जायेंगे। इस समय आप लोग हमारे साग-सत्तू को कबूल करें, इसके बाद रातभर हमारे आपके बीच बातचीत होती रहेगी, जो कुछ पूछना हो पूछियेगा, ईश्वर चाहेंगे तो किसी भी बात का दुःख नहीं उठाना पड़ेगा और आज से ही आपकी खुशी का दिन शुरू होगा।

योगी की अमृत भरी बातों ने कुमार और उनके ऐयारों के सूखे दिलों को हराकर दिया। तबीयत प्रसन्न हो गयी, उम्मीद बंध गयी कि अब सब काम पूरा हो जायेगा। थोड़ी देर के बाद भोजन का सामान दुरुस्त किया गया। खाने की जितनी चीजें थीं सभी ऐसी थीं कि सिवाय राजे-महाराजों के और किसी के यहां न पायी जायें। खाने-पीने से निश्चिन्त होने के बाद बाग के बीचोंबीच में पत्थर के खूबसूरत चबूतरे पर फर्श बिछाया गया और उसके ऊपर मृगछाला बिछाकर योगीजी बैठ गये, अपने बगल में कुमार को बैठा लिया, कुछ दूर पर हट कर वनकन्या अपनी दो सखियों के साथ बैठी, और जितनी औरतें थीं हटा दी गयीं।

रात पहर भर से ज़्यादा जा चुकी थी, चन्द्रमा अपनी पूर्ण किरणों से उदय हो रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी जिसमें सुगन्धित फूलों की मीठी महक उड़ रही थी। योगी ने मुस्करा कर कुमार से कहा-

"अब जो कुछ पूछना हो पूछिये, मैं सब बातों का जवाब दूंगा और जो कुछ काम आपके अभी तक अटके हैं उनको भी करा दूंगा।"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह के जी में बहुत-सी ताज्जुब की बातें भरी हुई थीं, हैरान थे कि पहले क्या पूछूं ? आखिर खूब सम्हल कर बैठे और योगी से पूछने लगे।

दसवां बयान

जो कुछ दिन बाकी था दीवान हरदयालसिंह ने जासूसों को इकट्ठा करने और समझाने-बुझाने में बिताया। शाम को जासूसों को साथ ले हुक्म के मुताबिक महाराज जयसिंह के पास बाग में हाज़िर हुए।

खुद महाराज जयसिंह ने जासूसों से पूछा, "तुम लोग ज़ालिमखां का पता क्यों नहीं लगा सकते ?" इसके जवाब में उन्होंने अर्ज़ किया, "महाराज, हम लोगों से जहां तक बनता है कोशिश करते हैं, उम्मीद है कि पता लग जायेगा।"

महाराज ने कहा, "आफतखां एक नया शैतान पैदा हुआ है! इसने अपने इश्तिहार में अपने मिलने का पता भी लिखा है, फिर क्यों नहीं तुम लोग उसी ठिकाने पर उससे मिल कर उसे गिरफ्तार करते ?" जासूसों ने जवाब दिया, "महाराज, आफतखां ने अपने मिलने का ठिकाना 'टेटी-चोटी' लिखा है, अब हम लोग क्या जानें 'टेटी-चोटी' कहां है ? कौन-सा मुहल्ला है या किस जगह को उसने इस नाम से लिखा है, इसका क्या अर्थ है ? तथा हम लोग कहां जायें ?"

यह सुनकर महाराज भी 'टेटी-चोटी' के फेर में पड़ गये। कुछ भी समझ में न आया। जासूसों को बेकसूर समझ कुछ न कहा, हां डरा-धमका के और ताकीद करके रवाना किया।

अब महाराज को अपने जीने की उम्मीद कम रह गई, खौफ़ के मारे रात भर हाथ में तलवार लिए जागा करते, क्योंकि थोड़ा-बहुत जो कुछ भरोसा था अपनी बहादुरी का ही था।

दूसरे दिन एक इश्तिहार फिर शहर में चिपका हुआ पाया गया जिसे पहरे वालों ने लाकर हाज़िर किया। दीवान हरदयालसिंह ने पढ़कर सुनाया, लिखा था:

"देखना, खूब सम्हले रहना! बद्रीनाथ को गिरफ्तार कर चुका हूं। अपने पहले वादे के अनुसार कल बारह बजे रात को उसका सिर लेकर तुम्हारे महल में हम लोग कई आदमी पहुंचेंगे, देखें कैसे गिरफ्तार करते हो!"

-आफतखां

ग्यारहवां बयान

विजयगढ़ के पास भयानक जंगल में नाले के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर दो आदमी बैठे आपस में धीरे-धीरे बातचीत कर रहे हैं। चांदनी खूब छिटकी हुई है जिसमें इन लोगों की सूरत और पोशाक साफ दिखाई पड़ती है। दोनों आदमियों में से जो दूसरे पत्थर पर बैठे हुए हैं एक की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। काला रंग, लम्बा-कद, काली दाढ़ी, सिर्फ जांघिया और चुस्त कुर्ता पहने हुए तीर-कमान और ढाल-तलवार आगे रखे, एक घुटना ज़मीन के साथ लगाए बैठा है। बड़ी-बड़ी काली और कड़ी मूंछें ऊपर को चढ़ी हुई हैं, भूरी और खूंखार आंखें चमक रही हैं, चेहरे से बदमाशी और लुटेरापन झलक रहा है, इसका नाम ज़ालिमखां है।

दूसरा शख्स जो उसी के सामने वीरासन में बैठा है उसका नाम आफतखां है। मझोला कद, लम्बी दाढ़ी, चुस्त पायजामा और कुर्ता पहने, गंड़ासा सामने और एक छोटी-सी गठरी बाइं तरफ रखे ज़ालिमखां की बात खूब गौर से सुनता और जवाब देता है।

ज़ालिमखां: तुम्हारे मिल जाने से बड़ा सहारा हो गया।

आफतखां: इसी तरह मुझको तुम्हारे मिलने से! देखो, यह गंड़ासा, (हाथ में लेकर) इसी से हज़ारों आदमियों की जानें जायेंगी। मैं सिवाय इसके कोई दूसरा हथियार नहीं रखता। यह ज़हर से बुझाया हुआ है, जिसे ज़रा भी इसका ज़ख्म लग जाये फिर उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं।

ज़ालिमखां: बहुत परेशान होने पर तुमसे मुलाकात हुई!

आफतखां: मुझे तुझसे ज़रूर मिलना था, इसलिए इश्तिहार चिपका दिये क्योंकि तुम लोगों का ठिकाना तो था नहीं, जहां खोजता। लेकिन मुझे यकीन था कि तुम ऐयारी ज़रूर जानते होगे, इसलिए ऐयारी बोली में अपना ठिकाना लिख दिया कि जिससे दूसरे की समझ न आवे कि कहां बुलाया है।

ज़ालिमखां: ऐसे ही कुछ थोड़ी-सी ऐयारी सीखी थी, मगर तुम इस फन में उस्ताद मालूम होते हो, तभी तो बद्रीनाथ को झट गिरफतार कर लिया।

आफतखां: उस्ताद तो मैं कुछ भी नहीं, मगर हां बद्रीनाथ जैसे छोकरे के लिए बहुत हूं।

ज़ालिमखां: जो चाहो कहो, मगर मैंने तुमको अपना उस्ताद मान लिया, ज़रा बद्रीनाथ की सूरत तो दिखा दो।

आफतखां: हां, हां, देखो, धड़ तो उसका गाड़ दिया मगर सिर गठरी में बंधा है, लेकिन हाथ मत लगाना क्योंकि इसको मसाले में तर किया है जिससे कल तक सड़ न जाये।

इतना कह आफतखां ने अपने बगल वाली गठरी खोली जिसमें बद्रीनाथ का सिर बंधा हुआ था। कपड़ा खून से तर हो रहा था। जितने आदमी उसके साथियों में से उस जगह थे बद्रीनाथ की खोपड़ी देख खुशी के मारे उछलने लगे।

ज़ालिमखां: यह शख्स बड़ा शैतान था।

आफतखां: लेकिन मुझसे बच के कहां जाता।

ज़ालिमखां: मगर उस्ताद, तुम एक बात बड़ी बेढब कहते हो कि कल बारह बजे रात को महल में चलना होगा।

आफतखां: बेढब क्या है ? देखो कैसा तमाशा होता है!

ज़ालिमखां: मगर उस्ताद, तुम्हारे इश्तिहार दे देने से उस वक़्त वहां बहुत से आदमी इकट्ठे होंगे, कहीं ऐसा न हो कि हम गिरफ्तार हो जायें।

आफतखां: ऐसा कौन है जो हम लोगों को गिरफ्तार करे ?

ज़ालिमखां: तो इसमें क्या फायदा कि अपनी जान जोखिम में डाली जाये, वक़्त टाल के क्यों नहीं चलते ?

आफतखां: तुम लोग गधे हो, कुछ खबर भी है कि हमने ऐसा क्यों किया ?

ज़ालिमखां: अब यह तो तुम जानो!

आफतखां: सुनो, मैं बताता हूं। मेरी योजना यह है कि जहां तक हो सके जल्दी से उन लोगों को मार-पीट सब मामला खत्म कर दूं। उस वक़्त वहां जितने आदमी मौजूद होंगे सभी को बस तुम मुर्दा ही समझ लो, बिना हाथ-पैर हिलाये सभी का काम तमाम करूँ तो सही।

ज़ालिमखां: भला उस्ताद, यह कैसे हो सकता है ?

आफतखां: (बटुए में से एक गोला निकालकर और दिखाकर) देखो इस किस्म के बहुत से गोले मैंने बना रखे हैं जो एक-एक तुम लोगों के हाथ में दे दूंगा। बस वहां पहुंचते ही तुम लोग इन गोलों को उन लोगों के हुज़ूम (भीड़) में फेंक देना जो हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए मौजूद होंगे। गिरते ही ये गोले भारी आवाज़ देकर फूट जायेंगे और इनमें से बहुत-सा धुआं निकलेगा जिसमें वे लोग छिप जायेंगे, आखों में धुआं लगते ही अंधे हो जायेंगे और नाक के अन्दर जहां धुआं गया नहीं कि उन लोगों की जान गई, ऐसा ही ज़हरीला यह धुआं होगा।

आफतखां की बात सुनकर सबके-सब खुशी से उछल पड़े। ज़ालिमखां ने कहा, "भला उस्ताद एक गोला यहां पटक के तो दिखाओ, हम लोग भी देख लें, तो दिल मज़बूत हो जायेगा।"

"हां देखो।" यह कह के आफतखां ने वह गोला ज़मीन पर पटक दिया, एक भारी आवाज़ के साथ गोला फट गया और बहुत-सा ज़हरीला धुआं फैला जिसको देखते ही आफतखां, ज़ालिमखां और उनके साथ लोग जल्दी से हट गये, तिस पर भी उन लोगों की आंखें सूज गईं और सिर घूमने लगा। यह देखकर आफतखां ने भी अपने बटुए में से मरहम की एक डिबिया निकाली और सभी की आखों में वह मरहम लगाया तथा हाथ में मलकर सुंघाया जिनसे उन लोगों की तबीयत कुछ ठिकाने हुई और वे आफतखां की तारीफ करने लगे।

ज़ालिमखां: वाह उस्ताद, यह तो तुमने बहुत ही बढ़िया चीज़ बनाई है।

आफतखां: क्यों, अब तो महल में चलने का हौसला हुआ ?

ज़ालिमखां: शुक्र है उस पाक परवरदिगार का जिसने तुम्हें मिला दिया! जो काम हम साल भर में करते सो तुम एक रोज़ में कर सकते हो। वाह उस्ताद! वाह! अब तो हम लोग उछलते-कूदते महल में चलेंगे और सभी को दोज़ख में पहुंचायेंगे, लाओ एक-एक गोला सभी को दे दो।

आफतखां: अभी क्यों, जब चलने लगेंगे, दे देंगे, कल का दिन जो काटना है।

ज़ालिमखां: अच्छा, लेकिन उस्ताद, तुमने इतने दिन पीछे का इश्तिहार क्यों दे दिया ? आज ही का दिन अगर मुकर्रर होता तो मज़ा आ जाता।

आफतखां: हमने समझा था कि बद्रीनाथ ज़रा चालाक है, शायद जल्द हाथ न लगे इसलिए ऐसा किया, मगर यह तो निरा बोदा निकला।

ज़ालिमखां: अब क्या करना चाहिए ?

आफतखां: इस वक़्त तो कुछ नहीं, मगर कल बारह बजे रात को महल में चलने के लिए तैयार रहना चाहिए!

ज़ालिमखां: इसके कहने की ज़रूरत नहीं, अब तो हम और तुम साथ ही हैं, जब जो कहोगे, करेंगे।

आफतखां: अच्छा तो आज यहां से टलकर किसी दूसरी जगह आराम करना मुनासिब है। कल देखो, खुदा क्या करता है। मैं तो कसम खा चुका हूं कि महल में जाकर बिना सभी का काम तमाम किये एक दाना मुंह में नहीं डालूंगा।

ज़ालिमखां: उस्ताद ऐसा नहीं करना, तुम कमज़ोर हो जाओगे।

आफतखां: बस चुप रहो, बिना खाये हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता।

इसके बाद सब वहां से उठकर एक तरफ को रवाना हो गये।

बारहवां बयान

वह दिन आ गया जब बारह बजे रात को बद्रीनाथ का सिर लेकर आफतखां महल में पहुंचा। आज शहर में भी खलबली मची हुई थी। शाम से ही महाराज जयसिंह खुद सब तरह का इन्तज़ाम कर रहे थे। बड़े-बड़े बहादुर और फुर्तीले जवांमर्द महल के अन्दर इकट्ठे किये जा रहे थे। सभी में जोश फैलता जाता था, महाराज खुद हाथ में तलवार लिये इधर-उधर टहलते और लोगों की बहादुरी की तारीफ करके कहते थे कि सिवाय अपने जान-पहचान के किसी गैर को किसी वक़्त कहीं देखो तो गिरफ्तार कर लो, और बहादुर लोग आपस में डींग हांक रहे थे कि यों पकडूंगा, यों काटूंगा। महल के बाहर पहरे का इन्तज़ाम कम कर दिया गया क्योंकि महाराज को पूरा भरोसा था कि महल में आते ही आफतखां को गिरफ्तार कर लेंगे और जब बाहर पहरा कम रहेगा तो वह बखूबी महल में चला आयेगा नहीं तो दो-चार पहरे वालों को मारकर भाग जायेगा। महल के अन्दर रोशनी भी खूब कर दी गयी, तमाम मकान दिन की तरह चमक रहा था।

आधी रात बीतना ही चाहती थी कि पूरब की छत से छः आदमी धमाधम कूद कर धड़धड़ाते हुए उस भीड़ के बीच में आकर खड़े हो गये जहां बहुत से बहादुर बैठे और खड़े थे। सबके आगे वही आफतखां बद्रीनाथ का सिर हाथ में लटकाये हुए था।

तेरहवां बयान

खोह वाले तिलिस्म के अन्दर बाग में कुंवर वीरेन्द्रसिंह और योगी से बातचीत होने लगी जिसे वनकन्या और उनके ऐयार बखूबी सुन रहे थे।

कुमार: पहले यह कहिये, चन्द्रकान्ता जीती है या मर गई ?

योगी०: राम-राम, चन्द्रकान्ता को कोई मार सकता है ? वह बहुत अच्छी तरह से इस दुनिया में मौजूद है।

कुमार: क्या उसकी मुझसे फिर मुलाकात होगी ?

योगी०: ज़रूर होगी।

कुमार: कब ?

योगी०: (वनकन्या की तरफ इशारा करके) जब यह चाहेगी।

इतना सुन कुमार वनकन्या की तरफ देखने लगे। इस वक़्त उसकी अजीब हालत थी। बदन में घड़ी-घड़ी कंपकंपी हो रही थी, घबराई-सी नज़र पड़ती थी। उसकी ऐसी गति देखकर एक दफे योगी ने अपनी कड़ी और तिरछी निगाह उस पर डाली, जिसे देखते ही वह सम्हल गई। कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने भी इसे अच्छी तरह से देखा और फिर कहा।

कुमार: अगर आपकी कृपा होगी तो चन्द्रकान्ता से अवश्य मिल सकूंगा।

योगी०: नहीं, यह काम बिलकुल (वनकन्या को दिखाकर) इसी के हाथ में है, मगर यह मेरे हुक्म में है, अस्तु आप घबराते क्यों हैं, और जो-जो बातें आपको पूछना हो पूछ लीजिये, फिर चन्द्रकान्ता से मिलने की युक्ति भी बता दी जायेगी।

कुमार: अच्छा यह बताइये कि यह वनकन्या कौन है ?

योगी०: एक राजा की लड़की।

कुमार: मुझ पर इसने बहुत उपकार किये, इसका क्या सबब है ?

योगी०: इसका यही सबब है कि कुमारी चन्द्रकान्ता में और इसमें बहुत प्रेम है।

कुमार: अगर ऐसा है तो मुझसे शादी क्यों करना चाहती है ?

योगी०: तुम्हारे साथ शादी करने की इसको कोई ज़रूरत नहीं, और न यह तुमको चाहती ही है। केवल चन्द्रकान्ता की ज़िद से लाचार है, क्योंकि उसको यही मंज़ूर है।

योगी की आखिरी बात सुनकर कुमार मन में बहुत खुश हुए और फिर योगी से बोले-

कुमार: जब चन्द्रकान्ता से इनकी इतनी मुहब्बत है तो यह उसे मेरे सामने क्यों नहीं लाती ?

योगी०: अभी उसका समय नहीं है।

कुमार: क्यों ?

योगी०: जब राजा सुरेन्द्रसिंह और जयसिंह को आप यहां लायेंगे, तब यह कुमारी चन्द्रकान्ता को लाकर उनके हवाले कर देगी।

कुमार: तो मैं अभी यहां से जाता हूं, जहां तक होगा उन दोनों को लेकर बहुत जल्द आऊंगा।

योगी०: मगर पहले हमारी एक बात का जवाब दे लो।

कुमार: वह क्या ?

योगी०: (वनकन्या की तरफ इशारा करके) इस लड़की ने तुम्हारी बहुत कुछ मदद की है और तुमने तथा तुम्हारे ऐयारों ने इसे देखा भी है। इसका हाल और कौन-कौन जानता है और तुम्हारे ऐयारों के सिवाय इसे और किस-किस ने देखा है ?

कुमार: मेरे और फतहसिंह के सिवाय इन्हें आज तक किसी ने नहीं देखा। हां, आज ऐयार लोग इनको ज़रूर देख रहे हैं।

वनकन्या: एक दफे ये (तेजसिंह की तरफ बताकर) मुझसे मिल गये हैं, मगर शायद वह हाल इन्होंने आपसे न कहा हो, क्योंकि मैंने कसम दे दी थी।

यह सुनकर कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखा। उन्होंने कहा, "जी हां, यह उस वक़्त की बात है जब आपने मुझसे कहा था कि आजकल तुम लोगों की ऐयारी में उल्ली लग गई है। तब मैंने कोशिश करके इनसे मुलाकात की और कहा कि 'अपना पूरा हाल मुझसे जब तक न कहेंगी, मैं न मानूंगा और आपका पीछा न छोड़ूंगा। तब इन्होंने कहा कि "एक दिन वह आयेगा कि चन्द्रकान्ता और मैं कुमार की कहलायेंगी, मगर इस वक़्त तुम मेरा पीछा मत करो नहीं तो तुम्हीं लोगों के काम का हर्ज़ होगा"। तब मैंने कहा कि-'अगर आप इस बात की कसम खायें कि चन्द्रकान्ता कुमार को मिलेंगी तो इस वक़्त मैं यहां से चला जाऊंगा।' इन्होंने कहा कि-'तुम भी इस बात की कसम खाओ कि आज का हाल तब तक किसी से न कहोगे जब तक मेरा और कुमार का सामना न हो जाये'। आखिर इस बात की हम दोनों ने कसम खाई। यही सबब है कि पूछने पर भी मैंने यह सब हाल किसी से नहीं कहा, आज इनका और आपका पूरी तरह से सामना हो गया इसलिए कहा है।"

योगी०: (कुमार से) अच्छा तो इस लड़की को सिवाय तुम्हारे तथा ऐयार लोगों के और किसी ने नहीं देखा, मगर इसका हाल तो तुम्हारे लश्कर वाले जानते होंगे कि आजकल कोई नई औरत आई है जो कुमार की मदद कर रही है।

कुमार: नहीं, यह हाल भी किसी को मालूम नहीं, क्योंकि सिवाय ऐयारों के मैं और किसी से इनका हाल कहता ही न था और ऐयार लोग सिवाय अपनी मंडली के दूसरे को किसी बात का पता क्यों देने लगे। हां, इनके नकाबपोश सवारों को हमारे लश्कर वालों ने कई दफे

देखा है और इनका खत लेकर भी जब-जब कोई हमारे पास गया तब हमारे लश्कर वालों ने देखकर शायद कुछ समझा हो।

योगी०: इसका कोई हर्ज़ नहीं। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारी जुबानी राजा सुरेन्द्रसिंह और जयसिंह ने भी कुछ इसका हाल सुना है ?

कुमार: उन्होंने तो नहीं सुना, हां तेजसिंह के पिता जीतसिंहजी से मैंने सब हाल ज़रूर कह दिया था, शायद उन्होंने मेरे पिता से कहा हो।

योगी०: नहीं, जीतसिंह यह सब हाल तुम्हारे पिता से कभी न कहेंगे। मगर अब तुम इस बात का खूब खयाल रखो कि वनकन्या ने जो-जो काम तुम्हारे साथ किये हैं उनका हाल किसी को न मालूम हो।

कुमार: मैं कभी न कहूंगा, मगर आप यह तो बतायें कि इनका हाल किसी से न कहने में क्या फायदा सोचा है ? अगर मैं किसी से कहूंगा तो इसमें इनकी तारीफ ही होगी।

योगी०: तुम लोगों के बीच में चाहे इसकी तारीफ हो, मगर यह सब हाल इसके मां-बाप सुनेंगे तो उन्हें कितना रंज होगा ? क्योंकि एक बड़े घर की लड़की का पराये मर्द से मिलना और पत्र-व्यवहार करना तथा विवाह का संदेश देना इत्यादि कितने दोष की बात है।

कुमार: हां, यह तो ठीक है। अच्छा, इनके मां-बाप कौन हैं और कहां रहते हैं ?

योगी०: इसका हाल भी तुमको तब मालूम होगा जब राजा सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह यहां आयेंगे और कुमारी चन्द्रकान्ता उनके हवाले कर दी जायेगी।

कुमार: तो आप मुझे हुक्म दीजिये कि मैं इसी वक़्त उन लोगों को लाने के लिए यहां से चला जाऊं।

योगी०: यहां से जाने का भला यह कौन-सा वक़्त है। क्या शहर का मामला है ? रात भर ठहर जाओ, सुबह को जाना, रात भी अब थोड़ी ही रह गई है, कुछ आराम कर लो।

कुमार: जैसी आपकी मर्ज़ी।

गर्मी बहुत थी इस वजह से उसी मैदान में कुमार ने सोना पसन्द किया। इन सभी के सोने का इन्तज़ाम योगीजी के हुक्म से उसी वक़्त कर दिया गया। इसके बाद योगीजी अपने कमरे की तरफ रवाना हुए और वनकन्या भी एक तरफ को चली गई।

थोड़ी-सी रात बाकी थी, वह भी उन लोगों में बातचीत करते बीत गई। अभी सूरज नहीं निकला था कि योगीजी अकेले फिर कुमार के पास आ मौजूद हुए और बोले, "मैं रात को एक बात कहना भूल गया था जो इस वक़्त समझाये देता हूं। जब राजा जयसिंह इस खोह में आने के लिए तैयार हो जायें बल्कि तुम्हारे पिता और जयसिंह दोनों मिलकर इस खोह के दरवाज़े तक आ जायें तब पहले तुम उन लोगों को बाहर ही छोड़कर अपने ऐयारों के साथ यहां आकर हमसे मिल जाना, इसके बाद उन लोगों को यहां लाना, और इस वक़्त स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर तब यहां से जाओ। कुमार ने ऐसा ही किया, मगर योगी की आखिरी बात से इनकी ओर से भी ताज्जुब हुआ कि हमें पहले क्यों बुलाया ?"

कुछ खाने का सामान हो गया। कुमार और ऐयारों को खिला-पिलाकर योगी ने विदा कर दिया।

दोहरा के लिखने की कोई ज़रूरत नहीं, खोह में घूमते-घूमते कुंवर वीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयार जिस तरह इस बाग तक आये थे उसी तरह इस बाग से दूसरे और दूसरे से तीसरे में होते सब लोग खोह के बाहर हुए और एक घने पेड़ के नीचे सभी को बैठा देवीसिंह कुमार के लिए घोड़ा लाने नौगढ़ चले गये।

थोड़ा दिन बाकी था जब देवीसिंह घोड़ा लेकर कुमार के पास पहुंचे, जिस पर सवार होकर कुंवर वीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों के साथ नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

नौगढ़ पहुंचकर अपने पिता से मुलाकात की और महल में जाकर अपनी माता से मिले। अपना कुल हाल किसी से नहीं कहा, हां पन्नालाल वगैरह की जुबानी इतना हाल इनको मिला कि कोई ज़ालिमखां इन लोगों का दुश्मन पैदा हुआ है जिसने विजयगढ़ में कई खून किये हैं और वहां की रियाया उनके नाम से कांप रही है, पंडित बद्रीनाथ उसको गिरफ्तार करने गये हैं, उनके जाने के बाद यह भी खबर मिली है कि एक आफतखां नामी दूसरा शख्स पैदा हुआ है जिसने इस बात का इश्तिहार दे दिया है कि फलां रोज़ बद्रीनाथ का सिर लेकर महल में पहुंचूंगा, देखूं, मुझे कौन गिरफ्तार करता है ?

इन सब खबरों को सुनकर कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी बहुत घबराये और सोचने लगे कि जिस तरह हो, विजयगढ़ पहुंचना चाहिए क्योंकि अगर ऐसे वक़्त में वहां पहुंचकर महाराज जयसिंह की मदद न करेंगे और उन शैतानों के हाथ से वहां की रियाया को न बचायेंगे तो कुमारी चन्द्रकान्ता को हमेशा के लिए ताना मारने की जगह मिल जायेगी और हम उनके सामने मुंह दिखाने लायक भी न रहेंगे।

इसके बाद यह भी मालूम हुआ कि जीतसिंह पन्द्रह दिनों की छुट्टी लेकर कहीं गये हैं। इस खबर ने तेजसिंह को परेशान कर दिया। वह इस सोच में पड़ गये कि उनके पिता कहां गये, क्योंकि उनकी बिरादरी में कहीं कुछ काम न था जहां जाते, तब इस बहाने से छुट्टी लेकर क्यों गये ?

तेजसिंह ने अपने घर में जाकर अपनी मां से पूछा कि "हमारे पिता कहां गये हैं" ? जिसके जवाब में बेचारी ने कहा, "बेटा, क्या ऐयारों के घर की औरतें इस लायक होती हैं कि उनके मालिक अपना ठीक-ठीक हाल उनसे कहा करें ?"

इतना ही सुनकर तेजसिंह चुप हो रहे। दूसरे दिन राजा सुरेन्द्रसिंह के पूछने पर तेजसिंह ने इतना कहा कि "हम लोग कुमारी चन्द्रकान्ता को खोजने के लिए खोह में गये थे, वहां एक योगी से मुलाकात हुई जिसने कहा कि अगर महाराज सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह को लेकर यहां आओ तो मैं चन्द्रकान्ता को बुलाकर उसके बाप के हवाले कर दूं। इसी सबब से हम लोग आपको और महाराज जयसिंह को लेने आये हैं।"

राजा सुरेन्द्रसिंह ने खुश होकर कहा, "हम तो अभी चलने को तैयार हैं मगर महाराज जयसिंह तो ऐसी आफत में फंस गये हैं कि कुछ कह नहीं सकते। पंडित बद्रीनाथ यहां से गये हैं, देखें क्या होता है ? तुमने तो वहां का हाल सुना ही होगा!"

तेजसिंह: मैं सब हाल सुन चुका हूं, हम लोगों को वहां पहुंचकर मदद करना मुनासिब है।

सुरेन्द्रसिंह: मैं खुद यह कहने को था। कुमार की क्या राय है, वे आयेंगे या नहीं ?

तेजसिंह: आप खुद जानते हैं कि कुमार काल से भी डरने वाले नहीं, वह ज़ालिमखां क्या चीज़ है।

राजा०: ठीक है, मगर किसी वीर पुरुष का मुकाबला करना हम लोगों का धर्म है और चोर तथा डाकुओं या ऐयारों का मुकाबला करना तुम लोगों का काम है, क्या जाने वह छिपकर कहीं कुमार पर ही घात कर बैठे।

तेजसिंह: वीरों और बहादुरों से लड़ना कुमार का काम है सही, मगर दुष्ट, चोर-डाकू या और किसी की भी क्या मज़ाल है कि हम लोगों के रहते कुमार का बाल-बांका कर जाये।

राजा०: हम तो नाम के आगे जान कोई चीज नहीं समझते, मगर दुष्ट घातियों से बचे रहना भी धर्म है। सिवाय इसके कुमार के वहां गये बिना कोई हर्ज़ भी नहीं है, अस्तु तुम लोग जाओ और महाराज जयसिंह की मदद करो! जब ज़ालिमखां गिरफ्तार हो जाये तो महाराज को सब हाल कह-सुनकर यहां लेते आना, फिर हम भी साथ होकर खोह में चलेंगे।

राजा सुरेन्द्रसिंह की इच्छा कुमार को इस वक़्त विजयगढ़ जाने देने की नहीं समझकर और राजा से बहुत जिद करना भी बुरा खयाल करके तेजसिंह चुप हो रहे, अकेले ही विजयगढ़ जाने के लिए महाराज से हुक्म लिया और उनके खास हाथ की लिखी हुई चिट्ठी का खलीता लेकर विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

कुछ दूर जाकर दोपहर की धूप घने जंगल के पेड़ों के झुरमुट में काटी और ठण्डे हो रवाना हुए। विजयगढ़ पहुंचकर महल में आधी रात को ठीक उस वक़्त पहुंचे जब बहुत से जवांमर्दों की भीड़ बटुरी हुई थी और हर एक आदमी चैकन्ना होकर हर तरफ देख रहा था। एकाएक पूरब की छत से धमाधम छः आदमी कूद कर बीचोंबीच भीड़ में आ खड़े हुए, उनके आगे-आगे बद्रीनाथ का सिर हाथ में लिए आफतखां था।

तेजसिंह को अभी तक किसी ने नहीं देखा था, इस वक़्त इन्होंने ललकार कर कहा, "पकड़ो इन नालायकों को, अब देखते क्या हो ?" इतना कहकर आप भी कमन्द फैला कर उन लोगों की तरफ फेंका, तब तक बहुत से आदमी टूट पड़े। उन लोगों के हाथ में जो गेंद मौजूद थे ज़मीन पर पटकने लगे, मगर कुछ नहीं, वहां तो मामला ठण्डा था, गेंद क्या था धोखे की टट्टी थी। कुछ करते-धरते न बन पड़ा और सब-के-सब गिरफ्तार हो गये।

अब तेजसिंह को सभी ने देखा, आफतखां ने भी इनकी तरफ देखा और कहा, "तेज मेमचे बद्री।" इतना सुनते ही तेजसिंह ने आफतखां का हाथ पकड़ कर उसको सभी से

अलग कर लिया और हाथ-पैर खोल गले से लगा लिया। सब गुल मचाने लगे, "हां, हां, यह क्या करते हो, यही तो बड़ा भारी दुष्ट है, इसी ने तो बद्रीनाथ को मारा है। देखो, इसी के हाथ में बेचारे बद्रीनाथ का सिर है, तुम्हें क्या हो गया कि इसके साथ नेकी करते हो ?" पर तेजसिंह ने घुड़ककर कहा-"चुप रहो, कुछ खबर भी है कि यह कौन है ? बद्रीनाथ को मारना क्या खेल हो गया है ?"

तेजसिंह की इज़्ज़त को सभी जानते थे। किसी की मज़ाल न थी कि उनकी बात काटता। आफतखां को उनके हवाले करना ही पड़ा मगर बाकी पांचों आदमियों को मज़बूती से बांधा।

आफतखां का हाथ भी तेजसिंह ने छोड़ दिया और साथ-साथ लिए हुए महाराज जयसिंह की तरफ चले। चारों तरफ धूम मची थी, ज़ालिमखां और उसके साथियों के गिरफ्तार हो जाने पर भी लोग कांप रहे थे, महाराज भी दूर से सब तमाशा देख रहे थे। तेजसिंह को आफतखां के साथ अपनी तरफ आते देख घबरा गये। म्यान से तलवार खींच ली। तेजसिंह ने पुकार कर कहा "घबराइये नहीं, हम दोनों आपके दुश्मन नहीं हैं, ये जो हमारे साथ हैं और जिन्हें आप कुछ और समझे हुए हैं, वास्तव में पंडित बद्रीनाथ हैं।" यह कह आफतखां की दाढ़ी हाथ से पकड़ कर झटक दी जिससे बद्रीनाथ कुछ पहचाने गये।

अब महाराज जयसिंह का जी ठिकाने हुआ। पूछा-"बद्रीनाथ उनके साथ क्यों थे ?"

बद्रीनाथ: महाराज, अगर मैं उनका साथी न बनता तो उन लोगों को यहां तक लाकर गिरफ्तार कौन कराता ?

महाराज: तुम्हारे हाथ में यह सिर किसका लटक रहा है ?

बद्रीनाथ: मोम का, बिलकुल बनावटी!

अब तो धूम मच गई कि ज़ालिमखां को बद्रीनाथ ऐयार ने गिरफ्तार कराया। इनके चारों तरफ भीड़ लग गई, एक-पर-एक टूटा पड़ता था। बड़े ही मुश्किल से बद्रीनाथ उस झुण्ड से अलग किये गए। ज़ालिमखां वगैरह को भी मालूम हो गया कि आफतखां कृपानिधान बद्रीनाथ थे जिन्होंने हम लोगों को बेढब धोखा देकर फंसाया, मगर इस वक़्त क्या कर सकते थे! हाथ-पैर सभी के बंधे थे, कुछ ज़ोर नहीं चल सकता था, लाचार होकर बद्रीनाथ को गालियां देने लगे। सच है, जब आदमी की जान पर आ बनती है तब जो जी में आता है बकता है।

बद्रीनाथ ने उनकी गालियों का कुछ खयाल न किया बल्कि उन लोगों की तरफ देख कर हंस दिये। उनके साथ बहुत-से आदमी ही नहीं बल्कि महाराज तक हंस पड़े।

महाराज के हुक्म से सब आदमी महल के बाहर कर दिये गये, सिर्फ थोड़े से मामूली उमरा लोग रह गये और महल के अन्दर ही कोठरी में हाथ-पैर जकड़कर ज़ालिमखां और उसके साथी बन्द कर दिये गये। पानी मंगवा कर बद्रीनाथ के हाथ-पैर धुलवाये गये, इसके

बाद दीवानखाने में बैठ कर बद्रीनाथ से सब खुलासा हाल ज़ालिमखां के गिरफ्तार करने का पूछने लगे जिसके सुनने के लिए तेजसिंह भी व्याकुल हो रहे थे।

बद्रीनाथ ने कहा, "महाराज, इस दुष्ट ज़ालिमखां से मिलने की पहली तरकीब मैंने यह की कि अपना नाम आफतखां रख कर इश्तिहार दिया और अपने मिलने का ठिकाना ऐसी बोली में लिखा कि सिवाय उनके या ऐयारों के किसी की समझ में न आये। यह तो मैं जानता ही था कि यहां इस वक़्त कोई ऐयार नहीं है जो मेरी इस लिखावट को समझेगा।"

महाराज: हां ठीक है, तुमने अपने मिलने का ठिकाना 'टेटी-चोटी' लिखा था, इसका क्या अर्थ है ?

बद्रीनाथ: ऐयारी बोली में 'टेटी-चोटी' भयानक नाले को कहते हैं।

इसके बाद बद्रीनाथ ने ज़ालिमखां से मिलने का और गेंद का तमाशा दिखला के धोखे का गेंद उन लोगों के हवाले कर भुलावा दे महल में ले आने का पूरा हाल कहा, जिसको सुन कर महाराज बहुत ही खुश हुए और इनाम में बहुत-सी जागीर बद्रीनाथ को देना चाही, मगर उन्होंने उसको लेने से बिलकुल इनकार किया और कहा कि बिना मालिक की आज्ञा के मैं आपसे कुछ नहीं ले सकता, उनकी तरफ से मैं जिस काम पर मुकर्रर किया गया था, जहां तक हो सका उसे पूरा कर दिया।

इसी तरह के बहुत-से उज्र बद्रीनाथ ने किये जिनको सुन महाराज और भी खुश हुए और वादा कर लिया कि क़िसी और मौके पर बद्रीनाथ को बहुत कुछ देंगे जब ये लेने से इनकार न कर सकेंगे।

बात-ही-बात में सवेरा हो गया, तेजसिंह और बद्रीनाथ महाराज से विदा हो दीवान हरदयालसिंह के घर आये।

चौदहवां बयान

सुबह को खुशी-खुशी महाराज ने दरबार किया। तेजसिंह और बद्रीनाथ भी बड़ी इज़्ज़त से बैठाये गये। महाराज के हुक्म से ज़ालिमखां और उसके चारों साथी दरबार में लाये गये जो हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े हुए थे। महाराज के हुक्म से तेजसिंह ज़ालिमखां से पूछने लगे-

तेजसिंह: क्यों जी, तुम्हारा नाम ठीक-ठीक ज़ालिमखां है या और कुछ ?

ज़ालिम: इसका जवाब मैं पीछे दूंगा, पहले यह बताइये कि आप लोगों के यहां ऐयारों को मार डालने का नियम है या नहीं ?

तेजसिंह: हमारे यहां क्या हिन्दुस्तान भर में कोई धर्मनिष्ठ हिन्दू राजा ऐयार को कभी जान से नहीं मारेगा। हां, वह ऐयार जो अपने कायदे के बाहर काम करेगा ज़रूर मारा जायेगा।

ज़ालिम: तो क्या हम लोग मारे जायेंगे ?

तेजसिंह: यह खुशी महाराज की, मगर क्या तुम लोग ऐयार हो जो ऐसी बातें पूछते हो ?

ज़ालिम: हां, हम लोग ऐयार हैं।

तेजसिंह: राम-राम, क्यों ऐयारी का नाम बदनाम करते हो! तुम लोग तो पूरे डाकू हो, ऐयारी से तुम लोगों को क्या वास्ता ?

ज़ालिम: हम लोग कई पुश्त से ऐयार होते आ रहे हैं, कुछ आज नये ऐयार नहीं बने।

तेजसिंह: तुम्हारे बाप-दादा शायद ऐयार हुए हों, मगर तुम लोग खासे दुष्ट डाकुओं में से हो।

ज़ालिम: जब आपने हमारा नाम डाकू ही रखा है तो बचने की कौन उम्मीद हो सकती है ?

तेजसिंह: जो हो, खैर, यह बताओ कि तुम हो कौन ?

ज़ालिम: जब मारे ही जाना है तो नाम बताकर बदनामी क्यों लें और अपना पूरा हाल भी किसलिए कहें ? हां, इसका वादा करो कि जान से न मारोगे, तो कहें।

तेजसिंह: यह वादा कभी नहीं हो सकता और अपना ठीक-ठीक हाल भी तुमको झख मार के कहना ही होगा।

ज़ालिम: कभी नहीं कहेंगे।

तेजसिंह: फिर जूते से तुम्हारे सिर की खबर खूब ली जायेगी।

ज़ालिम: चाहे जो हो।

बद्रीनाथ: वाह रे जूतीखोर!

ज़ालिम: (बद्रीनाथ से) उस्ताद, तुमने बड़ा धोखा दिया, मानता हूं तुमको!

बद्रीनाथ: तुम्हारे मानने ही से क्या होता है, आज नहीं तो कल तुम लोगों के सिर धड़ से अलग दिखलाई देंगे।

ज़ालिम: अफसोस! हम कुछ करने न पाये।

तेजसिंह ने सोचा कि इस बकवास से कोई मतलब न निकलेगा, हज़ार सिर पटकेंगे पर ज़ालिमखां अपना ठीक-ठीक हाल कभी न कहेगा, इससे बेहतर है कि कोई उपाय की जाये, अस्तु सोच कर महाराज से अर्ज़ किया, "इन लोगों को क़ैदखाने में भेजा जाये फिर जैसा होगा देखा जायेगा, और इनमें से वह एक आदमी (हाथ से इशारा करके) इसी जगह रखा जाये।" महाराज के हुक्म से ऐसा ही किया गया।

तेजसिंह के कहे मुताबिक उन डाकुओं में से एक को उसी जगह छोड़ बाकी सभी को क़ैदखाने की तरफ रवाना किया गया। जाती दफे ज़ालिमखां ने तेजसिंह की तरफ देख कर कहा, "उस्ताद, तुम बड़े चालाक हो। इसमें कोई शक नहीं कि चेहरे से आदमी के दिल का हाल खूब पहचानते हो, अच्छे डरपोक को चुन के रख लिया, अब तुम्हारा काम निकल जायेगा।"

तेजसिंह ने मुस्करा कर जवाब दिया, "पहले इसकी दुर्दशा कर ली जाये, फिर तुम लोग भी एक-एक करके इसी जगह लाये जाओगे।"

ज़ालिमखां और उसके तीन साथी तो क़ैदखाने की तरफ भेज दिये गये पर एक उसी जगह रह गया। हकीकत में वह बहुत डरपोक था। अपने को उसी जगह रहते और साथियों को दूसरी जगह जाते देख घबरा उठा। उसके चेहरे से उस वक़्त और भी बदहवासी बरसने लगी जब तेजसिंह ने एक चोबदार को हुक्म दिया कि 'अंगीठी में कोयला भर कर तथा दो तीन लोहे की सलाखें जल्द ले आओ जिनके पीछे लकड़ी की मूठ लगी हो।'

दरबार में जितने थे सब हैरान थे कि तेजसिंह ने लोहे की सलाख और अंगीठी क्यों मंगाई ? और उस डाकू की तो जो कुछ हालत थी लिखना मुश्किल है।

चार-पांच लोहे की सलाखें और कोयले से भरी हुई अंगीठी लाई गई। तेजसिंह ने एक आदमी से कहा, "आप सुलगाओ और इन लोहे की सलाखों को उसमें गरम करो।" अब उस डाकू से न रहा गया, उसने डरते हुए पूछा, "क्यों तेजसिंह, इन सलाखों को तपा कर क्या करोगे ?"

तेजसिंह: इनको लाल करके दो तुम्हारी दोनों आखों में, दो दोनों कानों में और एक सलाख मुंह खोल कर पेट के अन्दर पहुंचायी जायेगी।

डाकू: आप लोग तो रहमदिल कहलाते हैं, फिर इस तरह तकलीफ देकर किसी को मारना क्या आप लोगों की रहमदिली में बट्टा न लगायेगा ?

तेजसिंह: (हंस कर) तुम लोगों को छोड़ना बड़े संगदिलों का काम है, जब तक तुम जीते रहोगे हजारों की जान लोगे, इससे बेहतर है कि तुम्हारी छुट्टी कर दी जाये। जितनी तकलीफ देकर तुम लोगों की जान ली जायेगी उतना ही डर तुम्हारे शैतान भाइयों को होगा।

डाकू: तो क्या अब किसी तरह हमारी जान नहीं बच सकती ?

तेजसिंह: सिर्फ एक तरह से बच सकती है।

डाकू: कैसे ?

तेजसिंह: अगर अपने साथियों का हाल ठीक-ठीक कह दो तो सभी छोड़ दिये जाओगे।

डाकू: मैं ठीक-ठीक हाल कह दूंगा।

तेज०: हम लोग कैसे जानेंगे कि तुम सच्चे हो ?

डाकू: साबित कर दूंगा कि मैं सच्चा हूं।

तेज०: अच्छा कहो।

डाकू: सुनो, कहता हूं।

इस वक़्त दरबार में भीड़ लगी हुई थी। तेजसिंह ने आग की अंगीठी क्यों मंगाई ? ये लोहे की सलाखें किस काम आयेंगी ? यह डाकू अपना ठीक-ठीक हाल कहेगा या नहीं ? यह कौन है इत्यादि बातों को जानने के लिए सभी की तबीयत घबरा रही थी। सभी की निगाहें उस डाकू के ऊपर थीं। जब उसने कहा कि 'मैं ठीक-ठीक हाल कह दूंगा' तब और भी लोगों का खयाल उसी तरफ जम गया और बहुत-से आदमी उस डाकू की तरफ कुछ आगे बढ़ आये।

उस डाकू ने अपने साथियों का हाल कहने के लिए मुस्तैद होकर मुंह खोला ही था कि दरबारी भीड़ में से एक जवान आदमी म्यान से तलवार खींच कर उस डाकू की तरफ झपटा और इस ज़ोर से एक हाथ तलवार का लगाया कि उस डाकू का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा, जब उसी खून भरी तलवार को घुमाता और लोगों को ज़ख्मी करता वह बाहर निकल गया।

उस घबराहट में किसी ने भी उसे पकड़ने का हौसला न किया, मगर बद्रीनाथ कब रुकने वाले थे, साथ ही वह भी उसके पीछे दौड़े।

बद्रीनाथ के जाने के बाद सैकड़ों आदमी उस तरफ दौड़े, लेकिन तेजसिंह ने उसका पीछा न किया। वे उठकर सीधे उस क़ैदखाने की तरफ दौड़ गये जिसमें ज़ालिमखां वगैरह क़ैद किये गये थे। उनको इस बात का शक हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि उन लोगों को किसी ने ऐयारी करके छुड़ा लिया हो। मगर नहीं, वे लोग उसी तरह क़ैद थे। तेजसिंह ने कुछ और पहरे का इन्तज़ाम कर दिया और फिर तुरन्त लौट कर दरबार में चले आये।

पहली बार में जितनी भीड़ लगी हुई थी अब उससे चौथाई रह गई। कुछ तो अपनी मर्ज़ी से बद्रीनाथ के साथ दौड़ गये, कितनों ने महाराज का इशारा पाकर उसका पीछा किया था। तेजसिंह के वापस आने पर महाराज ने पूछा, "तुम कहां गये थे ?"

तेजसिंह: मुझे यह फिक्र पड़ गई थी कि कहीं ज़ालिमखां वगैरह तो नहीं छूट गये, इसलिए क़ैदखाने की तरफ दौड़ा गया था। पर वे लोग क़ैदखाने में ही पाये गये।

महाराज: देखें, बद्रीनाथ कब तक लौटते हैं और क्या करके लौटते हैं ?

तेजसिंह: बद्रीनाथ बहुत जल्द आयेंगे क्योंकि दौड़ने में बहुत ही तेज हैं।

आज महाराज जयसिंह मामूली वक़्त से अधिक देर तक दरबार में बैठे रहे। तेजसिंह ने कहा भी-"आज दरबार में महाराज को बहुत देर हुई ?" जिसका जवाब महाराज ने यह दिया कि "जब तक बद्रीनाथ लौटकर नहीं आते या उनका कुछ हाल मालूम न हो ले, हम इसी तरह बैठे रहेंगे।"

पन्द्रहवां बयान

दो घंटे बाद दरबार के बाहर से शोरगुल की आवाज़े आने लगीं। सभी का खयाल उसी तरफ गया। एक चोबदार ने आकर अर्ज़ किया कि पंडित बद्रीनाथ उस खूनी को पकड़े लिये आ रहे हैं।

उस खूनी को कमन्द से बांधे साथ लिये हुए पंडित बद्रीनाथ आ पहुंचे।

महाराज: बद्रीनाथ, कुछ यह भी मालूम हुआ कि यह कौन है ?

बद्रीनाथ: कुछ नहीं बताता कि कौन है, और न बतायेगा।

महाराज: फिर ?

बद्रीनाथ: फिर क्या ? मुझे मालूम होता है कि इसने अपनी सूरत बदल रक्खी है।

पानी मंगवाकर उसका चेहरा धुलवाया गया, अब तो उसकी दूसरी ही सूरत निकल आई।

भीड़ लगी थी, सभी में खलबली मच गई। मालूम होता था कि इसे सब कोई पहचानते हैं। महाराज चैंक पड़े और तेजसिंह की तरफ देखकर बोले, "बस-बस, मालूम हो गया, यह तो नाज़िम का साला है, मैं खयाल करता हूं कि ज़ालिमखां वगैरह जो क़ैद हैं वे भी नाज़िम और अहमद के रिश्तेदार ही होंगे। उन लोगों को फिर यहां लाना चाहिए।"

महाराज के हुक्म से ज़ालिमखां वगैरह भी दरबार में लाये गये।

बद्रीनाथ: (ज़ालिमखां की तरफ देखकर) अब तो तुम लोग पहचाने गये कि नाज़िम और अहमद के रिश्तेदार हो, तुम्हारे साथी ने बता दिया।

ज़ालिमखां इसका कुछ जवाब देना ही चाहता था कि वह खूनी (जिसे बद्रीनाथ अभी गिरफ्तार करके लाये थे) बोल उठा "ज़ालिमखां, तुम बद्रीनाथ के फेरे में मत पड़ना, यह झूठे हैं। तुम्हारे साथी को हमने कुछ कहने का मौका नहीं दिया, वह बड़ा ही डरपोक था, मैंने उसे दोज़ख में पहुंचा दिया। हम लोगों की जान चाहे जिस दुर्दशा से जाये मगर अपने मुंह से अपना कुछ हाल कभी न कहना चाहिए।"

ज़ालिमखां: (ज़ोर से) ऐसा ही होगा।

इन दोनों की बातचीत से महाराज को बड़ा ही क्रोध आया। आंखें लाल हो गईं, बदन कांपने लगा। तेजसिंह और बद्रीनाथ की तरफ देखकर बोले, "बस, हमको इन लोगों का हाल मालूम करने की कोई ज़रूरत नहीं, चाहे जो हों, अभी इस वक़्त, इसी जगह, मेरे सामने इन लोगों के सिर धड़ से अलग कर दिये जायें।"

हुक्म की देर थी, तमाम शहर इन डाकुओं के खून का प्यासा हो रहा था, उछल-उछल के लोगों ने अपने हाथों की सफाई दिखाई। सभी की लाशें उठाकर फेंक दी गईं। महाराज उठ खड़े हुए। तेजसिंह ने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया-

"महाराज, मुझे अभी तक यह कहने का मौका नहीं मिला कि यहां किस काम के लिए आया था और न अभी बात करने का वक़्त है।"

महाराज: अगर ज़रूरी कोई बात हो तो मेरे साथ महल में चलो!

तेजसिंह: बात तो बहुत ज़रूरी है, मगर इस समय कहने को जी नहीं चाहता, क्योंकि महाराज को अभी तक गुस्सा चढ़ा हुआ है और मेरी भी तबीयत खराब हो रही है, मगर इस वक़्त इतना कह देना मुनासिब समझता हूं कि जिस बात को सुनने में आपको बेहद खुशी होगी मैं वही बात कहूंगा।

तेजसिंह की आखिरी बात ने महाराज का गुस्सा एकदम ठंडा कर दिया और उनके चेहरे पर खुशी झलकने लगी। तेजसिंह का हाथ पकड़ लिया और महल में ले चले, बद्रीनाथ भी तेजसिंह के इशारे से साथ हुए।

तेजसिंह और बद्रीनाथ को साथ लिये हुए महाराज अपने खास कमरे में गये और कुछ देर बैठने के बाद तेजसिंह के आने का कारण पूछा।

सब हाल खुलासा कहने के बाद तेजसिंह ने कहा-"अब आप और महाराज सुरेन्द्रसिंह खोह में चलें और सिद्धनाथ योगी की कृपा से कुमारी को साथ लेकर खुशी-खुशी लौट आयें।"

तेजसिंह की बात से महाराज को कितनी खुशी हुई इसका हाल लिखना मुश्किल है। लपककर तेजसिंह को गले लगा लिया और कहा, "तुम अभी बाहर जाकर हरदयालसिंह को हमारे सफर की तैयारी करने का हुक्म दो और तुम लोग भी स्नान-पूजा करके कुछ खाओ-पीयो। मैं जाकर कुमारी की मां को यह खुशखबरी सुनाता हूं।"

आज के दिन का तीन हिस्सा कठिनाई, उदासी, गुस्से और खुशी में गुज़र गया, किसी के मुंह में अन्न का एक दाना नहीं गया था।

तेजसिंह और बद्रीनाथ महाराज से विदा हो दीवान हरदयालसिंह के मकान पर गये और महाराज ने महल में जाकर कुमारी चन्द्रकान्ता की मां को कुमारी के मिलने की उम्मीद दिलाई।

अभी धंटे भर पहले वह महल और ही हालत में था और अब सभी के चेहरे पर हंसी दिखाई देने लगी। होते-होते यह बात हजारों घरों में फैल गयी कि महाराज कुमारी चन्द्रकान्ता को लाने के लिए जाते हैं।

यह भी निश्चय हो गया कि आज थोड़ी-सी रात रहते महाराज जयसिंह नौगढ़ की तरफ कूच करेंगे।

सोलहवां बयान

पाठकगण, अब वह समय आ गया है कि आप भी चन्द्रकान्ता और कुंवर वीरेन्द्रसिंह को खुश होते देख खुश हों। यह तो आप समझते ही होंगे कि महाराज जयसिंह विजयगढ़ से रवाना होकर नौगढ़ जायेंगे और वहां से राजा सुरेन्द्रसिंह और कुमार को साथ लेकर कुमारी से मिलने की उम्मीद में तिलिस्मी खोह के अन्दर जायेंगे। आपको याद भी होगा कि सिद्धनाथ योगी ने तहखाने (खोह) से बाहर होते वक़्त कुमार को कह दिया था कि जब अपने पिता और महाराज जयसिंह को लेकर इस खोह में आना तो उन लोगों को खोह के बाहर छोड़कर पहले तुम आकर एक दफे हमसे मिल जाना। उन्हीं के कहे मुताबिक कुमार करेंगे। खैर, इन लोगों को तो आप अपने काम में छोड़ दीजिये और थोड़ी देर के लिए आंखें बन्द करके हमारे साथ खोह में चलिए और किसी कोने में छिपकर वहां रहने वालों की बातचीत सुनिये। शायद आप लोगों के जी का भ्रम यहां निकल जाये और दूसरे तथा तीसरे हिस्से के सभी भेदों की बातें भी सुनते-सुनते खुल जायें, बल्कि कुछ खुशी भी हासिल हो।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह वगैरह तो आज वहां तक पहुंचते नहीं मगर आप इसी वक़्त 'हमारे साथ' उस तहखाने (खोह) में नहीं बल्कि उस बाग में पहुंचिए जिसमें कुमार ने चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था और जिसमें सिद्धनाथ योगी और वनकन्या से मुलाकात हुई थी।

आप उसी बाग में पहुंच गये। देखिये अस्त होते हुए सूर्य भगवान अपनी सुन्दर लाल किरणों से मनोहर बाग के कुछ ऊंचे-ऊंचे पेड़ों के ऊपरी हिस्सों को चमका रहे हैं। कुछ-कुछ ठंडी हवा खुशबूदार फूलों की महक चारों तरफ फैला रही है। देखिए, इस बाग के बीच वाले संगमरमर पर तीन पलंग रखे हुए हैं जिनके ऊपर खूबसूरत लौंडिया अच्छे-अच्छे बिछौने बिछा रही हैं, खास करके बीच वाले जड़ाऊ पलंग की सजावट पर सभी का ज़्यादा ध्यान है। उधर देखिये, वह घास का छोटा-सा रमना कैसा खुशनुमा बना हुआ है। उसमें हरी-हरी दूब कैसी खूबसूरती से कटी हुई है, एकाएक सब्ज़ मखमली फर्श और इसमें कुछ भेद नहीं मालूम होता, और देखिए, उसी सब्ज़ दूब के रमने के चारों तरफ रंग-बिरंग के फूलों से खूब गुँथे हुए सीधे गुलमेंहदी के पेड़ों की कतार पल्टनों की तरह कैसी शोभा दे रही है।

उसके बगल की तरफ खयाल कीजिये, चमेली का फूला हुआ तख्त क्या ही रंग ज़मा रहा है और कैसे घने पेड़ हैं कि हवा को भी उसके अन्दर जाने का रास्ता मिलना मुश्किल

है, और इन दोनों तख्तों के बीच वाला छोटा खूबसूरत बंगला क्या मज़ा दे रहा है तथा उसके चारों तरफ नीचे से ऊपर तक मालती की लता कैसी घनी चढ़ी हुई और फूल भी कितने प्यारे फूले हुए हैं। अगर जी चाहे तो किसी एक तरफ निगाह दौड़ाइए, फूली हुई मेंहदी की टट्टी के नीचे जंगली रंग-बिरंग के पत्तों वाले हाथ-डेढ़-हाथ ऊंचे दरख्तों (करोटन) की चैहरी कतार क्या भली मालूम होती है, और उसके बुन्दकीदार, सुर्खी लिये हुए सफेद लकीरों वाले, सब्ज़ धारियों, लम्बे घूंघर वाले बालों की तरह ऐंठे हुए पत्ते क्या कैफियत दिखा रहे हैं और इधर-उधर हट के दोनों तरफ तिनकोनिया तख्तों की भी रंगत देखिये जो सिर्फ हाथ भर के ऊंचे रंगीन छिटकती हुई धारियों वाले पत्तों के जंगली पेड़ों (कोलियस) के गमलों से पहाड़ीनुमा सजाये हुए हैं और जिनके चारों तरफ रंग-बिरंगे देशी फूल खिले हुए हैं।

अब तो हमारी निगाह इधर-उधर और खूबसूरत क्यारियों फूलों और छूटते हुए फौवारों का मज़ा नहीं लेती, क्योंकि उन तीन औरतों के पास जाकर अटक गयी है, जो मेंहदी के पत्ते तोड़-तोड़कर अपनी झोलियों में बटोर रही हैं! यहां निगाह भी अदब करती है, क्योंकि उन तीनों औरतों में से एक तो हमारे उपन्यास की ताज़ वनकन्या है और बाकी तीनों उसकी प्यारी सखियां हैं।

वनकन्या की पोशाक तो सफेद है, मगर उसकी दोनों सखियों की सब्ज़ और सुर्ख।

वे तीनों मेंहदी की पत्तियां तोड़ चुकीं, अब इस संगमरमर के चबूतरे की तरफ चली आ रही हैं। शायद इन्हीं तीनों पलंगों पर बैठने का इरादा हो।

हमारा सोचना ठीक हुआ। वनकन्या मेंहदी की पत्तियां ज़मीन पर उछालकर थकावट की मुद्रा से बिचले जड़ाऊ पलंग पर लेट गई और दोनों सखियां अगल-बगल वाले दोनों पलंगों पर बैठ गई। पाठक, हम और आप भी एक तरफ चुपचाप खड़े होकर इन तीनों की बातचीत सुनें।

वनकन्या: ओफ, थकावट मालूम होती है।

सब्ज़ कपड़े वाली सखी: घूमे भी क्या कम हैं ?

सुर्ख कपड़े वाली सखी: (दूसरी सखी से) क्या तू भी थक गई है ?

सब्ज़ सखी: मैं क्यों थकने लगी ? दस-दस कोस का रोज़ चक्कर लगाती रही तब तो थकी ही नहीं।

सुर्ख सखी: ओफ, उन दिनों भी कितना दौड़ना पड़ता था। कभी इधर तो कभी उधर, कभी जाओ तो कभी आओ।

सब्ज़ सखी: आखिर कुमार के ऐयार हम लोगों का पता नहीं ही लगा सके।

सुर्ख सखी: खुद ज्योतिषीजी की अक्ल चकरा गई जो बड़े रम्माल और नजूमी कहलाते थे, दूसरों की कौन कहे!

वनकन्या: ज्योतिषीजी के रमल को तो इन यन्त्रों ने बेकार कर दिया जो बाबा सिद्धनाथ ने हम लोगों के गले में डाल दिया है और अभी तक जिसे उतारने नहीं देते।

सब्ज़ सखी: मालूम नहीं इस ताबीज़ (यन्त्र) में कौन-सी ऐसी चीज़ है जो रमल को चलने नहीं देती!

वनकन्या: मैंने यही बात एक दफे सिद्धनाथ बाबा से पूछी थी जिसके जवाब में वे बहुत कुछ बक गये। मुझे सब तो याद नहीं कि क्या-क्या कह गये, हां इतना याद है कि रमल जिस धातु से बनाई जाती है और रमल के साथी ग्रह, राशि, नक्षत्र, तारे वगैरह का असर पड़ने वाली जितनी धातुएं हैं, उन सभी को एक साथ मिलाकर यह यन्त्र बनाया गया है, इसलिए जिसके पास यह रहेगा उसके बारे में कोई नज़ूमी या ज्योतिषी रमल के ज़रिये से कुछ नहीं देख सकेगा।

सुर्ख सखी: बेशक, इसमें बहुत कुछ असर है, देखिए मैं सूरजमुखी बनकर आई थी, तब भी ज्योतिषीजी रमल से न बता सके कि यह ऐयार है।

वनकन्या: कुमार तो खूब ही छके होंगे ?

सुर्ख सखी: कुछ न पूछिये, वे बहुत ही घबराये कि यह शैतान कहां से आई और क्या शर्त कराके अब क्या चाहती है ?

सब्ज़ सखी: उसी के थोड़ी देर पहले मैं प्यादा बनकर खत का जवाब लेने गई थी और देवीसिंह को चेला बनाया था। यह कोई नहीं कह सका कि इसे मैं पहचानता हूं।

सुर्ख सखी: यह सब तो हुई है, मगर किस्मत भी कोई चीज है। देखो, शिवदत्त के ऐयारों ने तिलिस्मी किताब चुराई थी और जंगल में ले जाकर ज़मीन के अन्दर गाड़ रहे थे, उसी वक़्त इत्तिफाक से हम लोगों ने पहुंचकर दूर से देख लिया कि कुछ गाड़ रहे हैं, उन लोगों के जाने के बाद खोदकर देखा तो तिलिस्मी किताब है।

वनकन्या: ओफ, बड़ी मुश्किल से सिद्धनाथ ने हम लोगों को घूमने का हुक्म दिया था, तिस पर भी कसम दे दी थी कि दूर-दूर से कुमार को देखना, पास मत जाना।

सुर्ख सखी: इसमें तुम्हारा ही फायदा था, बेचारे सिद्धनाथ कुछ अपने वास्ते थोड़े ही कहते थे।

वनकन्या: यह सब सच है, मगर क्या करें बिना देखे जी जो नहीं मानता।

सब्ज़ सखी: हम दोनों को तो यही हुक्म दे दिया था कि बराबर घूम-घूमकर कुमार की मदद किया करो। मालिन रूपी बद्रीनाथ से कैसा बचाया था।

सुर्ख सखी: क्या ऐयार लोग पता लगाने की कम कोशिश करते थे ? मगर यहां तो ऐयारों के गुरुघंटाल सिद्धनाथ हरदम मदद पर थे, उनके किये हो क्या सकता था ? देखो, गंगाजी में नाव के पास आते वक़्त तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी कैसा छके, हम लोगों ने सभी के कपड़े तक ले लिये।

सब्ज़ सखी: चाहे वे लोग कितने ही तेज़ हों मगर हमारे सिद्धनाथ को नहीं पा सकते, हां उन लोगों में तेजसिंह बड़े चालाक हैं!

सुर्ख सखी: तेजसिंह बहुत चालाक हैं तो क्या हुआ, मगर हमारे सिद्धनाथ तेजसिंह के भी बाप हैं।

वनकन्या: (हंसकर) इसका हाल तो तुम ही जानो!

सुर्ख सखी: आप तो दिल्लगी करती हैं।

सब्ज़ सखी: हकीकत में सिद्धनाथ ने कुमार और उनके ऐयारों को बड़ा भारी धोखा दिया। उन लोगों को इस बात का खयाल तक न आया कि इस खोह वाले तिलिस्म को सिद्धनाथ बाबा हम लोगों के हाथ से फतह करा रहे हैं।

सुर्ख सखी: जब हम लोग अन्दर से इस खोह का दरवाज़ा बन्द कर तिलिस्म तोड़ रहे थे तब तेजसिंह बद्रीनाथ की गठरी लेकर इसमें आये थे, मगर दरवाज़ा बन्द पाकर लौट गये।

वनकन्या: बड़ा ही घबराये होंगे कि अन्दर से इनका दरवाज़ा किसने बन्द किया ?

सुर्ख सखी: ज़रूर घबराये होंगे! इसी में क्या और कई बातों में हम लोगों ने कुमार और उनके ऐयारों को धोखा दिया था। देखिए, में उधर सूरजमुखी बनकर कह आई कि शिवदत्त को छुड़ा दूंगी और इधर इस बात की कसम खिलाकर कि कुमार से दुश्मनी न करेगा, शिवदत्त को छोड़ दिया। उन लोगों ने भी ज़रूर सोचा होगा कि सूरजमुखी कोई भारी शैतान है।

वनकन्या: मगर फिर भी हरामज़ादे शिवदत्त ने धोखा दिया और कुमार से दुश्मनी करने पर कमर बांधी, उसकी कसम का कोई ऐतबार नहीं।

सुर्ख सखी: इसी से फिर हम लोगों ने गिरफ्तार भी तो कर लिया और तिलिस्मी किताब पाकर फिर कुमार को दे दी। हां, क्रूरसिंह ने एक दफे हम लोगों को पहचान लिया था। मैंने सोचा कि अब अगर यह जीता बचा तो सब भांडा फूट जायेगा, बस लड़ ही तो गई। आखिर मेरे हाथ से उसकी मौत लिखी थी, मारा गया।

सब्ज़ सखी: उस मुए को धुन सवार थी कि हम ही तिलिस्म फतह करके खज़ाना ले लें।

वनकन्या: मुझको तो इसी बात की खुशी है कि यह खोह वाला तिलिस्म मेरे हाथ से फतह हुआ।

सुर्ख सखी: इसमें काम ही कितना था, तिस पर सिद्धनाथ बाबा की मदद।

वनकन्या: खैर यह बात तो है।

सत्रहवां बयान

अपनी जगह पर दीवान हरदयालसिंह को छोड़ तेजसिंह और बद्रीनाथ को साथ लेकर महाराज जयसिंह विजयगढ़ से नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। साथ में सिर्फ पांच सौ आदमियों का झमेला था। एक दिन रास्ते में लगा, दूसरे दिन नौगढ़ के करीब पहुंचकर डेरा डाला।

राजा सुरेन्द्रसिंह को महाराज जयसिंह के पहुंचने की खबर मिली। उसी वक़्त अपने मुसाहबों और सरदारों को साथ ले इस्तकबाल के लिए गये और अपने साथ शहर में ले आये।

महाराज जयसिंह के लिए पहले से ही मकान सज़ा रखा था, उसी में उनका डेरा डलवाया और ज़्याफत के लिए कहा, मगर महाराज जयसिंह ने ज़्याफत से इनकार किया और कहा कि 'कई वजहों से मैं आपकी ज़्याफत मंज़ूर नहीं कर सकता, आप मेहरबानी करके इसके लिए ज़िद न करें बल्कि इसका सबब भी न पूछे कि ज़्याफत से क्यों इनकार करता हूं।'

राजा सुरेन्द्रसिंह इसका सबब समझ गये और जी में बहुत खुश हुए।

रात के वक़्त कुंवर वीरेन्द्रसिंह और बाकी के ऐयार लोग भी महाराज जयसिंह से मिले। कुमार को बड़ी खुशी के साथ महाराज ने गले लगाया और अपने पास बैठाकर तिलिस्म का हाल पूछते रहे। कुमार ने बड़ी खूबसूरती के साथ तिलिस्म का हाल बयान किया।

रात को ही यह राय पक्की हो गई थी कि सवेरे सूरज निकलने के पहले तिलिस्मी खोह में सिद्धनाथ बाबा से मिलने के लिए रवाना होंगे। उसी मुताबिक दूसरे दिन तारों की रोशनी रहते ही महाराज जयसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह, कुंवर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल वगैरह हज़ार आदमी की भीड़-भाड़ लेकर तिलिस्मी तहखाने की तरफ रवाना हुए। तहखाना बहुत दूर न था, सूरज निकले तक उस खोह (तहखाने) के पास जा पहुंचे।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह से हाथ जोड़कर अर्ज़ किया, "जिस वक़्त सिद्धनाथ योगी ने मुझे आप लोगों को लाने के लिए भेजा था उस वक़्त यह भी कह दिया था कि 'जब वे लोग इस खोह के पास पहुंच जायें तब अगर हुक्म दें तो तुम उन लोगों को छोड़कर पहले अकेले आकर हमसे मिल जाना।' अब आप कहें तो योगीजी के कहे मुताबिक पहले मैं जाकर उनसे मिल आऊं ?"

महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, "योगीजी की बात ज़रूर माननी चाहिए, तुम जाओ और उनसे मिलकर आओ, तब तक हमारा डेरा भी इसी जंगल में पड़ता है।"

कुंवर वीरेन्द्रसिंह अकेले सिर्फ तेजसिंह को साथ लेकर खोह में गये। जिस तरह हम पहले लिख चुके हैं उसी तरह खोह का दरवाज़ा खोल कई कोठरियों, मकान और बागों में घूमते हुए दोनों आदमी उस बाग में पहुंचे जिसमें सिद्धनाथ रहते थे या जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार कुमार ने देखा था।

बाग के अन्दर पैर रखते ही सिद्धनाथ योगी से मुलाकात हुई जो दरवाज़े के पास पहले ही से खड़े कुछ सोच रहे थे। कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को आते देख उनकी तरफ बड़े और पुकार के बोले, "आप लोग आ गये ?"

पहले दोनों ने दूर से प्रणाम किया और पास पहुंचकर उनकी बात का जवाब दिया।

कुमार: आपके हुक्म के मुताबिक महाराज जयसिंह और अपने पिता को खोह के बाहर छोड़कर आपसे मिलने आया हूं।

सिद्धनाथ: बहुत अच्छा किया जो उन लोगों को ले आये, आज कुमारी चन्द्रकान्ता से आप लोग ज़रूर मिलेंगे।

तेजसिंह: आपकी कृपा है तो ऐसा ही होगा।

सिद्धनाथ: कहो, और तो सब कुशल है ? विजयगढ़ और नौगढ़ में किसी तरह का उत्पात तो नहीं हुआ ?

तेजसिंह: (ताज्जुब से उनकी तरफ देखकर) हां, उत्पात तो हुआ था, कोई ज़ालिमखां नामी दोनों राजाओं का दुश्मन पैदा हुआ था।

सिद्धनाथ: हां, यह तो मालूम है, बेशक पंडित बद्रीनाथ अपने फन में बड़ा उस्ताद है, अच्छी चालाकी से उसे गिरफ्तार किया। खूब हुआ जो वे लोग मारे गये, अब उनके संगी-साथियों का दोनों राजाओं से दुश्मनी करने का हौसला न पड़ेगा। आओ, टहलते हुए हम लोग बात करें।

कुमार: बहुत अच्छा।

तेजसिंह: जब आपको यह सब हाल मालूम है तो यह भी ज़रूर मालूम होगा कि ज़ालिमखां कौन था ?

सिद्धनाथ: यह तो नहीं मालूम कि वह कौन था, मगर अन्दाज़ से मालूम होता है कि शायद नाज़िम और अहमद के रिश्तेदारों में से कोई होगा।

कुमार: ठीक है, जो आप सोचते हैं वही होगा।

सिद्धनाथ: महाराज शिवदत्त तो जंगल में चले गये ?

कुमार: जी हां, वे तो हमारे पिता से कह गये हैं कि अब तपस्या करेंगे।

सिद्धनाथ: जो हो, मगर दुश्मन का विश्वास कभी न करना चाहिए।

कुमार: क्या वह फिर दुश्मनी पर कमर बांधेंगे ?

सिद्धनाथ: कौन ठिकाना ?

कुमार: अब हुक्म हो तो बाहर जाकर अपने पिता और महाराज जयसिंह को ले आऊं ?

सिद्धनाथ: हां, मगर पहले यह तो सुन लो कि हमने तुमको उन लोगों से पहले क्यों बुलाया ?

कुमार: कहिए।

सिद्धनाथ: कायदे की बात है कि जिस चीज़ को जी बहुत चाहता है अगर वह खो गई हो और बहुत मेहनत करने या बहुत हैरान होने पर एकाएक ताज्जुब के साथ मिल जाये तो उसका चाहने वाला उस पर इस तरह टूटता है जैसे अपने शिकार पर भूखा बाज़। वह हम जानते हैं कि चन्द्रकान्ता में और तुममें बहुत ज़्यादा मुहब्बत है, अगर एकाएक दोनों राजाओं के सामने तुम उसे देखोगे या वह तुम्हें देखेगी तो ताज्जुब नहीं कि उन लोगों के सामने तुमसे या कुमारी चन्द्रकान्ता से किसी तरह की बेअदबी हो जाये या जोश में आकर तुम उसके पास ही जा खड़े हो तो भी मुनासिब न होगा। इसलिए मेरी राय है कि उन लोगों के पहले ही तुम कुमारी से मुलाकात कर लो। आओ हमारे साथ चले आओ।

अहा, इस वक़्त कुमार के दिल की हुई। मुद्दत के बाद सिद्धनाथ बाबा की कृपा से आज उस कुमारी चन्द्रकान्ता से मुलाकात होगी जिसके वास्ते दिन-रात परेशान थे, राजपाट जिसकी एक मुलाकात पर न्यौछावर कर दिया था, जान तक से हाथ धो बैठे थे। एकाएक उससे मुलाकात होगी-सो भी ऐसे वक़्त पर जब किसी तरह का खटका नहीं, किसी तरह का रंज या अफसोस नहीं, कोई दुश्मन बाकी नहीं। ऐसे वक़्त में कुमार की खुशी का क्या कहना! कलेजा उछलने लगा। मारे खुशी के सिद्धनाथ योगी की बात का जवाब तक न दे सके और उनके पीछे-पीछे रवाना हो गये।

थोड़ी दूर कमरे की तरफ गये होंगे कि एक लौंडी फूल तोड़ती हुई नज़र पड़ी जिसे बुला कर सिद्धनाथ ने कहा, "तू अभी कुमारी चन्द्रकान्ता के पास जा और कह कि कुंवर वीरेन्द्रसिंह तुमसे मुलाकात करने आ रहे हैं, तुम अपनी सखियों के साथ अपने कमरे में जाकर बैठो।"

यह सुनते ही वह लौंडी दौड़ती हुई एक तरफ चली गई और सिद्धनाथ, कुमार तथा तेजसिंह को साथ ले बाग में इधर-उधर घूमने लगे। कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह दोनों अपनी-अपनी फिक्र में लग गये। तेजसिंह को चपला से मिलने की खुशी थी। दोनों यह सोचने लगे कि किस हालत में मुलाकात होगी, उससे क्या बातचीत करेंगे, क्या पूछेंगे, वह हमारी शिकायत करेगी तो क्या जवाब देंगे ? इसी सोच में दोनों ऐसे लीन हो गये कि फिर सिद्धनाथ योगी से बात न की चुपचाप बहुत देर तक योगीजी के पीछे-पीछे घूमते रह गये।

घूम-फिर कर इन दोनों को साथ लिए हुए सिद्धनाथ योगी उस कमरे के पास पहुंचे जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था। वहां पर सिद्धनाथ ने कुमार की तरफ देख कर कहा-

"जाओ इस कमरे में कुमारी चन्द्रकान्ता और उसकी सखियों से मुलाकात करो, मैं तब तक दूसरा काम करता हूं।"

अट्ठारहवां बयान

कुंवर वीरेन्द्रसिंह उस कमरे के अन्दर घुसे। दूर से कुमारी चन्द्रकान्ता को चपला और चम्पा के साथ साथ खड़े दरवाज़े की तरफ टकटकी लगाये देखा।

देखते ही कुंवर वीरेन्द्रसिंह कुमारी की तरफ झटपे और चन्द्रकान्ता कुमार की तरफ। अभी एक-दूसरे से कुछ दूर ही थे कि दोनों ज़मीन पर गिर कर बेहोश हो गये।

तेजसिंह और चपला की भी आपस में टकटकी बंध गई। बेचारी चम्पा कुंवर वीरेन्द्रसिंह और कुमारी चन्द्रकान्ता की यह दशा देख दौड़ी हुई कमरे में गई और हाथ में बेदमुश्क के अर्क से भरी हुई सुराही और दूसरे हाथ में सूखी चिकनी मिट्टी का ढेला लेकर दौड़ी हुई आयी।

दोनों के मुंह पर अर्क का छींटा दिया और थोड़ा-सा अर्क उस मिट्टी के ढेले पर डाल हलका लखलखा बना कर दोनों को सुंघाया।

कुछ देर बाद तेजसिंह और चपला की भी मूर्छा टूटी और ये भी कुमार और चन्द्रकान्ता की हालत देख उनको होश में लाने की फिक्र करने लगे।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता होश में आ दोनों एक दूसरे की तरफ देखने लगे, मुंह से बात किसी के नहीं निकलती थी। क्या पूछें, कौन-सी शिकायत करें, किस जगह से बात उठायें, दोनों के दिल में यही सोच था। पेट से बात निकलती थी मगर गले में जाकर रुक जाती थी, बातों की भरावट से गला फूलता था, दोनों की आंखें डबडबा आई थीं बल्कि आंसू की बूंदें बाहर गिरने लगीं।

घण्टों बीत गये, देखा-देखी में ऐसे लीन हुए कि दोनों को तन-बदन की सुध न रही। कहां हैं, क्या कर रहे हैं, सामने कौन है, इसका खयाल तक किसी को नहीं।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह और कुमारी चन्द्रकान्ता के दिल का हाल अगर कुछ मालूम है तो तेजसिंह और चपला के सिवा दूसरा कौन जाने, कौन उनकी मुहब्बत का अन्दाज़ा लगा सके, सो वे दोनों भी अपने आपे में नहीं थे। हां, बेचारी चम्पा इन लोगों का हद दर्ज़े तक पहुंचा हुआ प्रेम देखकर घबरा उठी, जी में सोचने लगी कि कहीं ऐसा न हो कि इसी देखा-देखी में इन लोगों का दिमाग बिगड़ जाये। कोई ऐसी युक्ति करनी चाहिए जिससे इनकी यह दशा बदले और आपस में बातचीत करने लगें। आखिर कुमारी का हाथ पकड़ चम्पा बोली-

"कुमारी, तुम तो कहती थीं कि कुमार जिस रोज़ मिलेंगे उनसे पूछूंगी कि वनकन्या किसका नाम रखा था ? वह कौन औरत है, उससे क्या वादा किया है ? अब किसके साथ शादी का इरादा है ? क्या ये सब बातें भूल गईं, अब इनसे न कहोगी ?"

किसी तरह किसी की लौ तभी तक लगी रहती है जब तक कोई दूसरा आदमी किसी तरह की चोट उसके दिमाग पर न दे और उसके ध्यान को छेड़ कर न बिगाड़े, इसलिए योगियों को एकान्त में बैठना कहा है। कुंवर वीरेन्द्रसिंह और कुमारी चन्द्रकान्ता की मुहब्बत बाज़ारू नहीं थी, वे दोनों एकरूप हो रहे थे, दिल-ही-दिल में अपनी जुदाई का सदमा एक दूसरे से कहा और दोनों समझ गये मगर किसी पास वाले को मालूम नहीं हुआ, क्योंकि जुबान दोनों की बन्द थी। हां, चम्पा की बात ने दोनों को चैंका दिया, दोनों की चार आंखें जो मिल-जुल कर एक हो रही थीं हिल-डोल कर नीचे की तरफ हो गईं और सिर नीचा किये दोनों कुछ बोलने लगे। क्या जाने वे दोनों क्या बोलते थे और क्या समझते थे, उनकी वे ही जानें। बेसिर-पैर की टूटी-फूटी पागलों की-सी बातें कौन सुने, किसकी समझ में आये। न तो कुमारी चन्द्रकान्ता से कुमार की शिकायत करते बनी और न कुमार उनकी तकलीफ पूछ सके।

वे दोनों पहरों आमने-सामने बैठे रहते तो शायद कहीं जुबान खुलती, मगर यहां दो धंटे बाद सिद्धनाथ योगी ने दोनों को फिर से अलग कर दिया। लौंडी ने बाहर से आकर कहा, "कुमार, आपको सिद्धनाथ बाबाजी ने बहुत जल्द बुलाया है, चलिए देर मत कीजिए।"

कुमार की मजाल न थी कि सिद्धनाथ योगी की बात टालते, घबरा कर उसी वक़्त चलने को तैयार हो गये। दोनों के दिल की बात दिल ही में रह गई।

कुमारी चन्द्रकान्ता को उसी तरह छोड़ कुमार उठ खड़े हुए। कुमारी को कुछ कहना ही चाहते थे तब एक दूसरी लौंडी ने पहुंच कर जल्दी मचा दी। आखिर कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह उस कमरे के बाहर आये। दूर से सिद्धनाथ बाबा दिखाई पड़े जिन्होंने कुमार को पास बुलाकर कहा-

"कुमार, हमने तुमको यह नहीं कहा था कि दिन भर चन्द्रकान्ता के पास बैठे रहो। दोपहर होना ही चाहती है, जिन लोगों को खोह के बाहर छोड़ आये हो वे बेचारे तुम्हारी राह देखते होंगे।"

कुमार: (सूरज की तरफ देखकर) हां दिन तो...

बाबा: दिन तो क्या ?

कुमार: (सकपकाने से होकर) देर तो ज़रूर हो गयी, अब हुक्म हो तो जाकर अपने पिता और महाराज जयसिंह को जल्दी ले आऊं ?

बाबा: हां, जाओ उन लोगों को यहां ले आओ। मगर मेरी तरफ से दोनों राजाओं को कह देना कि इस खोह के अन्दर उन्हीं लोगों को अपने साथ लायें जो कुमारी चन्द्रकान्ता को देख सकें या जिनके सामने वह हो सके।

कुमार: बहुत अच्छा।

बाबा: जाओ, अब देर न करो।

कुमार: प्रणाम करता हूं!

बाबा: इसकी कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि आज ही तुम फिर लौटोगे।

तेजसिंह: दण्डवत्।

बाबा: तुमको तो जन्म भर दण्डवत् करने का मौका मिलेगा, मगर इस वक़्त इस बात का खयाल रखना कि तुम लोगों की जुबानी कुमारी से मिलने का हाल खोह के बाहर वाले न सुनें और आते वक़्त अगर दिन थोड़ा रहे तो आज मत आना।

तेजसिंह: जी नहीं, हम लोग क्यों कहने लगे।

बाबा: अच्छा जाओ।

दोनों आदमी सिद्धनाथ बाबा से विदा हो उसी मामूली राह से घूमते-फिरते खोह के बाहर आये।

दिन दोपहर से कुछ ज़्यादा जा चुका था। उस वक़्त तक कुमार ने स्नान-पूजा कुछ नहीं की थी।

लश्कर में जाकर कुमार राजा सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह से मिले और सिद्धनाथ योगी का सन्देश दिया। दोनों ने पूछा कि बाबाजी ने तुमको सबसे पहले क्यों बुलाया था ? इसके जवाब में जो कुछ मुनासिब समझा कह कर दोनों अपने-अपने डेरे में आये, स्नान-पूजा करके भोजन किया।

राजा सुरेन्द्रसिंह तथा महाराज जयसिंह एकान्त में बैठकर इस बात की सलाह करने लगे कि हम लोग अपने साथ किस-किस को खोह के अन्दर ले चलें।

सुरेन्द्र: योगीजी ने कहला भेजा है कि उन्हीं लोगों को अपने साथ खोह में लायें जिनके सामने कुमारी हो सके।

जयसिंह: हम, आप, कुमार और तेजसिंह तो ज़रूर ही चलेंगे। बाकी जिस-जिसको आप चाहें, ले चलें।

सुरेन्द्र: बहुत आदमियों को साथ ले चलने की कोई ज़रूरत नहीं, हां ऐयारों को ज़रूर ले चलना चाहिए क्योंकि इन लोगों से किसी किस्म का पर्दा रह नहीं सकता, बल्कि ऐयारों से पर्दा रखना ही मुनासिब नहीं।

जयसिंह: आपका कहना बहुत ठीक है, इन ऐयारों के सिवाय और कोई इस लायक नहीं जिसे अपने साथ खोह में ले चलें!

बातचीत और राय पक्की करते दिन थोड़ा रह गया, सुरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को उसी जगह बुलाकर पूछा कि 'यहां से चलकर बाबाजी के पास पहुंचने तक राह में कितनी देर लगती है ?' तेजसिंह ने जवाब दिया, 'अगर इधर-उधर खयाल न करके सीधे ही चलें तो पांच छः घड़ी में उस बाग तक पहुंचेंगे जिसमें बाबाजी रहते हैं, मगर मेरी राय इस वक़्त वहां

चलने की नहीं है क्योंकि दिन बहुत थोड़ा रह गया है और इस खोह में बड़े बेढब रास्ते से चलना होगा। अगर अंधेरा हो गया तो एक कदम आगे चल नहीं सकेंगे।'

कुमारी को देखने के लिए महाराज जयसिंह बहुत घबरा रहे थे, मगर इस वक़्त तेजसिंह की राय उनको कबूल करनी पड़ी और दूसरे दिन सुबह को खोह में चलने की ठहरी।

उन्नीसवां बयान

बहुत सवेरे महाराज जयसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह और कुमार अपने सभी ऐयारों को साथ ले खोह के दरवाज़े पर आये। तेजसिंह ने दोनों ताले खोले जिन्हें देख महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह बहुत हैरान हुए। खोह के अन्दर जाकर तो इन लोगों की और कैफियत हो गयी, ताज्जुब भरी निगाहों से चारों तरफ देखते और तारीफ करते थे।

घुमाते-फिराते कई ताज्जुब की चीजों को दिखाते और कुछ हाल समझाते, सभी को साथ लिए हुए तेजसिंह उस बाग के दरवाज़े पर पहुंचे जिसमें सिद्धनाथ रहते थे। इन लोगों के पहुंचने के पहले ही सिद्धनाथ इस्तकबाल (अगवानी) के लिए द्वार पर मौजूद थे।

तेजसिंह ने महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह को उंगली के इशारे से बता कर कहा, "देखिये, सिद्धनाथ बाबा दरवाज़े पर खड़े हैं।"

दोनों राजा चाहते थे कि जल्दी से पास पहुंचकर बाबाजी को दण्डवत् करें मगर इसके पहले ही बाबाजी ने पुकार कर कहा, "खबरदार, मुझे कोई दण्डवत न करना नहीं तो पछताओगे और मुलाकात भी न होगी।"

इरादा करते रह गये, किसी की मजाल न हुई कि दण्डवत करता। महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह हैरान थे कि बाबाजी ने दण्डवत करने से क्यों रोका ? पास पहुंच कर हाथ मिलाना चाहा, मगर बाबाजी ने इसे भी मंज़ूर न करके कहा, "महाराज, मैं इस लायक नहीं, आपका दर्जा मुझसे बहुत बड़ा है।"

सुरेन्द्रसिंह: साधुओं से बढ़कर किसी का दर्जा नहीं हो सकता।

बाबाजी: किसी तरह का हो मगर साधु हो तब तो!

सुरेन्द्रसिंह: तो आप कौन हैं ?

बाबाजी: कोई भी नहीं।

जय०: आपकी बातें ऐसी हैं कि कुछ समझ ही में नहीं आतीं और हर बात ताज्जुब, मुश्किल, सोच और घबराहट बढ़ाती है।

बाबाजी: (हंसकर) अच्छा, आइये इस बाग में चलिए।

सभी को अपने साथ लिए सिद्धनाथ बाग के अन्दर गये।

पाठक, घड़ी-घड़ी बाग की तारीफ करना तथा हर एक गुल, बूटे और पत्तियों की कैफियत लिखना मुझे मंज़ूर नहीं, क्योंकि इस छोटे से ग्रंथ को शुरू से इस वक़्त तक मुख्तसर ही में लिखता चला आया हूं। सिवाय इसके खोह के बाग कौन बड़े लम्बे चैड़े हैं,

जिनके लिए कई पन्ने काग़ज़ के बरबाद किये जायें, लेकिन इतना कहना ज़रूरी है इस खोह में जितने बाग हैं, चाहे छोटे भी हों मगर सभी की सजावट अच्छी है और फूलों के सिवाय पहाड़ी खुशनुमा पत्तियों की बहार कहीं बढ़ी-चढ़ी है।

महाराज जयसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह, कुंवर वीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों को साथ लिए घूमते हुए बाबाजी उसी दीवानखाने में पहुंचे जिसमें कुमारी का दरबार कुमार ने देखा था बल्कि कहना चाहिए कि अभी कल ही जिस कमरे में कुमार खास कुमारी चन्द्रकान्ता से मिले थे।

जिस तरह की सजावट आज इस दीवानखाने की है, इसके पहले कुमार ने नहीं देखी थी। बीच में एक कीमती गद्दी बिछी हुई थी, बाबाजी ने उस पर राजा सुरेन्द्रसिंह, महाराज जयसिंह और कुंवर वीरेन्द्रसिंह को बैठा कर उनके दोनों की तरफ दर्ज़े ब दर्ज़े ऐयारों को बैठाया और आप भी उन्हीं लोगों के सामने एक मृगछाला पर बैठ गये जो पहले से बिछा हुआ था, इसके बाद बातचीत होने लगी।

बाबाजी: (महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह की तरफ देखकर) आप लोग कुशल से तो हैं ?

दोनों राजा: आपकी कृपा से बहुत आनन्द है, और आज तो आप से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।

बाबाजी: आप लोगों को यहां तक आने में तकलीफ हुई, उसे माफ कीजिएगा।

जयसिंह: यहां आने के खयाल ही से हम लोगों की तकलीफ जाती रही। आपकी कृपा न होती और यहां तक आने की नौबत न पहुंचती तो न मालूम कब तक कुमारी चन्द्रकान्ता के वियोग का दुःख हम लोगों को सहना पड़ता।

बाबाजी: (मुस्कुराकर) अब कुमारी की तलाश में आप लोग तकलीफ न उठायेंगे।

जयसिंह: आशा है कि आज आपकी कृपा से कुमारी को ज़रूर देखेंगे।

बाबा: शायद, किसी वजह से अगर आज कुमारी को देख न सके तो कल ज़रूर आप लोग उससे मिलेंगे। इस वक़्त आप लोग स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर कुछ भोजन कर लें, तब हमारे-आपके बीच बातचीत होगी।

बाबाजी ने एक लौंडी को बुलाकर कहा कि 'हमारे मेहमान लोगों के नहाने का सामान उस बाग में दुरुस्त करो जिसमें बावली है।'

बाबाजी सभी को लिए उस बाग में गये जिसमें बावली थी। उसी में सभी ने स्नान किया और उत्तर की ओर वाले दालान में भोजन करने के बाद उस कमरे में बैठे जिसमें कुंवर वीरेन्द्रसिंह की आंख खुली थी। आज भी वह कमरा वैसा ही सजा हुआ है जैसा पहले दिन कुमार ने देखा था। हां, इतना फ़र्क़ है कि आज कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर उसमें नहीं है।

जब सब लोग निश्चिन्त होकर बैठे तब राजा सुरेन्द्रसिंह ने सिद्धनाथ योगी से पूछा-

"यह खूबसूरत पहाड़ी जिसमें छोटे-छोटे कई बाग हैं हमारे ही इलाके में है, मगर आज तक कभी इसे देखने की नौबत नहीं पहुंची। क्या इस बाग से ऊपर-ही-ऊपर कोई और रास्ता भी बाहर जाने का है ?"

बाबाजी: इसकी राह गुप्त होने के सबब से यहां कोई आ या जा नहीं सकता, हां जिसे इस छोटे से तिलिस्म की कुछ खबर है, वह शायद आ सके। एक रास्ता तो इसका वही जिससे आप आये हैं, दूसरा बाहर आने-जाने का इस बाग में है, लेकिन वह उससे भी ज़्यादा छिपा हुआ है।

सुरेन्द्र०: आप कब से इस पहाड़ी में रह रहे हैं ?

बाबाजी: मैं बहुत थोड़े दिनों से इस खोह में आया हूं। सो भी अपनी खुशी से नहीं आया, मालिक के काम से आया हूं।

सुरेन्द्र०: (ताज्जुब से) आप किसके नौकर हैं ?

बाबाजी: यह भी आपको बहुत जल्दी मालूम हो जायेगा।

जयसिंह: (सुरेन्द्रसिंह की तरफ इशारा करके) महाराज की जुबानी मालूम होता है कि यह दिलचस्प पहाड़ी चाहे इनके राज्य में हो मगर इन्हें इसकी खबर नहीं, और यह जगह भी ऐसी नहीं मालूम होती जिसका कोई मालिक न हो, आप यहां के रहने वाले नहीं हैं तो इस दिलचस्प पहाड़ी और सुन्दर-सुन्दर मकानों और बगीचों का मालिक कौन है ?

महाराज जयसिंह की बात का जवाब अभी सिद्धनाथ बाबा ने नहीं दिया था कि सामने से वनकन्या आती दिखाई पड़ी। दोनों बगल उसके दो सखियां और पीछे-पीछे दस-पन्द्रह लौंडियों की भीड़ थी।

बाबाजी: (वनकन्या की तरफ इशारा करके) इस जगह की मालिक यही है।

सिद्धनाथ बाबा की बात सुनकर दोनों महाराज और ऐयार लोग ताज्जुब से वनकन्या की तरफ देखने लगे। इस वक़्त कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह भी हैरान हो वनकन्या की तरफ देख रहे थे। सिद्धनाथ की जुबानी यह सुनकर कि इस जगह की मालिक यही है, कुमार और तेजसिंह को पिछली बातें याद आ गईं। कुंवर वीरेन्द्रसिंह सिर नीचा कर सोचने लगे कि बेशक कुमारी चन्द्रकान्ता इसी वनकन्या की क़ैद में हैं। वह बेचारी तिलिस्म की राह से आकर जब इस खोह में फंसी तब उन्होंने क़ैद कर लिया, तभी तो इस ज़ोर की चिट्ठी लिखी थी कि बिना हमारी मदद के तुम कुमारी चन्द्रकान्ता को नहीं देख सकते, और उस दिन सिद्धनाथ बाबा ने भी यही कहा था कि जब यह चाहेगी तब चन्द्रकान्ता से तुम्हारी मुलाकात होगी। बेशक कुमारी को इसी ने क़ैद किया है, हम इसे अपना दोस्त कभी नहीं कह सकते, बल्कि यह हमारी दुश्मन है क्योंकि इसने नाहक ही कुमारी चन्द्रकान्ता को क़ैद करके तकलीफ में डाला और हम लोगों को भी परेशान किया।

नीचा मुंह किये इसी किस्म की बातें सोचते-सोचते कुमार को गुस्सा चढ़ आया और उन्होंने सिर उठाकर वनकन्या की तरफ देखा।

कुमार के दिल में चन्द्रकान्ता की मुहब्बत चाहे कितनी ही ज़्यादा हो मगर वनकन्या की मुहब्बत भी कम न थी। हां, इतना फ़र्क़ ज़रूर था कि जिस वक़्त कुमारी चन्द्रकान्ता की याद में मग्न होते थे उस वक़्त वनकन्या का खयाल भी जी में नहीं आता था, मगर सूरत देखने से मुहब्बत की मज़बूत फांस गले में पड़ जाती थी। इस वक़्त भी उनकी यही दशा हुई। यह सोचकर कि कुमारी को इसने क़ैद किया है एकदम गुस्सा चढ़ आया, मगर कब तक ? जब तक कि ज़मीन की तरफ देखकर सोचते रहे, जहां सिर उठाकर वनकन्या की तरफ देखा, गुस्सा बिलकुल जाता रहा, खयाल ही दूसरे हो गये, पहले कुछ सोचा था अब कुछ और ही सोचने लगे-

"नहीं, नहीं, यह बेचारी हमारी दुश्मन नहीं है। राम! राम! न मालूम क्यों ऐसा खयाल मेरे दिल में आ गया। इससे बढ़कर तो दोस्त दिखाई ही नहीं देता। अगर यह हमारी मदद न करती तो तिलिस्म का टूटना मुश्किल हो जाता, कुमारी के मिलने की उम्मीद जाती रहती, बल्कि मैं खुद दुश्मनों के हाथ पड़ जाता।"

कुमार क्या सभी के ही दिल में एकदम यह बात पैदा हुई कि इस बाग और पहाड़ी की मालिक अगर यह है तो इसी ने कुमारी को भी क़ैद कर रखा होगा। आखिर महाराज जयसिंह से न रहा गया, सिद्धनाथ की तरफ देखकर पूछा-

"बेचारी चन्द्रकान्ता इस खोह में फंस कर इन्हीं की क़ैद में पड़ी होंगी ?"

बाबा०: नहीं, जिस वक़्त कुमारी चन्द्रकान्ता इस खोह में फंसी थीं उस वक़्त यहां का मालिक कोई न था, इसके बाद यह पहाड़ी, बाग और मकान इनको मिला है।

सिद्धनाथ बाबा की इस दूसरी बात ने और भ्रम में डाल दिया, यहां तक कि कुमार का जी घबराने लगा। अगर महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह वहां न होते तो ज़रूर कुमार चिल्ला उठते, मगर नहीं-शर्म ने मुंह बन्द कर दिया और गम्भीरता से दोनों मोढ़ों पर हाथ धर के नीचे की तरफ दबाया।

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह से न रहा गया, सिद्धनाथ की तरफ देख और गिड़गिड़ा कर बोले, "आप कृपा कर के पेचीदा और बहुत-से मायने पैदा करने वाली बातों को छोड़ दीजिए और साफ कहिए कि यह लड़की, जो सामने खड़ी है, कौन है ? यह पहाडी इसे किसने दी और चन्द्रकान्ता कहां है ?"

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह की बात सुनकर बाबाजी मुस्कुराने लगे और वनकन्या की तरफ देख कर इशारे से उसे अपने पास बुलाया। वनकन्या अपनी अगल-बगल वाली दोनों सखियों को जिनमें से एक की पोशाक सुर्ख और दूसरी की सब्ज़ थी, साथ लिये हुए सिद्धनाथ के पास आई। बाबाजी ने उसके चेहरे पर से एक झिल्ली जैसी कोई चीज़ जो तमाम चेहरे के साथ चिपकी हुई थी खींच ली और हाथ पकड़कर महाराज जयसिंह के पैर पर डाल दिया और कहा, "लीजिए यही आपकी चन्द्रकान्ता है!"

चेहरे पर से झिल्ली उतर जाने से सभी ने कुमारी चन्द्रकान्ता को पहचान लिया। महाराज जयसिंह पैरों से उसका सिर उठाकर देर तक अपनी छाती से लगाये रहे और खुशी से गद्गद हो उठे।

सिद्धनाथ योगी ने उसकी दोनों सखियों के मुंह पर से भी झिल्लियां उतार दीं। लाल पोशाक वाली चपला और सब्ज़ पोशाक वाली चम्पा साफ पहचानी गईं।

मारे खुशी के सभी का चेहरा चमक उठा, आज की-सी खुशी कभी किसी ने नहीं पाई थी। महाराज जयसिंह के इशारे से कुमारी चन्द्रकान्ता ने राजा सुरेन्द्रसिंह के पैरों पर सिर रखा, उन्होंने उसका सिर उठा कर सूंघा।

घण्टों तक मारे खुशी के सभी की अजब हालत रही। कुंवर वीरेन्द्रसिंह की दशा तो लिखनी ही मुश्किल है। अगर सिद्धनाथ योगी इनको पहले ही कुमारी से न मिलाये रहते तो इस समय इनकी शर्म और हया कभी न दब सकती, ज़रूर कोई बेअदबी हो जाती।

महाराज जयसिंह की तरफ देख कर सिद्धनाथ बाबा बोले, "आप कुमारी को हुक्म दीजिए कि अपनी सखियों के साथ घूमे-फिरे या दूसरे कमरे में चली जाये और आप लोग इस पहाड़ी और कुमारी का विचित्र हाल मुझसे सुनें।"

जयसिंह: बहुत दिनों के बाद इसकी सूरत देखी है, अब कैसे अपने से अलग करूं, कहीं ऐसा न हो कि फिर कोई आफत आये और इसका देखना मुश्किल हो जाये।

बाबा०: (हंसकर) नहीं, नहीं, अब यह आपसे अलग नहीं हो सकती।

जयसिंह: खैर, जो हो, इसे मुझसे अलग मत कीजिए और कृपा करके इसका हाल शुरू से कहिए।

बाबा०: अच्छा, जैसी आपकी मर्ज़ी।

बीसवां बयान

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह के पूछने पर बाबा सिद्धनाथ ने इस दिलचस्प पहाड़ी और कुमारी चन्द्रकान्ता का हाल कहना शुरू किया।

बाबाजी: मुझे मालूम था कि यह पहाड़ी एक छोटा-सा तिलिस्म है और चुनार के इलाके में भी कोई तिलिस्म है। जिसके हाथ से वह तिलिस्म टूटेगा उसकी शादी जिसके साथ होगी उसी के दहेज के सामान पर यह तिलिस्म बंधा है और शादी होने के पहले वह इसकी मालिक होगी।

सुरेन्द्र०: पहले यह बताइए कि तिलिस्म किसे कहते है, और वह कैसे बनाया जाता है ?

बाबा०: तिलिस्म वही शख्स तैयार करता है जिसके पास बहुत माल-खज़ाना हो और कोई वारिस न हो। तब वह अच्छे-अच्छे ज्योतिषी और नज़ूमियों से दरियाफ्त करता है कि उसके या उसके भाइयों के खानदान में कभी कोई प्रतापी या लायक वारिस पैदा होगा या नहीं ? आखिर ज्योतिषी या नजूमी इस बात का पता देते हैं कि इतने दिनों के बाद आपके खानदान में एक प्रतापी लड़का होगा, बल्कि उसकी एक जन्मपत्री लिखकर तैयार कर देते हैं। उसी के नाम से खज़ाना और अच्छी-अच्छी कीमती चीज़ों को रख कर उस पर तिलिस्म बांधते हैं।

आजकल तो तिलिस्म बांधने का कायदा है कि थोड़ा-बहुत खज़ाना रख कर उसकी हिफाज़त के लिए दो एक बलि दे देते हैं, वह प्रेत या सांप होकर उसकी हिफाज़त करता है और कहे हुए आदमी के सिवाय दूसरे को एक पैसा लेने नहीं देता, मगर पहले यह कायदा नहीं था। पुराने ज़माने के राजाओं को जब तिलिस्म बांधने की ज़रूरत पड़ती थी तो बड़े-बड़े ज्योतिषी, नज़ूमी, वैद्य, कारीगर और तांत्रिक लोग इकट्ठे किये जाते थे। उन्हीं लोगों के कहे मुताबिक तिलिस्म बांधने के लिए ज़मीन खोदी जाती थी, उसी ज़मीन के अन्दर खज़ाना रख कर ऊपर तिलिस्मी इमारत बनाई जाती थी। उसमें ज्योतिषी, नज़ूमी, वैद्य, कारीगर और तांत्रिक लोग अपनी ताकत के मुताबिक उसके छिपाने की बंदिश करते थे, मगर इसके साथ ही उस आदमी के नक्षत्र और ग्रहों का भी खयाल रखते थे जिसके लिए वह खज़ाना रखा जाता था। कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने एक छोटा-सा तिलिस्म तोड़ा है, उनकी जुबानी आप वहां का हाल सुनिए और हर एक बात को खूब गौर से सोचिए तो आप ही मालूम हो जायेगा कि ज्योतिषी नज़ूमी, कारीगर और दर्शन शास्त्र के जानने वाले क्या-क्या काम कर सके थे।

जयसिंह: खैर, इसका हाल कुछ-कुछ मालूम हो गया, बाकी कुमार की ज़ुबानी तिलिस्म का हाल सुनने और गौर करने से मालूम हो जायेगा। अब आप इस पहाड़ी और मेरी लड़की का हाल कहिए, और यह भी कहिए कि महाराज शिवदत्त इस खोह से क्योंकर निकल भागे और फिर क्योंकर क़ैद हो गये ?

बाबा०: सुनिये, मैं सारा हाल आपसे कहता हूं। जब कुमारी चन्द्रकान्ता चुनार के तिलिस्म में फंस कर इस खोह में आईं तो दो दिनों तक तो इस बेचारी ने तकलीफ से काटे। तीसरे रोज़ खबर लगने पर मैं वहां पहुंचा और कुमारी को उस जगह से छुड़ाया जहां वह फंसी हुई थीं और जिसको मैं आप लोगों को दिखाऊंगा।

सुरेन्द्र०: सुनते हैं कि तिलिस्म तोड़ने में ताकत की ज़रूरत पड़ती है ?

बाबा०: यह ठीक है, मगर इस तिलिस्म में कुमारी को कुछ भी तकलीफ न हुई और न ताकत की ज़रूरत पड़ी, क्योंकि इसका लगाव उस तिलिस्म से था जिसे कुमार ने तोड़ा है। वह तिलिस्म या उसके कुछ हिस्से अगर न टूटते तो यह तिलिस्म भी न खुलता।

कुमार: (सिद्धनाथ की तरफ देखकर) आपने यह तो कहा ही नहीं कि कुमारी के पास किस राह से पहुंचे ? हम लोग जब इस खोह में आये थे और कुमारी को बेबस देखा था तथा बहुत सोचने पर भी कोई युक्ति ऐसी न मिली थी जिससे कुमारी के पास पहुंच कर इन्हें उस बला से छुड़ाते।

बाबा०: सिर्फ सोचने से तिलिस्म का हाल नहीं मालूम हो सकता है। मैं भी सुन चुका था कि इस खोह में कुमारी चन्द्रकान्ता फंसी पड़ी है और आप छुड़ाने की फिक्र कर रहे हैं मगर कुछ बन नहीं पड़ता। मैं यहां पहुंच कर कुमारी को छुड़ा सकता था लेकिन यह मुझे मंज़ूर न था, मैं चाहता था कि यहां का माल-असबाब कुमारी के हाथ लगे।

कुमार: आप योगी हैं, योगबल से हर जगह पहुंच सकते हैं, मगर मैं क्या कर सकता था ?

बाबा०: आप लोग इस बात को बिलकुल मत सोचिए कि मैं योगी हूं। जो काम आदमी के या ऐयारों के किये नहीं हो सकता उसे मैं भी नहीं कर सकता। मैं जिस राह से कुमार के पास पहुंचा और जो-जो किया सो कहता हूं, सुनिये।

इक्कीसवां बयान

सिद्धनाथ योगी ने कहा, "पहले इस खोह का दरवाज़ा खोल मैं इसके अन्दर पहुंचा और पहाड़ी के ऊपर एक दर्रे में बेचारी चन्द्रकान्ता को बेबस पड़े हुए देखा। अपने गुरु से मैं सुन चुका था कि इस खोह में कई छोटे-छोटे बाग हैं जिनका रास्ता उस चश्मे में है जो खोह में बह रहा है, खोह के अन्दर आने पर आप लोगों ने उसे ज़रूर देखा होगा, क्योंकि खोह में उस चश्मे की खूबसूरती भी देखने के काबिल है।"

सिद्धनाथ की इतनी बात सुनकर सभी ने "हूं, हां" कह के सिर हिलाया, इसके बाद सिद्धनाथ योगी कहने लगे-

सिद्ध०: मैं लंगोटी बांधकर चश्मे में उतर गया और चश्मे में इधर-से-उधर और उधर-से-इधर घूमने लगा। एकाएक पूरब की तरफ जल के अन्दर एक छोटा-सा दरवाज़ा मालूम हुआ, गोता लगाकर उसके अन्दर घुसा। आठ-दस हाथ तक बराबर जल मिला इसके बाद धीरे-धीरे जल कम होने लगा। यहां तक कि कमर तक जल हुआ। तब मालूम पड़ा कि यहां कोई सुरंग है जिसमें चढ़ाई के तौर पर ऊंचे की तरफ चला जा रहा हूं।

आधा घण्टा चलने के बाद मैंने अपने को इस बाग के (जिसमें आप बैठे हैं) पश्चिम और उत्तर के कोण में पाया और घूमता-फिरता इस कमरे में पहुंचा। (हाथ से इशारा करके) यह देखिए दीवार में जो अलमारी है, असल में यह अलमारी नहीं, दरवाज़ा है, लात मारने से खुल जाता है! मैंने लात मार कर यह दरवाज़ा खोला और इसके अन्दर घुसा। भीतर बिलकुल अंधकार था, लगभग दो सौ कदम जाने के बाद दीवार मिली। इसी तरह वहां भी लात मार कर दरवाज़ा खोला और ठीक उसी जगह पहुंचा जहां कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बेबस पड़ी रो रही थीं। मेरे बगल से ही एक दूसरा रास्ता उस चुनारगढ़ वाले तिलिस्म को गया था, जिसके एक टुकड़े को कुमार ने तोड़ा है।

मुझे देखते ही ये दोनों घबरा गईं। मैंने कहा, "तुम लोग डरो मत, मैं तुम दोनों को छुड़ाने आया हूं।" यह कहकर जिस राह से मैं गया था उसी राह से कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को साथ ले इस बाग में लौट आया। इतना हाल, इतनी कैफियत, इतना रास्ता तो मैं जानता था, इससे ज़्यादा इस खोह का हाल मुझे कुछ भी मालूम न था। कुमारी और चपला को खोह के बाहर कर देना या घर पहुंचा देना मेरे लिए कोई बड़ी बात न थी, मगर मैं चाहता था कि यह छोटा-सा तिलिस्म कुमारी के हाथ से टूटे और यहां का माल-असबाब इनके हाथ लगे।

मैं क्या, सभी कोई इस बात को जानते होंगे और सभी को यकीन होगा कि कुमारी चन्द्रकान्ता को इस क़ैद से छुड़ाने के लिए ही कुमार चुनारगढ़ वाले तिलिस्म को तोड़ रहे थे, माल-खज़ाने की इनको लालच न थी। अगर मैं कुमारी को यहां से निकाल कर आपके पास पहुंचा देता तो कुमार उस तिलिस्म को तोड़ना बन्द कर देते और वहां का खज़ाना यों ही रह जाता। मैं आप लोगों की सुख-समृद्धि चाहने वाला हूं। मुझे कब यह मंज़ूर हो सकता था कि इतना माल-असबाब बर्बाद हो जाये और कुमार या कुमारी चन्द्रकान्ता को न मिले।

मैंने अपने जी का हाल कुमारी और चपला से कहा और यह भी कहा कि अगर मेरी बात न मानोगी तो तुम्हें इसी बाग में छोड़कर मैं चला जाऊंगा। आखिर लाचार होकर कुमारी ने मेरी बात मंज़ूर की और कसम खाई कि मेरे कहने के खिलाफ कोई काम न करेगी।

मुझे यह तो मालूम ही न था कि यहां का माल-असबाब क्योंकर हाथ लगेगा और इस खज़ाने की ताली कहां है, मगर यह यकीन हो गया कि कुमारी ज़रूर इस तिलिस्म की मालिक होगी। इसी फिक्र में दो रोज़ तक परेशान रहा। इन बागों की हालत बिलकुल खराब थी, मगर दो-चार फलों के पेड़ ऐसे थे कि हम तीनों ने भूख की तकलीफ न पाई।

तीसरे दिन पूर्णिमा थी। मैं इस बावली के किनारे बैठा सोच रहा था, कुमारी और चपला इधर-इधर टहल रहीं थीं, इतने में चपला दौड़ी हुई मेरे पास आई और बोली, "जल्दी चलिए, इस बाग में एक ताज्जुब की बात दिखाई पड़ी है।"

मैं सुनते ही उठ खड़ा हुआ और चपला के साथ वहां गया जहां कुमारी चन्द्रकान्ता पूरब की दीवार तले खड़ी गौर से कुछ देख रही थीं। मुझे देखते ही कुमारी ने कहा, "बाबाजी देखिए, इस दीवार की जड़ में एक सुराख है जिसमें से सफेद रंग की बड़ी-बड़ी चींटियां निकल रही हैं। यह क्या मामला है ?"

मैंने अपने उस्ताद से सुना था कि सफेद चींटियां जहां नज़र पड़े समझना कि वहां ज़रूर कोई खज़ाना या खज़ाने की ताली है। यह खयाल करके मैंने अपनी कमर से खंजर निकाल कुमारी के हाथ में दे दिया और कहा कि तुम इस ज़मीन को खोदो। अस्तु, मेरे कहे मुताबिक कुमारी ने उस ज़मीन को खोदा। हाथ ही भर के बाद कांच की छोटी-सी हांडी निकली जिसका मुंह बन्द था। कुमारी के ही हाथ से वह हांडी मैंने तुड़वाई। उसके भीतर किसी किस्म का तेल भरा हुआ था जो हांडी टूटते ही बह गया और ताली का एक गुच्छा उसके अन्दर से मिला जिसे पाकर मैं बहुत खुश हुआ।

दूसरे दिन कुमारी चन्द्रकान्ता के हाथ में ताली का गुच्छा देकर मैंने कहा, "चारों तरफ घूम-घूमकर देखो, जहां ताला नज़र पड़े इन तालियों में से किसी ताली को लगाकर खोलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।"

मुख्तसर ही में बयान करके इस बात को खत्म करता हूं। उस गुच्छे में तीस तालियां थीं, कई दिनों में खोज कर हम लोगों ने तीसों ताले खोले। तीन दरवाज़े तो ऐसे मिले जिनसे हम लोग ऊपर-ही-ऊपर तिलिस्म के बाहर हो जायें। चार बाग और तेईस कोठियां असबाब

और खज़ाने की निकलीं जिनमें हर एक किस्म का अमीरी का सामान और बेहद खज़ाना मौजूद था।

जब ऊपर-ही-ऊपर तिलिस्म से बाहर हो जाने का रास्ता मिला तब मैं अपने घर गया और कई लौंडिया और ज़रूरी चीजें कुमारी के वास्ते लेकर फिर यहां आया। कई दिनों में यहां के सब ताले खोले गये, तब तक यहां रहते-रहते कुमारी की तबीयत घबरा गई, मुझसे कई दफे उन्होंने कहा कि 'मैं इस तिलिस्म के बाहर घूमना-फिरना चाहती हूं।'

बहुत जिद करने पर मैंने इस बात को मंज़ूर किया। अपनी कारीगरी से इन लोगों की सूरत बदली और दो-तीन घोड़े ला दिये जिन पर सवार होकर ये लोग कभी-कभी तिलिस्म के बाहर घूमने जाया करतीं। इस बात की ताकीद कर दी थी कि अपने को छिपाये रहें जिससे कोई पहचानने न पाये। इन्होंने भी मेरी बात पूरे तौर पर मानी और जहां तक हो सका अपने को छिपाया। इसी बीच में धीरे-धीरे इन बागों की भी दुरुस्ती की गई।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म का खज़ाना हासिल किया और यहां का माल-असबाब जो कुछ छिपा था, कुमारी को मिल गया। (जयसिंह की तरफ देखकर) आज तक यह कुमारी चन्द्रकान्ता मेरी लड़की या मालिक थी, अब आपकी ज़मा आपके हवाले करता हूं।

महाराज शिवदत्त की रानी पर रहम खाकर कुमारी ने दोनों को छोड़ दिया था और इस बात की कसम खिला दी थी कि कुमार से किसी तरह की दुश्मनी न करेंगे। मगर उस दुष्ट ने न मानी, पुराने साथियों से मुलाकात होने पर बदमाशी पर कमर बांधी और कुमार के पीछे लश्कर की तबाही करने लगा। आखिर लाचार होकर मैंने उसे गिरफ्तार किया और इस खोह में उसी ठिकाने पर फिर ला रखा जहां कुमार ने उसे क़ैद करके डाल दिया था। अब और जो कुछ आपको पूछना हो पूछिये, मैं सब हाल कह आप लोगों की शंका मिटाऊं।

सुरेन्द्र०: पूछने को तो बहुत-सी बातें थीं मगर इस वक़्त इतनी खुशी हुई है कि वे तमाम बातें भूल गया हूं क्या पूछूं ? खैर, फिर किसी वक़्त पूछ लूंगा। कुमारी की मदद आपने क्यों की ?

जयसिंह: हां, यही सवाल मेरा भी है, क्योंकि आपका हाल जब तक नहीं मालूम होता तबीयत की घबराहट नहीं मिटती, तिस पर आप कई दफे कह चुके हैं कि मैं योगी या महात्मा नहीं हूं यह सुनकर हम लोग और भी घबरा रहे हैं कि अगर आप वह नहीं हैं जो सूरत से ज़ाहिर है तो फिर कौन हैं ?

बाबा: खैर, यह भी मालूम हो जायेगा।

जयसिंह: (कुमारी चन्द्रकान्ता की तरफ देखकर) बेटी, क्या तुम भी नहीं जानतीं कि यह योगी कौन हैं ?

चन्द्रकांता: (हाथ जोड़कर) मैं तो सब कुछ जानती हूं मगर कहूं क्योंकर ? इन्होंने तो मुझसे सख्त कसम खिला दी है, इसी से मैं कुछ कह नहीं सकती।

बाबा: आप जल्दी क्यों करते हैं! अभी थोड़ी देर में मेरा हाल आपको मालूम हो जायेगा, पहले चलकर उन चीज़ों को तो देखिए जो कुमारी चन्द्रकान्ता को इस तिलिस्म से मिली हैं।

जयसिंह: जैसी आपकी मर्ज़ी।

बाबाजी उसी वक़्त खड़े हुए और सभी को साथ ले दूसरे बाग की तरफ चले।

बाईसवां बयान

बाबाजी वहां से उठकर महाराज जयसिंह वगैरह को साथ ले दूसरे बाग में पहुंचे और वहां घूम-फिरकर तमाम बाग, इमारत, खज़ाना, और सब असबाबों को दिखलाने लगे जो तिलिस्म में से कुमारी ने पाया था।

महाराज जयसिंह उन सब चीजों को देखते ही एक दम बोल उठे, "वाह-वाह, धन्य थे वे लोग जिन्होंने इतनी दौलत इकट्ठी की थी। मैं अपना सारा राज्य बेचकर भी अगर इस तरह के दहेज का सामान इकट्ठा करना चाहता तो इसका चौथाई भी न कर सकता!"

सबसे ज़्यादा खज़ाना और जवाहरखाना उस बाग और दीवानखाने के तहखाने में नज़र पड़ा जहां कुंवर वीरेन्द्रसिंह ने कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था।

तीसरे और चैथे भाग के शुरू में इस पहाड़ी बाग, कोठरियों और रास्ते का सारा हाल हम लिख चुके हैं। दो-तीन दिनों में सिद्धबाबा ने इन लोगों को उन जगहों की पूरी सैर कराई। जब इन सब कामों से छुट्टी मिली और सब कोई दीवानखाने में बैठे, उस वक़्त महाराज जयसिंह ने सिद्धबाबा से कहा-

"आपने जो कुछ मदद कुमारी चन्द्रकान्ता की, करके उसकी जान बचाई, उसका एहसान तमाम उम्र हम लोगों के सिर रहेगा। आज जिस तरह हो, आप अपना हाल बतलाकर हम लोगों की चिन्ता को दूर कीजिये, अब सब्र नहीं किया जाता।"

महाराज जयसिंह की बात सुन सिद्धबाबा मुस्कराकर बोले, "मैं अभी अपना हाल आप लोगों पर ज़ाहिर करता हूं ज़रा सब्र कीजिये।" इतना कह ज़ोर की जफील (सीटी) बजाई। उसी वक़्त तीन-चार लौंडिया दौड़ती हुई आकर उनके पास खड़ी हो गईं। सिद्धबाबा ने हुक्म दिया, "हमारे नहाने के लिए जल और पहनने के लिए असली कपड़ों का संदूक (उंगली का इशारा करके) इस कोठरी में लाकर जल्द रक्खो! आज मैं इस मृगछाले और लम्बी दाढ़ी से इस्तीफा दूंगा।"

थोड़ी ही देर में सिद्धबाबा के हुक्म की तामील हुई। तब तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। इसके बाद सिद्ध बाबा उठकर उस कोठरी में चले गये जिसमें उनके नहाने का जल और पहनने के कपड़े रक्खे हुए थे।

थोड़ी ही देर में नहा-धो और कपड़े पहन कर सिद्ध बाबा उस कोठरी के बाहर निकले। अब तो उनको सिद्धबाबा कहना मुनासिब नहीं, आज तक बाबाजी कह चुके, बहुत कहा, अब तो तेजसिंह के पिता जीतसिंह कहना ठीक है।

अब पूछने या हाल-चाल मालूम करने की फुरसत कहां! महाराज सुरेन्द्रसिंह तो जीतसिंह को पहचानते ही उठे और यह कह कर कि 'तुम मेरे भाई से भी हज़ार दर्ज़े बढ़कर हो' गले लगा लिया और कहा, "जब महाराज शिवदत्त और कुमार से लड़ाई हुई तब तुमने सिर्फ पांच सौ सवार लेकर कुमार की मदद की थी * । आज तो तुमने कुमार से भी बढ़कर नाम पैदा किया और पुश्त-दर-पुश्त के लिए नौगढ़ और विजयगढ़ दोनों राज्यों के ऊपर अपने एहसान का बोझ रक्खा।" देर तक गले लगाये रहे, इसके बाद महाराज जयसिंह ने भी उन्हें बराबरी का दर्ज़ा देकर गले लगाया। तेजसिंह और देवीसिंह वगैरह ने भी बड़ी खुशी से उनकी पूजा की।

अब मालूम हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता की जान बचाने वाले, नौगढ़ और विजयगढ़ दोनों की इज़्ज़त रखने वाले, दोनों राज्यों की तरक्की करने वाले, आज तक अच्छे-अच्छे ऐयारों को धोखे में डालने वाले, कुंवर वीरेन्द्रसिंह को धोखे में डालकर विचित्र तमाशा दिखाने वाले, पहाड़ी से कूदते हुए कुमार को रोककर जान बचाने और चुनार राज्य में फतह का डंका बजाने वाले सिद्ध बाबा योगी बने हुए यही महात्मा जीतसिंह थे।

इस वक़्त की खुशी का क्या अन्दाज़ा है! अपने-अपने में सब ऐसे मग्न हो रहे थे कि त्रिभुवन की सम्पत्ति की तरफ हाथ उठाने को जी नहीं चाहता। कुंवर वीरेन्द्रसिंह को कुमारी चन्द्रकान्ता से मिलने की खुशी भी जैसी थी आप खुद ही सोच-समझ सकते हैं, इसके सिवाय इस बात की खुशी बेहद हुई कि सिद्धनाथ का एहसान किसी के सिर न हुआ, या अगर हुआ तो जीतसिंह का, सिद्धनाथ बाबा तो कुछ थे ही नहीं।

इस वक़्त महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह का आपस में दिली प्रेम कितना बढ़-चढ़ रहा है, वे ही जानते होंगे। कुमारी चन्द्रकान्ता को घर ले जाने के बाद शादी के लिए खत भेजने की ताब किसे ? जयसिंह ने उसी वक़्त कुमारी चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर राजा सुरेन्द्रसिंह के पैरों में डाल दिया और डबडबाई आखों को पोंछकर कहा, "आप आज्ञा कीजिए कि इस लड़की को मैं अपने घर ले जाऊं और जात-बिरादरी तथा पंडित लोगों के सामने कुंवर वीरेन्द्रसिंह की लौंडी बनाऊं।

राजा सुरेन्द्रसिंह ने कुमारी को अपने पैरों से उठाया और बड़ी मुहब्बत के साथ महाराज जयसिंह को गले लगाकर कहा, "जहां तक जल्दी हो सके आप कुमारी को लेकर विजयगढ़ जायें क्योंकि इसकी मां बेचारी मारे गम के सूखकर कांटा हो रही होंगी!"

इसके बाद महाराज सुरेन्द्रसिंह ने पूछा, "अब क्या करना चाहिए ?"

जीतसिंह: अब सभी को यहां से चलना चाहिए, मगर मेरी समझ में यहां से माल-असबाब और खज़ाने को ले चलने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि अव्वल तो यह माल-असबाब सिवाय कुमारी चन्द्रकान्ता के किसी के मतलब का नहीं, इसलिए कि दहेज का माल है, इसकी तालियां भी पहले ही से इनके कब्ज़े में ही रही हैं, यहां से उठाकर ले जाने और फिर इनके साथ भेजकर लोगों को दिखाने की कोई ज़रूरत नहीं, दूसरे यहां की

आबोहवा कुमारी को बहुत पसन्द है, जहां तक मैं समझता हूं कुमारी चन्द्रकान्ता फिर यहां आकर कुछ दिन ज़रूर रहेंगी इसलिए हम लोगों को यहां से खाली हाथ सिर्फ कुमारी चन्द्रकान्ता को लेकर बाहर होना चाहिए।

बहादुर और चतुर ऐयार जीतसिंह की राय को सभी ने पसन्द किया और वहां से बाहर होकर नौगढ़ जाने के लिये तैयार हुए।

जीतसिंह ने कुछ लौंडियों को, जिन्हें कुमारी की खिदमत के लिये वहां लाये थे, बुलाकर कहा, "तुम लोग अपने-अपने चेहरे को साफ करके असली सूरत में उस पालकी को लेकर जल्द यहां आओ जो कुमारी के लिए मैंने पहले से मंगा रक्खी है।"

जीतसिंह का हुक्म पाकर वे लौंडियां, जो गिनती में बीस होंगी, दूसरे बाग में चली गईं और थोड़ी ही देर बाद अपनी असली सूरत में एक निहायत उम्दा सोने की जड़ाऊ पालकी अपने कन्धे पर लिए हाज़िर हुईं।

कुंवर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह ने अब इन लौंडियों को पहचाना। तेजसिंह बोले, "वाह-वाह, अपने घर की लौंडियों को आज तक मैंने न पहचाना! मेरी मां ने भी यह भेद मुझसे न कहा।"

---

*—देखिये दूसरा भाग, पांचवां बयान।

तेईसवां बयान

जिस राह से कुंवर वीरेन्द्रसिंह वगैरह आया-जाया करते थे और महाराज जयसिंह आये थे वह राह इस लायक नहीं थी कि कोई हाथी, घोड़ा या पालकी पर सवार होकर आये, और ऊपर वाली दूसरी राह में खोह के दरवाज़े तक जाने में कुछ चक्कर पड़ता था, इसलिए जीतसिंह ने कुमारी के वास्ते पालकी मंगायी। मगर दोनों महाराज और कुंवर वीरेन्द्रसिंह किस पर सवार होंगे, अब वे यह सोचने लगे।

वहां खोह में दो घोड़े भी थे जो कुमारी की सवारी के वास्ते लाये गये थे। जीतसिंह ने उन्हें महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह की सवारी के लिए तजवीज़ करके कुमार के वास्ते एक हवादार मंगवाया, लेकिन कुमार ने उस पर सवार होने से इनकार करके पैदल चलना कबूल किया।

उसी बाग के दक्खिन की तरफ बड़ा फाटक था जिसके दोनों बगल लोहे की दो खूबसूरत पुतलियां थीं। बाईं तरफ वाली पुतली के पास जीतसिंह पहुंचे और उसकी दाहिनी आंख में उंगली डाली, साथ उसका पेट दो पल्लों की तरह खुल गया और बीच में चांदी का एक मुट्ठा नज़र पड़ा जिसे जीतसिंह ने घुमाना शुरू किया।

जैसे-जैसे मुट्ठा घुमाते थे तैसे-तैसे वह फाटक ज़मीन में घुसता जाता था। यहां तक कि तमाम फाटक ज़मीन के अन्दर चला गया और बाहर खुशनुमा सब्ज़ भरा हुआ मैदान नज़र पड़ा।

फाटक खुलने के बाद जीतसिंह इन लोगों के पास आकर बोले, "इस राह से हम लोग बाहर चलेंगे।"

दिन आधी घड़ी से ज़्यादा न बीता होगा जब महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह घोड़े पर सवार हो कुमारी चन्द्रकान्ता की पालकी आगे कर फाटक [*] के बाहर हुए।

दोनों महाराजाओं के बीच दोनों हाथों से दोनों घोड़ों की रकाब पकड़े हुए जीतसिंह बातें करते और इनके पीछे कुंवर वीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों को चारों तरफ लिए कन्हैया बने खोह के फाटक का तरफ रवाना हुए।

पहर भर चलने के बाद ये लोग उसी लश्कर में पहुंचे जो खोह के दरवाज़े पर उतरा हुआ था। रात भर उसी जगह रहकर सुबह को कूच किया। यहां से खूबसूरत और कीमती कपड़े पहने कहारों ने कुमारी की पालकी उठाई और महाराज जयसिंह के साथ विजयगढ़ रवाना हुए, मगर वे लौंडियां भी जो आज तक कुमारी के साथ थीं और यहां तक उनकी पालकी

उठाकर लाई थीं, मुहब्बत की वजह और महाराज सुरेन्द्रसिंह के हुक्म से कुमारी के साथ गईं।

राजा सुरेन्द्रसिंह कुमार को साथ लिये हुए नौगढ़ पहुंचे, कुंवर वीरेन्द्रसिंह पहले महल में जाकर अपनी मां से मिले और कुलदेवी की पूजा कर बाहर आये।

अब तो बड़ी खुशी से दिन गुज़रने लगे, आठवें ही रोज़ महाराज जयसिंह का भेजा हुआ तिलक पहुंचा और धूमधाम से वीरेन्द्रसिंह को चढ़ाया गया।

पाठक, अब तो कुंवर वीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता का वृत्तान्त समाप्त ही हुआ समझिए, बाकी रह गई सिर्फ कुमार की शादी, सो इस वक़्त सब किस्से को मुख्तसर में लिखकर सिर्फ बारात के लिए कई वर्क काग़ज़ के रंगना मुझे मंज़ूर नहीं। मैं यह नहीं लिखना चाहता कि नौगढ़ से विजयगढ़ तक रास्ते की सफाई की गई, इत्यादि। आप खुद खयाल कर सकते हैं कि ऐसे आशिक माशूक की बारात किस धूमधाम की होगी, तिस पर दोनों ही राजा और दोनों ही की मात्र एक-एक औलाद। तिलिस्म फतह करने और माल-खज़ाना पाने की खुशी ने और भी दिमाग बढ़ा रक्खा था! मैं सिर्फ इतना ही लिखना पसन्द करता हूं कि अच्छी सायत में कुंवर वीरेन्द्रसिंह की बारात बड़े धूमधाम से विजयगढ़ की तरफ रवाना हुई।

बारात को मुख्तसर ही में लिखकर बला टाली मगर एक आखिरी दिल्लगी लिखे बिना जी नहीं मानता, क्योंकि वह पढ़ने के काबिल है।

विजयगढ़ में जनवासे की तैयारी सबसे बढ़ी-चढ़ी थी। बारात पहुंचने के पहले ही से समा बंधा हुआ था, अच्छी-अच्छी खूबसूरत और गाने के इल्म को पूरे तौर पर जानने वाली रंडियों से महफिल भरी हुई थी, मगर बिना वक़्त बारात पहुंची, अजब झमेला मचा।

बारात के आगे-आगे शिवदत्त बड़ी तैयारी से घोड़े पर सवार सरपंच बांधे कमर में दोहरी तलवार लगाये, हाथ में झंडा लिए जनवासे के दरवाज़े पर पहुंचे, इसके बाद धीरे-धीरे जलूस पहुंचा। दूल्हा बने हुए कुमार घोड़े से उतर कर जनवासे के अन्दर गये।

कुमार वीरेन्द्रसिंह को घोड़े से उतरकर जनवासे के अन्दर जाना ही था कि बाहर हो-हल्ला मच गया। सब कोई देखने लगे कि दो महाराज शिवदत्त आपस में लड़ रहे हैं। दोनों की तलवारें तेज़ी के साथ चल रहीं हैं और दोनों ही के मुंह से यही आवाज़ निकल रही है कि 'हमारी मदद को कोई न आये, सब दूर से तमाशा देखें। एक महाराज शिवदत्त तो वही थे जो अभी-अभी सरपंच बांधे, हाथ में झण्डा लिए घोड़े पर सवार आये थे और दूसरे महाराज शिवदत्त मामूली पोशाक पहने हुए थे मगर बहादुरी के साथ लड़ रहे थे।

थोड़ी ही देर में हमारे महाराज शिवदत्त को (जो झण्डा उठाये घोड़े पर सवार आये) इतना मौका मिला कि कमर में से कमन्द निकाल अपने मुकाबले वाले दुश्मन महाराज शिवदत्त को बांध लिया और घसीटते हुए जनवासे के अन्दर चले। पीछे-पीछे {??} आदमियों की भीड़ भी इन दोनों को ताज्जुब भरी निगाहों से देखती हुई अन्दर पहुंची।

हमारे महाराज शिवदत्त ने दूसरे साधारण पोशाक पहने हुए महाराज शिवदत्त को एक खम्भे के साथ खूब कस कर बांध दिया और एक मशालची के हाथ से जो उसी जगह मशाल दिखा रहा था मशाल लेकर उनके हाथ में थमा आप कुंवर वीरेन्द्रसिंह के पास जा बैठे। उसी जगह सोने का जड़ाऊ बर्तन गुलाबजल से भरा हुआ रक्खा था, उसी से रूमाल तर करके हमारे महाराज शिवदत्त ने अपना मुंह पोंछ डाला। पोशाक वही, सरपंच वही, मगर सूरत तेजसिंह बहादुर की!!

अब तो मारे हंसी के पेट में बल पड़ने लगे। पाठक, आप तो दिल्लगी को खूब समझ गये होंगे, लेकिन अगर कुछ भ्रम हो गया हो तो लिखे देता हूं।

हमारे तेजसिंह अपने कौल के मुताबिक महाराज शिवदत्त की सूरत बना सरपंच (फतह का सरपंच जो देवीसिंह लाये थे) बांध झण्डा ले कुमार की बारात के आगे-आगे थे, उधर असली महाराज शिवदत्त भी जो महाराज सुरेन्द्रसिंह से जान बचा तपस्या का बहाना कर जंगल में चले गये थे, कुंवर वीरेन्द्रसिंह की बारात की कैफियत देखने आये। फकीरी करने का तो बहाना ही था असल में तो तबीयत से बदमाशी और खोट गई नहीं थी।

महाराज शिवदत्त बारात की कैफियत देखने आये मगर आगे-आगे झण्डा हाथ में लिए अपनी सूरत देख समझ गये कि किसी ऐयार की बदमाशी है। क्षत्रियपन का खून जोश में आ गया, गुस्से को सम्हाल न सके, तलवार निकाल कर लड़ ही तो गये। आखिर नतीज़ा यह हुआ कि उनको महफिल में मशालची बनना पड़ा और कुंवर वीरेन्द्रसिंह की शादी खुशी-खुशी कुमारी चन्द्रकान्ता के साथ हो गई।

---

*—फाटक के बाहर भी उसी ढंग की दो पुतलियां थीं। उसी तरह बाईं तरफ वाली पुतली का पेट खोल मुट्ठा उलटा घुमाकर फाटक बन्द किया गया।

A.H.W. SAMEER SERIES

चंद्रकांता

चन्द्रकांता को एक प्रेम कथा कहा जा सकता है। यह शुद्ध लौकिक प्रेम कहानी है, जिसमें तिलिस्मी और ऐयारी के अनेक चमत्कार पाठक को चमत्कृत करते हैं। नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के पुत्र वीरेन्द्रसिंह तथा विजयगढ़ के राजा जयसिंह की पुत्री चन्द्रकांता के प्रणय और परिणय की कथा उपन्यास की मुख्य कथा है। इस प्रेम कथा के साथ-साथ ऐयार तेजसिंह तथा ऐयारा चपला की प्रेम कहानी भी अनेकत्र झांकती है।

देवकीनन्दन खत्री ने समसामयिक नीति-प्रधान उपन्यासों से भिन्न कौतूहल प्रधान 'तिलिस्मी-ऐयारी' उपन्यास-रचना की नई दिशा को उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया है।

डायमंड पाकेट बुक्स

This file was downloaded from Z-Library project

Your gateway to knowledge and culture. Accessible for everyone.

z-library.se singlelogin.re go-to-zlibrary.se single-login.ru

Official Telegram channel

Z-Access

https://wikipedia.org/wiki/Z-Library